B.Ed.E-31
Pedagogy of Hindi
(हिन्दी का शिक्षणशास्त्र)

उ० प्र० राजर्षि टण्डन
मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज

विषय सूची

खण्ड — 01	**हिन्दी भाषा के आधार**	**3—44**
इकाई 1	हिन्दी भाषा की प्रकृति और प्रकार्य	5—15
इकाई 2	हिन्दी भाषा की अधिगम प्रक्रिया	16—33
इकाई 3	विद्यालयी स्तर पर हिन्दी भाषा की पाठ्यचर्या एवं उसमें सुधार	34—44
खण्ड — 02	**हिन्दी भाषा शिक्षण के लिए व्यूह रचना— प्रथम**	**45—92**
इकाई 4	हिन्दी के भाषिक तत्व	47—69
इकाई 5	श्रवण एवं मौखिक अभिव्यक्ति के कौशल का विकास	70—77
इकाई 6	पठन योग्यता एवं लिखित अभिव्यक्ति कौशल का विकास	78—92
खण्ड — 03	**हिन्दी भाषा शिक्षण के लिए व्यूह रचना— द्वितीय**	**93—130**
इकाई 7	कविता शिक्षण	95—106
इकाई 8	गद्य की अन्य विधाओं का शिक्षण	107—119
इकाई 9	व्याकरण शिक्षण	120—129
खण्ड — 04	**हिन्दी भाषा अधिगम का मूल्य निर्धारण**	**131—178**
इकाई 10	भाषा सम्प्राप्ति मूल्यांकन	133—146
इकाई 11	भाषा परीक्षण एवं परीक्षण पदों की रचना	147—160
इकाई 12	निदानात्मक एवं उपचारात्मक कार्य	161—178
खण्ड — 05	**हिन्दी भाषा में अधिगम संसाधन**	**179—216**
इकाई 13	अधिगम संसाधनः अर्थ, प्रकार, कार्य, निर्माण एवं उपयोग	181—188
इकाई 14	भाषा प्रयोगशाला और भाषा शिक्षक	189—197
इकाई 15	क्रियात्मक शोध और समुन्नयन कार्य	198—211

B.Ed.E-31 : Pedagogy of Hindi
(हिन्दी का शिक्षणशास्त्र)

उ० प्र० राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज

संरक्षक एवं मार्गदर्शक

प्रोफेसर सत्यकाम	कुलपति, उ० प्र० राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज

विशेषज्ञ समिति

प्रोफेसर पी० के० स्टालिन	निदेशक, शिक्षा विद्याशाखा, उ० प्र० राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज
प्रोफेसर पी० के० पाण्डेय	आचार्य, शिक्षा विद्याशाखा, उ० प्र० राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज
प्रोफेसर छत्रसाल सिंह	आचार्य, शिक्षा विद्याशाखा, उ० प्र० राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज
प्रोफेसर के० एस० मिश्रा	पूर्व कुलपति, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज
प्रोफेसर धनन्जय यादव	विभागाध्यक्ष, शिक्षाशास्त्र विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज
प्रोफेसर मीनाक्षी सिंह	आचार्य, शिक्षा संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी
डॉ० जी० के० द्विवेदी	सह आचार्य, शिक्षा विद्याशाखा, उ० प्र० राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज
डॉ० दिनेश सिंह	सह आचार्य, शिक्षा विद्याशाखा, उ० प्र० राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज
डॉ० सुरेन्द्र कुमार	सहायक आचार्य, शिक्षा विद्याशाखा, उ० प्र० राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज

लेखक

प्रोफेसर राजेश कुमार पाण्डेय	आचार्य, के. पी. बी. एड. प्रशिक्षण, कॉलेज, प्रयागराज (इकाई : 01–07)
डॉ० श्रुति आनन्द	सहायक आचार्य, शिक्षा शास्त्र विभाग, आर्य कन्या पी. जी. कॉलेज, प्रयागराज (इकाई : 08–15)

सम्पादक

डॉ० दिनेश सिंह	सह आचार्य, शिक्षा विद्याशाखा, उ० प्र० राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज

परिमापक

प्रोफेसर छत्र साल सिंह	आचार्य, शिक्षा विद्याशाखा, उ० प्र० राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज

समन्वयक

डॉ० सुरेन्द्र कुमार	सहायक आचार्य, शिक्षा विद्याशाखा, उ० प्र० राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज

प्रकाशक : कुलसचिव, उ० प्र० राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज।

ISBN : 978-93-48270-20-7

Registrar, U. P. Rajarshi Tandon Open University, Prayagraj

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस सामग्री के किसी भी अंश को उ प्र राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज की लिखित अनुमति के बिना किसी भी रूप मे। मिनियोग्राफी (वक्रमुद्रण) द्वारा या अन्यथा पुनः प्रस्तुत करने की अनुमति नहीं है।

नोट : पाठ्य साम्रगी में मुद्रित साम्रगी के विचारों एवं आकड़ो। आदि के प्रति विश्वविद्यालय, उत्तरदायी नहीं हैं।

प्रकाशक : विनय कुमार, कुलसचिव, उ0 प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज, 211021

मुद्रक – के0 सी0 प्रिटिंग एण्ड एलाइड वर्क्स, पंचवटी, मथुरा – 281003

B.Ed.E-31
Pedagogy of Hindi
(हिन्दी का शिक्षणशास्त्र)

उ० प्र० राजर्षि टण्डन
मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज

खण्ड – 01

हिन्दी भाषा के आधार

इकाई 1	हिन्दी भाषा की प्रकृति और प्रकार्य	5–15
इकाई 2	हिन्दी भाषा की अधिगम प्रक्रिया	16–33
इकाई 3	विद्यालयी स्तर पर हिन्दी भाषा की पाठ्यचर्या एवं उसमें सुधार	34–44

खण्ड – 01 : हिन्दी भाषा के आधार

खण्ड परिचय

खंड 01 हिन्दी भाषा के आधार से सम्बन्धित है। इस खण्ड को तीन इकाइयों में वर्गीकृत करके वर्णित किया गया है। जिनका विस्तृत विवरण इस प्रकार है–

इकाई 01 हिन्दी भाषा की प्रकृति और प्रकार्य से संबन्धित है। इसके अन्तर्गत भाषा का अर्थ, विशेषताएं तथा हिन्दी भाषा की प्रकृति को विस्तृत रूप से स्पष्ट किया गया है। हिन्दी भाषा के प्रकार्य पर भी विस्तार से प्रकाश डाला गया है।

इकाई 02 हिन्दी भाषा की अधिगम प्रक्रिया से संबन्धित है। जिसमें भाषा विकास का क्रम – ध्वनियों की पहचान करना, ध्वनियों को उत्पन्न करना, शब्दों एवं वाक्यों का निर्माण करना, लिखित भाषा का प्रयोग करना एवं भाषा विकास की पूर्णवस्था को स्पष्ट किया गया है। साथ ही विभिन्न अवस्थाओं (शैशवावस्था, बाल्यावस्था व किशोरावस्था) में भाषा विकास की स्थिति का वर्णन है। भाषा अधिगम प्रक्रिया में भाषा अधिगम की सहायक युक्तियाँ और भाषा अधिगम की विशेषताओं को बताया गया है। अधिगम के नियमों का भाषा शिक्षण में उपयोग तथा भाषा अधिगम और भाषा शिक्षण पर विस्तार से प्रकाश डाला गया है।

इकाई 03 में विद्यालयी स्तर पर हिन्दी भाषा की पाठ्यचर्या एवं सुधार के विषय के सम्बन्ध में प्रकाश डाला गया है। जिसके अन्तर्गत मातृभाषा के रूप में हिन्दी, हिन्दी भाषा का महत्व, हिन्दी भाषा शिक्षण के उद्देश्यों (ज्ञानात्मक उद्देश्य, कौशलात्मक, अभिरुच्यात्मक, अभिवृत्यात्मक व सृजनात्मक) को स्पष्ट किया गया है। त्रिभाषा सूत्र के रूप में हिन्दी का पाठ्यक्रम में स्थान तथा विद्यालयी स्तर पर हिन्दी भाषा की पाठ्यचर्या का विस्तार पूर्वक वर्णन दिया किया गया है।

इकाई – 1 : हिन्दी भाषा की प्रकृति और प्रकार्य

इकाई की संरचना

1.1 प्रस्तावना
1.2 इकाई के उद्देश्य
1.3 भाषा का अर्थ एवं विशेषताएँ
- 1.3.1 विचार विनिमय एवं सामाजिक क्रिया–कलाप का साधन
- 1.3.2 भाषा जनजीवन एवं संस्कृति की पहचान का आधार
- 1.3.3 भाषा व्यक्तित्व विकास में सहायक
- 1.3.4 भाषा साहित्य सृजन में सहायक
- 1.3.5 भाषा विचार प्रकट करने का साधन

1.4 हिन्दी भाषा की प्रकृति
- 1.4.1 भाषा वाक् प्रधान ध्वनि समष्टि है
- 1.4.2 भाषा एक व्यवस्था है
- 1.4.3 भाषा प्रतीकों की व्यवस्था है
- 1.4.4 प्रतीक मौखिक तथा वाचिक होते हैं
- 1.4.5 भाषा यादृच्छिक ध्वनि प्रतीकों की सार्थक व्यवस्था है
- 1.4.6 भाषा सामाजिकता के विकास का आधार है
- 1.4.7. भाषा अर्जित सम्पत्ति है
- 1.4.8 भाषा अनुकरणशील प्रक्रिया है
- 1.4.9 भाषा सतत् परिवर्तनशील है
- 1.4.10 भाषा का कोई अन्तिम रूप नहीं
- 1.4.11 भाषा का एक मानक रूप होता है

1.5 हिन्दी भाषा के प्रकार्य
- 1.5.1 अभिव्यक्ति
- 1.5.2 सामाजिक और सांस्कृतिक अन्तःक्रिया
- 1.5.3 सृजनात्मकता

1.6 सारांश
1.7 अभ्यास के प्रश्न
1.8 चर्चा के बिन्दु
1.9 बोध प्रश्नों के उत्तर
1.10 कुछ उपयोगी पुस्तकें

1.1 प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई प्रथम खण्ड की प्रथम इकाई है। इसके अन्तर्गत भाषा के अर्थ, हिन्दी भाषा की प्रकृति, उसकी विशेषताओं तथा प्रकार्यों के बारे में चर्चा की गयी है।

भाषा का शिक्षण हमारे लिए अधिक महत्वपूर्ण है। अन्य विषयों का ज्ञान हमें भाषा द्वारा ही प्राप्त होता है। भाषा के द्वारा ही बालक अपने संवेगों पर नियंत्रण प्राप्त करना सीखता है और उसमें समुचित रुचियों और अभिवृत्तियों का विकास होता है। इस प्रकार भाषा हमारे व्यक्तित्व के विकास में सहायक होती है। भाषा के माध्यम से ही व्यक्ति अपने सृजनशील विचारों को साहित्य सृजन के माध्यम से समाज के समक्ष प्रस्तुत करता है।

अतः यह जानना आवश्यक होगा कि भाषा क्या है, हिन्दी भाषा की प्रकृति क्या है, विशेषताएँ क्या हैं तथा हिन्दी भाषा के प्रकार्य क्या हैं। इस इकाई में इन्हीं बातों पर चर्चा की गयी है।

1.2 इकाई के उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के उपरान्त आप इस योग्य हो जायेंगे कि–

1. हिन्दी भाषा की प्रकृति और इसके वैज्ञानिक स्वरूप से अवगत होकर उसका अपने शब्दों में उल्लेख कर सकेंगे।
2. हिन्दी भाषा को उसकी प्रकृति और स्वरुप के आधार पर परिभाषित कर सकेंगे।
3. भाषा के विभिन्न प्रकार्यों की हिन्दी भाषा शिक्षण में उपयोगिता बता सकेंगे।

1.3 भाषा का अर्थ एवं विशेषताएँ

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। मन के विचार एवं भाव व्यक्त करने के लिए भाषा एक साधन है। अन्य प्राणियों के पास अपने विचारों तथा भावों को बोलकर अभिव्यक्त कर सकने की क्षमता नहीं है। इस प्रकार भाषा मानव जीवन का आधार है। भाषा के कारण ही मानव सभ्यता एवं संस्कृति के विकास के विभिन्न पड़ावों को पार करता हुआ वर्तमान में विकास की नित नई ऊँचाईयों को छू रहा है। मनुष्य सभी प्राणियों में श्रेष्ठ है। उसकी श्रेष्ठता का प्रमुख कारण उसमें विभिन्न प्रकार की ध्वनियों को उत्पन्न कर सकने की योग्यता का होना है। वैज्ञानिकों के अनुसार मनुष्य में प्राकृतिक रूप से ही ऐसी शारीरिक एवं मानसिक क्षमताएँ मौजूद हैं। भाषा का निर्माण और विकास मानव द्वारा व्यक्त किए जाने वाले विभिन्न ध्वनियों एवं संकेतों के द्वारा क्रमशः हुआ है। भाषा विकास के कारण ही मनुष्य उत्तरोत्तर विकास करता हुआ सामाजिक प्राणी के रुप में अपने आपको विकसित कर सका। भाषा के बिना आज हम किसी मानवीय क्रिया कलाप की कल्पना नहीं कर सकते, शिक्षा भी उन्हीं क्रिया–कलापों में से एक है। इस रुप में भाषा शिक्षण का विशेष महत्व है। प्रत्येक भाषा की अपनी प्रकृति और विशेषताएँ होती हैं। प्रमुख विशेषताएँ इस प्रकार हैं–

1.3.1 विचार विनिमय एवं समाजिक क्रियाकलाप का साधन

भाषा ही वह साधन है जिसके द्वारा मनुष्य अपने भावों, विचारों तथा इच्छाओं को प्रकट करता है और दूसरे के भावों तथा विचारों को ग्रहण करता है। इस प्रकार भाषा परस्पर विचार विनिमय एवं सामाजिक क्रियाकलाप का साधन है। मानव का एक दूसरे से समस्त व्यवहार कुशल सम्प्रेषण पर निर्भर करता है। दूसरे शब्दों में कह सकते हैं कि व्यक्ति की सफलता उसके भाषा सम्प्रेषण के कौशल पर निर्भर करती है। भाषा शिक्षण का उद्देश्य भी मनुष्य में चार कौशलों–श्रवण, वाचन, पठन तथा लेखन का विकास करना है।

1.3.2 भाषा जीवन एवं संस्कृति की पहचान का आधार

प्रत्येक व्यक्ति अपनी मातृभाषा को अनुकरण के द्वारा बड़ी सहजता के साथ सीख लेता है चाहे वह कितनी ही कठिन क्यों न हो। उसे अपनी मातृभाषा से अत्यन्त लगाव होता है। विचार विनिमय और सामाजिक क्रिया–कलाप का आधार भाषा है। किसी भी देश के निवासियों का खान–पान, रहन–सहन, वेशभूषा वहाँ की भाषा को प्रभावित करता है। इन सभी से मिलकर संस्कृति का निर्माण होता है। इस प्रकार हम पाते हैं कि किसी भी देश की भाषा का वहाँ की संस्कृति से अत्यन्त घनिष्ठ सम्बन्ध होता है।

1.3.3 भाषा व्यक्तित्व विकास में सहायक

भाषा मनुष्य के व्यक्तित्व को परिष्कृत कर उसे प्रभावशाली बनाती हैं। भाषा में निपुणता प्राप्त करके व्यक्ति सम्प्रेषण कुशल बनकर अपने व्यक्तित्व को प्रभावशाली बनाता है। इस प्रकार भाषा मनुष्य के व्यक्तित्व विकास में सहायक होती हैं।

1.3.4 भाषा साहित्य सृजन में सहायक

साहित्य से ही किसी समाज और संस्कृति का मापन किया जाता है। जिस समाज और राष्ट्र का साहित्य उन्नत होता है वहाँ का सामाजिक जीवन भी उज्जवल होता है। साहित्य से ही अतीत का परिचय भी मिलता है।

1.3.4 भाषा विचार प्रकट करने का साधन

भाषा विचारों को जन्म देती है। मन में जो विचार उत्पन्न होता है वह भाषा के ही रूप में होता है। विचारों का विशेष महत्व होता है। इन्हीं विचारों से समाज में नवीन विचारों और आविष्कारों का जन्म होता है जो समाज और राष्ट्र के विकास में सहायक होता है। व्यक्ति भाषा के माध्यम से सरलता के साथ अपने विचारों, भावों, आकांक्षाओं को दूसरे के समक्ष प्रकट कर देता है।

बोध प्रश्न

टिप्पणी :

क) नीचे दिए गए बोध प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

ख) इकाई के अंत में दिए गए बोध प्रश्नों के उत्तर से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1. भाषा के अर्थ को दो पंक्तियों में स्पष्ट करें।

....

....

2. भाषा व्यक्ति के व्यक्तित्व विकास में किस प्रकार सहायता करती है? संक्षेप में स्पष्ट करें।

....

....

1.4 हिन्दी भाषा की प्रकृति

भाषा के अपने गुण या स्वाभाव होते हैं जिनको भाषा की प्रकृति कहते हैं। भारत एक प्राचीन देश है। संस्कृत इस देश की सर्वाधिक प्राचीन भाषा है। संस्कृत के 'भाष्' धातु से भाषा शब्द का निर्माण हुआ है, जिसका अर्थ होता है बोलना अर्थात अपने विचारों अथवा भावों को बोलकर प्रकट करना। भाषा भाव प्रकाशन का एक माध्यम है। जब भाषा का विकास नहीं हुआ था उस समय मानव अपने विचारों तथा भावों को ध्वनियों एवं संकेतों के द्वारा प्रकट करता था। कालान्तर में मनुष्य ने भावाभिव्यक्ति का साधन ध्वनियों को बनाया। इस प्रकार मनुष्य के ध्वनि अवयवों से निःसृत ध्वनियाँ ही भाषा के अन्तर्गत आती हैं। ध्वनियाँ सार्थक होनी चाहिए जिससे उनका विश्लेषण एवं अध्ययन हो सके। निरर्थक ध्वनियाँ भाषा के अन्तर्गत नहीं आती हैं। ध्वनि संकेतों के प्रयोग के साथ मुखमुद्रा, हस्त संचालन का स्वाभाविक प्रयोग भाषा को अर्थवान बनाता है। डॉ0 भोलानाथ तिवारी ने भाषा में अन्तर्भूत सभी लक्षणों को ध्यान में रखते हुए भाषा को इस प्रकार परिभाषित किया है –''भाषा निश्चित प्रयत्न के फलस्वरूप मनुष्य के मुख से निःसृत वह सार्थक ध्वनि समष्टि है जिसका विश्वलेषण और अध्ययन हो सके।''

1.4.1 भाषा वाक् प्रधान ध्वनि–समष्टि है

ध्वनि शब्दों की आधारशिला है, जिसके बिना शब्द की कल्पना नहीं की जा सकती। ध्वनियों के आधार पर ही 'ध्वनि–चिह्नों' का निर्माण हुआ। ध्वनि चिह्न के लिखित रुप को वर्ण कहते हैं। मूलतः हिन्दी में 52 वर्ण हैं। जिनके उच्चारण में किसी दूसरे वर्ण की सहायता नहीं ली जाती उन्हें स्वर कहते हैं। स्वर ये हैं –अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ। व्यंजन वर्ण वे होते हैं जिनका उच्चारण स्वरों की सहायता से होता है। व्यंजन हैं– क, ख, ग, घ, ड़, च, छ, ज, झ, ञ, ट, ठ, ड, ढ, ण, त, थ, द, ध, न, प, फ, ब, भ, म, य, र, ल, व, श, ष, स, ह। संयुक्त व्यंजन–क्ष, त्र, ज्ञ, श्र,

द्विगुण व्यंजन–ड़, ढ़

अनुस्वार – (ं), विसर्ग– (ः)

1.4.2 भाषा एक व्यवस्था है

भाषा वाक्यों से बनती है, वाक्य शब्दों से और शब्द मूल ध्वनियों से बनते हैं। यह सभी भाषा के अंग कहे जाते हैं। व्याकरण में इन्हीं के अंग–प्रत्यंगों का अध्ययन विवेचन होता है। इस प्रकार प्रत्येक भाषा में एक व्यवस्था होती है, संघटन होता है और उसके कुछ नियम होते हैं। हिन्दी भाषा की वाक्य रचना में शब्दों का जो क्रम है वह अंग्रेजी के वाक्य रचना में नहीं होता है।

1.4.3 भाषा प्रतीकों की व्यवस्था है–

शब्दों से वाक्य बनते हैं और वाक्यों से भाषा का निर्माण होता है। शब्द ध्वनियों से बनते हैं। इस प्रकार भाषा में एक व्यवस्था होती है और इसके अन्तर्गत वाक्य रचना आदि सम्बन्धी उप व्यवस्थाएँ भी होती हैं। पहले विचार उत्पन्न होते हैं फिर शब्द प्रतीक बनते हैं। वास्तव में शब्द किसी न किसी वस्तु, भाव या विचार के प्रतीक होते हैं। परम्परागत प्रचलन के कारण प्रतीक सम्बन्धित भाषायी समुदाय में सहजता से बोधगम्य हो जाते हैं कि प्रतीक मात्र को सुनते ही सुनने वाले के समक्ष तत्सम्बन्धी वस्तु का चित्र उपस्थित हो जाता है और वह वैसा कार्य तत्काल करता है। ध्वनियों के आधार पर ही ध्वनि चिह्नों का निर्माण हुआ है। डॉ0 बाबू राम सक्सेना के अनुसारः ''जिन ध्वनि चिह्नों द्वारा मनुष्य परस्पर विचार–विनिमय करता है उसको समष्टि रुप से भाषा कहते हैं।''

1.4.4 प्रतीक मौखिक तथा वाचिक होते हैं–

प्रतीक मनुष्य के मुख्य से निःसृत ध्वनि समूहों से निर्मित होते हैं। प्रतीक तीन प्रकार के हो सकते हैं जैसे–स्पर्शग्राह्य, नेत्रग्राह्य और श्रोत्रग्राह्य। इनमें से मात्र श्रोत्रग्राह्य प्रतीक को ही भाषा की संज्ञा प्रदान की जाती है।

1.4.5 भाषा यादृच्छिक ध्वनि प्रतीकों की सार्थक व्यवस्था है–

इस प्रकार मनुष्य के उच्चारणावयवों से निःसृत ध्वनि समाष्टि को ही भाषा कहा जाता है। भाषा के लिखित रुप मौखिक प्रतीकों का ही प्रतिनिधित्व करते हैं। यह लिखित रुप पुनः पठन के बाद श्रवण प्रक्रिया के द्वारा मौखिक एवं श्रोतग्राह्य बन जाता है। भाषा का उच्चारित रुप ही उसका मूलरूप है। इनसाइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका के अनुसार–

''भाषा यादृच्छिक ध्वनि चिह्नों की उस व्यवस्था को कहते हैं जिसके माध्यम से प्रत्येक मनुष्य समाज और संस्कृति के सदस्य होने के नाते पारस्परिक विचार–विनिमय किया करते हैं।''

1.4.6 भाषा सामाजिकता के विकास का आधार है

भाषा द्वारा व्यक्ति में सामाजिकता आती है। भाषा के द्वारा ही वह एक दूसरे के विचारों से परिचित होकर परस्पर सम्पर्क करता है और आपस में संगठित होकर सामाजिक विकास करता है। भाषा एक सामाजिक प्रक्रिया है। संभवतः सामाजिक विचार–विनिमय की आवश्यकता ने ही भाषा को जन्म दिया। सामाजिक सहयोग का आधार भाषा ही है। भाषा के बगैर हम समाज में विविध क्रियाकलाप नहीं कर सकते। सामाजिक परिस्थितियाँ भाषा के स्वरूप को निर्धारित करती हैं और उसमें परिवर्तन लाती हैं।

1.4.7 भाषा अर्जित सम्पत्ति है

भाषा व्यक्ति अपने माता–पिता से तथा सम्पर्क में आने वाले अन्य लोगों से सरलता से सीख लेता है। चाहे वह कितनी ही कठिन क्यों न हो। वह इसी भाषा में सोचता और विचारता है तथा अपने विचारों को प्रकट करता है। इस प्रकार भाषा अर्जित की जाती है। हम अपनी मातृभाषा के अतिरिक्त भी अन्य भाषा सीख सकते हैं।

1.4.8 भाषा अनुकरणशील प्रक्रिया है

भाषा अनुकरण द्वारा सीखी जाती है। प्रत्येक व्यक्ति की अपनी एक मातृभाषा होती है। बालक अपने माता–पिता तथा परिवार के अन्य सदस्यों का अनुकरण करके भाषा सीख जाता है। अनुकरण करना मानव स्वाभाव है जो जन्मजात होती है। जिन भाषा भाषियों के बीच बालक का लालन–पालन होता है, उसी भाषा को वह सीख लेता है। इस प्रकार परिवार के साथ–साथ वातावरण से भी बालक भाषा का अर्जन करता है।

1.4.9 भाषा सतत् परिवर्तनशील है

भाषा में देशकाल एवं परिस्थिति के अनुसार समय–समय पर परिवर्तन होते रहते हैं। भाषा एक अनुकरणशील प्रक्रिया है। अन्य भाषा भाषी जब सम्पर्क भाषा का प्रयोग करते हैं उनकी अपनी भाषा का प्रभाव दूसरी भाषा पर आवश्यक रूप से पड़ता है।

भाषायी परिवर्तन, ध्वनियों, शब्दों तथा वाक्य रचना सभी पर हो सकता है किन्तु यह परिवर्तन इतना धीरे–धीरे होता है कि एक लम्बे समय के बाद उसमें परिवर्तन दृष्टिगोचर होता है। यदि हम आज के हिन्दी साहित्य की तुलना 50 वर्ष पूर्व के हिन्दी साहित्य से करें तो हम इन परिवर्तनों को देख सकते हैं। इस प्रकार भाषा की प्रकृति परिवर्तनशील होती है।

1.4.10 भाषा का कोई अन्तिम रुप नहीं

भाषा का प्रकृति निरन्तर परिवर्तनशील है। यही कारण है कि उसका कोई अन्तिम रुप नहीं है। बोलचाल की भाषाओं अथवा जीवित भाषाओं में परिवर्तन होता रहता है। उसकी अभिव्यक्ति के रूप और कार्य में बदलाव होता रहता है। यह भाषा की परिवर्तनशीलता की पहचान है।

1.4.11 भाषा का एक मानक रूप होता है

यद्यपि भाषा में परिवर्तन होता रहता है और प्रयोग के आधार पर एक ही भाषा में अनेक विभिन्नताएँ पायी जाती है फिर भी भाषा का एक मानक रुप होता है। भौगोलिक विविधता के कारण भाषा के प्रयोग में विभिन्नता का पाया जाना स्वाभाविक है किन्तु भाषा का एक मानक रुप होता है जो सर्वमान्य होता है। हिन्दी देश के एक विशाल भू–भाग पर बोली जाने वाली भाषा है जिसके कारण स्थानीय प्रभाव से ध्वनियों के उच्चारण, शब्द एवं वाक्य रचना आदि में अन्तर पाया जाता है। भाषा शिक्षण की दृष्टि से सदैव मानक रुप का ही प्रयोग किया जाना चाहिए।

बोध प्रश्न

टिप्पणी :

क) नीचे दिए गए बोध प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

ख) इकाई के अंत में दिए गए बोध प्रश्नों के उत्तर से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

3. भाषा सामाजिक क्रिया कलाप में किस प्रकार सहायक होती है? संक्षेप में स्पष्ट करें।

....

....

4. भाषा की परिवर्तनशीलता के कारणों पर संक्षेप में प्रकाश डालिए।

....

....

1.5 हिन्दी भाषा के प्रकार्य

भाषा मनुष्य को प्रकृति का वरदान है। अन्य प्राणी पशु–पक्षी अपने विचारों, भावनाओं को बोलकर नही व्यक्त कर सकते हैं। प्रकृति ने यह शक्ति केवल मनुष्य को प्रदान की है। अतः मनुष्य सर्वश्रेष्ठ प्राणी है। जिस रूप में भाषा मनुष्य के लिए सहायक होती है इन्हीं को हम भाषा के प्रकार्य कहते हैं।

1.5.1 अभिव्यक्ति

भाषा भाव प्रकाशन का प्रमुख साधन है। मन में जो विचार उत्पन्न होते हैं उन विचारों को वह समाज के अन्य सदस्यों के समक्ष वह प्रकट करना चाहता हैं। आत्माभिव्यक्ति की यह स्वाभाविक प्रवृत्ति ही मनुष्य को भाषा सीखने को प्रेरित करती है। शिशु लोगों के मुख्य से निःसृत ध्वनि–संकेतों को सुनता है और उसकी पहचान करने लगता है। इन्हीं ध्वनि संकेतों के द्वारा वह नयी शब्दावलियों को सीखता है और उसके अनुसार कार्य करने का प्रयास करता है। मनुष्य की यह अभिव्यक्ति सांवेगिक, भावात्मक एवं वैचारिक रूपों में दृष्टिगत होती है जिनका वर्णन निम्नवत है–

(क) संवेगात्मक अभिव्यक्ति

प्रत्येक मनुष्य में कुछ जन्मजात मूल प्रवृत्तियाँ विद्यमान होती हैं। अपनी इन्हीं जन्मजात मूल प्रवृत्तियों के आधार पर वाह्य परिस्थितियों के साथ अनुक्रिया प्रदर्शित करते हैं। जब बालक को अपनी मनपसन्द अथवा इच्छित वस्तु नहीं मिलती तो वह रोता और चिल्लाता है। इसी प्रकार जब उसे मनवांछित वस्तु प्राप्त हो जाती है तो वह हर्ष और आनन्द का अनुभव करता है। रोना, क्रोध करना, हर्ष और आनन्द संवेग कहलाते हैं। मानसिक वृद्धि के साथ–साथ बालक इन संवेगों पर नियंत्रण प्राप्त करना सीख जाता है। बालक के अन्दर स्वस्थ संवेगों के विकास में पाठ्य सहगामी क्रियाएँ सहायक होती हैं। बालक को संवेगात्मक अभिव्यक्ति का अवसर विद्यालय में होने वाली पाठ्य सहगामी क्रियाओं में प्राप्त होता है।

बालक के विकास में संवेगों का विशेष महत्व होता है। स्वस्थ संवेगात्मक विकास बालक को रचनात्मकता और सृजनशीलता की ओर ले जाता है।

(ख) भावात्मक अभिव्यक्ति

भाषा भावात्मक अभिव्यक्ति का माध्यम है। संवेगात्मक अनुभूति के फलस्वरूप भावों का जन्म होता है। भावात्मक भाषा का उदात्त रूप साहित्य और ललितकला के रुप में विकसित होता है। भावात्मक साहित्य बालक के नैतिक विकास में सहायक होता है। महापुरुषों के जीवन चरित्र से प्रेरणा पाकर उनमें नैतिक एवं चारित्रिक गुणों का विकास होता है।

(ग) वैचारिक अभिव्यक्ति

भाषा विचारों को जन्म देती है। मनुष्य जो भी कार्य करता है सोच विचार कर करता है। इसी को मनुष्य की चिन्तन शक्ति कहते हैं। चिन्तन एक जटिल मानसिक प्रक्रिया है जिसमें पुराने अनुभवों के आधार पर विश्लेषण करते हुए भविष्य के बारे में सोचा जाता है और एक निश्चित निष्कर्ष पर पहुँचा जाता है। इस प्रक्रिया को

प्रत्यात्मक चिन्तन की संज्ञा दी जाती है। प्रत्यय संवेदना और प्रत्यक्षीकरण के आधार पर निर्मित होते हैं। यह प्रक्रिया इस प्रकार कार्य करती है– प्रत्यय निर्माण→ विश्लेषण→ संश्लेषण→ वर्गीकरण→ नामकरण

प्रत्यय निर्माण के साथ ही बच्चों में भाषा ज्ञान का विकास होने लगता है। तीन से चार वर्ष की आयु में बालक सरल वाक्यों का प्रयोग करने लगता है। बालक के मानसिक विकास के साथ साथ वैचारिक अभिव्यक्ति का भी विकास होता है।

1.5.2 सामाजिक एवं सांस्कृतिक अन्तःक्रिया

ब्लाक तथा ट्रेगर के अनुसार – भाषा एक सांस्कृतिक तत्व है। समाज के क्रिया कलापों से ही संस्कृति का निर्माण होता है। भाषा समस्त सांस्कृतिक क्रिया कलापों का आधार है। किसी भी समाज की विशेषताओं का अध्ययन करने के लिए उस समाज की भाषा का अध्ययन आवश्यक है।'' इस प्रकार भाषा संस्कृति का एक अभिन्न अंग होती है।

1.5.3 सृजनात्मकता

प्रायः प्रत्येक व्यक्ति सृजनशील होता हैं सृजनात्मकता के लिए उच्च बौद्धिक क्षमता का होना आवश्यक नहीं है। सामान्य बुद्धि का बालक भी विशिष्ट क्षेत्र में सृजनात्मकता प्रदर्शित कर सकता है। सृजनात्मकता का विकास बाल्यावस्था से ही प्रारम्भ हो जाता है। गेटजेल एवं जैक्सन के अनुसार–बालकों में सृजनात्मकता का विकास उनकी संस्कृति, शिक्षक और मित्रों के मूल्यों की अन्तः क्रिया के कारण होता है।'' सृजनात्मक योग्यता वाले बालक अपने विचारों से दूसरे को सरलता से प्रभावित कर लेते हैं। शिक्षक बच्चों के कल्पनात्मक एवं असाधारण विचारों के प्रस्फुटन हेतु समुचित अवसर प्रदान करें। शिक्षक को चाहिए कि वह इसके लिए विद्यालय में लिखित भाषा, गीत, संगीत, कला के प्रति ध्यान दें तथा कविता, कहानी आदि लिखने के लिए प्रोत्साहित करें जिससे बालकों को अपनी प्रतिभा दिखाने का अवसर मिलेगा। सृजनात्मक रचना में बालक की मौलिकता एवं कल्पना शक्ति दिखायी देती है।

बोध प्रश्न

टिप्पणी :

क) नीचे दिए गए बोध प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

ख) इकाई के अंत में दिए गए बोध प्रश्नों के उत्तर से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

5. निम्नलिखित कथनों में से सही कथन के समक्ष (✓) का तथा गलत कथन के समक्ष (✗) का चिह्न लगाएँ।

   क. संवेगों की अभिव्यक्ति का प्रमुख साधन भाषा है। ( )

ख. किसी समाज की विशेषताओं का ज्ञान उसकी भाषा से होता है। (   )

ग. बालक के व्यक्तित्व विकास में संवेगों का विशेष महत्व होता है। (   )

घ. संवेदना और प्रत्यक्षीकरण के आधार पर प्रत्यय निर्माण होता है। (   )

1.6 सारांश

भाषा मानव को ईश्वर का अनोखा वरदान है। मानव की मुख संरचना इस प्रकार है कि वह विभिन्न प्रकार की ध्वनियाँ उत्पन्न कर सकने में समर्थ है। ध्वनि शब्दों की आधार शिला है। शब्द से वाक्यों का निर्माण होता है। इस प्रकार मनुष्य अपने विचारों, भावनाओं को व्यक्त करने की क्षमता प्राप्त कर लेता हैं। मन में जो विचार उत्पन्न होते हैं वह भाषा का ही रूप होता है। इन्हीं विचारों से समाज में आविष्कारों का जन्म होता है। भाषा सामाजिक अन्तःक्रिया और विचारों के आदान–प्रदान का जरिया है। भाषा के लिखित रुप मौखिक प्रतीकों का प्रतिनिधित्व करते हैं जिसके द्वारा मनुष्य अपने भाषायी समूह में परस्पर विचार विनिमय किया करते हैं। इस प्रकार सामाजिक विचार विनिमय की आवश्कयता ने ही भाषा को जन्म दिया है। भाषा सामाजिकता के विकास का आधार है। भाषा अर्जित सम्पत्ति है। अनुकरणशील प्रक्रिया है। सामाजिक सहयोग का आधार भाषा है। जनजीवन एवं संस्कृति की पहचान भाषा है। भाषा किसी समाज और संस्कृति के विकास में सहायता प्रदान करती है। भाषा में देशकाल और परिस्थिति के अनुसार समय–समय पर परिवर्तन होता रहता है। इस प्रकार भाषा का कोई अन्तिम रुप नहीं होता है किन्तु एक मानक रुप अवश्य होता है। भाषा के माध्यम से बालक अपने संवेगों पर नियंत्रण प्रापत करना सीखता है और उसमें समुचित रुचियों और अभिवृत्तियों का विकास होता है। भाषा मानव के सामाजिक व्यवहार एवं सहयोग को आधार प्रदान करती है। भाषा के द्वारा ही ज्ञान–विज्ञान और साहित्य का उत्तरोत्तर विकास हुआ है। अतः भाषा शिक्षण पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है।

1.7 अभ्यास के प्रश्न

1 भाषा की प्रकृति को स्पष्ट करते हुए उसकी विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।
2 भाषा किस प्रकार किसी देश के जनजीवन एवं संस्कृति की पहचान का आधार होती है।
3 बालक में सृजनात्मकता का विकास कैसे होता है। संक्षेप में स्पष्ट करें।

1.8 चर्चा के बिन्दु

1. व्यक्ति की सफलता में भाषा संप्रेषण कौशल की क्या भूमिका है? चर्चा कीजिए।
2. संवेगों के स्वस्थ विकास में पाठ्य सहगामी क्रियाओं की क्या भूमिका है? चर्चा कीजिए।

1.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

1. भाषा मनुष्य द्वारा मन के भावों एवं विचारों को दूसरे के समक्ष प्रकट करने का साधन है।
2. भाषा के द्वारा ही बालक अपने संवेगों पर नियंत्रण प्राप्त करना सीखता है। भाषा मनुष्य के व्यक्तित्व को परिष्कृत कर उसे प्रभावशाली बनाती है। भाषा पर अधिकार प्राप्त करके व्यक्ति संप्रेक्षण कौशल में दक्षता

प्राप्त कर अपने व्यक्तित्व को प्रभावशाली बनाता है। इस प्रकार भाषा मनुष्य के व्यक्तित्व विकास में सहायक होती है।

3. भाषा के द्वारा व्यक्ति दूसरे के विचारों से परिचित होता है और परस्पर सम्पर्क करता है। समाजिक सहयोग का आधार भाषा है। भाषा के बगैर हम सामाजिक क्रियाकलाप की कल्पना नहीं कर सकते।
4. भाषा एक अनुकरणशील प्रक्रिया है। अन्य भाषाभाषी जब सम्पर्क भाषा का प्रयोग करते हैं तो उनकी अपनी भाषा का प्रभाव दूसरी भाषा पर अवश्य पड़ता है। यह परिवर्तन अत्यन्त धीमी गति से होता है जिससे एक लम्बे समय के बाद परिवर्तन दिखायी देता है। इस प्रकार भाषा परिवर्तनशील है।
5. (क) (✓)
   (ख) (✓)
   (ग) (✓)
   (घ) (✓)

1.10 कुछ उपयोगी पुस्तकें

1. अनुरागी, अजय : हिन्दी शिक्षण, श्याम प्रकाशन, जयपुर।
2. दूबे, सत्यनारायण : हिन्दी शिक्षण, अनुभव पब्लिशिंग हाउस, इलाहाबाद।
3. प्रसाद, वासुदेव नन्दन : आधुनिक हिन्दी व्याकरण और रचना, भारती भवन पटना।
4. भार्गव, महेश : विशिष्ट बालक, एच. पी. भार्गव बुक हाउस, आगरा।
5. शर्मा, प्रीतम प्रसाद, गुप्ता, महेश चन्द्र : हिन्दी शिक्षण, साहित्यागार, जयपुर।
6. सिंह, निरंजन : माध्यमिक विद्यालयों में हिन्दी शिक्षण, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।

इकाई – 2 : हिन्दी भाषा की अधिगम प्रक्रिया

इकाई की संरचना

2.1 प्रस्तावना
2.2 इकाई के उद्देश्य
2.3 भाषा अर्जन की प्रक्रिया
 2.3.1 प्रारम्भिक भाषा अवबोध
2.4 भाषा विकास का क्रम
 2.4.1 ध्वनियों की पहचान करना
 2.4.2 ध्वनियों को उत्पन्न करना
 2.4.3 शब्दों एवं वाक्यों का निर्माण करना
 2.4.4 लिखित भाषा का प्रयोग करना
 2.4.5 भाषा विकास की पूर्णावस्था
2.5 विभिन्न अवस्थाओं में भाषा विकास
 2.5.1 शैशवावस्था
 2.5.2 बाल्यावस्था
 2.5.3 किशोरावस्था
2.6 भाषा अधिगम प्रक्रिया
 2.6.1 भाषा अधिगम में सहायक युक्तियाँ
 2.6.2 भाषा अधिगम की विशेषताएँ
2.7 अधिगम के नियमों का भाषा शिक्षण में उपयोग
 2.7.1 तत्परता का नियम
 2.7.2 अभ्यास का नियम
 2.7.3 प्रभाव का नियम
2.8 भाषा अधिगम और भाषा शिक्षण
 2.8.1 हिन्दी भाषा शिक्षण के सामान्य सिद्धान्त
 2.8.2 शिक्षण सूत्र
2.9 सारांश
2.10 अभ्यास के प्रश्न
2.11 चर्चा के बिन्दु
2.12 बोध प्रश्नों के उत्तर
2.13 कुछ उपयोगी पुस्तकें

2.1 प्रस्तावना

शिशु जन्म से कोई भी भाषा सीखकर नहीं आता बल्कि वह अपने परिवार व वातावरण से भाषा सीखता है। शिशु अपने माता–पिता एवं सम्पर्क में रहने वाले अन्य लोगों की क्रियाओं एवं ध्वनियों को सुनता है और उसका अनुकरण करने का प्रयास करता है। ऐसा करते–करते धीरे–धीरे वह भाषा बोलना सीख जाता है। भाषा अर्जन की यह स्वतः प्रक्रिया दो वर्ष तक चलती रहती है। दो वर्ष की आयु पूर्ण करने के बाद शिशु छोटे–छोटे वाक्य दोहराने लगते हैं। तीन वर्ष की आयु पूरी होने पर अपने भाव अभिव्यक्त करने लगते हैं। इसके बाद भाषा शिक्षण का कार्य विद्यालयों में अधिगम प्रक्रिया के माध्यम से होता है। इस प्रकार हम देखते हैं कि भाषा सीखने का एक स्वाभाविक एवं मनोवैज्ञानिक क्रम होता है। मानसिक विकास के साथ–साथ भाषा सीखने की क्षमता में वृद्धि होती जाती है। प्रस्तुत इकाई में हम भाषा सीखने की इन्हीं प्रक्रियाओं के बारे में अध्ययन करेंगे।

2.2 इकाई के उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के उपरान्त आप इस योग्य हो जायेंगे कि–

1. भाषा सीखने की प्रक्रिया को समझ सकेंगे।
2. बालक के भाषा विकास के विभिन्न स्तरों में विभेद कर सकेंगे।
3. भाषा अर्जन भाषा अधिगम में अन्तर बता सकेंगे।
4. भाषा कौशल के महत्व को समझ सकेंगे।
5. भाषा शिक्षण के सामान्य सिद्धान्त एवं शिक्षण सूत्रों का अपने शिक्षण में प्रयोग कर सकेंगे।

2.3 भाषा अर्जन की प्रक्रिया

भाषा एक अर्जित सम्पत्ति है। भाषा अर्जन की यह प्रक्रिया कई चरणों में सम्पन्न होती है जिसमें बालक कुछ युक्तियों का प्रयोग करता है जो इस प्रकार हैं–

- स्वाभाविकता
- अनुकरण
- दोहराने की तीव्र प्रवृत्ति

स्वाभाविकता : भाषा सीखना मानव जीवन की एक स्वाभाविक प्रवृत्ति है। इस प्रवृत्ति के कारण ही बालक मातृभाषा सरलता से सीख जाता है। भाषा का प्रयोग विभिन्न संदर्भों में होता रहता है। बालक अपने परिवेश की भाषा और ध्वनि संकेतों को ध्यानपूर्वक सुनता और ग्रहण करता रहता है।

अनुकरण : बालक सुनी गयी भाषा और ध्वनि संकेतों की पहचान करने के बाद उनको बोलने का प्रयास करता है। धीरे–धीरे उनका अर्थ भी जानने लगता है।

दोहराने की तीव्र प्रवृत्ति : बालक सीखे गये भाषा सम्बन्धी विविध प्रयोगों को लगातार दोहराते रहते हैं। दोहराने की यह प्रवृत्ति बालक के सीखने में बड़ी सहायता करती है।

2.3.1 प्रारम्भिक भाषा अवबोध

बालक अपने माता–पिता तथा सम्पर्क में रहने वाले अन्य व्यक्तियों द्वारा प्रयोग किए जाने वाले शब्दों को सुनता है और सुने गए ध्वनि संकेतों को उच्चारित करने का प्रयास करता है। भाषा सीखने की यह प्रारम्भिक अवस्था है। लगभग दस माह की अवस्था में शिशु पहला शब्द बोलता है और उसे बार–बार दोहराता है। भाषा विकास की यह प्रारम्भिक अवस्था होती है। शैशवावस्था में भाषा विकास जिस ढंग से होता है, उस पर परिवार की सामाजिक–आर्थिक स्थिति और संस्कृति का विशेष प्रभाव पड़ता है। शिशु का प्रारम्भिक उच्चारण अशुद्ध होता है जिसे वह बार–बार प्रयास करके शुद्ध करने का प्रयास करता है। छोटे शिशु पानी के लिए 'मम' कहते हैं। वे इसी प्रकार एक शब्द से वाक्यों का बोध कराते हैं। अठारह माह की उम्र तक बालक का अवबोधात्मक विकास इतना हो जाता है कि वह दूसरों की बात समझकर उसके अनुसार व्यवहार करने लगता है।

आयु के साथ–साथ बालक के सीखने की गति में वुद्धि होती है। दो वर्ष के बाद बालक छोटे–छोटे वाक्यों को दोहराने लगता है और तीन वर्ष की आयु पूरी होने पर अपने भावों की अभिव्यक्ति करने लगता है। तीन से छः वर्ष की आयु भाषा सीखने की दृष्टि से सर्वाधिक महत्वपूर्ण होती है।

बोध प्रश्न

टिप्पणी :

क) नीचे दिए गए बोध प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

ख) इकाई के अंत में दिए गए बोध प्रश्नों के उत्तर से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1. भाषा अर्जन की विभिन्न युक्तियाँ कौन सी हैं?

   ....

   ....

2. शिशु के भाषा विकास पर किसका प्रभाव पड़ता हैं?

   ....

   ....

2.4 भाषा विकास का क्रम

शिशु जिन भाषा–भाषियों के बीच रहता है, उनकी भाषा को वह सीख लेता है। इस प्रकार भाषा अर्जित की जाती है। भाषा विकास का एक क्रम होता है जो इस प्रकार है–

2.4.1 ध्वनियों की पहचान करना

सर्वप्रथम शिशु अपने परिवार के सदस्यों के क्रियाओं और उनकी ध्वनियों को सुनता है और उनका अनुकरण करने का प्रयास करता है। जन्म से 6 माह के बाद वह ध्वनियों की पहचान करने लगता है।

2.4.2 ध्वनियों को उत्पन्न करना

शिशु ध्वनियों की पहचान करने के उपरान्त तत्सम्बन्धी ध्वनियों को उत्पन्न करने लगता है। लगभग आठ से दस माह के शिशु के समक्ष यदि ताली बजाकर कुछ बोला जाता है तो शिशु भी कुछ ध्वनि निकालने का प्रयास करता है।

2.4.3 शब्दों एवं वाक्यों का निर्माण करना

बालक लगभग दो वर्ष के उपरान्त शब्दों को स्पष्ट रूप से बोलने लगता है और तीन वर्ष की उम्र तक वह शब्दों की सहायता से छोटे–छोटे वाक्यों का निर्माण करके बोलने लगता है।

2.4.4 लिखित भाषा का प्रयोग करना

बालक चार वर्ष की उम्र के आसपास शब्दों एवं वाक्यों को बोलने के साथ–साथ उसको लिखना भी सीख जाता है। बार–बार अभ्यास के द्वारा उसमें सुधार आता है।

2.4.5 भाषा विकास की पूर्णावस्था

जैसे–जैसे बालक का शारीरिक और मानसिक विकास होता जाता है वैसे–वैसे उसके सुनने, बोलने और लिखने सम्बन्धी भाषाई योग्यता का विकास होता जाता है। दस वर्ष के आसपास बालकों में सुनने, बोलने, पढ़ने और लिखने की पूर्ण योग्यता आ जाती है।

बोध प्रश्न

टिप्पणी :

क) नीचे दिए गए बोध प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

ख) इकाई के अंत में दिए गए बोध प्रश्नों के उत्तर से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

3. भाषा विकास के क्रम को स्पष्ट करें।

....

....

4. शिशु ध्वनियों की पहचान किस उम्र में करने लगता है?

....

....

5. बालक में लिखने की योग्यता का विकास कब में हो जाता है?

....

....

2.5 विभिन्न अवस्थाओं में भाषा विकास

भाषा सीखने की प्रक्रिया चाहे शैशवावस्था हो अथवा बाद की अवस्था हो, एक ही है। वह है भाषा को सुनने और बोलने का अवसर मिलना। शिशु अपने माता–पिता आदि से भाषा को सुनने और सुने हुए ध्वनि संकेतों को उच्चारित करने का प्रयास करता है। इस प्रकार वह अपनी मातृभाषा को सीख लेता है चाहे वह कितनी भी कठिन क्यों न हो।

2.5.1 शैशवावस्था

जन्म के समय शिशु केवल रोता है। शायद यही उसकी प्रथम भाषा होती है। दस मास की अवस्था में शिशु प्रथम शब्द बोलता है और उसे बार–बार दोहराता है। एक वर्ष तक शिशु की भाषा को समझना अत्यन्त कठिन होता है। केवल अनुमान से उसकी भाषा समझी जा सकती है। शैशवावस्था में भाषा विकास का क्रम सामान्यतः इस प्रकार होता है–

आयु	शब्द
0–8 माह	0
10 माह	1
1 वर्ष	3
1 से 1.5 वर्ष	22
2 वर्ष	212
4 वर्ष	1550
5–6 वर्ष	2562

दो वर्ष की आयु पूरी करने के बाद शिशु छोटे–छोटे वाक्य दोहराने लगता है। तीन वर्ष का बालक भाव को अभिव्यक्त करने लगता है।

2.5.2 बाल्यावस्था

आयु वृद्धि के साथ–साथ बालकों के सीखने की गति में वृद्धि होती जाती है किन्तु प्रत्येक आयु में वाक्य के प्रकार में व्यक्तिगत भिन्नता दृष्टिगोचर होती है। लड़कियों की भाषा का विकास लड़कों की अपेक्षा अधिक तीव्र

गति से होता है और उनके वाक्यों में शब्द संख्या अधिक होती हैं। बालक के भाषाई विकास में उसके माता–पिता की सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि का भी प्रभाव पड़ता है। वस्तुओं को देखकर उसका प्रत्यय ज्ञान उसे हो जाता है। साथ ही उनमें चिन्तन, तर्क, विश्लेषण, संश्लेषण तथा समस्या समाधान योग्यताओं का विकास होता है। प्रत्यय ज्ञान मूर्त से अमूर्त की ओर विकसित होता है। इसी प्रकार भाषा का ज्ञान भी मूर्त से अमूर्त की ओर होता है। अमूर्त प्रत्यय संवेदना एवं प्रत्यक्षीकरण के आधार पर निर्मित होता है। जैसे– मिठास, सुगन्ध, तीखापन, मधुरता आदि। सीखने की प्रथम सीढ़ी संवेदना दूसरी प्रत्यक्षीकरण तीसरी सीढ़ी प्रत्यय ज्ञान होता है।

इस प्रकार बालक अपने शब्द भण्डार बढ़ाने के साथ–साथ पुराने शब्दों के अर्थ भी जानने लगता है। और उसकी बोध क्षमता में वृद्धि होती जाती है।

2.5.3 किशोरावस्था

किशोरावस्था में किशोर अधिक संवेदनशील होते हैं। उनमें प्रेम, भय, चिन्ता, क्रोध तथा ईर्ष्या आदि संवेग तीव्र होते हैं। भाषा का विकास भी उससे प्रभावित होता है। इस अवस्था में उनमें, ध्यान, स्मरण, कल्पना, चिन्तन, तर्क, विश्लेषण, संश्लेषण की क्षमता का पूर्ण विकास हो जाता है। अमूर्त चिन्तन का पूर्ण विकास होने के साथ उनमें समस्या समाधान की योग्यता बढ़ जाती हैं। प्रत्यय निर्माण की क्षमता में वृद्धि होने के साथ उनमें कल्पनाशक्ति का विकास होता है जिसे वे कविता, कहानी तथा चित्र के माध्यम से अभिव्यक्त करते हैं। कविताओं में भावुकता दिखायी देती है। किशोरो के शब्द भण्डार में वृद्धि होती है। वह भाषा के माध्यम से अनुपस्थित परिस्थिति का भी वर्णन करने लगता है। भाषा का प्रयोग किस प्रकार किया जाये इसका ज्ञान उसे हो जाता है।

बोध प्रश्न

टिप्पणी :

क) नीचे दिए गए बोध प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

ख) इकाई के अंत में दिए गए बोध प्रश्नों के उत्तर से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

6. बालक में अमूर्त प्रत्यय का विकास किस आधार पर होता है? स्पष्ट करें।

   ....

   ....

7. किशोर में कल्पना शक्ति का विकास किस रूप में दिखाई देता है?

   ....

   ....

2.6 भाषा अधिगम प्रक्रिया

अधिगम का अर्थ होता है सीखना अथवा व्यवहार परिवर्तन। मनुष्य अपने अनुभवों के आधार पर नवीन तथ्यों को ग्रहण करता है और नई क्रियाओं को करना सीखता है। अनुभवों के परिणामस्वरूप मनुष्य के व्यवहार में हुए परिवर्तन को ही अधिगम कहते हैं। मनुष्य जन्म से ही कुछ मूल प्रवृत्यात्मक व्यवहार करता है जैसे– रोना, सांस लेना, देखना, सुनना आदि। इन्हें उसको सीखना नहीं पड़ता इन्हें अनर्जित कार्य कहते हैं किन्तु कुछ कार्यों को मनुष्य अपने परिवेश में रहकर सीखता है जिसे अर्जित कार्य कहते है। मनोवैज्ञानिक इन्हीं कार्यों के अर्जन की प्रक्रिया को अधिगम कहते हैं। मनोवैज्ञानिकों ने अधिगम को इस प्रकार परिभाषित किया है–

''प्रशिक्षण एवं अनुभव के द्वारा व्यवहार में होने वाले परिवर्तन को अधिगम कहते हैं।'' (गेट्स एवं अन्य)

''पहले से निर्मित व्यवहार में अनुभव द्वारा हुए परिवर्तन को अधिगम कहते हैं।''

(कॉलविन)

इस प्रकार अभ्यास और अनुभवों के द्वारा हुए व्यवहार परिवर्तन को सीखना कहते है। अधिगम के द्वारा बालक के ज्ञान और कौशल में वृद्धि होती है। अधिगम की उपरोक्त परिभाषाओं के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता है कि–

- ❖ अधिगम से बालक के व्यवहार में परिवर्तन आता है फलस्वरूप उसमें विभिन्न कौशलो, आदतों, अभिरूचियों एवं अभिवृत्तियों का विकास होता है।
- ❖ अभ्यास और अनुभूति के फलस्वरूप हुआ व्यवहार परिवर्तन स्थायी होता है।

2.6.1 भाषा अधिगम में सहायक युक्तियाँ

प्रारम्भ में बालक घर में अपने माता–पिता तथा परिवार के अन्य सदस्यों के सम्पर्क में रहकर मातृभाषा सीखता है। बालक के औपचारिक भाषा शिक्षण की शुरूआत विद्यालय में प्रवेश लेने के साथ होती है। भाषा अधिगम प्रक्रिया में अनेक नियमों एवं सिद्धान्तों के साथ–साथ अनेक युक्तियॉ भी सहायक होती हैं जो इस प्रकार हैं–

(क) अनुकूलन और पुनर्बलन

बालक अपनी प्रारम्भिक भाषा अनुकूलन के माध्यम से सीखता है। उसको यदि भूख लगती है तो वह इस बात को किसी ध्वनि अथवा संकेत के द्वारा दूसरों को बताने का प्रयास करता है। यदि उसको खाने की वस्तु प्राप्त हो जाती है तो उसको सुखद अनुभूति होती है जिससे उसे पुनर्बलन होगा और साहचर्य द्वारा शब्द और वस्तु का सम्बन्ध सुदृढ़ हो जाता है।

(ख) अनुकरण और अभ्यास

भाषा अधिगम की प्रक्रिया में अनुकरण का विशेष महत्व है। बालक सुनी गयी भाषा का अनुकरण करता है और उन्हें बोलने का प्रयास करता है। प्रारम्भ में वह सही ढंग से अनुकरण नहीं कर पाता किन्तु उन्हें बोलने का बार–बार प्रयास करता है और सफलता प्राप्त करता है।

(ग) सूझ या अन्तर्दृष्टि

प्रत्येक बालक में अन्तर्दृष्टि होती है। सूझ आयु एवं बुद्धि पर भी निर्भर करती है। अपने अन्तदृष्टि से वह सही एवं गलत शब्दों–वाक्यों में अन्तर करने में समर्थ होता है। बालक सूझ का प्रयोग भाषा अधिगम के प्रत्येक स्तर पर करता है। अधिगम प्रक्रिया के दौरान बालक को सीखने के लिए तत्पर करने हेतु उन्हें प्रोत्साहन की आवश्यकता होती है।

2.6.2 भाषा अधिगम की विशेषताएँ

अभ्यास और अनुभवों के द्वारा हुआ व्यवहार परिवर्तन अधिगम कहलाता है। अधिगम के द्वारा बालक के ज्ञान और कौशल में वृद्धि होती है। प्रारम्भ में बालक घर में रहकर अपने माता–पिता तथा परिवार के अन्य सदस्यों के द्वारा अनौपचारिक रूप से मातृभाषा सीखता है। बालक के औपचारिक भाषा अधिगम की शुरूआत विद्यालय में प्रवेश लेने के साथ होती हैं। औपचारिक भाषा अधिगम की कुछ विशेषताएँ होती हैं। भाषा शिक्षण के माध्यम से बालक में भाषा अधिगम की इन्हीं विशेषताओं का विकास किया जाता है जो इस प्रकार हैं–

1. भाषाई कुशलता का विकास

2. विभिन्न परिस्थितियों में भाषा का प्रयोग कर सकने की योग्यता का विकास।

3. भाषा के मानक रूप का ज्ञान एवं उसका प्रयोग कर सकने की योग्यता का विकास।

4. अच्छी भाषाई आदतों का विकास।

5. सांस्कृतिक समझ का विकास।

बोध प्रश्न

टिप्पणी :

क) नीचे दिए गए बोध प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

ख) इकाई के अंत में दिए गए बोध प्रश्नों के उत्तर से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

8. अधिगम प्रक्रिया में सहायक युक्तिया कौन–कौन सी है? संक्षेप में स्पष्ट करें।

....

....

9. अधिगम प्रक्रिया में अनुकरण का क्या महत्व है?

....

....

2.7 अधिगम के नियमों का भाषा शिक्षण में उपयोग

थार्नडाइक ने प्रयोगों के आधार पर सीखने के नियमों का प्रतिपादन किया जो आज भी अत्यधिक महत्वपूर्ण माने जाते हैं। थार्नडाइक द्वारा प्रतिपादित भाषा अधिगम या भाषा सीखने में उपयोग किये जाने वाले मुख्य नियम इस प्रकार हैं–

2.7.1 तत्परता का नियम

बालक जब किसी कार्य को करने के लिए तत्पर रहता है तो वह कार्य शीघ्र ही सीख लेता है। अतः शिक्षक को चाहिए कि वह बालक को भाषा अधिगम के लिए तत्पर करें यदि बालक भाषा अधिगम के लिए तत्पर होता है तो भाषा अधिगम शीघ्र होता है। तत्परता बालक को ध्यान केन्द्रित करने में सहायता देती है।

शिक्षकों को कक्षा में नवीन ज्ञान देने से पूर्व बालकों को सीखने के लिए मानसिक रूप से तैयार करना चाहिए। तत्परता के अभाव में बालक में खीझ उत्पन्न होती है और अधिगम प्रभावशाली नहीं होता है। पाठ्यवस्तु को बालक की अभिरुचि और क्षमता के अनुकूल भी होना चाहिए तभी वे सीखने के लिए तत्पर होंगे।

2.7.2 अभ्यास का नियम

जिस कार्य को हम बार–बार करते हैं उसके चिह्न मस्तिष्क में दृढ़ हो जाते हैं। बालक जब किसी विषय को बार–बार दोहराते हैं तो उसे सीख जाते हैं। सीखने के लिए अभ्यास के साथ समझ एवं सूझ की भी आवश्यकता होती है।

2.7.3 प्रभाव का नियम

सीखने का यह महत्वपूर्ण नियम है। प्रोत्साहन और प्रेरणा इस नियम के आधार हैं। शिक्षकों को चाहिए कि वे विद्यार्थियों को सीखने के लिए प्रेरित करें। अधिगम को स्थायी बनाने के लिए पुरस्कार तथा दण्ड की व्यवस्था होनी चाहिए। दण्ड की अपेक्षा पुरस्कार अधिक प्रभावकारी है। अतः दण्ड का प्रयोग न के बराबर करना चाहिए क्योंकि जिन कार्यों से बालक को असन्तोष मिलता है, उन्हें वह नहीं करना चाहता। वह उन्हीं कार्यों को करना चाहता है। जिससे उसे संतुष्टि मिलती है।

बोध प्रश्न

टिप्पणी :

क) नीचे दिए गए बोध प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

ख) इकाई के अंत में दिए गए बोध प्रश्नों के उत्तर से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

10. थार्नडाइक द्वारा प्रतिपादित अधिगम के मुख्य नियमों को बताइए।

....

....

11. अधिगम में पुरस्कार अथवा दण्ड किस प्रकार सहायक होता है? स्पष्ट करें।

....

....

2.8 भाषा अधिगम और भाषा शिक्षण

भाषा सीखने के चार महत्वपूर्ण कौशल–श्रवण, वाचन, पठन तथा लेखन हैं। भाषा अधिगम का यह स्वाभाविक और मनोवैज्ञानिक क्रम है। भाषा शिक्षण में इन भाषाई कौशलों का विशेष महत्व है। शैक्षिक प्रक्रिया का एक अंग शिक्षण है। शिक्षण प्रक्रिया के द्वारा विद्यार्थियों को इन्हीं भाषाई कौशलों के विकास तथा अधिगम में सहायता दी जाती है।

अतः प्रभावी भाषा अधिगम के लिए प्रभावी शिक्षण अत्यन्त आवश्यक है। इसके लिए भाषा शिक्षण के सामान्य सिद्धान्तों और शिक्षण–सूत्रों का प्रयोग सहायक होगा।

2.8.1 हिन्दी भाषा शिक्षण के सामान्य सिद्धान्त

भाषा शिक्षण करते समय भाषा शिक्षण के सामान्य सिद्धान्तों का प्रयोग भाषा अधिगम को सरल और बोधगम्य बनाता है। अतः भाषा शिक्षक को चाहिए कि वे इन सिद्धान्तों को ध्यान में रखकर शिक्षण कार्य करें।

(क) स्वाभाविकता का सिद्धान्त

भाषा सीखना मानव की एक स्वाभाविक प्रवृत्ति है। प्रारम्भ में बालक अपने परिवार एवं माता–पिता से भाषा सीखता है। विद्यालय में प्रवेश के साथ–साथ उसके सम्पर्क क्षेत्र में भी विस्तार होता है। वह अपने परिवेश में बोली जाने वाली भाषा एवं विद्यालय में सिखाई जाने वाली भाषाओं का भी अधिगम कर लेता है। भाषा सीखने का एक स्वाभाविक और मनोवैज्ञानिक क्रम है– सुनना, बोलना, पढ़ना और लिखना। भाषाई कौशलों के विकास का यह स्वाभाविक क्रम हिन्दी भाषा के शिक्षण में सहायक होता है। शिक्षण में हमें इसी क्रम को अपनाना चाहिए। इसके लिए अध्यापक को कक्षा में शुद्ध उच्चारण का अभ्यास कराना चाहिए। हिन्दी के बाल गीतों का सस्वर वाचन भी करवाया जाना चाहिए।

(ख) रुचि का सिद्धान्त

जिस विषय में छात्र की अधिक रुचि होगी उस विषय को पढ़ने के लिए वह उतना ही अधिक तत्पर होगा। हिन्दी भाषा सीखने में छात्र की रुचि उत्पन्न करने हेतु शिक्षक अनेक क्रियाओं एवं प्रसंगों का प्रयोग कर सकता है जैसे– श्रव्य–दृश्य उपकरणों का प्रयोग, नये पाठ को छात्रों के पूर्व ज्ञान से जोड़कर पढ़ाना अन्तःकथाओं और प्रसंगों द्वारा पाठ में विविधता लाकर उसे रोचक बनाना। पिन्सेट के अनुसार– ''जब तक छात्रों में सक्रिय रुचि न होगी तब तक शिक्षक का सर्वोत्तम कार्य नहीं होगा।'' इसलिए भाषा शिक्षक को अपने शिक्षण को रोचक बनाना होगा।

(ग) क्रियाशीलता का सिद्धान्त

बालक जब किसी कार्य को करके सीखने का प्रयास करता है तो उसे उस कार्य को करने में अधिक आनन्द आता है और उसे प्रभावशाली ढंग से सीख सकता है। क्रियाशीलता में अभ्यास निहित रहता है। शिक्षक को चाहिए कि वह बालकों को अभ्यास का निरन्तर अवसर प्रदान कर भाषा अध्ययन के प्रति जागरूक और सक्रिय बनाएं।

(घ) वैयक्तिक भिन्नता का सिद्धान्त

प्रत्येक बालक एक दूसरे से भिन्न होता है और उनकी भाषाई योग्यता भी एक समान नहीं होती है। बालकों की मानसिक योग्यता, उच्चारण तथा वाणी भाषा सीखने को प्रभावित करती है। भाषा शिक्षक को बालकों की वैयक्तिक भिन्नता को ध्यान में रखकर भाषा सीखने में सहायता करनी चाहिए।

(ड़) विभाजन का सिद्धान्त

शिक्षक को चाहिए कि वह विषयवस्तु को उसकी सरलता और कठिनाई के आधार पर इकाईयों में बाँटकर शिक्षण कार्य करे जिससे छात्र सहजता के साथ आगे की ओर सीखने के लिए बढ़ सकें।

(च) क्रम का सिद्धान्त

हिन्दी भाषा शिक्षण के विभिन्न उद्‌देश्यों को प्राप्त करने के लिए उन्हें क्रमानुसार रखा जाना चाहिए। जिस उद्‌देश्य की पूर्ति की आवश्यकता पहले हो उस पर पहले और जिसकी बाद में आवश्यकता हो उस पर बाद में बल देना चाहिए जिससे शिक्षण के उद्‌देश्यों को पूरा किया जा सके।

(छ) मौखिक कार्य का सिद्धान्त

बालक सर्वप्रथम भाषा को सुनता है तत्पश्चात् अनुकरण कर उसको बोलने का प्रयास करता है। भाषा का अवबोध उसको सुनने से ही होता है। अतः हिन्दी भाषा शिक्षण में भी मौखिक कार्य पर बल देना चाहिए। इसके लिए शिक्षक को कक्षा में छात्रों से अनुकरण वाचन, सामूहिक वाचन और कविता पाठ आदि कराना चाहिए। इससे भाषा अधिगम दृढ़ होता है।

2.8.2 शिक्षण सूत्र

शिक्षण के उपरोक्त सामान्य सिद्धान्तों के अतिरिक्त कुछ शिक्षण सूत्र भी हैं, जिनका प्रतिपादन शिक्षाशास्त्रियों ने अपने अनुभवों के आधार पर किया है। इन सूत्रों का उपयोग करके शिक्षक अपने शिक्षण कार्य को सुग्राह्य एवं सरल बनाता है। हिन्दी भाषा शिक्षण में निम्नलिखित शिक्षण सूत्रों का प्रयोग उपयोगी होगा :—

(क) ज्ञात से अज्ञात की ओर

इस सूत्र के आधार पर बालक के पूर्व ज्ञान के आधार पर उसको नवीन ज्ञान की ओर उन्मुख करना चाहिए। किसी पाठ की प्रस्तावना में इसका प्रयोग किए जाने से बालक को ज्ञात और अज्ञात के बीच क्या सम्बन्ध है इसकी जानकारी हो जाने से वह नवीन ज्ञान सीखने को तत्पर होता है।

(ख) मूर्त से अमूर्त की ओर

बालक में अमूर्त चिन्तन की योग्यता का पर्याप्त विकास न होने के कारण वह मूर्त वस्तुओं, तथ्यों को पहले सीखता है। इसलिए बालकों को पहले मूर्त वस्तुओं का ज्ञान कराना और उसके बाद अमूर्त अथवा सूक्ष्म तथ्यों का ज्ञान कराया जाना चाहिए।

(ग) सरल से जटिल की ओर

इस सूत्र से स्पष्ट है कि बालक को सर्वप्रथम सरल पाठ पढ़ाना चाहिए फिर क्रमशः कठिन पाठों को पढ़ाना चाहिए। सरल पाठों से अर्जित ज्ञान कठिन पाठों के ज्ञान का आधार बनता है जिससे कठिन पाठ भी सुग्राह्य हो जाता है।

(घ) पूर्ण से अंश की ओर

इस सूत्र के अनुसार बालक को सबसे पहले पूर्ण का ज्ञान होता है बाद में उसके अंश का। यह सूत्र अधिगम के 'गेस्टाल्ट' सिद्धान्त पर आधारित है जिसके अनुसार व्यक्ति किसी वस्तु को आंशिक रूप से से नही वरन पूर्ण रूप में सीखता है। कहानी शिक्षण में इस सूत्र का उपयोग लाभदायक है। कहानी पढ़ाते समय पहले सम्पूर्ण कहानी को संक्षेप में छात्रों को सुनाकर उसके बाद कहानी के कठिन भावों और शब्दों को समझाना चाहिए।

(ड़) विशिष्ट से सामान्य की ओर

बालक के समक्ष पहले उदाहरण प्रस्तुत करके स्पष्टीकरण दिया जाय और उसके आधार पर सामान्य निष्कर्ष निकाला जाय।

(च) अनिश्चित से निश्चित की ओर

बालक का प्रारम्भिक ज्ञान अनिश्चित होता है। इसीलिए बालक को प्रारम्भिक स्तर पर विषय वस्तु को कंठस्थ करने पर बल दिया जाता है, बाद में कंठस्थ की गयी विषयवस्तु के अनिश्चित ज्ञान को निश्चित करने के लिए उसकी संरचना की यथार्थ जानकारी दी जाती है।

(छ) आगमन से निगमन की ओर

इस सूत्र के अनुसार बालक के समक्ष पहले अनेक उदाहरण प्रस्तुत किए जाते हैं तत्पश्चात् उदाहरणों की समरूपता के आधार पर बालक से सामान्य नियम पर विचार करने के लिए कहा जाता है फिर शिक्षक की सहायता से नियम को समझकर स्वयं नये उदाहरण प्रस्तुत कर अपने ज्ञान को सुदृढ़ करते हैं। इस सूत्र के प्रयोग द्वारा शिक्षक नीरस विषय को भी रोचक बना देता है।

बोध प्रश्न

टिप्पणी :

क) नीचे दिए गए बोध प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

ख) इकाई के अंत में दिए गए बोध प्रश्नों के उत्तर से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

12. भाषा शिक्षण के सामान्य सिद्धान्तों को बताइए।

....

....

13. हिन्दी भाषा शिक्षण में शिक्षण सूत्रों की उपयोगिता पर संक्षेप में प्रकाश डालिए।

....

....

2.9 सारांश

भाषा अर्जन एक सहज और स्वाभाविक प्रक्रिया है जो औपचारिक भाषा अधिगम से भिन्न होती हैं। प्रारम्भ में बालक अपने माता–पिता और परिवेश की भाषा और ध्वनि संकेतों को सुनता और ग्रहण करता रहता है। शिशु सुनी गयी भाषा एवं ध्वनि संकेतों की पहचान करने के बाद उनको बोलने का प्रयास करता है और धीरे–धीरे उनका अर्थ भी जानने लगता है। आगे चलकर भाषा शिक्षण के माध्यम से भाषा को परिमार्जित करने का कार्य विद्यालय में किया जाता है।

लगभग आठ दस मास की अवस्था में शिशु पहला शब्द बोलता है और उसे बार–बार दोहराता है। भाषा विकास की यह प्रारम्भिक अवस्था होती है। अठारह माह की उम्र तक बालक का अवबोधात्मक विकास इतना हो जाता है कि वह दूसरों की बात समझकर उसके अनुसार व्यवहार करने लगता है। दो वर्ष के उपरान्त बालक छोटे–छोटे वाक्यों को दोहराने लगता है। तीन वर्ष की उम्र में अपने भावों की अभिव्यक्ति करने लगता है।

आयु की दृष्टि से भाषा विकास का एक क्रम होता है। शिशु जिन भाषा–भाषियों के मध्य रहता है उन्ही की भाषा का अर्जन कर लेता है प्रारम्भ में शिशु अपने परिवार के सदस्यों की क्रियाओं और ध्वनियों को सुनता है और अनुकरण करने का प्रयास करता है। आठ से दस महीने में कुछ ध्वनियों को निकालने का प्रयास करता है।

दो वर्ष के बाद शब्दों को स्पष्ट रूप से बोलने लगता है। तीन वर्ष में वह छोटे–छोटे वाक्यों का निर्माण कर बोलने लगता है। चार वर्ष की उम्र के आसपास बालक शब्दों एवं वाक्यों को लिखना सीख जाता है। दस वर्ष के आसपास बालकों में सुनने, बोलने, पढ़ने और लिखने की पूर्ण योग्यता का विकास हो जाता है।

प्रारम्भिक अवस्था में शिशु की भाषा को समझना कठिन होता है। अनुमान के आधार पर उसकी भाषा समझी जा सकती है। दो वर्ष बाद शिशु छोटे–छोटे वाक्यों को दोहराता है तथा तीन वर्ष की उम्र में अपने भावों को अभिव्यक्त करने लगता है। बाल्यावस्था में लड़कियों की भाषा का विकास लड़कों की अपेक्षा तीव्रगति से होता है। बालक के भाषाई विकास में बालक के माता–पिता की सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि का भी प्रभाव पड़ता है। प्रत्यय ज्ञान मूर्त से अमूर्त की ओर होता है। बालक के शब्द भण्डार में वृद्धि होने के साथ–साथ वह शब्दों के अर्थ भी ग्रहण करने लगता है और उसकी बोधक्षमता में वृद्धि होती जाती है। किशोरावस्था में अमूर्त चिन्तन का पूर्ण विकास होने के साथ उनमें समस्या समाधान की योग्यता बढ़ जाती है। प्रत्यय निर्माण की क्षमता में वृद्धि होने के साथ उनमें कल्पना शक्ति का भी विकास होता है। भाषा का प्रयोग किस प्रकार किया जाय इसका ज्ञान उसे हो जाता है।

अधिगम का अर्थ होता है सीखना अथवा व्यवहार परिवर्तन। मनुष्य अपने अनुभवों के आधार पर नवीन तथ्यों को ग्रहण करता है और नई–नई क्रियाओं को करना सीखता है। इन्हीं कार्यों के अर्जन की प्रक्रिया को अधिगम कहते हैं। अधिगम के द्वारा बालक के ज्ञान और कौशल में वृद्धि होती हैं। बालक के औपचारिक भाषा शिक्षण की शुरूआत विद्यालय में प्रवेश लेने के साथ होती है। भाषा अधिगम प्रक्रिया में अनेक नियमों एवं सिद्धान्तों के साथ–साथ अनुकूलन और पुनर्बलन, अनुकरण तथा अभ्यास और अन्तर्दृष्टि नामक युक्तियाँ भी सहायक होती हैं।

भाषा अधिगम का उद्देश्य बालक में श्रवण, वाचन, पठन तथा लेखन कौशल का विकास है। शिक्षण प्रक्रिया के द्वारा विद्यार्थियों को इन्हीं भाषाई कौशलों के विकास तथा अधिगम में सहायता दी जाती है। प्रभावी भाषा अधिगम के लिए प्रभावी शिक्षण अति आवश्यक है। इसके लिए शिक्षकों को भाषा शिक्षण के सामान्य सिद्धान्तों–स्वाभाविकता का सिद्धान्त,रुचि का सिद्धान्त, क्रियाशीलता का सिद्धान्त, वैयक्तिक भिन्नता का सिद्धान्त, विभाजन का सिद्धान्त, क्रम का सिद्धान्त और मौखिक कार्य का सिद्धान्त का प्रयोग करना चाहिए। शिक्षण के इन सामान्य सिद्धान्तों के अतिरिक्त शिक्षाशास्त्रियों द्वारा प्रतिपादित शिक्षण सूत्रों– ज्ञात से अज्ञात की ओर, मूर्त से अमूर्त की ओर, सरल से जटिल की ओर, पूर्ण से अंश की ओर, विशिष्ट से सामान्य की ओर, निश्चित से अनिश्चित की ओर एवं आगमन से निगमन की ओर के द्वारा शिक्षक शिक्षण प्रक्रिया को सरल, रोचक और प्रभावशाली बना सकता है।

2.10 अभ्यास के प्रश्न

1. भाषा अर्जन की प्रक्रिया में भाषा विकास के क्रम को स्पष्ट करें।
2. अधिगम नियमों का भाषा शिक्षण में उपयोगिता की विवेचना कीजिए।
3. भाषा शिक्षण के दौरान शिक्षण के सामान्य सिद्धान्तों का प्रयोग भाषा अधिगम को सरल और बोधगम्य बनाता है। संक्षेप में समझाइए।

2.11 चर्चा के बिन्दु

1. भाषा अधिगम प्रक्रिया में सहायक युक्तियों की चर्चा कीजिए।
2. हिन्दी भाषा शिक्षण में शिक्षण सूत्रों की उपयोगिता क्या है? चर्चा कीजिए।

2.12 बोध प्रश्नों के उत्तर

1. भाषा अर्जन के लिए बालक कुछ युक्तियों का प्रयोग करता है जो इस प्रकार हैं–
    - स्वाभाविकता
    - अनुकरण
    - दोहराने की तीव्र प्रवृत्ति
2. शिशु के भाषा विकास पर परिवार की सामाजिक आर्थिक स्थिति और संस्कृति का विशेष प्रभाव पड़ता है।
3. भाषा विकास का क्रम इस प्रकार है–
    - जन्म से छः माह के बाद ध्वनियों की पहचान करना।
    - आठ से दस माह में शिशु द्वारा कुछ ध्वनियों को उत्पन्न करना।
    - दो वर्ष के उपरान्त शब्दों को स्पष्ट रूप से बोलना

- तीन वर्ष तक शब्दों की सहायता से छोटे–छोटे वाक्यों का निर्माण करना।
- चार वर्ष के आसपास लिखना–सीखना
- दस वर्ष में सुनने, बोलने, पढ़ने और लिखने की पूर्ण योग्यता का विकास।

4. शिशु जन्म से छः माह के बाद ध्वनियों की पहचान करने लगता है।
5. चार वर्ष के आसपास बालक शब्दों एवं वाक्यों को बोलने के साथ उसको लिखना सीख जाता है।
6. अमूर्त प्रत्यय संवेदना एवं प्रत्यक्षीकरण के आधार पर निर्मित होता है जैसे– मिठाई से मिठास, कर्ण प्रिय ध्वनि से मधुरता, फूल से सुगन्ध आदि।
7. किशोर में कल्पनाशक्ति का विकास उसकी रचनाओं में जैसे– कविता, कहानी एवं चित्र आदि में अभिव्यक्त होता है।
8. अधिगम प्रक्रिया में सहायक युक्तियाँ–
   - अनुकूलन और पुनर्बलन
   - अनुकरण और अभ्यास
   - अन्तर्दृष्टि
9. भाषा अधिगम की प्रक्रिया में बालक सुनी गयी भाषा का अनुकरण करता है और बोलने का प्रयास करता है। प्रारम्भ में सही ढंग से अनुकरण नहीं कर पाता किन्तु बार–बार प्रयास करने के बाद सफल होता है। भाषा सीखने में बालक अनुकरण का उपयोग करता है।
10. थार्नडाइक ने प्रयोगो के आधार पर अधिगम के नियमों का प्रतिपादन किया है। अधिगम से सम्बन्धित मुख्य नियम हैं– तत्परता का नियम, अभ्यास का नियम और प्रभाव का नियम।
11. थार्नडाइक द्वारा बताए गए अधिगम नियमों में से एक है प्रभाव का नियम। प्रोत्साहन एवं प्रेरणा इस नियम का आधार है। अधिगम को स्थायी बनाने के लिए पुरस्कार तथा दण्ड की व्यवस्था होनी चाहिए। दण्ड की अपेक्षा पुरस्कार अधिगम को अधिक प्रभावित करता है। अतः दण्ड का प्रयोग बहुत कम करना चाहिए। जिन कार्यों से उसे असन्तोष होता है, उनसे वह बचना चाहता है। जिन कार्यों से उसे सन्तुष्टि मिलती है उन्हीं कार्यों को वह करना चाहता है।
12. भाषा शिक्षण के सामान्य सिद्धान्त हैं–
   - स्वाभाविकता का सिद्धान्त
   - रुचि का सिद्धान्त
   - क्रियाशीलता का सिद्धान्त
   - क्रम का सिद्धान्त
   - मौखिक कार्य का सिद्धान्त

13. शिक्षण कार्य में शिक्षण सूत्रों का उपयोग करके शिक्षक अपने शिक्षण कार्य को अधिक सरल, सुग्राह्य एवं रोचक बनाता है।

2.13 कुछ उपयोगी पुस्तकें

1. भटनागर, सुरेश व सक्सेना, अनामिका : शिक्षा मनोविज्ञान, लायल बुक डिपो, मेरठ
2. भाटिया, सुमन : बालक में भाषा विकास, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा
3. मित्तल सन्तोष : संस्कृत शिक्षण, आर0 लाल बुक डिपो, मेरठ
4. लाल, आर.बी. : शिक्षा मनोविज्ञान, रस्तोगी पब्लिकेशन्स, मेरठ
5. शर्मा, खेमराज व शर्मा, ब्रजराज : हिन्दी शिक्षण, अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा

इकाई – 03 : विद्यालयी स्तर पर हिन्दी भाषा की पाठ्यचर्या एवं उसमें सुधार

इकाई की संरचना

3.1 प्रस्तावना
3.2 इकाई के उद्देश्य
3.3 मातृभाषा के रूप में हिन्दी
3.4 हिन्दी भाषा का महत्व
3.5 हिन्दी भाषा शिक्षण के उद्देश्य
 3.5.1 ज्ञानात्मक उद्देश्य
 3.5.2 कौशलात्मक उद्देश्य
 3.5.3 अभिरुच्यात्मक उद्देश्य
 3.5.4 अभिवृत्यात्मक उद्देश्य
 3.5.5 सृजनात्मक उद्देश्य
3.6 त्रिभाषा सूत्र के संदर्भ में हिन्दी का पाठ्यक्रम में स्थान
3.7 विद्यालयी स्तर पर हिन्दी भाषा की पाठ्यचर्या
 3.7.1 पूर्व माध्यमिक स्तर पर हिन्दी भाषा की पाठ्यचर्या
 3.7.2 माध्यमिक स्तर पर हिन्दी भाषा की पाठ्यचर्या
3.8 सारांश
3.9 अभ्यास के प्रश्न
3.10 चर्चा के बिन्दु
3.11 बोध प्रश्नों के उत्तर
3.12 कुछ उपयोगी पुस्तकें

3.1 प्रस्तावना

विद्यालयी स्तर पर हिन्दी भाषा की पाठ्यचर्या एवं सुधार के अन्तर्गत हम मातृभाषा के रुप में हिन्दी, उसकी महत्ता एवं उपयोगिता, पाठ्यक्रम में स्थान तथा हिन्दी शिक्षण के उद्देश्यों का अध्ययन करेंगे।

भाषा अपने भावों, विचारों, इच्छाओं को दूसरे के सामने अभिव्यक्त करने का साधन है। भाषा के माध्यम से ही हम परस्पर विचारों का आदान–प्रदान करते हैं। विचाराभिव्यक्ति व्यक्ति द्वारा अपनी स्वयं की मातृभाषा अथवा उसके द्वारा सीखी गयी अन्य किसी भाषा में हो सकता है किन्तु अपने मन के अन्तर्द्वन्दों, उद्वेगों तथा मनोभावों का प्रकटीकरण जितनी सहजता एवं स्पष्टता के साथ अपनी मातृभाषा में किया जा सकता है, उतना किसी अन्य भाषा में नहीं हो सकता।

जिस भाषा को बालक सबसे पहले अपने माँ से अनुकरण द्वारा सीखता है और अपने विचारों की अभिव्यक्ति करता है, वही उस बालक की मातृभाषा है। मातृभाषा ही सभी ज्ञान–विज्ञानों का आधार होती है क्योंकि बालक के सोचने, विचारने और अनुभव करने का माध्यम उसकी अपनी मातृभाषा होती है। भाषा ही चिन्तन का आधार है। भारत के अनेक राज्यों में मातृभाषा हिन्दी है। मातृभाषा की इन सभी विशेषताओं को ध्यान में रखकर इसके शिक्षण को प्राथमिकता दी जाती है।

3.2 इकाई के उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के उपरान्त आप इस योग्य हो जायेंगे कि–

1. व्यक्तित्व विकास में मातृभाषा के योगदान का अपने शब्दों में उल्लेख कर सकेंगे।
2. मातृभाषा के रुप में हिन्दी की महत्ता, उपयोगिता और पाठ्यक्रम में स्थान का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
3. हिन्दी–भाषा शिक्षण के ज्ञानात्मक, कौशलात्मक, अभिरुच्यात्मक, सृजनात्मक एवं अभिवृत्यात्मक उद्देश्यों का वर्णन कर सकेंगे।
4. हिन्दी भाषा के विभिन्न कौशलों–श्रवण, पठन, लेखन और वाचन का समुचित उपयोग कर सकेंगे।
5. विद्यालयी स्तर पर हिन्दी भाषा की पाठ्यचर्या का विवेचन कर सकेंगे।

3.3 मातृभाषा के रूप में हिन्दी

जिस भाषा को बालक सबसे पहले अपनी माँ से सीखकर बोलता है और परिवार तथा समुदाय के साथ विचारों का आदान–प्रदान करता है, वही भाषा बालक की मातृभाषा है। भाषा की गतिशीलता के कारण प्रत्येक भाषा की अनेक उपभाषाएँ एवं बोलियाँ होती हैं। वास्तव में माँ जिस बोली अथवा उपभाषा को बोलती है वही बालक की मातृभाषा होती है। हिन्दी भाषा का प्रयोग भारत के अधिकांश भागों में होता है जैसे– उत्तर प्रदेश, उत्तराखण्ड, बिहार, झारखण्ड, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, राजस्थान, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश और दिल्ली। इन क्षेत्रों की भी अपनी अलग–अलग बोलियाँ हैं जिनका प्रयोग वहाँ के लोग करते हैं किन्तु बाहरी कार्य–व्यवहार में हम

हिन्दी ही बोलते और लिखते हैं। विशेष रूप से विद्यालय में पठन–पाठन के लिए खड़ी बोली हिन्दी का प्रयोग किया जाता है। इस प्रकार इन प्रदेशों की अपनी अलग–अलग बोलियाँ होने के बाद भी मातृभाषा हिन्दी है।

3.4 हिन्दी भाषा का महत्व

आधुनिक आर्य भाषाओं का विकास अपभ्रंशों से हुआ है। आर्य भाषाओं में हिन्दी का प्रमुख स्थान है। हिन्दी संविधान द्वारा स्वीकृत राजभाषा भी है। हिन्दी भाषा की लिपि देवनागरी है। वर्तमान में हिन्दी एक समृद्ध और व्यापक भाषा है। यह भारतवर्ष में सर्वाधिक व्यक्तियों द्वारा बोली जाने वाली और समझी जाने वाली भाषा है। विश्व की भाषाओं में हिन्दी का अपना एक विशिष्ट स्थान है। मातृभाषा के रूप में परिष्कृत हिन्दी का ही विशेष महत्व है, क्योंकि यह साहित्य, ज्ञान–विज्ञान की भाषा होने के साथ–साथ समस्त सामाजिक क्रिया–कलापों का आधार है। हिन्दी भाषा के महत्व को हम निम्नलिखित बिन्दुओं के अन्तर्गत देख सकते हैं।

- **वैज्ञानिक लिपि**

  हिन्दी भाषा की लिपि देवनागरी है जो पूर्णतः वैज्ञानिक लिपि है। इसमें एक चिह्न से एक ही ध्वनि का बोध होता है। इसमें ध्वनियों का क्रम वैज्ञानिक है। स्वर, एवं मात्राएं निश्चित होती है। इस लिपि में जो लिखा जाता है वही पढ़ा जाता है। इस प्रकार हिन्दी एक वैज्ञानिक भाषा है।

- **व्यापक शब्दावली**

  हिन्दी भाषा अत्यन्त समृद्ध भाषा है। इसकी अपनी पारिभाषिक शब्दावली है। हिन्दी भाषा का ज्ञान–विज्ञान के क्षेत्र में बढ़ते प्रयोग के कारण अनेकानेक पारिभाषिक शब्दों का स्वतः विकास हो रहा है।

- **सम्पर्क भाषा**

  हिन्दी उत्तर तथ मध्य भारत के दस राज्यों में प्रयोग की जाने वाली भाषा है। सम्पूर्ण देश में हिन्दी का प्रयोग सम्पर्क भाषा के रूप में किया जाता है। आज हिन्दी बोलने और समझने वाले लोग देश के सभी भागों में मिल जायेंगे।

- **हिन्दी भाषा का समृद्ध साहित्य**

  हिन्दी एक समृद्ध भाषा है। हिन्दी भाषा की सभी विधाओं में समृद्ध साहित्य रचना हुई है। ज्ञान की प्रत्येक शाखा में हिन्दी भाषा में साहित्य सृजन किया जा रहा है। तकनीकी एवं वैज्ञानिक विषयें पर हिन्दी में अनेकानेक पुस्तकें उपलब्ध हैं। उच्च शिक्षा से सम्बन्धित हिन्दी भाषा में पर्याप्त पुस्तकों का सृजन किया गया है। इस प्रकार हिन्दी में तकनीकी एवं वैज्ञानिक विषयों पर पुस्तकों का अभाव नहीं है।

3.5 हिन्दी भाषा शिक्षण के उद्देश्य

अन्य विष्यों की अपेक्षा भाषा शिक्षा का विशेष महत्व है क्यांकि हमें भाषा के माध्यम से ही अन्य विषयों का ज्ञान प्राप्त होता है। भाषा शिक्षण के द्वारा विद्यार्थियों में विविध भाषाई कौशलों–सुनकर अर्थग्रण करना, बोलकर विचारों की अभिव्यक्ति करना, पढ़कर अर्थग्रहण करना और लिखकर अपने विचारों की अभिव्यक्ति करना; का विकास किया जाता है।

उद्देश्य शब्द 'उद्' उपसर्ग 'दिश' धातु तथा 'ण्यत्' प्रत्यय से बना हुआ है जिसका अर्थ होता है–किसी कार्य को दिशा देना। हिन्दी भाषा को पढ़ाने से पहले जिन उद्देश्यों का निर्धारण किया जाता है उनको ही हिन्दी शिक्षण के उद्देश्य कहते हैं। उद्देश्यों का निर्धारण हिन्दी की विभिन्न विधाओं जैसे– गद्य, कविता, कहानी, नाटक आदि के लिए भिन्न–भिन्न होता है। उद्देश्य के अभाव में सम्पूर्ण शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया अव्यवस्थित हो जाती है और विद्यार्थियों में अपेक्षित व्यवहार परिवर्तन नही हो पाता है। हिन्दी शिक्षण के उद्देश्य और विद्यार्थियों में होने वाले अपेक्षित व्यवहारगत परिवर्तन के रूप में इन उद्देश्यों का लेखन इस प्रकार है –

3.5.1 ज्ञानात्मक उद्देश्य

उद्देश्य	अपेक्षित व्यवहारगत परिवर्तन
➢ **विद्यार्थियों को भाषा तत्वों का ज्ञान कराना** भाषिक तत्वों के अन्तर्गत – 1. स्वर, व्यंजन, विसर्ग अनुस्वार तथा स्थान प्रयत्न के अनुसार स्पष्ट उच्चारण कराना। 2. वर्तनी के शुद्ध लेखन का ज्ञान कराना। 3. मुहावरे, लोकोक्तियाँ, पर्यायवाची का ज्ञान कराना। 4. कठिन शब्दों की व्युत्पत्ति से परिचित कराना।	1. विद्यार्थी ध्वनि, वर्ण और वाक्यों के स्वरूप की पहचान कर सकेगा। 2. वह इनका प्रत्यास्मरण कर सकेगा। 3. वह इनके अशुद्ध रूप व त्रुटियों में अन्तर कर सकेगा। 4. वह शुद्ध और अशुद्ध वर्तनी में अन्तर कर सकेगा। 5. वह इनके उदाहरण दे सकेगा।
➢ **विषय वस्तु का ज्ञान कराना** विद्यार्थियों को सांस्कृतिक एवं नैतिक मूल्यों का ज्ञान कराना (पौराणिक गाथाओं, तथ्य एवं घटनाओं, सदाचार के विभिन्न उदाहरणों के द्वारा)	1. विद्यार्थी नैतिक व सांस्कृतिक मूल्यों का प्रत्यभिज्ञान कर सकेगा। 2. अपने जीवन में इनका पालन कर सकेगा। 3. परस्पर तुलना कर सकेगा।

3.5.2 कौशलात्मक उद्देश्य

कौशलात्मक उद्देश्यों का सम्बन्ध भाषाई कौशलों – सुनना, पढ़ना, लिखना और बोलने के विकास से है। यह उद्देश्य इस प्रकार हैं –

उद्देश्य	अपेक्षित व्यवहारगत परिवर्तन
सुनकर अर्थ ग्रहणकरने की योग्यता का विकास – आदर्शवाचन, का विकास सस्वर वाचन, वाद–विवाद, प्रवचन, वार्तालाप, भाषण, आदेश, निर्देश, कविता पाठ के द्वारा	1. विद्यार्थी धैर्यपूर्वक सुनेंगे। 2. सुनकर विषयवस्तु का अर्थ ग्रहण कर सकेंगे। 3. मुहावरों, लोकोक्तियों का प्रसंगानुसार अर्थ ग्रहण कर सकेंगे। 4. मुख्य विचारों, भावों एवं तथ्यों को ग्रहण कर सकेंगे। 5. वक्ता के मनोभावों को समझ सकेंगे।
पढ़कर अर्थ ग्रहण करने की योग्यता का विकास– गद्य, पद्य, कथा, नाटक आदि का अनुकरण वाचन एवं मौन वाचन के द्वारा	1. विद्यार्थी धैर्यपूर्वक पढ़ सकेंगे। 2. मुहावरों, लोकोक्तियों का प्रसंगानुसार अर्थ समझ सकेंगे। 3. मुख्य भावों एवं विचारों को समझ सकेंगे। 4. भाषा शैली की विशिष्टता की पहचान कर सकेंगे।
अपने भावों एवं विचारों को बोलकर अभिव्यक्त करने की योग्यता का विकास– वार्तालाप, भाषण, वाद–विवाद, प्रश्नोत्तर, कविता पाठ, चर्चा द्वारा	1. विद्यार्थी शुद्ध उच्चारण, उचित आरोह–अवरोह एवं लयगति के साथ बोल सकेंगे। 2. वह प्रसंगानुसार उपयुक्त शब्दों, लोकोक्तियों एवं मुहावरों का चयन और प्रयोग कर सकेंगे। 3. प्रसंगानुसार और प्रभावशाली ढंग से बोल सकेंगे। 4. विषय वस्तु का क्रमबद्ध ढंग से मौखिक अभिव्यक्ति कर सकेंगे।
अपने विचारों को लिखकर अभिव्यक्त करने की योग्यता का विकास– कविता, कहानी, पत्र–लेखन, निबंध लखेन, आदि के द्वारा	1. विद्यार्थी शुद्ध रूप में लिखकर अपनी अभिव्यक्ति कर सकेंगे। 2. वह विरामादि चिह्नों का प्रयोग करते हुए लिख सकेंगे। 3. प्रसंग के अनुसार अपने लेखर को तार्किक रुप से प्रस्तुत कर सकेंगे।

3.5.3 अभिरुच्यात्मक उद्देश्य

उद्देश्य	अपेक्षित व्यवहारगत परिवर्तन
विद्यार्थियों में भाषा और साहित्य के प्रतिरुचि उत्पन्न करना	1. विद्यार्थी अपने पाठ्यक्रम के अतिरिक्त हिन्दी की अन्य पुस्तकों एवं पत्रिकाओं को भी पढ़ सकेंगे। 2. सूक्तियों, कविताओं को कंठस्थ कर सकेंगे। 3. विद्यालय की पत्रिका और अन्य साहित्यिक कार्यों में अपना योगदान दे सकेंगे।
साहित्य की आलोचनात्मक समीक्षा की योग्यता उत्पन्न करना	1. विद्यार्थी भाव पक्ष की दृष्टि से मनोरम स्थलों की पहचान कर सकेंगे। 2. भाषा एवं शैली का विश्लेषण एवं मूल्यांकन कर सकेंगे।

3.5.4. अभिवृत्यात्मक उद्देश्य

उद्देश्य	अपेक्षित व्यवहारगत परिवर्तन
➢ विद्यार्थियों में उपयुक्त दृष्टिकोण और सद्वृत्तियों का विकास करना	1. संस्कृति एवं साहित्य के प्रति आस्था उत्पन्न हो सकेगी। 2. मानवीय मूल्यों, आदर्शों के प्रति आस्था रख सकेंगे। 3. सद्गुणों को अपनाने के लिए अभिप्रेरित हो सकेंगे।

3.5.5 सृजनात्मक उद्देश्य

उद्देश्य	अपेक्षित व्यवहारगत परिवर्तन
विद्यार्थियों में साहित्य सृजन की योग्यता का विकास करना— निबन्ध, कहानी, कविता एवं पत्र लेखन आदि के द्वारा	1. अपने भावों, विचारों की अभिव्यक्ति हेतु उपयुक्त साहित्यिक विधा का चयन कर सकेंगे। 2. स्वानुभूत विचारों एवं भावों को प्रभावी ढंग से अभिव्यक्त कर सकेंगे। 3. स्वानुभूत विचारों को कल्पना की सहायता से व्यक्त कर सकेंगे। 4. अपने भावों एवं विचारों की अभिव्यक्ति हेतु उपयुक्त भाषा एवं शैली का चयन कर सकेंगे।

बोध प्रश्न

टिप्पणी :

क) नीचे दिए गए बोध प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

ख) इकाई के अंत में दिए गए बोध प्रश्नों के उत्तर से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1. मातृ भाषा की संज्ञा किसे दी जाती हैं?

....

....

2. हिन्दी भाषा का महत्व बताइए।

....

....

3. हिन्दी शिक्षण के ज्ञानात्मक उद्‌देश्यों को संक्षेप में स्पष्ट करें।

....

....

4. सृजनात्मक उद्‌देश्यों को व्यवहारगत परिवर्तन के रूप में लिखें।

....

....

3.6. त्रिभाषा सूत्र के संदर्भ में हिन्दी का पाठ्‌यक्रम में स्थान

भारत के विभिन्न प्रदेशों में विभिन्न भाषाओं का प्रयोग किया जाता है। प्रत्येक प्रदेश की अपनी मातृभाषा है। स्वतंत्र भारत में राष्ट्रभाषा के रूप में किस भाषा का प्रयोग किया जाय, कौन सी भाषा माध्यमिक शिक्षा का माध्यम हो यह एक विचारणीय प्रश्न रहा है। भाषा शिक्षा की समस्या का समाधान करने के लिए 1956 में केन्द्रीय शिक्षा सलाहकार बोर्ड द्वारा त्रिभाषा सूत्र का प्रतिपादन किया गया। इसके अनुसार प्रत्येक बालक के लिए तीन भाषाओं का अध्ययन अनिवार्य किया गया–

(1) मातृभाषा अथवा क्षेत्रीय भाषा

(2) अंग्रेजी

(3) हिन्दी (गैर हिन्दी भाषी क्षेत्रों के लिए)

कोठारी आयोग (1964–66) द्वारा 'त्रिभाषा सूत्र' का संशोधित रूप प्रस्तुत किया गया–

(1) मातृभाषा अथवा क्षेत्रीय भाषा

(2) केन्द्र की राजभाषा अथव सह–राजभाषा

(3) एक आधुनिक भारतीय भाषा अथवा विदेशी भाषा जिसे संख्या 1 या 2 में न लिया गया हो तथा जो शिक्षा के माध्यम से भिन्न हो।

इस संशोधित त्रिभाषा सूत्र के आधार पर हिन्दी भाषी प्रदेशों के विद्यालयों में भाषा शिक्षा का स्वरुप निम्नवत् है –

(1) प्रथम भाषा के रुप में हिन्दी

(2) अंग्रेजी (द्वितीय भाषा)

(3) संस्कृत या एक आधुनिक भारतीय भाषा

3.7 विद्यालयी स्तर पर हिन्दी भाषा की पाठ्यचर्या

शिक्षा प्रक्रिया में पाठ्यचर्या (Curriculum) एक महत्वपूर्ण अंग माना गया है। पाठ्यचर्या पर ही सम्पूर्ण शिक्षा प्रक्रिया आधारित होती है। पाठ्यचर्या शिक्षा को दिशा प्रदान करता है। इसके द्वारा यह निश्चित किया जाता है कि शिक्षक को क्या पढ़ाना है। पाठ्यचर्या के द्वारा शिक्षार्थी को यह पता चलता है कि उसे निर्धारित समय में क्या–क्या पढ़ना है। इस प्रकार विद्यालय की सम्पूर्ण गतिविधि पाठ्चर्या में समाहित होती है।

बेन्ट तथा क्रोनबर्ग के शब्दों में – ''संक्षेप में पाठ्यचर्या, पाठ्यवस्तु (Content) का ही सुव्यवस्थित रूप है, जिसका निर्माण बालकों की आवश्यकता की पूर्ति के लिए होता है।''

हिन्दी भाषा की पाठ्यचर्या निर्माण में निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए –

- विद्यार्थियों के स्तर एवं उनकी रुचि का ध्यान
- मौखिक एवं लिखित भाव प्रकाशन का ध्यान
- हिन्दी साहित्य की सभी विधाओं को उचित स्थान
- व्याकरण पक्ष पर ध्यान
- परिवर्तनशीलता एवं लोचनीयता का ध्यान
- विभिन्न आयु स्तरों का ध्यान

3.7.1 पूर्व माध्यमिक स्तर पर हिन्दी भाषा की पाठ्यचर्या

पूर्व माध्यमिक स्तर (कक्षा 6, 7 व 8) पर हिन्दी की पाठ्यचर्या में निम्नलिखित बातों का समावेश किया जा सकता है –

1. बाल जीवन से सम्बन्धित लघु कहानियाँ

2. कविताओं को कंठस्थ कराना, स्पष्ट एवं शुद्ध उच्चारण पर ध्यान

3. निबंध लेखन, पद्य रचना का ज्ञान कराना

4. श्रव्य–दृश्य साधनों का प्रयोग करके पाठ को सरल बनाना

5. शुद्ध उच्चारण एवं उचित आरोह–अवरोह, लय, गति के साथ वाचन का अभ्यास

6. संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण का ज्ञान, कारकों एवं भाषा के सभी अंगों का ज्ञान,

7. छोटी–छोटी कहानियों का वर्णन करने के लिए प्रेरित करना

3.7.2 माध्यमिक स्तर पर हिन्दी भाषा की पाठ्यचर्या

माध्यमिक स्तर (कक्षा 9, 10) पर हिन्दी की पाठ्यचर्या में निम्नलिखित बातों का समावेश किया जा सकता है –

1. माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थी अपने विचारों की स्वतंत्र अभिव्यक्ति कर सकें इसके लिए उनको विरामदिचिह्नों को ध्यान में रखते हुए उचित लय एवं गति के साथ स्पष्ट और प्रभावी सस्वर वाचन कराना चाहिए।

2. मौनवाचन के द्वारा विषय वस्तु के केन्द्रीय भावों को समझने की योग्यता का विकास करने के लिए पठित विषय सामग्री पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करने के लिए अवसर प्रदान करना चाहिए।

3. निबंध रचना कराना, लघु कहानियों के रचना के द्वारा विद्यार्थियों की कल्पना शक्ति को विस्तार देना। विशिष्ट अवसरों जैसे–स्वतंत्रता दिवस, गणतंत्र दिवस आदि पर भाषण तैयार कराना।

4. रस, छन्द, अलंकार का ज्ञान कराना, पद विश्लेषण, वाक्य विश्लेषण एवं काव्य रचना की जानकारी।

5. विभिन्न भाषा शैलियों का ज्ञान, हिन्दी की विभिन्न विधाओं का ज्ञान, मात्राओं का ज्ञान, पात्रों का चरित्र–चित्रण करने के लिए प्रेरित करना।

बोध प्रश्न

टिप्पणी :

क) नीचे दिए गए बोध प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

ख) इकाई के अंत में दिए गए बोध प्रश्नों के उत्तर से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

5. 'त्रिभाषा सूत्र' के आधार पर हिन्दी भाषी प्रदेशों में माध्यमिक स्तर पर भाषा शिक्षा के स्वरूप को स्पष्ट करें।

....

....

6. माध्यमिक स्तर पर हिन्दी शिक्षण की पाठ्चर्या का संक्षेप में उल्लेख करें।

....

....

3.8 सारांश

बालक जिस भाषा या बोली को माँ से सुनकर बोलता है वही भाषा उसकी मातृभाषा कहलाती है। मातृभाषा के रुप मे परिष्कृत हिन्दी का ही विशेष महत्व है, यह साहित्य ज्ञान–विज्ञान की भाषा के साथ समस्त सामाजिक क्रिया–कलापों का आधार भी है। विश्व की भाषाओं में हिन्दी का अपना एक विशिष्ट स्थान है। हिन्दी एक समृद्ध भाषा है। हिन्दी में साहित्य की विभिन्न विधाओं के साथ तकनीकी एवं वैज्ञानिक विषयों पर पर्याप्त संख्या में पुस्तकों का सृजन किया गया है।

हिन्दी भाषा शिक्षण के प्रमुख उद्‌देश्य ज्ञानात्मक, कौशलात्मक, अभिरुच्यात्मक, अभिवृत्यात्मक, सृजनात्मक आदि है।

त्रिभाषा सूत्र के सन्दर्भ में पाठ्‌यक्रम में माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों को तीन भाषाओं मातृभाषा अथवा क्षेत्रीय भाषा, केन्द्र की राजभाषा (हिन्दी) अथवा सह राज भाषा (अंग्रेजी) एवं आधुनिक भारतीय भाषा अथवा विदेशी भाषा का अध्ययन अनिवार्य किया गया है।

शिक्षा प्रक्रिया में पाठ्‌यचर्या एक महत्वपूर्ण अंग माना गया है। पाठ्‌यचर्या से शिक्षा को दिशा मिलती है। पूर्व माध्यमिक स्तर (कक्षा 6, 7, 8) पर हिन्दी भाषा की पाठ्‌चर्या में कविताओं को कंठस्थ कराना एवं शुद्ध उच्चारण पर ध्यान, पद्य रचना का ज्ञान, श्रव्य–दृश्य साधनों का प्रयोग, शुद्ध उच्चारण, लय–गति के साथ वाचन का अभयास, संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, कारकों एवं भाषा के अंगों के ज्ञान आदि से सम्बन्धित विषयवस्तु को तथा माध्यमिक स्तर (कक्षा 9, 10) पर हिन्दी भाषा की पाठ्‌यचर्या में उचित लय, गति के साथ स्पष्ट और प्रभावी वाचन, निबंध रचना, लघु कहानियों की रचना द्वारा छात्रों की कल्पना शक्ति को विस्तार देने, रस, छन्द, अलंकार का ज्ञान, पद विश्लेषण एवं वाक्य विश्लेषण तथा काव्य रचना का ज्ञान, विभिन्न भाषा शैलियों का ज्ञान आदि से सम्बन्धित विषयवस्तु को सम्मिलित किया जाना चाहिए।

3.9 अभ्यास के प्रश्न

1. ज्ञानात्मक उद्‌देश्य के तीन अपेक्षित व्यवहारगत परिवर्तनों को लिखिए।
2. अभिवृत्यात्मक उद्‌देश्य को व्यवहारगत परिवर्तन के रुप लेखन कीजिए।

3.10 चर्चा के बिन्दु

1. हिन्दी भाषा की पाठ्‌चयर्या निर्माण में ध्यान रखने वाले बिन्दुओं पर चर्चा कीजिए।

3.11 बोध प्रश्नों के उत्तर

1. बालक अपनी माँ से अनुकरण द्वारा सीखकर जिस भाषा का प्रयोग करता है वही उसकी मातृभाषा होती है। मातृभाषा के रुप में परिष्कृत भाषा जिसका प्रयोग समस्त सामाजिक कार्यों के लिए किया जाता है, का विशेष महत्व है।
2. हिन्दी भाषा के महत्व को वैज्ञानिक लिपि, व्यापक शब्दावली, सम्पर्क भाषा तथा हिन्दी भाषा का समृद्ध साहित्य रूप में व्यक्त किया जा सकता है।
3. ज्ञानात्मक उद्देश्य के अन्तर्गत विद्यार्थियों को भाषा तत्वों, विषय वस्तु, रचना के विविध रुपों आदि का ज्ञान कराया जाता है।
4. सृजनात्मक उद्देश्यों का व्यवहारगत परिवर्तन के रुप में लेखन–
    - छात्र स्वानुभूत विचारों एवं भावों को प्रभावी ढंग से अभिव्यक्त कर सकेंगे।
    - छात्र अपने भावों एवं विचारों की अभिव्यक्ति हेतु उपयुक्त भाषा एवं शैली का चयन कर सकेंगे।
5. त्रिभाषा सूत्र के आधार पर हिन्दी भाषी प्रदेशों के विद्यालयों में भाषा शिक्षा के अन्तर्गत प्रथम भाषा के रूप में हिन्दी, द्वितीय भाषा के रूप में अंग्रेजी तथा संस्कृत या एक आधुनिक भारतीय भाषा को तीसरी भाषा के रूप में पढ़ाये जाने की व्यवस्था है।
6. माध्यमिक स्तर पर हिन्दी भाषा की पाठ्यचर्या मौनवाचन के द्वारा विषय वस्तु के केन्द्रीय भावों को समझने एवं विचार व्यक्त करने का अवसर प्रदान करने, निबंध रचना के द्वारा छात्रों की कल्पना शक्ति को विस्तार देने तथा विभिन्न भाषा शैलियों का ज्ञान, हिन्दी की विभिन्न विधाओं का ज्ञान, रस, छन्द, अलंकार आदि का ज्ञान कराना से सम्बन्धित है।

3.12 कुछ उपयोगी पुस्तकें

1. पाण्डेय, रामशकल (2002) : हिन्दी शिक्षण, अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा।
2. शर्मा, खेमराज व ब्रजराज : हिन्दी शिक्षण, अग्रवाल पब्लिकेशन्स आगरा।
3. सिंह, निरंजन कुमार : माध्यमिक विद्यालयों में हिन्दी शिक्षण, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।
4. अनुरागी, अजय : हिन्दी शिक्षण, श्याम प्रकाशन, जयपुर।

B.Ed.E-31

Pedagogy of Hindi

(हिन्दी का शिक्षणशास्त्र)

उ० प्र० राजर्षि टण्डन

मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज

खण्ड — 02

हिन्दी भाषा शिक्षण के लिए व्यूह रचना— प्रथम

इकाई 4	हिन्दी के भाषिक तत्व	47—69
इकाई 5	श्रवण एवं मौखिक अभिव्यक्ति के कौशल का विकास	70—77
इकाई 6	पठन योग्यता एवं लिखित अभिव्यक्ति कौशल का विकास	78—92

खण्ड – 02 : हिन्दी भाषा शिक्षण के लिए व्यूह रचना – प्रथम

खण्ड परिचय

खंड 02 हिन्दी भाषा शिक्षण के लिए व्यूह रचना – प्रथम से सम्बन्धित है। इस खण्ड को भी तीन इकाइयों में वर्णित किया गया है, जो इस प्रकार है–

इकाई 4 हिन्दी के भाषिक तत्व से सम्बन्धित है। इसके अन्तर्गत वर्ण विचार – हिन्दी वर्णमाला, शुद्ध उच्चारण का अर्थ, उच्चारण शिक्षण का महत्व, उच्चारण की अशुद्धियाँ एवं सुधार के उपाय, वर्तनी का महत्व, वर्तनी संबन्धी अशुद्धियों के कारण एवं सुधार के उपाय, वर्तनी का महत्व उच्चारण और वर्तनी संबन्धी शिक्षण का वर्णन किया गया है। इसके अतिरिक्त शब्द विचार, शब्द रचना– व्युत्पत्ति के आधार पर, रचना के आधार पर, अर्थ के आधार पर, शब्द शक्ति के आधार पर व व्याकरण के आधार पर प्रस्तुत किया गया है। साथ ही वाक्य विचार में वाक्य और उपवाक्य, वाक्य भेद, वाक्यों की अशुद्धियाँ, विरामादि चिह्न पर विचार किया गया है। शब्द और वाक्य रचना का शिक्षण पर भी प्रकाश डाला गया है।

इकाई 5 श्रवण एवं मौखिक अभिव्यक्ति के कौशल का विकास से संबन्धित है। इसमें श्रवण कौशल का अर्थ और महत्व में श्रवण कौशल विकास संबन्धी शिक्षण उद्‌देश्य, श्रवण कौशल के विकास हेतु शिक्षण उपागम एवं श्रवण कौशल के विकास हेतु श्रव्य–दृश्य सामग्री का वर्णन किया गया है। मौखिक अभिव्यक्ति का अर्थ एवं महत्व के अन्तर्गत मौखिक अभिव्यक्ति के विकास संबन्धी शिक्षण उद्‌देश्य, मौखिक अभिव्यक्ति के विकास हेतु शिक्षण उपागम व मौखिक अभिव्यक्ति कौशल के विकास हेतु श्रव्य–दृश्य सामग्री को प्रस्तुत किया गया है।

इकाई 6 पठन योग्यता एवं लिखित अभिव्यक्ति कौशल का विकास से सम्बन्धित है। इस इकाई में पठन का अर्थ और महत्व, पठन प्रक्रिया, पठन के प्रकार और उद्‌देश्य को स्पष्ट किया गया है। इसके अतिरिक्त पठन को प्रभावित करने वाले कारक, पठन योग्यता के विकास हेतु उपाय, लेखन का अर्थ एवं महत्व, लेखन प्रक्रिया, लिखित रचना शिक्षण के उद्‌देश्य को प्रस्तुत किया गया है। साथ ही लिखित रचना के विभिन प्रकार – पत्र लेखन, निबंध लेखन, वर्णन, जीवनी तथा आत्मकथा लेखन, कहानी लेखन, सार लेखन एवं संवाद लेखन का सम्यक विवेचन किया गया है। लिखित रचना–शिक्षण की विधियाँ, लिखित रचना कार्य में होने वाली अशुद्धियाँ एवं उनका संशोधन का भी विवेचन किया गया है।

इकाई – 4 : हिन्दी के भाषिक तत्व

इकाई की संरचना

4.1 प्रस्तावना
4.2 इकाई के उद्देश्य
4.3 वर्ण विचार
- 4.3.1 हिन्दी वर्णमाला
- 4.3.2 शुद्ध उच्चारण का अर्थ
- 4.3.3 उच्चारण शिक्षण का महत्व
- 4.3.4 उच्चारण की अशुद्धियाँ एवं सुधार के उपाय
- 4.3.5 वर्तनी का महत्व
- 4.3.6 वर्तनी सम्बन्धी अशुद्धियों के कारण
- 4.3.7 वर्तनी अशुद्धियों के सुधार हेतु उपाय
- 4.3.8 उच्चारण और वर्तनी सम्बन्धी शिक्षण

4.4 शब्द विचार एवं शब्द रचना
- 4.4.1 व्युत्पत्ति के आधार पर
- 4.4.2 रचना के आधार पर
- 4.4.3 अर्थ के आधार पर
- 4.4.4 शब्द शक्ति के आधार पर
- 4.4.5 व्याकरण के आधार पर

4.5 वाक्य विचार
- 4.5.1 वाक्य और उपवाक्य
- 4.5.2 वाक्य भेद
- 4.5.3 वाक्यों की अशुद्धियाँ
- 4.5.4 विरामादि चिह्न

4.6 शब्द और वाक्य रचना का शिक्षण
4.7 सारांश
4.8 अभ्यास के प्रश्न
4.9 चर्चा के बिन्दु
4.10 बोध प्रश्नों के उत्तर
4.11 कुछ उपायोगी पुस्तकें

4.1 प्रस्तावना

पूर्व में हम अध्ययन कर चुके हैं कि भाषा वाक्यों से बनती है, वाक्य शब्दों से और शब्द मूल ध्वनियों से बनते हैं। ध्वनियों के आधार पर 'ध्वनि–चिह्नों' का निर्माण हुआ। ध्वनि चिह्न के लिखित रूप को ''वर्ण'' कहते हैं। ध्वनियों, शब्दों और वाक्यों को ही भाषिक तत्व कहा जाता है। इस प्रकार भाषा में एक व्यवस्था होती है। इस क्रम में सर्वप्रथम वर्ण विचार फिर शब्द विचार इसके बाद वाक्य विचार आता है। हिन्दी व्याकारण में इन सभी का अध्ययन विवेचन होता है। प्रस्तुत इकाई में हम इन सभी का और इनकी शिक्षण प्रक्रिया का अध्ययन करेंगे।

4.2 इकाई के उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के उपरान्त आप इस योग्य हो जायेंगे कि–

1. वर्णों के स्वरूप से परिचित हो सकेंगे।
2. उच्चारण की दृष्टि से वर्णो का वर्गीकरण कर सकेंगे।
3. वर्णों का शुद्ध उच्चारण कर सकेंगे।
4. शुद्ध एवं अशुद्ध वर्तनी में अन्तर कर सकेंगे।
5. लिंग, वचन और कारक में आपसी सम्बन्ध का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
6. व्युत्पत्ति की दृष्टि से शब्दों का वर्गीकरण कर सकेंगे।
7. हिन्दी शब्द भण्डार के स्रोतों का वर्णन कर सकेंगे।
8. सरल, मिश्र एवं संयुक्त वाक्यों की विशेषताओं का वर्णन कर सकेंगे।
9. वाक्य और उपवाक्य में अन्तर बता सकेंगे।
10. शब्द और वाक्य शिक्षण के लिए उपागमों का समुचित प्रयोग कर सकेंगे।

4.3 वर्ण विचार

ध्वनि शब्दों की आधार शिला है। ध्वनियों के लिखित रूप को 'वर्ण' कहते हैं। वर्ण उच्चारित भाषा की सबसे छोटी इकाई है। इन्हीं इकाइयों को मिलाकर शब्द समूह और वाक्यों की रचना होती है। वर्णों के व्यवस्थित समूह को 'वर्णमाला' कहते हैं। ध्वनियों को लिखने के लिए ध्वनि चिह्नों का निर्माण हुआ। ध्वनि चिह्नों में परिवर्तन भी होते रहे। ध्वनि चिह्नों की व्यवस्था को ही 'लिपि' कहते हैं। हिन्दी भाषा की लिपि देवनागरी है।

हिन्दी के शुद्ध उच्चारण और शुद्ध वर्तनी लेखन के लिए हिन्दी वर्णमाला का सम्यक ज्ञान आवश्यक है।

4.3.1 हिन्दी वर्णमाला

स्वर और व्यंजन सहित हिन्दी में मूलरूप से 52 वर्ण हैं।

स्वर– अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ

व्यंजन–	क वर्ग	:	क, ख, ग, घ, ङ
	च वर्ग	:	च, छ, ज, झ, ञ
	ट वर्ग	:	ट, ठ, ड, ढ, ण
	त वर्ग	:	त, थ, द, ध, न
	प वर्ग	:	प, फ, ब, भ, म
	अन्तस्थ	:	य, र, ल, व
	ऊष्म	:	श, ष, स, ह
	संयुक्त	:	क्ष, त्र, ज्ञ, श्र
	द्विगुण	:	ड़, ढ़
	अनुश्वार	:	(ं)
	विसर्ग	:	(:)

क से लेकर म तक व्यंजन स्पर्श व्यंजन हैं क्योंकि इनका उच्चारण कण्ठ, तालु, मूर्द्धा, दन्त एवं ओष्ठ स्थान के स्पर्श से होता है। ड और ढ के नीचे बिन्दु लगने से ड़ एवं ढ़ वर्ण बनता है। इनको द्विगुण व्यंजन कहा जाता है।

हल चिह्न :–

व्यंजनों के नीचे एक तिरछी (\) रेखा लगाकर व्यंजन में स्वर वर्ण के अभाव को दिखाया जाता है। इसे हल का चिह्न अथवा हलन्त कहते हैं।

अनुस्वार :–

अनुस्वार (ं) एक व्यंजन ध्वनि है, जिसका उच्चारण स्वर की सहायता से होता है यथा–अंक, अंग, रंक आदि अनुनासिक के उच्चारण में नाक से अल्प साँस निकलती है व मुँह से अधिक यथा–चाँद, गाँव आदि। अनुनासिक स्वरों पर चन्द्र बिन्दु लगता है। अनुनासिक (ँ) स्वर की विशेषता होती है।

विसर्ग :–

विसर्ग (:) स्वर के बाद आता है। इसका उच्चारण 'ह' की तरह होता है। हिन्दी में इसका प्रयोग बहुत कम होता है। यथा–अतः, दुःख आदि। अनुस्वार और विसर्ग का सम्बन्ध न तो स्वर से है और न व्यंजन से। इसलिए इन दोनों ध्वनियों को संस्कृत में 'अयोगवाह' कहते हैं।

मात्रा :–

मात्राएँ स्वरों की होती हैं, व्यंजन स्वर की सहायता से ही बोले जाते हैं। स्वर का जो रूप व्यंजन में समाहित होता है उसे स्वर की मात्रा कहते हैं। मात्राएँ दस हैं– ा, ि, ी, ु, ू, ृ, े, ै, ो, ौ, ।

संयुक्त व्यंजन :–

हिन्दी वर्णमाला में– क्ष, त्र, ज्ञ और श्र संयुक्त व्यंजन हैं। इनको स्वतन्त्र वर्ण नहीं माना जाता– क्ष = क् + ष, त्र = त् + र, ज्ञ = ज् + ञ,

श्र = श् + र ।

4.3.2 शुद्ध उच्चारण का अर्थ

बालक जैसा सुनता है वैसा ही बोलने का प्रयास करता है। इस दृष्टि से शुद्ध उच्चारण का विशेष महत्व है। हिन्दी की अनेक बोलियाँ हैं, जिनके प्रभाव से उच्चारण भेद आ जाता है। खड़ी बोली हिन्दी का व्यवहृत रूप है। उच्चारण की दृष्टि से हिन्दी ध्वनियों के मानक रूप स्वीकार किए गए हैं। उच्चारण शिक्षण में शब्दों के शुद्ध उच्चारण के लिए बलाघात, अनुतान एवं संगम का ज्ञान भी विद्यार्थियों के लिए आवश्यक है।

बलाघात :–

उच्चारण की स्पष्टता के लिए जब किसी अक्षर विशेष पर विशेष बल दिया जाता है, तो इस क्रिया को बलाघात कहते हैं, जैसे– चक्का, कच्चा, अक्ष आदि।

अनुतान :–

जब किसी वाक्य को बोला जाता है तो उसमें एक लय (आरोह–अवरोह) रहता है, इसे ही अनुतान कहते हैं। यह शब्द स्तर पर भी हो सकता है। जैसे– 'अच्छा' शब्द का प्रयोग करने में अलग–अलग अनुतान से इसके विभिन्न अर्थ–स्वीकृति, प्रशंसा तथा विरोध हो सकते हैं।

संगम :–

शब्दों के उच्चारण क्रम में जब किसी अक्षरों के बीच एक ध्वनि को समाप्त कर बीच में हल्का सा विराम देकर दूसरी ध्वनि को बोला जाता है तो इस विराम को संगम कहते हैं। शब्दों के शुद्ध उच्चारण के लिए यह आवश्यक होता है।

4.3.3 उच्चारण शिक्षण का महत्व

किसी भी भाषा के शिक्षण में उच्चारण का अत्यधिक महत्व होता है। भाषण अथवा वार्तालाप की प्रभावशीलता भाषा के शुद्ध उच्चारण पर निर्भर करती है। हिन्दी भाषा की लिपि देवनागरी है जिसमें एक ध्वनि के लिए एक ही लिपि का प्रयोग किया जाता है। अतः वर्णो के शुद्ध उच्चारण का ज्ञान विद्यार्थियों को आवश्यक है।

वर्णों के अशुद्ध उच्चारण के कारण वर्तनी संबन्धी अशुद्धियों की संभावना रहती है। इसलिए विद्यार्थियों के शुद्ध उच्चारण पर बल देने के साथ शिक्षक को स्वयं भी उच्चारण की शुद्धता के प्रति सजग रहना चाहिए।

4.3.4 उच्चारण की अशुद्धियाँ एवं सुधार के उपाय

छात्रों को गद्य अथवा पद्य के सस्वर वाचन के द्वारा उच्चारण अभ्यास का अवसर मिलता है। सस्वर वाचन के समय छात्रों के द्वारा की गयी उच्चारण सम्बन्धी त्रुटियों का ज्ञान शिक्षक को हो जाता है, जैसे– छात्रों द्वारा 'अ' को 'आ' बोलना, 'श' को 'स' उच्चारित करना आदि।

शुद्ध उच्चारण में उचित गति, लय, बलाघात आदि की ओर भी शिक्षक को ध्यान देना चाहिए छात्रों द्वारा सस्वर वाचन के समय की गयी उच्चारण सम्बन्धी अशुद्धियों की ओर उनका ध्यान आकृष्ट करने के लिए अशुद्ध उच्चारित शब्दों को श्यामपट्ट पर लिख कर उच्चारण संशोधन किया जाना चाहिए। छात्रों के द्वारा की जाने वाली उच्चारण संबन्धी अशुद्धियों के प्रमुख कारणों में छात्रों को ध्वनि का सही ज्ञान न होना, स्थानीय बोली का प्रभाव, बलाघात का उचित प्रयोग न करना, ध्वनि विशेष का अल्प उच्चारण अथवा अति उच्चारण करना है।छात्र शब्दों का शुद्ध उच्चारण कर सकें इसके लिए प्रारम्भिक कक्षाओं से ही इस ओर ध्यान देना आवश्यक है। उच्चारण की शुद्धता के लिए शिक्षक को निम्नलिखित बातों का अनुसरण करना चाहिए–

- कक्षा में मौखिक कार्य पर अधिक बल दें।
- छात्रों को उच्चारण की शुद्धता के लिए शिक्षक प्रोत्साहित करे।
- शिक्षक स्वयं भी अपने उच्चारण पर ध्यान दें।
- उच्चारण सम्बन्धी नियमों का ज्ञान छात्रों को दें।
- अनुकरण वाचन में छात्र द्वारा अशुद्ध उच्चारण करने पर शिक्षक छात्र को उच्चारण की अशुद्धि बताकर उच्चारण शुद्ध कराये।
- कठिन शब्दों को श्यामपट्ट पर लिखकर उच्चारण अभ्यास कराया जाय।
- लिखित कार्य का सावधानी पूर्वक संशोधन करना।

4.3.5 वर्तनी का महत्व

विचारों की लिखित अभिव्यक्ति में वर्तनी का विशेष महत्व है। भाषा की शुद्धता वर्तनी की शुद्धता पर निर्भर करती है। वर्तनी की अशुद्धता से उच्चारण भी अशुद्ध हो जाता है। अतः लेखन में वर्तनी की शुद्धता पर विशेष ध्यान होना चाहिए। शब्दों का शुद्ध लेखन वर्तनी के ज्ञान पर निर्भर करता है इसीलिए छात्रों को हिन्दी वर्तनी का ज्ञान अत्यन्त आवश्यक है।

4.3.6 वर्तनी सम्बन्धी अशुद्धियों के कारण

हिन्दी लिखते समय छात्र वर्तनी सम्बन्धी अनेक अशुद्धियाँ करते हैं। वर्तनी की अशुद्धियों के सामान्यतया निम्नलिखित कारण होते हैं–

- अशुद्ध उच्चारण
- वर्णों एवं मात्राओं का सही ज्ञान न होना
- सुनने और लिखने में असावधानी करना
- छात्रों के लिखित कार्य का संशोधन न होना
- व्याकरण सम्बन्धी नियमों का समुचित ज्ञान न होना
- वर्तनी के अभ्यास का अभाव

4.3.7 वर्तनी सम्बन्धी अशुद्धियों के सुधार हेतु उपाय

- कक्षा में शिक्षक द्वारा स्वयं शुद्ध उच्चारण करना
- शिक्षक द्वारा छात्रों के उच्चारण को शुद्ध कराने का प्रयास करना
- वर्तनी सम्बन्धी व्याकरणिक नियमों का ज्ञान कराना
- छात्रों के लिखित कार्य का शिक्षक द्वारा यथासम्भव निरीक्षण एवं संशोधन
- सुनने एवं लिखने में सजगता
- छात्रों को कठिन शब्दों को लिखने का अभ्यास कराना
- कठिन शब्दों को श्यामपट्ट पर लिख कर छात्रों से शुद्ध लिखने का अभ्यास कराना

4.3.8 उच्चारण और वर्तनी सम्बन्धी शिक्षण

(क) उच्चारण शिक्षण

गद्य अथवा पद्य का शिक्षण करते समय सस्वर वाचन और अनुकरण वाचन के द्वारा उच्चारण शिक्षण का कार्य समुचित रूप में कराया जा सकता है। वाचन के समय विद्यार्थियों द्वारा अशुद्ध उच्चारित शब्दों को श्यामपट्ट पर लिख कर उनका ध्यान इस ओर आकृष्ट किया जाय। इसके अतिरिक्त वार्तालाप, भाषण, वाद–विवाद व कविता पाठ आदि में उच्चारण शिक्षण का अवसर रहता है। यहाँ पर केवल शुद्ध उच्चारण का ही महत्व नहीं है वरन अनुतान, बलाघात, शब्द संयोजन, गति, लय, विराम चिह्नों आदि का भी महत्व है। अतः शिक्षक को इनके शिक्षण पर भी विशेष बल देना चाहिए।

(ख) वर्तनी शिक्षण

वर्तनी शिक्षण में दृश्य–श्रव्य साधनों का प्रयोग जैसे–वर्तनी चार्ट, टेपरिकार्डर, लिंग्वाफोन, प्रोजेक्टर आदि लाभकारी होता है। शिक्षकों को चाहिए कि वह इनकी सहायता से छात्रों को वर्तनी की शिक्षा दें। इसके अतिरिक्त लिखित रचना शिक्षण उपागम भी उपयोगी है छात्रों को श्रुतलेख, अनुलेख और प्रतिलेख लिखने के लिए प्रेरित करना चाहिए। छात्रों के लिखित कार्य का शिक्षक द्वारा सावधानी पूर्वक निरीक्षण कर वर्तनी सम्बन्धी अशुद्धियों का संशोधन किया जाना चाहिए। अशुद्ध शब्दों को कई बार लिखा जाना चाहिए। जिन शब्दों में विद्यार्थी वर्तनी की अशुद्धियाँ अधिक करते हैं ऐसे शब्दों को शिक्षक निरीक्षण करते समय रेखांकित करे और इन शब्दों को विद्यार्थियों से स्वयं संशोधन करने के लिए प्रेरित करे। शिक्षक छात्रों को इस कार्य में शब्दकोश का उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित करे। इससे छात्रों में सजगता और स्वध्याय की प्रवृत्ति विकसित होगी साथ ही उनके शब्द भंडार में भी वृद्धि होगी।

बोध प्रश्न

टिप्पणी :

क) नीचे दिए गए बोध प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

ख) इकाई के अंत में दिए गए बोध प्रश्नों के उत्तर से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1. वर्ण और लिपि में अन्तर कीजिए।

....

....

2. हिन्दी में वर्तनी सम्बन्धी अशुद्धियों के मुख्य कारणों को बताइए।

....

....

3. वर्तनी सम्बन्धी अशुद्धियों के सुधार हेतु उपायों का संक्षेप में उल्लेख करें।

....

....

4.4 शब्द विचार एवं शब्द रचना

ध्वनियों के मेल से बने सार्थक वर्ण समूह को 'शब्द' कहते हैं। अर्थ ही शब्द का प्रधान लक्षण है। शब्दों की रचना ध्वनि एवं अर्थ के मेल से होती है। जिस ध्वनि समूह से कोई अर्थ नहीं निकलता वह ध्वनि समूह शब्द नहीं है। उदाहरण स्वरूप म, र, ह, म ध्वनियाँ हैं इन ध्वनियों का अपने आप में कोई अर्थ नहीं है, किन्तु इन चारों ध्वनियों को मिलाकर 'मरहम' ध्वनि समूह बनता है, जिसका एक स्पष्ट अर्थ होता है। शब्द कभी अकेले तो कभी दूसरे शब्दों के साथ मिलकर अर्थ प्रकट करता है। शब्द के अभाव में वाक्य रचना संभव नहीं है।

किसी भी भाषा के ज्ञान और प्रयोग के लिए शब्दों का समुचित ज्ञान और उनके प्रयोग की जानकारी जरूरी है। भाषा में परिवर्तन होते रहते हैं यह एक स्वाभाविक प्रक्रिया है। हिन्दी भाषा के साथ भी यही स्थिति है। अपने विकास क्रम में संस्कृत भाषा के अनेक शब्दों का समावेश हिन्दी में होता गया। इसके अतिरिक्त विदेशी शब्द भी हिन्दी भाषा में आए। ऐसे अनेक शब्द समय के साथ–साथ अपने मूल रूप में न होकर विकृत हो गए हैं। वर्तमान में भी हिन्दी में विभिन्न स्त्रोतो से नये–नये शब्द आते जा रहे हैं। हिन्दी शब्द भंडार का विवेचन अनेक आधारों पर किया जाता है, जो इस प्रकार है–

4.4.1 व्युत्पत्ति के आधार पर

व्युत्पत्ति की दृष्टि से हिन्दी शब्दों के चार प्रकार हैं–

(क) तत्सम

(ख) तद्‌भव

(ग) देशज

(घ) विदेशी

(क) तत्सम शब्द

संस्कृत भाषा के अनेक शब्द मूलरूप में हिन्दी में समाविष्ट हो गए हैं और प्रचलित हैं उन्हें तत्सम कहा जाता हैं, जैसे–त्वरित, अग्नि, वृक्ष, शत आदि। धर्म, दर्शन एवं साहित्य में तत्सम शब्दों का अधिक मात्रा में प्रयोग किया गया है। यह प्रवृत्ति वैज्ञानिक एवं तकनीकी आदि विषयों से सम्बन्धित नए शब्दों की रचना में दिखायी देती है।

(ख) तद्‌भव शब्द

ऐसे शब्द जो सीधे संस्कृत से न आकर पालि, प्राकृत आदि से परिवर्तित होकर हिन्दी में आए हैं, तद्‌भव कहे जाते हैं, जैसे– आग, मोर, फूल, पत्थर आदि।

(ग) देशज शब्द

देशज शब्दों के अन्तर्गत वे शब्द आते हैं, जिनकी व्युत्पत्ति कहाँ से हुई ज्ञात नहीं है। लोक भाषाओं में ऐसे शब्दों की प्रचुरता है, जैसे– खिचड़ी, कटोरा, लोटा, जूता आदि।

(घ) विदेशी शब्द

विदेशी भाषाओं से जो शब्द हिन्दी में आए हैं, उन्हें विदेशी शब्द कहते हैं। इन विदेशी भाषाओं में फारसी, अरबी, तुर्की, पुर्तगाली, अंग्रेजी मुख्य हैं। हिन्दी में इन विदेशी भाषाओं के शब्दों को थोड़े हेरफेर और अपने उच्चारण के अनुसार अपना लिया गया है। जैसे– दुकान, आराम, अमीर, औलाद, चमचा, लालटेन, बोतल आदि।

4.4.2 रचना के आधार पर

हिन्दी में रचना की दृष्टि से शब्द के तीन प्रकार हैं–

(क) रूढ़

(ख) यौगिक

(ग) योगरूढ़

(क) रूढ़ शब्द

ऐसे शब्द जिनके सार्थक खंड न हों, उन्हें रूढ़ शब्द कहते हैं; जैसे– कान, दिन, पशु आदि। इस प्रकार के शब्द दूसरे शब्दों के मेल से नहीं बनते, स्वतः पूर्ण अर्थ रखते हैं। यह मूल शब्द हैं।

(ख) यौगिक शब्द

ऐसे सार्थक शब्द जो मूल शब्दों में उपसर्ग और प्रत्यय के मेल से बनते हैं यौगिक शब्द कहलाते हैं। उपसर्ग शब्दांश किसी शब्द के पूर्व जोड़ दिया जाता है; जैसे– अनु + शासन = अनुशासन, परि + जन = परिजन, सु + कर्म = सुकर्म आदि।

प्रत्यय किसी शब्द के अन्त में जोड़ा जाता है, जैसे– लड़ + आई = लड़ाई, बोल + ई = बोली, बेल + न = बेलन आदि।

इसके अतिरिक्त यौगिक शब्दों की रचना समास, द्विरुक्ति एवं सन्धि के द्वारा भी होती है।

समास में कम से कम दो पदों का योग होता है। हिन्दी में समास इस प्रकार हैं– अव्ययीभाव, तत्पुरुष, बहुव्रीहि एवं द्वन्द। समास द्वारा बने यौगिक शब्दों का विग्रह जिस समास के अनुसार होगा वही समास उस शब्द में माना जाता है। पूर्वोक्त, पुरुषोत्तम, शीतोष्ण, घुड़दौड़ आदि समास द्वारा निर्मित यौगिक शब्द हैं।

किसी सार्थक शब्द की दो बार आवृत्ति द्विरुक्ति कहलाती है। द्विरुक्ति द्वारा निर्मित शब्द, जैसे– कुछ–कुछ, नीला–नीला, खाते–खाते आदि हैं।

उपसर्ग, प्रत्यय और समास की ही भाँति सन्धि भी शब्द रचना में सहायक है। सन्धि में दो वर्णों के मेल से एक नया शब्द बनता है। सन्धि द्वारा निर्मित शब्द, जैसे– यद्यपि, उपेक्षा, तिरस्कार, व्याकुल आदि हैं।

(ग) योगरूढ़ शब्द

ऐसे यौगिक शब्द जो अपने सामान्य अर्थ से अलग एक विशेष अर्थ का बोध कराने लगते हैं, तब उन्हें योगरूढ़ शब्द कहते हैं, जैसे– पंकज का शाब्दिक अर्थ हैं जल से उत्पन्न किन्तु उसका रूढ़ अर्थ 'कमल' है। दशानन, लम्बोदर, गिरिधारी आदि योगरूढ़ शब्द हैं, जो विशिष्ट अर्थ में प्रयुक्त होते हैं।

4.4.3 अर्थ के आधार पर

शब्द और अर्थ का संबन्ध ठीक उसी प्रकार है जैसे शरीर और आत्मा का। शरीर की सार्थकता उसकी आत्मा से है। इसी प्रकार शब्द की भी सार्थकता उसके अर्थ से होती है। अर्थहीन शब्द का कोई महत्व नहीं होता है। अर्थ की दृष्टि से हिन्दी शब्द के चार प्रकार हैं–

(क) पर्यायवायी या समानार्थी

(ख) एकार्थी

(ग) अनेकार्थी

(घ) विलोमार्थी या विपरीतार्थक

(क) पर्यायवाची शब्द

जिन शब्दों के अर्थ में समानता होती है उन शब्दों को पर्यायवाची शब्द की संज्ञा दी जाती है। इसीलिए इन्हे समानार्थी शब्द भी कहते हैं। शब्दों के अर्थ में समानता होते हुए भी किस शब्द का प्रयोग किस स्थान पर उपयुक्त होगा इसका ध्यान रखा जाता है, क्योंकि शब्दों के अर्थ में समानता होते हुए भी उनमें सूक्ष्म अन्तर होता है। पर्यायवाची शब्दों का प्रसंगानुसार प्रयोग कैसे किया जाय इसकी सही जानकारी शिक्षक द्वारा अपने छात्रों को दी जानी चाहिए।

(ख) एकार्थी शब्द

जिन शब्दों का अर्थ किसी भी परिस्थिति में एक ही रहता है उन्हें एकार्थी शब्द कहा जाता है, आत्मा, आयु, अभिनन्दन, आदेश, दया, निधन आदि।

(ग) अनेकार्थी शब्द

जिन शब्दों का अर्थ प्रसंगानुसार परिवर्तित हो जाता है। उन शब्दों को अनेकार्थी शब्द कहते हैं, जैसे कनक (धतूरा, सोना), उत्तर (उत्तर दिशा, जवाब), आपत्ति (विपत्ति, एतराज), कुशल (खैरियत, चतुर) आदि।

(घ) विलोमार्थी शब्द

जो शब्द किसी शब्द का सर्वदा विपरीत अर्थ प्रकट करता है, वह उस शब्द का विलोम शब्द कहा जाता है। इनको विपरीतार्थक शब्द भी कहते हैं।

जैसे–राग–द्वेष, आशा–निराशा, आय–व्यय, मान–अपमान, आयात–निर्यात आदि।

4.4.4 शब्द शक्ति के आधार पर

शब्दों का सामान्य अर्थ के अतिरिक्त प्रसंगानुसार विशिष्ट अर्थ भी होता है। शब्द की जिस शक्ति से इस विशिष्ट अर्थ का बोध होता है उसे शब्द शक्ति कहते हैं। यह अर्थ बोधक शक्तियाँ तीन प्रकार की होती हैं –

(क) अभिधा

(ख) लक्षणा

(ग) व्यंजना

(क) अभिधा

शब्द जिस शक्ति के आधार पर सामान्य अर्थ प्रकट करते हैं, उसे अभिधा कहते हैं। अभिधा शक्ति से शब्दों का जो अर्थ व्यक्त होता है, वह वाच्यार्थ कहलाता है; इसे मुख्यार्थ भी कहते हैं। शब्द कोश में शब्दों का वाच्यार्थ ही रहता है।

(ख) लक्षणा

शब्दों की जिस शक्ति से उसके सामान्य अर्थ के स्थान पर विशिष्टि अर्थ का बोध होता है, उस शक्ति को लक्षणा कहते हैं। शब्दों का यह अर्थ लक्ष्यार्थ होता है, जैसे– उसके मुँह में पानी भर आया। इस वाक्य में 'पानी' का सामान्य अर्थ न होकर लोभ का अर्थ प्रकट हो रहा है। ऐसे शब्दों के प्रयोग से विद्यार्थियों को भली–भाँति परिचित होना चाहिए।

(ग) व्यंजना

शब्द की जिस शक्ति द्वारा उसके सामान्य अर्थ के अतिरिक्त अन्य अर्थ का भी बोध होता है, उसे व्यंजना कहते है। व्यंजना शक्ति से शब्दों का जो अर्थ व्यक्त होता है, वह व्यंगार्थ कहलाता है, जैसे– 'सूरज उग आया' वाक्य का सामान्य अर्थ सवेरा होना है किन्तु व्यंगार्थ से इसका अन्य अर्थ किसी सोये हुए व्यक्ति को उठाने से हो सकता है। ऐसे शब्दों का प्रयोग भाषा की व्यंजकता और उसके शब्दों में वृद्धि करते हैं।

4.4.5 व्याकरण के आधार पर

व्याकरणिक विवेचन के आधार पर शब्द के दो भेद होते है–

(क) विकारी

(ख) अविकारी या अव्यय

(क) विकारी शब्द

वाक्य में प्रयुक्त होने पर शब्द 'पद' कहलाते हैं। वाक्य में जिन शब्दों के रूप लिंग, वचन एवं कारक के अनुसार परिवर्तित हो जाते हैं, उन्हें विकारी शब्द कहा जाता है। संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया विकारी शब्द हैं। इनका अध्ययन व्याकरण शिक्षण के अन्तर्गत किया जाता है। छात्रों को संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण व क्रिया का समुचित प्रयोग और अभ्यास कराना आवश्यक है।

(ख) अविकारी या अव्यय शब्द

वाक्य में जिन शब्दों के रूप में लिंग, वचन, पुरुष कारक आदि के कारण कोई परिवर्तन नहीं होता है, उन्हें अविकारी शब्द कहा जाता है। ऐसे शब्दों का व्यय नहीं होता। अतः इन्हें अव्यय कहते हैं। क्रियाविशेषण, सम्बन्धबोधक, समुच्चयबोधक तथा विस्मयादिबोधक शब्द अविकारी शब्द हैं, जैसे– प्रायः धीरे–धीरे, वहाँ, किन्तु, वाह–वाह! आदि।

बोध प्रश्न

टिप्पणी :

क) नीचे दिए गए बोध प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

ख) इकाई के अंत में दिए गए बोध प्रश्नों के उत्तर से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

4. हिन्दी शब्दों के विभिन्न स्रोंतों का संक्षिप्त उल्लेख कीजिए।

....

....

5. हिन्दी में रचना के आधार पर शब्दों को कितने प्रकार में विभाजित किया जाता है?

....

....

6. अविकारी शब्द किन्हें कहा जाता है? सोदाहरण बताइये।
....
....

4.5 वाक्य विचार

जिन सार्थक शब्द समूह से किसी विचार की अभिव्यक्ति होती है, वह वाक्य कहलाता है। कभी–कभी विचाराभिव्यक्ति हेतु एक ही शब्द प्रयुक्त होता है, जैसे जब छोटा बालक पानी कहता है तो उसका आशय होता है कि उसे प्यास लगी है, उसको पानी चाहिए। ऐसे आंशिक अथवा सांकेतिक वाक्य सांकेतिक या मौखिक ही होता है। विचारों एवं भावों की स्पष्ट अभिव्यक्ति के लिए पूर्ण तथा शुद्ध वाक्य ही वांछित होता है जिसमें कर्ता और क्रिया दोनों होते हैं।

4.5.1 वाक्य और उपवाक्य

वाक्य में शब्दों का क्रम महत्वपूर्ण होता है। वाक्य उसी समूह को कहा जायेगा; जब उसमें कर्ता और क्रिया दोनों होंगे, जैसे राम पढ़ता है। इस वाक्य में 'राम' कर्त्ता है और 'पढ़ता है' क्रिया। जिसके बारे में कुछ कहा जाता है वह उद्देश्य कहलाता है और उद्देश्य के बारे में जो कुछ कहा जाता है उसे विधेय कहते हैं। इस प्रकार वाक्य मे उद्देश्य एवं विधेय आवश्यक हैं। वाक्य में भाव बोध की क्षमता भी होनी चाहिए अर्थात उद्देश्य और विधेय के अर्थों में परस्पर विरोध नहीं होना चाहिए उदाहरण के लिए– राम आग से खेत सींच रहा है। इस वाक्य में भावबोध की योग्यता का अभाव है क्योंकि खेत पानी से सींचा जाता है न कि आग से। भाव बोध की दृष्टि से शुद्ध वाक्य होगा राम पानी से खेत सींच रहा है। एक वाक्य में अनेक वाक्य हो सकते हैं जिसमें एक मुख्य वाक्य होता है और अन्य उपवाक्य होते हैं; जैसे– राम ने कहा कि मैं भोजन करूँगा। इस वाक्य में 'राम ने कहा' मुख्य वाक्य है और 'मैं भोजन करूँगा' उपवाक्य है। उपवाक्यों के पूर्व प्रायः संयोजक शब्द जैसे– कि, यदि, जो, जहाँ, यद्यपि आदि होते हैं जो उपवाक्य को मुख्य वाक्य से जोड़ते हैं। उपवाक्य में उद्देश्य और विधेय होते हैं और उसका अपना एक अर्थ होता है। उपवाक्य तीन प्रकार संज्ञा उपवाक्य, विशेषण उपवाक्य, क्रिया विशेषण उपवाक्य हो सकते है–

(क) संज्ञा उपवाक्य

संज्ञा उपवाक्य के पूर्व 'कि' संयोजक शब्द होता है जो उपवाक्य को प्रधान वाक्य से जोड़ता है, जैसे–'गीता ने कहा कि मैं गीत गाऊँगी' यहाँ पर 'मैं गीत गाऊँगी' संज्ञा उपवाक्य है।

(ख) विशेषण उपवाक्य

विशेषण उपवाक्य के पूर्व जो, जिसे, जैसा आदि शब्दों का प्रयोग होता है। इस प्रकार का आश्रित उपवाक्य विशेषण की तरह कार्य करता है, जैसे– गीता ने जो कल कहा था, वही आज भी कहा है। इस वाक्य में 'जो कल कहा था' विशेषण उपवाक्य है।

(ग) क्रिया विशेषण उपवाक्य

क्रिया विशेषण उपवाक्य के पूर्व प्रायः ज्यों, जब, जिधर, यद्यपि आदि शब्दों का प्रयोग होता, जैसे– जब बस आयेगी तब राम चला जायेगा। इस उपवाक्य में 'जब बस आयेगी' क्रिया विशेषण उपवाक्य है। क्योंकि यह मुख्य उपवाक्य की क्रिया की विशेषता बताता है।

4.5.2 वाक्य भेद

वाक्य भेद दो दृष्टियों से किए जाते हैं– प्रथम रचना की दृष्टि से द्वितीय अर्थ की दृष्टि से।

(क) रचना की दृष्टि से–

रचना की दृष्टि से वाक्य के तीन प्रकार हैं :

- साधरण वाक्य
- मिश्र वाक्य
- संयुक्त वाक्य

- साधारण वाक्य

साधारण वाक्य में एक 'उद्देश्य' और 'एक विधेय' होता है, जैसे– राम खेल रहा है। इस वाक्य में एक उद्देश्य (कर्त्ता) और एक विधेय (क्रिया) है। इस प्रकार के वाक्य साधारण या सरल वाक्य कहे जाते हैं।

- मिश्र वाक्य

इस प्रकार के वाक्य में एक प्रधान उपवाक्य के अतिरिक्त उसके आश्रित एक या अधिक उपवाक्य होता है। मिश्र वाक्य में मुख्य उद्देश्य और मुख्य विधेय से जो वाक्य बनता है उसे प्रधान उपवाक्य और अन्य उपवाक्यों को आश्रित उपवाक्य कहते हैं। जैसे– राम ने कहा कि वह मेरे साथ विद्यालय जायेगा। इस वाक्य में 'राम ने कहा' मुख्य वाक्य है और 'वह मेरे साथ विद्यालय जायेगा' आश्रित उपवाक्य है।

- संयुक्त वाक्य

जिस वाक्य में एक से अधिक मुख्य उपवाक्य होतें हैं और इनके साथ प्रायः आश्रित उपवाक्य भी होते हैं, उन्हें संयुक्त वाक्य कहते हैं, जैसे– मोहन ने घर आकर भोजन किया और रमेश के साथ बाजार चला गया। इस

वाक्य में संयोजक 'और' के द्वारा दो सरल वाक्यों को मिलाकर संयुक्त वाक्य बना है। यहाँ पर दोनों वाक्य एक दूसरे पर आश्रित नहीं हैं। इस प्रकार के उपवाक्यों को समानाधिकरण उपवाक्य भी कहा जाता है।

(ख) अर्थ की दृष्टि से–

अर्थ की दृष्टि से वाक्य के आठ प्रकार हैं:

- विधानार्थक
- निषेधात्मक
- प्रश्नवाचक
- आज्ञार्थक
- विस्मयादि बोधक
- संदेहवाचक
- संकेतवाचक
- इच्छावाचक

- **विधानार्थक वाक्य**

जिस वाक्य से किसी बात के होने की सामान्य जानकारी प्राप्त होती है उसे विधानार्थक वाक्य कहते हैं, जैसे– वह विद्यालय जाता है। भारत की राजधानी दिल्ली है।

- **निषेधात्मक वाक्य**

जिस वाक्य से किसी कार्य का निषेध सूचित हो उसे निषेधात्मक वाक्य कहते हैं, जैसे– मैने भोजन नहीं किया। मैं स्कूल नहीं जाऊँगा।

- **प्रश्नवाचक वाक्य**

जिस वाक्य से किसी प्रकार का प्रश्न किया जाय उसे प्रश्नवाचक वाक्य कहते हैं, जैसे– तुम कहाँ जा रहे हो? आपका नाम क्या है?

- **आज्ञार्थक वाक्य**

जिस वाक्य से किसी प्रकार की आज्ञा, अथवा निवेदन का भाव प्रकट हो उसे आज्ञार्थक वाक्य कहते हैं, जैसे– तुम विद्यालय मत जाओ। तुम पढ़ा करो।

- **विस्मयादिबोधक वाक्य**

जिस वाक्य से विस्मय, हर्ष दुःख, घृणा आदि का बोध होता है, उन्हें विस्मयादि बोधक वाक्य कहते हैं, जैसे–वाह! कैसा बढ़िया स्वाद है। हाय! मैं लुट गया।

- **संदेवाचक वाक्य**

जिस वाक्य से किसी बात का सन्देह या शंका का भाव प्रकट होता है उसे संदेहवाचक वाक्य कहते हैं, जैसे– आज वर्षा हो सकती है। शायद वह विद्यालय जाये।

- **संकेतवावचक वाक्य**

जिस वाक्य से किसी संकेत या शर्त का बोध होता है उस वाक्य को संकेत वाचक वाक्य कहते हैं, जैसे– वर्षा नहीं होगी तो फसल सूख जायेगी। कठिन परिश्रम से सफलता मिलेगी।

- **इच्छावाचक वाक्य**

जिस वाक्य से किसी इच्छा या शुभकामना का भाव व्यक्त हो रहा हो उस वाक्य को इच्छावाचक वाक्य कहते हैं, जैसे– दीपावली शुभ हो। आपका कार्य सफल हो।

4.5.3 वाक्यों की अशुद्धियाँ

हिन्दी में शुद्ध वाक्य रचना के कुछ नियम हैं जिनका ज्ञान विद्यार्थियों को होना अत्यन्त आवश्यक है। इन नियमों का पालन करके विद्यार्थी हिन्दी वाक्य रचना को प्रभावशाली बना सकते हैं। यह नियम हैं :

(क) शब्द क्रम

(ख) अन्वय

(ग) शब्दों का सही प्रयोग

(क) शब्द क्रम

वाक्य रचना में शब्दों का क्रम महत्वपूर्ण है। शब्दों को वाक्य में सही स्थान पर रखने को शब्दक्रम या पदक्रम कहते है। हिन्दी वाक्य में पहले कर्त्ता बीच में कर्म और अन्त में क्रिया आती है। पदों का क्रम बदलने से वाक्य अशुद्ध हो जाता है।

(ख) अन्वय

अन्वय के अन्तर्गत लिंग, वचन, पुरुष एवं काल के अनुसार वाक्य के विभिन्न पदों का पारस्परिक सम्बन्ध दिखाते हैं। यह सम्बन्ध कर्त्ता और कर्म का क्रिया के साथ एवं संज्ञा और सर्वनाम का होता है।

- **कर्त्ता और क्रिया का अन्वय**

यदि कर्त्ता के साथ कोई विभक्ति न हो तो क्रिया के लिंग, वचन एवं पुरुष कर्त्ता के लिंग, वचन एवं पुरुष के अनुसार होगा, जैसे– बालक पुस्तक पढ़ता है, राधा स्कूल जाती है।

- **कर्म और क्रिया का अन्वय**

यदि वाक्य में कर्त्ता के साथ 'ने' विभक्ति हो तथा कर्म की 'को' विभक्ति न हो तो क्रिया कर्म के लिंग, वचन तथा पुरुष के अनुसार होगी, जैसे– श्याम ने पुस्तक पढ़ी, उसने पुस्तक पढ़ी।

- **संज्ञा और सर्वनाम का अन्वय**

वाक्य में सर्वनाम का लिंग, वचन और पुरूष उस संज्ञा का अनुसरण करते हैं जिसके लिए उसका प्रयोग होता है, जैसे–कर्मचारियों ने घोषणा कर दी है कि वे कल से कार्यालय नहीं आयेंगे। वाक्य में कई संज्ञाओं के स्थान पर एक सर्वनाम का प्रयोग करना हो तो उस सर्वनाम का प्रयोग पुलिंग बहुवचन में होगा, जैसे– राम और श्याम बाहर गए हैं, वे कल वापस आयेंगे।

(ग) शब्दों का सही प्रयोग

वाक्य में शब्दों का सही प्रयोग उसे सुन्दरता प्रदान करता है। अतः शब्दों का प्रयोग करते समय विशेष ध्यान देना चाहिए, जैसे– वाक्य में व्यर्थ शब्दों का प्रयोग न हो, शब्दों के प्रयोग में व्याकरण सम्बन्धी नियमों का पालन हो वाक्य में पुनरुक्ति दोष न हो आदि।

4.5.4 विरामादि चिह्न

वाक्य के सुन्दर गठन भावों और विचारों की स्पष्टता के लिए लेखन कार्य में यथास्थान रुकने अथवा ठहराव हेतु विराम चिह्नों का प्रयोग किया जाता है।

हिन्दी में निम्नलिखित विराम चिह्नों का प्रयोग किया जाता है–

– पूर्ण विराम (।)

- अल्प विराम (,)
- अर्द्ध विराम (;)
- योजक चिह्न (-)
- प्रश्नवाचक चिह्न (?)
- विस्मायादि बोध चिह्न (!)
- उद्धरण चिह्न (“ ”)
- निर्देशक चिह्न (–)
- विवरण चिह्न (:–)

पूर्ण विराम (।)

जहाँ वाक्य पूर्ण हो जाता है, उस स्थान पर पूर्ण विराम का चिह्न लगता है।

अल्प विराम (,)

लेखन में जिस स्थान पर न्यूनतम समय के लिए ठहराव होता है वहाँ पर अल्प विराम का प्रयोग किया जाता है। अल्प विराम के प्रयोग सम्बन्धी नियम इस प्रकार हैं–

- जहाँ दो से अधिक समान पदों का प्रयोग होता है वहा अल्पविराम का प्रयोग होता है। जैसे – राम, श्याम, गीता और सीता गंगा स्नान के लिए गए।
- वाक्य के बीच में किन्तु, परन्तु, क्योंकि, इसलिए, अतः, जिससे आदि अव्यय का प्रयोग होने पर अव्यय से पूर्व अल्पविराम का प्रयोग होता है। जैसे– राम आज विद्यालय नहीं जायेगा, क्योंकि वह बीमार है।

अर्द्धविराम (;)

वाक्य में जब अल्प समय से अधिक ठहराव होता है, तब वहाँ पर अर्द्धविराम चिह्न का प्रयोग किया जाता है।

योजक चिह्न (-)

दो या दो से अधिक शब्दों से बने सामासिक पदों और युग्म शब्दों के मध्य योजक चिह्न का प्रयोग होता है। जैसे– माता-पिता, दाल-रोटी, छोटा-बड़ा, हानि-लाभ आदि।

प्रश्नवाचक चिह्न (?)

इस चिह्न का प्रयोग प्रश्नसूचक वाक्य के अन्त मे किया जाता है। जैसे– तुम क्या कर रहे हो?

विस्मयादि बोधक चिह्न (!)

इस चिह्न का प्रयोग आश्चर्य, हर्ष, विषाद, करुणा, भय, घृणा आदि भाव व्यक्त करने के लिए शब्दों, वाक्यों या पदों के अन्त में लगाया जाता है। जैसे– पुत्र चिंरजीवी हो!, वाह! कितना सुन्दर फूल है।

उद्धरण चिह्न (“ ”)

उद्धरण चिह्न का प्रयोग दो प्रकार से किया जाता है–इकहरा उद्धरण चिह्न एवं दुहरा उद्धरण चिह्न। इकहरा उद्धरण चिह्न (‘ ’) का प्रयोग किसी पुस्तक, समाचार पत्र का नाम, लेखक का उपनाम आदि उद्धृत करने में किया जाता है। जैसे– ‘हिन्दुस्तान’ एक हिन्दी दैनिक समाचार पत्र है। दुहरा उद्धरण चिह्न (“ ”) का प्रयोग किसी लेखक के कथन को ज्यों का त्यों उद्धृत करने के लिए किया जाता है। जैसे–“सदैव सत्य और अहिंसा का पालन करना चाहिए” –गाँधी जी

निर्देशक चिह्न (–)

इस चिह्न का प्रयोग वस्तुओं या कार्यों को समझाने तथा किसी उद्धरण या कथन के पूर्व लगाया जाता है, जैसे– भगवान बुद्ध ने कहा है– “जीव हत्या पाप है।”

विवरण चिह्न (:–)

इस चिह्न का प्रयोग किसी बात का विवरण देने अथवा किसी कथन को स्पष्ट करने के लिए किया जाता है। जैसे– क्रिया दो प्रकार की होती हैः–

(1) सकर्मक क्रिया (2) अकर्मक क्रिया।

बोध प्रश्न

टिप्पणी :

क) नीचे दिए गए बोध प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

ख) इकाई के अंत में दिए गए बोध प्रश्नों के उत्तर से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

7. वाक्य रचना में शब्दक्रम के महत्व को स्पष्ट करें।

....

....

8. हिन्दी में शुद्ध वाक्य रचना हेतु किसका ज्ञान आवश्यक है?

....

....

9. लेखन कार्य में विराम चिह्नों का प्रयोग क्यों आवश्यक है?

....

....

4.6 शब्द और वाक्य रचना का शिक्षण

माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों द्वारा पूर्व में सीखे गए उच्चारण और वर्तनी सम्बन्धी ज्ञान को और अधिक पुष्ट करने के साथ–साथ शब्द और वाक्य रचना में उन्हें प्रवीण करना है। इस दृष्टि से शिक्षक द्वारा पाठ शिक्षण उपागम और रचना शिक्षण उपागम का प्रयोग करना लाभदायक सिद्ध होगा।

पाठ शिक्षण उपागम

पाठ को पढ़ाते समय शब्द शिक्षण का कार्य मुख्यतः गद्य शिक्षण में किया जा सकता है क्योंकि गद्य शिक्षण में भाव बोध के साथ–साथ छात्रों के शब्द भंडार में वृद्धि करना, शब्द रचना का ज्ञान कराना और शब्दों के समुचित प्रयोग करने में दक्ष करना सम्मिलित होता है। अतः शिक्षक को पाठ में प्रसंगानुसार शब्दार्थ बोध के साथ–साथ अनेकार्थी, पर्यायवाची, विलोम शब्दों के अर्थ तथा परिभाषिक शब्दों का स्पष्टीकरण अवश्य करना चाहिए।

रचना-शिक्षण उपागम

विद्यार्थियों द्वारा अर्जित शब्द ज्ञान का प्रयोग करने का अवसर रचना शिक्षण में मिलता है। शिक्षकों को लिखित रचना जैसे– व्याख्या, विषय वस्तु के सार संक्षेपण, निबंध, कहानी लेखन आदि के लेखन में उपयुक्त शब्दावली के प्रयोग पर बल देना चाहिए। इस उपागम के द्वारा छात्रों के शब्द भंडार में वृद्धि के साथ उनमें प्रसंगानुसार उपयुक्त शब्दों का प्रयोग करने की दक्षता में वृद्धि होती है। रचना शिक्षण उपागम के द्वारा वाक्य शिक्षण में भी सहायता मिलती है। छात्रों को शुद्ध वाक्य रचना के प्रयोग हेतु निम्नलिखित अभ्यास कार्य दिए जा सकते हैं–

- वाक्य मे रिक्त स्थानों की पूर्ति
- लिंग, वचन, विभक्ति तथा पुरुष के अनुसार वाक्य का रूपांतरण
- कर्त्ता, कर्म और क्रिया की अन्विति
- संयुक्त, मिश्र तथा सरल वाक्यों की रचना
- अशुद्ध वाक्यों को शुद्ध रूप में लिखने का अभ्यास

उपरोक्त दोनों शिक्षण उपागमों का प्रयोग व्यावहारिक और पाठ की प्रकृति के अनुसार होना चाहिए।

बोध प्रश्न

टिप्पणी :

क) नीचे दिए गए बोध प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

ख) इकाई के अंत में दिए गए बोध प्रश्नों के उत्तर से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

10. छात्रों के शब्द भंडार में वृद्धि के लिए पाठ शिक्षण उपागम किस प्रकार उपयोगी है? संक्षिप्त उत्तर दें।

....

....

11. रचना शिक्षण उपागम में किस बात पर बल दिया जाता है?

....

....

4.7 सारांश

भाषिक तत्वों के अन्तर्गत ध्वनि, शब्द और वाक्य आते हैं। इस क्रम में सर्वप्रथम वर्ण विचार फिर शब्द विचार तदुपरान्त वाक्य विचार आता है। ध्वनियों के उच्चारण और वर्तनी ज्ञान के लिए मानक हिन्दी वर्णमाला का ज्ञान आवश्यक है। शब्दों के शुद्ध उच्चारण के लिए उच्चारण शिक्षण का विशेष महत्व है। छात्रों को हिन्दी वर्णमाला के स्थानगत और प्रयत्नगत वर्गीकरण का ज्ञान आवश्यक है। इससे वर्णों के शुद्ध उच्चारण के अभ्यास में सहायता मिलती है। वर्तनी की अशुद्धियों के कारणों में– छात्रों को ध्वनि का समुचित ज्ञान न होना, बलाघात का उचित प्रयोग न करना, ध्वनि विशेष का अल्प उच्चारण आदि प्रमुख हैं। इन कारणों को शिक्षक उचित शिक्षण और उपायों को अपनाकर दूर कर सकता है।

शब्द विचार के अन्तर्गत– व्युत्पत्ति के आधार पर, रचना के आधार पर, अर्थ के आधार पर, शब्द शक्ति के आधार पर और व्याकरण के आधार पर विचार किया गया है। विचारों की अभिव्यक्ति के लिए सार्थक शब्दों के समूह को वाक्य कहते हैं। विचारों तथा भावों की स्पष्ट अभिव्यक्ति के लिए शुद्ध वाक्य ही वांछित होता है। वाक्य में शब्दक्रम, अन्विति और रचना के लिए शब्दों का सही प्रयोग, वाक्य के विभिन्न प्रकार, वाक्य रूपांतरण तथा विरामादि चिह्नों का ज्ञान आवश्यक है। इस दृष्टि से शिक्षक द्वारा पाठ शिक्षण और रचना शिक्षण उपागम का प्रयोग उपयोगी होता है। इन उपागमों का प्रयोग कर छात्रों को शब्दों और वाक्यों के आधार पर उच्चारण, शब्द रचना तथा वाक्य रचना में पारंगत किया जा सकता है।

4.8 अभ्यास के प्रश्न

1. अर्थ की दृष्टि से वाक्यों के प्रकारों की सूची तैयार कीजिए।
2. हिन्दी प्रयुक्त होने वाले विराम चिन्हों का वर्णन कीजिए।
3. योगिक शब्दों पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

4.9 चर्चा के बिन्दु

1. वाक्य रचना में शब्दक्रम के महत्व पर चर्चा कीजिए।
2. पाठ शिक्षण उपागम की उपयोगिता पर चर्चा कीजिए।

4.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

1. ध्वनियों के लिखित रूप को ''वर्ण'' कहते हैं। वर्ण उच्चारित भाषा की सबसे छोटी इकाई भी है। अतः वर्ण ध्वनि के उच्चारित और लिखित दोनों रूपों का बोध कराता है। ध्वनियों को लिखने के लिए ध्वनि चिह्नों का निर्माण हुआ। ध्वनि चिह्नों की व्यवस्था को ही ''लिपि'' कहते है।

2. हिन्दी वर्तनी की अशुद्धियों के मुख्य कारण इस प्रकार हैं–

   - अशुद्ध उच्चारण
   - वर्णों एवं मात्राओं का सही ज्ञान न होना
   - सुनने और लिखने में सतर्कता का अभाव
   - व्याकरण सम्बन्धी नियमों का सही ज्ञान न होना

3. वर्तनी सम्बन्धी अशुद्धियों को निम्नलिखित उपायों के द्वारा दूर किया जा सकता है–

   - शिक्षक द्वारा शुद्ध उच्चारण करना
   - वर्तनी सम्बन्धी व्याकरणिक नियमों का ज्ञान कराना
   - छात्रों के लिखित कार्यों का शिक्षक द्वारा निरीक्षण एवं संशोधन करना
   - कठिन शब्दों को श्यामपट्ट पर लिखना और छात्रों से सामूहिक उच्चारण और शुद्ध लेखन का अभ्यास कराना

4. हिन्दी में विभिन्न स्त्रोतों से नये शब्दों का आगमन हुआ है। संस्कृत भाषा के अनेक शब्दों का समावेश हिन्दी में हुआ है। इसके अतिरिक्त विदेशी भाषाओं से भी अनेक शब्द हिन्दी भाषा में आए हैं। इन विदेशी भाषाओं में– अरबी, फारसी, तुर्की, अंग्रेजी, पुर्तगाली प्रमुख हैं। इसके अतिरिक्त पालि और प्राकृत भाषाओं से परिवर्तित होकर अनेक शब्द हिन्दी में सम्मिलित हो गए हैं।

5. हिन्दी में रचना के आधार पर शब्दों को तीन रूपों में विभाजित किया गया हैं– 1– रूढ़ शब्द 2. यौगिक शब्द 3. योगरूढ़ शब्द

6. जिन शब्दों के रूप में लिंग, वचन, पुरुष तथा कारक आदि के कारण कोई परिवर्तन नहीं होता है, उन्हें अविकारी शब्द कहा जाता है।

7. शब्दों को वाक्य में सही स्थान पर रखने को शब्दक्रम या पदक्रम कहते हैं। वाक्य रचना में शब्दों का क्रम महत्वपूर्ण होता है। पदों का क्रम बदलने से वाक्य अशुद्ध हो जाता है।

8. हिन्दी में शुद्ध वाक्य रचना के लिए पदक्रम, अन्वय तथा शब्दों का सही प्रयोग इसका ज्ञान अत्यन्त आवश्यक है। इन नियमों का पालन करके हिन्दी वाक्य रचना को प्रभावशाली बनाया जा सकता है।

9. भावों तथा विचारों की स्पष्टता और वाक्य के सुन्दर गठन के लिए रचना में समुचित स्थान पर रुकने के लिए विराम चिह्नों का प्रयोग किया जाता है।

10. पाठ शिक्षण उपागम के द्वारा शिक्षक मुख्यतः गद्य शिक्षण में पाठ में प्रसंगानुसार शब्दों के अर्थ बताता है। इसके साथ–साथ अनेकार्थी, पर्यायवाची, विलोम शब्दों के अर्थ तथा पारिभाषिक शब्दों का स्पष्टीकरण करता है जिससे छात्रों के शब्द भंडार में वृद्धि होती है।

12. रचना शिक्षण उपागम में विद्यार्थियों को पूर्व में सीखे गए शब्दों का सही प्रयोग करने का अवसर उपलब्ध होता है क्योंकि शिक्षक इस उपागम के द्वारा छात्रों को विषयवस्तु के सार संक्षेपण, निबंध, कहानी लेखन आदि में उपयुक्त शब्दावली का प्रयोग करने पर बल देता है जिससे छात्रों में प्रसंगानुसार उपयुक्त शब्दों का चयन और प्रयोग करने की क्षमता में वृद्धि होती है।

4.11 कुछ उपयोगी पुस्तकें

1.	पाण्डेय, रामशकल (2002),	:	हिन्दी शिक्षण, अग्रवाल पब्लिकेशन्स।
2.	आधुनिक हिन्दी व्याकरण और रचना	:	प्रसाद, वसुदेवनन्दन, भारती भवन, पटना
3.	हिन्दी शिक्षण	:	पाण्डेय, रामशकल, अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा
4.	वर्तनी शिक्षण	:	सी0पी0आई0, इलाहाबाद
5.	हिन्दी शिक्षण	:	दुबे, सत्यनारायण, अनुभव पब्लिकेशन्स, इलाहाबाद
6.	माध्यमिक विद्यालयों में हिन्दी शिक्षण	:	सिंह, निरंजन कुमार, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर

इकाई – 5 : श्रवण एवं मौखिक अभिव्यक्ति के कौशल का विकास

इकाई की संरचना

5.1 प्रस्तावना

5.2 इकाई के उद्देश्य

5.3 श्रवण कौशल का अर्थ एवं महत्व

  5.3.1 श्रवण कौशल विकास सम्बन्धी शिक्षण उद्देश्य

  5.3.2 श्रवण कौशल के विकास हेतु शिक्षण उपागम

  5.3.3 श्रवण कौशल के विकास हेतु श्रव्य–दृश्य सामग्री

5.4 मौखिक अभिव्यक्ति का अर्थ एवं महत्व

  5.4.1 मौखिक अभिव्यक्ति कौशल के विकास सम्बन्धी शिक्षण उद्देश्य

  5.4.2 मौखिक अभिव्यक्ति कौशल के विकास हेतु शिक्षण उपागम

  5.4.3 मौखिक अभिव्यक्ति कौशल के विकास हेतु श्रव्य–दृश्य सामग्री

5.5 सारांश

5.6 अभ्यास के प्रश्न

5.7 चर्चा के बिन्दु

5.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

5.9 कुछ उपयोगी पुस्तकें

5.1 प्रस्तावना

पूर्व इकाई में आपको यह बताया गया है कि हिन्दी भाषा की व्यवस्था को जानने व समझने के लिए उसके भाषिक तत्वों को जानना आवश्यक है। प्रस्तुत इकाई में हम बालकों में श्रवण एवं मौखिक अभिव्यक्ति के कौशल का विकास कैसे किया जाय, इसका अध्ययन करेंगे। भाषा शिक्षण के कौशलों में श्रवण एवं अभिव्यक्ति का विशेष महत्व है। व्यक्ति दूसरे की बातों को सुनता है और अपने भावों एवं विचारों को दूसरों को सुनाता है। जब तक श्रवण एवं मौखिक अभिव्यक्ति के कौशलों का विकास नहीं होगा तब तक भाषा सीखने व सीखाने की प्रक्रिया में गति नहीं आयेगी। प्रस्तुत इकाई में हम श्रवण एवं मौखिक अभिव्यक्ति के कौशल का विकास बालक में कैसे किया जाय का अध्ययन करेंगे।

5.2 इकाई के उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के उपरान्त आप इस योग्य हो जायेंगे कि–

1. श्रवण व मौलिक कौशल को परिभाषित कर सकेंगे।
2. श्रवण कौशल के विकास की प्रक्रिया का वर्णन कर सकेंगे।
3. श्रवण कौशल के विकास हेतु पाठ्य सहगामी क्रियाओं का प्रयोग कर सकेंगे।
4. मौखिक अभिव्यक्ति के विकास की प्रक्रिया का वर्णन कर सकेंगे।
5. मौखिक अभिव्यक्ति के विकास हेतु पाठ्य सहगामी क्रियायों का प्रयोग कर सकेंगे।

5.3 श्रवण कौशल का अर्थ एवं महत्व

श्रवण केवल ध्वनियों को सुनना मात्र नहीं है बल्कि श्रवण चिन्तन से सम्बद्ध अवबोध की प्रक्रिया है जिसमें किसी कथन को ध्यानपूर्वक सुनना उस पर चिन्तन करना तत्पश्चात स्वनिर्णय करना सम्मिलित होता है। इस प्रकार कौशल से तात्पर्य बालक में किसी विषयवस्तु को सुनकर अर्थ ग्रहण करने की योग्यता का विकास है।

भाषा शिक्षण में श्रवण दक्षता का अत्यधिक महत्व होता है। सुनना और बोलना एक स्वाभाविक प्रक्रिया है। प्रारम्भ में बालक अनेकों सार्थक और निरर्थक ध्वनियों को सुनता है और धीरे–धीरे अपने माता–पिता और परिवारीजनों द्वारा बोले जाने वाले शब्दों को अनुकरण द्वारा सुनने और बोलने के क्रम में सीख जाता है। वैदिक काल में पठन–पाठन का सम्पूर्ण कार्य मौखिक ही होता था। गुरुओं द्वारा बतायी गयी बातों को शिष्य श्रवण करने के पश्चात कंठस्थ कर लेता था। इस प्रकार प्राचीन साहित्य और ज्ञान–विज्ञान एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तांतरित होता रहा।

5.3.1 श्रवण कौशल विकास सम्बन्धी शिक्षण उद्देश्य

भाषा शिक्षण का एक प्रमुख उद्देश्य बालक को श्रवण कौशल में प्रवीण करना है, क्योंकि श्रवण कौशल का विविध भाषाई दक्षता से निकट का सम्बन्ध होता है। श्रवण कौशल के इस महत्व को देखते हुए शिक्षकों को

चाहिए कि वह छात्रों में श्रवण कौशल के विकास हेतु कक्षा में उपयुक्त वातावरण तैयार करें और कक्षा में विविध क्रिया–कलापों जैसे–विषय वस्तु का मौखिक वर्णन करना, व्याख्या करना, दृष्टांत प्रस्तुत करना आदि का अनुसरण करें जिससे छात्रों को अधिक से अधिक श्रवण का अवसर प्राप्त हो सके। इस उपायों के द्वारा छात्रों में श्रवण कौशल विकास सम्बन्धी उद्देश्यों को पूरा किया जा सकता है। ये उद्देश्य इस प्रकार हैं–

- छात्रों में ध्यानपूर्वक सुनने की योग्यता का विकास करना।
- छात्रों में श्रुत विषयवस्तु को समझकर स्वराघात, बलाघात एवं आरोह–अवरोह के साथ अर्थग्रहण करने की योग्यता का विकास करना।
- छात्रों में वाक्यों, गद्यखण्डों एवं कविताओं का प्रसंगानुसार अर्थ– भाव ग्रहण करने की योग्यता का विकास करना।
- छात्रों में वक्ता के मनोभावों को समझने की योग्यता का विकास करना।
- छात्रों में श्रुत विषयवस्तु के महत्वपूर्ण विचारों, भावों एवं तथ्यों को चयन कर सकने की योग्यता का विकास करना।

5.3.2 श्रवण कौशल के विकास हेतु शिक्षण उपागम

शिक्षकों को चाहिए कि वह विद्यार्थियों को हिन्दी के नवीन शब्दों एवं विचारों को सुनने के लिए प्रोत्साहित करें। शिक्षक द्वारा कक्षा में निम्नलिखित शिक्षण उपागमों का प्रयोग विद्यार्थियों के श्रवण कौशल के विकास में लाभदायक हो सकता है–

- कहानी कथन
- नाटकीकरण
- कविता पाठ/गीत गायन
- चित्र वर्णन
- वार्तालाप

5.3.3 श्रवण कौशल के विकास हेतु श्रव्य–दृश्य सामग्री

विद्यार्थियों में श्रवण कौशल के विकास हेतु शिक्षक उपरोक्त शिक्षण उपागमों के अतिरिक्त शिक्षक श्रव्य–दृश्य साधनों के द्वारा भी विद्यार्थियों में श्रवण कौशल का विकास कर सकता है। रेडियो, टी0वी0, टेप रिकार्डर फिल्म आदि का प्रयोग करके विद्यार्थियों में श्रवण विभेदीकरण एवं ध्वन्यात्मक विश्लेषण की क्षमता उत्पन्न कर सकता है। उच्चारण की शुद्धता के लिए टेप रिकार्डर का प्रयोग उपयोगी होता है। दूरदर्शन, रेडियो आदि पर

प्रसारित शैक्षिक कार्यक्रमों को सुनकर विद्यार्थी उस पर अपने विचार प्रस्तुत कर सकता है क्योंकि श्रवण और मौखिक अभिव्यक्ति परस्पर सम्बन्धित हैं।

बोध प्रश्न

टिप्पणी :

क) नीचे दिए गए बोध प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

ख) इकाई के अंत में दिए गए बोध प्रश्नों के उत्तर से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1. शिक्षा में श्रवण कौशल के महत्व का उल्लेख करें।

....

....

2. शिक्षार्थियों में श्रवण कौशल के विकास हेतु उपयोगी शिक्षण उपागमों के नाम बताइए।

....

....

5.4 मौखिक अभिव्यक्ति का अर्थ और महत्व

मनुष्य अपने भावों एवं विचारों की अभिव्यक्ति दूसरों के समक्ष जब मौखिक भाषा द्वारा करता है तब उसको मौखिक अभिव्यक्ति कहते हैं। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में मौखिक अभिव्यक्ति का महत्व है। समाज में अपने को स्थापित करने के लिए, अपने व्यवसाय, पेशे में सफलता के लिए भौतिक साधनों की उपलब्धि के लिए व्यक्ति अपने विचारों की अभिव्यक्ति मौखिक भाषा के द्वारा ही करता है। शिष्ट भाषा में प्रभावी सम्प्रेषण मौखिक अभिव्यक्ति में प्रवीणता का द्योतक है। बालक के परिवेश में उन सभी बातों को व्यवहार में लाना चाहिए जिनसे वह अपने भावों को शुद्ध एवं शिष्ट भाषा में व्यक्त करना सीखें। शिक्षक को विद्यार्थियों के समक्ष वस्तुओं, व्यक्तियों की चर्चा करते समय स्वाभाविकता और क्रमबद्धता का भी ध्यान रखना चाहिए क्योंकि विचारों को व्यक्त करने में भाषा की शुद्धता के साथ–साथ शिष्टता, स्वाभाविकता और क्रमबद्धता का होना भी आवश्यक है।

5.4.1 मौखिक अभिव्यक्ति कौशल के विकास सम्बन्धी शिक्षण उद्‌देश्य

मौखिक अभिव्यक्ति में छात्रों को दक्ष करने के लिए मौखिक अभिव्यक्ति विकास सम्बन्धी शिक्षण उद्‌देश्यों का निर्धारण निम्नलिखित रूप में किया जा सकता है–

- छात्र शुद्ध उच्चारण के साथ उचित लय– गति, आरोह–अवरोह, बलाघात एवं स्वराघात को ध्यान में रखते हुए भावाभिव्यक्ति कर सकेगा।
- छात्र प्रसंगानुसार स्वाभाविकता और क्रमबद्धता के साथ भाव प्रकाशन में समर्थ हो सकेगा।
- छात्र अवसरानुकूल उचित शब्दों, मुहावरों, सूक्तियों का प्रयोग कर सकेगा।
- छात्र प्रसंगानुसार अनुकूल भाषा शैली का प्रयोग कर सकेगा।

- छात्र भाव प्रकाशन में शिष्टाचार का पालन कर सकेगा।
- छात्र विरामादि चिन्हों को ध्यान मे रखते हुए व्याकरण सम्मत भाषा का प्रयोग कर सकेगा।
- छात्र अपने विचारों को उचित हाव–भाव और धारा प्रवाह के साथ व्यक्त कर सकेगा।

5.4.2 मौखिक अभिव्यक्ति कौशल के विकास हेतु शिक्षण उपागम

बालक के व्यक्तित्व विकास की दृष्टि से मौखिक अभिव्यक्ति अत्यन्त आवश्यक है। मौखिक अभिव्यक्ति के माध्यम से बालक को आत्म प्रकाशन का अवसर मिलता है। शिक्षक को चाहिए कि वह विद्यालय में ऐसा वातावरण निर्मित करें जिससे छात्र निःसंकोच होकर अपने भावों और विचारों का प्रकटीकरण कर सकें। शिक्षक द्वारा कक्षा में निम्नलिखित शिक्षण उपागमों का प्रयोग छात्रों में मानसिक अभिव्यक्ति के विकास में सहायक हो सकता है–

वार्तालाप

छात्रों को विद्यालय में वार्तालाप का पर्याप्त अवसर सुलभ कराना चाहिए। कक्षा में छात्रों द्वारा शिक्षकों से बातचीत करने से उनका भय व संकोच दूर होता है और उनमें आत्मविश्वास की वृद्धि होती है। इस प्रकार के वार्तालाप से भाषा में शुद्धता एवं स्पष्टता आती है।

चित्र वर्णन

बालकों को कहानियों पर आधारित चित्रों को दिखाकर उस पर उनके विचारों की मौखिक अभिव्यक्ति के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।

सामूहिक परिचर्चा एवं विचार–विमर्श

कक्षा में किसी विषय पर सामूहिक विचार–विमर्श अथवा परिचर्चा का आयोजन विद्यार्थियों के मौखिक अभिव्यक्ति के विकास में अत्यधिक सहायक होता है। विद्यार्थियों को संख्या के अनुसार विभिन्न लघु समूहों में विभाजित करके सम्बन्धित विषय पर अपने विचारों को रखने और जिज्ञासाओं के समाधान के लिए उन्हें प्रोत्साहित करना चाहिए।

कहानी कथन

बच्चों को कहानी सुनना बहुत अच्छा लगता है। शिक्षक कक्षा में शिक्षाप्रद कहानियों को रोचक ढंग से प्रस्तुत करे और बच्चों को भी पुनः कहानी कहने के लिए प्रेरित करें। इससे उनके मौखिक अभिव्यक्ति के विकास के साथ कल्पनाशक्ति का भी विकास होगा।

वाद–विवाद

कक्षा में किसी विषय पर वाद–विवाद का आयोजन करने से छात्रों को विषय के पक्ष अथवा विपक्ष पर अपने विचारों को रखने का अवसर मिलता है। इससे उनमें तर्क एवं चिन्तन का विकास होता है तथा अपने विचारों को शुद्धता व स्पष्टता के साथ व्यक्त करने की योग्यता उत्पन्न होती है।

कविता पाठ

कक्षा में कविता पाठ का अयोजन करने से विद्यार्थी कविताओं को कंठस्थ करने के लिए अभिप्रेरित होंगे। कंठस्थ कविताओं का उचित लय–गति और भावानुसार सस्वर वाचन करने से उनके अभिव्यक्ति कौशल का विकास होगा। छात्रों को कविताओं को कंठस्थ करने और उन्हें सुनाने के लिए उत्साहित करना चाहिए।

अभिनय

मौखिक अभिव्यक्ति कौशल के विकास हेतु अभिनय एक प्रभावी साधन है। अभिनय से छात्रों में वार्तालाप शक्ति का विकास होता है। उनके उच्चारण में शुद्धता आती हैं। शिक्षक कक्षा में ही अलग–अलग पात्रों के लिए छात्रों का चयन करके उनसे अभिनय करा सकते हैं। इसमें अधिक धन एवं समय भी नहीं लगता है।

5.4.3 मौखिक अभिव्यक्ति कौशल के विकास हेतु श्रव्य–दृश्य सामग्री

मौखिक अभिव्यक्ति कौशल के विकास हेतु उपरोक्त शिक्षण उपागमों के अतिरिक्त आधुनिक श्रव्य–दृश्य साधनों का प्रयोग अत्यन्त उपयोगी होगा। शिक्षार्थियों के उच्चारण सुधार एवं शुद्ध भाषा में बोलने के लिए उन्हे विडियो एवं टेप रिकार्डर पर अपने विचारों को व्यक्त करने के लिए कहा जाय और रिकार्ड किए गए विचारों संवादों आदि को उन्हे सुनाया जाय। इससे विद्यार्थियों के उच्चारण में सुधार होगा और उनका आत्मविश्वास बढ़ेगा। रेडियों एवं दूरदर्शन पर प्रसारित होने वाली वार्ताओं, समाचारों, समीक्षाओं आदि को सुनने तथा कक्षा में उन्हें सुनाने के लिए उत्साहित किया जाना चाहिए। शिक्षक द्वारा इन उपकरणों का प्रयोग निश्चित रूप से छात्रों के मौखिक अभिव्यक्ति कौशल के विकास में सहायक होगा।

बोध प्रश्न

टिप्पणी :

क) नीचे दिए गए बोध प्रश्नों के उत्तर दीजिए।
ख) इकाई के अंत में दिए गए बोध प्रश्नों के उत्तर से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

3. मौखिक अभिव्यक्ति से आप क्या समझते हैं?

....

....

4. जीवन में मौखिक अभिव्यक्ति के महत्व का संक्षेप में उल्लेख करें।

....

....

5. मौखिक अभिव्यक्ति कौशल के विकास में वाद–विवाद किस प्रकार उपयोगी है? स्पष्ट कीजिए।

....

....

5.5 सारांश

भाषा शिक्षण के कौशलों में श्रवण एवं अभिव्यक्ति का विशेष महत्व है। सुनना और बोलना स्वाभाविक प्रक्रिया है। इस प्रकार श्रवण कौशल का मौखिक अभिव्यक्ति दक्षता से निकट का सम्बन्ध होता है। श्रवण कौशल से तात्पर्य बालक में किसी विषयवस्तु को सुनकर अर्थ ग्रहण करने की योग्यता का विकास है।

जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में मौखिक अभिव्यक्ति का महत्व है। अपने व्यवसाय, पेशे में सफलता के लिए व्यक्ति अपने विचारों की अभिव्यक्ति मौखिक रूप में ही करता है। विचारों की अभिव्यक्ति में भाषा की शुद्धता के साथ–साथ शिष्टता, स्वाभाविकता और क्रमबद्धता का होना भी आवश्यक है। मौखिक अभिव्यक्ति के द्वारा ही बालक को अपने विचारों एवं भावों को प्रकट करने का अवसर मिलता है। मौखिक अभिव्यक्ति कौशल के विकास के लिए शिक्षक द्वारा वार्तालाप, चित्रवर्णन, विचार–विमर्श, कहानी कथन, कविता पाठ, वाद–विवाद तथा अभिनय आदि शिक्षण उपागमों का प्रयोग उपयोगी होता है।

5.6 अभ्यास के प्रश्न

1. श्रवण कौशल के विकास हेतु दूरदर्शन एवं रेडियो की उपयोगिता को बताइए।
2. श्रवण कौशल के विकास में कहानी कथन उपागम के महत्व पर प्रकाश डालिए।
3. मौखिक अभिव्यक्ति कौशल के विकास में सहायक उपागमों की सूची तैयार कीजिए।

5.7 चर्चा के बिन्दु

1. मौखिक अभिव्यक्ति के महत्व पर चर्चा कीजिए।
2. श्रवण कौशल के विकास हेतु प्रमुख उपागमों पर चर्चा कीजिए।

5.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

1. सुनना और बोलना एक स्वाभाविक प्रक्रिया है। वैदिक काल में सम्पूर्ण पठन–पाठन मौखिक ही होता था गुरुओं द्वारा बतायी गयी बातों को शिष्य श्रवण करने के बाद कंठस्थ कर लेता था। इस प्रकार प्राचीन साहित्य और ज्ञान–विज्ञान एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तांतरित होता आया है। श्रवण कौशल का मौखिक अभिव्यक्ति कौशल से निकटस्थ सम्बन्ध है। श्रवण कुशल व्यक्ति ही मौखिक अभिव्यक्ति में दक्ष हो सकता है।

2. शिक्षार्थियों में श्रवण कौशल के विकास हेतु शिक्षक द्वारा कक्षा में कहानी कथन, नाटकीकरण, वार्तालाप, चित्र वर्णन, कविता पाठ आदि उपागमों का प्रयोग उपयोगी होता है।

3. व्यक्ति द्वारा अपने भावों एवं विचारों को मौखिक भाषा द्वारा प्रकट करने को मौखिक अभिव्यक्ति कहते हैं।

4. मौखिक अभिव्यक्ति के द्वारा बालक को अपने भावों को प्रकट करने का अवसर मिलता है। समाज में अपने को बनाए रखने के लिए, अपने व्यवसाय और पेशे में सफलता के लिए व्यक्ति अपने विचारों को मौखिक भाषा के द्वारा ही अभिव्यक्त करता है। इस प्रकार जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में मौखिक अभिव्यक्ति का उपयोग और महत्व है।

5. मौखिक अभिव्यक्ति कौशल के विकास में वाद–विवाद का विशेष महत्व है। वाद–विवाद के आयोजन से छात्रों को विषय के पक्ष अथवा विपक्ष पर अपने विचारों को तर्कपूर्ण ढंग से रखना होता है। वाद–विवाद से छात्रों की तर्कशक्ति एवं चिन्तन शक्ति का विकास होता है और अपने विचारों को शुद्धता, स्पष्टता और क्रमबद्धता के साथ व्यक्त करने की क्षमता का विकास होता है।

5.9 कुछ उपयोगी पुस्तकें

1. चतुर्वेदी, शिखा : हिन्दी शिक्षण, आर0 लाल बुक डिपो, मेरठ।
2. पाण्डेय, रामशकल (2002) : हिन्दी शिक्षण, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
3. लाल, रमन बिहारी (2001) : हिन्दी शिक्षण, रस्तोगी पब्लिकेशन्स, मेरठ।
4. शर्मा, खेमराज व ब्रजराज : हिन्दी शिक्षण, अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा।
5. सिंह, निरंजन कुमार : माध्यमिक विद्यालयों में हिन्दी शिक्षण, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।

इकाई – 6 : पठन योग्यता एवं लिखित अभिव्यक्ति कौशल का विकास

इकाई की संरचना

6.1 प्रस्तावना
6.2 इकाई के उद्देश्य
6.3 पठन का अर्थ एवं महत्व
6.4 पठन प्रक्रिया
6.5 पठन के प्रकार
  6.5.1 सस्वर पठन
  6.5.2 मौन पठन
6.6 पठन को प्रभावित करने वाले कारक
  6.6.1 व्यक्तिगत कारक
  6.6.2 मानसिक कारक
  6.6.3 शारीरिक कारक
  6.6.4 वातावरणीय कारक
6.7 पठन योग्यता के विकास हेतु उपाय
6.8 लेखन का अर्थ एवं महत्व
6.9 लेखन प्रक्रिया
6.10 लिखित रचना–शिक्षण के उद्देश्य
6.11 लिखित रचना के प्रकार
  6.11.1 पत्र लेखन
  6.11.2 निबंध लेखन
  6.11.3 वर्णन
  6.11.4 जीवनी तथा आत्मकथा लेखन
  6.11.5 कहानी लेखन
  6.11.6 सार लेखन
  6.11.7 संवाद लेखन
6.12 लिखित रचना–शिक्षण की विधियाँ
6.13 लिखित रचना कार्य में होने वाली अशुद्धियाँ एवं उनका संशोधन
6.14 सारांश
6.15 अभ्यास के प्रश्न
6.16 चर्चा के बिन्दु
6.17 बोध प्रश्नों के उत्तर
6.18 कुछ उपयोगी पुस्तकें

6.1 प्रस्तावना

पूर्व की इकाई में हम भाषायी योग्यताओं के अन्तर्गत श्रवण कौशल एवं मौखिक अभिव्यक्ति कौशल के विकास प्रक्रिया की जानकारी प्राप्त कर चुके हैं। हम जानते हैं कि भाषायी कौशलों के विकास का एक मनोवैज्ञानिक क्रम है। बालक प्रारम्भ में भाषा को सुनता है और धीरे–धीरे बोलना सीख जाता है। इस प्रकार बालक में श्रवण और अभिव्यक्ति कौशल का विकास परिवार में रहकर सहजता से हो जाता है किन्तु बालक में भाषा के लिखित रूप को पढ़ने और लिखने के कौशल का विकास औपचारिक रूप से विद्यालय में जाकर होता है।

भाषा शिक्षण का एक प्रमुख उद्देश्य शिक्षार्थी में पठन योग्यता एवं लिखित अभिव्यक्ति कौशल का विकास करना है। शिक्षक पढ़ने और लिखने के साथ–साथ अभ्यास कराकर विद्यार्थियों में इन कौशलों का विकास कर सकता है। इस इकाई में हम इन्हीं दोनों कौशलों के विकास की शिक्षण–प्रक्रिया का अध्ययन करेंगे।

6.2 इकाई के उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के उपरान्त आप इस योग्य हो जायेंगे कि–

1. पठन का महत्व और पठन प्रक्रिया का वर्णन कर सकेंगे।
2. पठन और वाचन में अन्तर कर सकेंगे।
3. पठन के विभिन्न प्रकारों में विभेद कर सकेंगे।
4. सस्वर पठन एवं मौन पठन के उद्देश्यों का उल्लेख कर सकेंगे।
5. पठन योग्यता के विकास हेतु उपायों के अपना सकेंगे।

6.3 पठन का अर्थ एवं महत्व

इस प्रगतिशील एवं प्रतिस्पर्धात्मक समाज में पठन कौशल का विशेष महत्व है। पुस्तकों, समाचार–पत्रों, पत्रिकाओं आदि को पढ़कर ही व्यक्ति वैश्विक गतिविधियों की जानकारी प्राप्त कर सकता है।

पठन योग्यता एक कला है। पठन योग्यता पर ही अन्य विषयों का ज्ञान आधारित है। पठन योग्यता के अभाव में शिक्षार्थी इतिहास, कला, विज्ञान आदि विषयों से सम्बन्धित पुस्तकों तथा उपन्यास कहानी आदि का पढ़कर लाभ नहीं उठा पाता है। पठन योग्यता में दक्ष बालकों का मानसिक एवं भावात्मक विकास होता है। पठन योग्यता के अभाव में विद्यार्थी लिखित विचारों एवं तथ्यों को सही–सही समझ नहीं पाते और वे शैक्षिक दृष्टि से दूसरे छात्रों से पिछड़ जाते हैं। इस प्रकार पठन में दक्ष विद्यार्थी ही अपने ज्ञान का संवर्द्धन करने और उसकी

अभिव्यक्ति करने में सफल होता है। अतः भाषा शिक्षक का यह कर्त्तव्य है कि वह छात्रों में पठन योग्यता के विकास हेतु कार्य करें।

6.4 पठन प्रक्रिया

पठन एक मानसिक प्रक्रिया है जिसमें शब्द पहचान, व्यवस्थापन और अवबोध सम्मिलित होता है। पठन में पाठक लिखित शब्दों और वाक्यों की पहचान या प्रत्यभिज्ञान करते हुए लेखक के भावों और विचारों को व्यवस्थित करते हुए अर्थ ग्रहण करता है। पठन अभी सार्थक है जब अर्थ को समझने की योग्यता के साथ लेखक के मंतव्य का निष्पक्ष मूल्यांकन करने और पाठ्यवस्तु में निहित आदर्शों, सदप्रवृत्तियों, सदगुणों आदि को पाठक अपने जीवन में लाने का प्रयास करें।

6.5 पठन के प्रकार

क्रिया की दृष्टि से पठन के दो प्रकार हैं–सस्वर पठन एवं मौन पठन। प्रारम्भ में बालक सस्वर पठन ही करता है। मानसिक विकास होने के साथ–साथ वह मौन पठन की ओर अग्रसर होता है। यहाँ हम दोनों पठन प्रकारों की प्रकृति, उद्देश्य और महत्व के बारे में चर्चा करेंगे।

6.5.1 सस्वर पठन

लिखित भाषा में व्यक्त विचारों को मुख से ध्वन्यात्मक उच्चारण करते हुए पढ़ना सस्वर पठन कहलाता है। सस्वर पठन के द्वारा शिक्षार्थी में शब्दां की ध्वनियों को समझकर शुद्ध एवं स्पष्ट उच्चारण के साथ विरामादि चिह्नों को ध्यान में रखते हुए, उचित गति–लय, आरोह–अवरोह को ध्यान में रखते हुए भावानुसार पठन योग्यता का विकास करना है।

सस्वर पठन में प्रसंगानुसार ओज एवं माधुर्य भी होना चाहिए। हिन्दी शिक्षण में प्राथमिक स्तर पर सस्वर पठन का विशेष महत्व है। इससे छात्रों के उच्चारण में शुद्धता आती है और उसकी मौखिक अभिव्यक्ति सुदृढ़ होती है। सस्वर पठन से बालकों में संकोच एवं झिझक की प्रवृत्ति दूर होती है।

सस्वर पाठन को कक्षा शिक्षण की दृष्टि से आदर्श पठन एवं अनुकरण पठन में विभाजित किया जाता है।

(क) आदर्श पठन

शिक्षक कक्षा में शिक्षण करते समय जब पाठ्य सामग्री का उचित लय–गति, विरामादि चिह्नों को ध्यान में रखते हुए भावानुसार शुद्ध उच्चारण के साथ पठन करता है तो यह आदर्श पठन कहलाता है।

आदर्श पठन का उद्‌देश्य छात्रों को उचित लय–गति, विरामादि चिह्नों को ध्यान में रखते हुए शुद्ध उच्चारण के साथ वाचन करने की प्रेरणा देना है।

(ख) अनुकरण पठन

शिक्षक द्वारा किए गए आदर्श पठन का अनुकरण करके शिक्षार्थी द्वारा किया गया पठन अनुकरण पठन कहलाता है। अनुकरण पठन का उद्‌देश्य शिक्षार्थी के उच्चारण को शुद्ध बनाना, भावानुसार पठन करने की योग्यता उत्पन्न करना और पठन करते समय अर्थ ग्रहण करने की योग्यता का विकास करना है।

6.5.2 मौन पठन

लिखित सामग्री को बिना ध्वन्यात्मक उच्चारण चुपचाप पढ़ना मौन पठन कहलाता है। मौन पठन में अर्थग्रहण शीघ्रता से होता है। मौन पठन में शिक्षार्थी अर्थग्रहण करते हुए चिन्तन–मनन भी करता है। उसका ध्यान विषय वस्तु पर केन्द्रित होता है। मौन पठन का उद्‌देश्य शिक्षार्थी में ध्यान केन्द्रित करने की क्षमता का विकास करने के साथ अवकाश के क्षणों में पत्र–पत्रिकाओं एवं साहित्य को पढ़कर ज्ञानवृद्धि करना एवं कल्पना शक्ति का विकास करना है।

मौन पठन को उद्‌देश्य की दृष्टि से गहन पठन एवं विस्तृत पठन में विभाजित किया जाता है।

(क) गहन पठन

पाठ्‌य सामग्री को गहनता से पढ़ना गहन पठन कहलाता है। गहन पठन के द्वारा पठित सामग्री के भाव, विचार, भाषा, शैली एवं कलात्मक सौन्दर्य आदि की समीक्षा करते हुए किसी निष्कर्ष पर पहुँचते हैं। इसीलिए इसे समीक्षात्मक पठन भी कहा जाता है। गहन पठन का उद्‌देश्य शिक्षार्थी में पाठ्‌य सामग्री में निहित केन्द्रीय भाव एवं विचारों का सूक्ष्म विश्लेषण करने की योग्यता विकसित करना है। गहन पठन से छात्रों में भाषा एवं विषय वस्तु पर अधिकार करने की योग्यता उत्पन्न होती है।

(ख) विस्तृत पठन

विषयवस्तु को शीघ्रता से आत्मसात करते हुए विस्तृत रूप से पढ़ना विस्तृत पठन कहलाता है। इसे द्रुत पठन भी कहते हैं। विस्तृत पठन की विषयवस्तु सरल व बोधगम्य होती है। विस्तृत पठन का उद्‌देश्य अवकाश का उपयोग करना, मनोरंजन करना तथा कम समय में अधिक सामग्री पढ़ने की योग्यता का विकास करना है।

विस्तृत पठन से शिक्षार्थी के शब्द भंडार में वृद्धि होती है। स्वाध्याय की आदत का विकास होता है। हिन्दी भाषा शिक्षक को चाहिए कि वह पाठ्य पुस्तक से रोचक, शिक्षाप्रद एवं सरल कहानियों, नाटक तथा लेख आदि का चयन करके पाठ के कठिन शब्दों एवं महत्वपूर्ण वाक्यांशों का अर्थ स्पष्ट कर दें। शिक्षार्थी द्वारा व्यापक पठन कर लेने के पश्चात् शिक्षक द्वारा विषय वस्तु से सम्बन्धित प्रश्न पूँछना उचित होगा। इससे यह जानकारी हो जायेगी कि शिद्यार्थियों द्वारा विषय सामग्री का व्यापक पठन किया गया है अथवा नहीं।

इस प्रकार स्पष्ट है कि गहन पठन विषयवस्तु के सारगर्भित एवं तथ्यात्मक जानकारी के लिए उपयोगी होता है। इसकी विषय सामग्री कठिन होती है जबकि विस्तृत पठन कम समय में अधिक सामग्री के अध्ययन में उपयोगी है। इसकी विषय सामग्री सरल व मनोरंजन होती है।

6.6 पठन को प्रभावित करने वाले कारक

शिक्षार्थी के पठन को अनेक कारक प्रभावित करते हैं। इन कारकों के प्रभाव से शिक्षार्थी समुचित पठन अभ्यास करने के पश्चात भी त्रुटियाँ करता है।

6.6.1 व्यक्तिगत कारक

व्यक्तिगत कारक शिक्षार्थी के पठन को प्रभावित करते हैं। शिक्षार्थी का पठन में अरुचि होना, भय, चिन्ता, संवेगात्मक अस्थिरता आदि पठन को प्रभावित करते हैं।

6.6.2 मानसिक कारक

पठन अभ्यास को शिक्षार्थी की मानसिक योग्यता प्रभावित करती है। प्रत्येक शिक्षार्थी की तर्क शक्ति, शब्द भंडार, अर्थग्रहण क्षमता भिन्न–भिन्न होती है। इसके कारण उनकी पठन क्षमता प्रभावित होती है।

6.6.3 शारीरिक कारक

दृष्टि दोष का होना तथा उच्चारण स्थानों में विकार होने के कारण भी पठन प्रक्रिया प्रभावित होती है। ध्वनि यंत्रों मे विकार होने से शिक्षार्थी शुद्ध उच्चारण नहीं कर पाता है।

6.6.4 वातावरणीय कारक

- पठन अभ्यास वातावरण से प्रभावित होता है। पठन स्थल के आसपास शोर, अशांति तथा परिवार के सदस्यों की शिक्षा भी शिक्षार्थी की पठन प्रक्रिया को प्रभावित करते हैं।

6.7 पठन योग्यता के विकास हेतु उपाय

भाषा शिक्षण के कौशलों में 'पठन' एक महत्वपूर्ण कौशल है। यहाँ पर हम उन उपायों की चर्चा करेंगे जो शिक्षार्थी में पठन योग्यता को विकसित करने में सहायक हो सकते हैं।

- कक्षा में शिक्षार्थी द्वारा पठन करने के बाद शिक्षक को कुछ प्रश्न पूँछने चाहिए जिससे उसे ज्ञात हो सके कि शिक्षार्थी पाठ्य विषय को कहाँ तक समझ सके हैं। इससे शिक्षार्थी ध्यानपूर्वक पढ़ेंगे और पाठ्यवस्तु को समझने का प्रयास करेंगे।
- मौन पठन का कार्य विद्यालय में करवाना चाहिए। मौन पठन से शिक्षार्थी में पठित सामग्री के भावों एवं विचारों को ग्रहण करने की योग्यता का विकास होने के साथ स्वाध्याय की प्रवृत्ति भी विकसित होती है।
- शिक्षक शिक्षार्थियों को पुस्तकालय से पुस्तकें लेने के लिए प्रेरित करें और उन्हें यह बतायें कि पुस्तकालय का उपयोग कैसे किया जाय।
- कक्षा में शिक्षार्थियों द्वारा पठन कार्य करते समय शिक्षक को यह देखना चाहिए कि कौन शिक्षार्थी पूर्ण मनोयोग एवं शीघ्रता से पठन कर रहा है, कौन सा शिक्षार्थी पठन कार्य में पिछड़ा हुआ है। निरीक्षण से शिक्षक को शिक्षार्थी की पठन योग्यता का सरलता से ज्ञान हो जाता है।
- शिक्षक विद्यार्थियों से उनके द्वारा पढ़ी हुई पुस्तकों की सूची बनाने के लिए कहे। ऐसा करने से शिक्षार्थी पढ़ने के प्रति अभिप्रेरित होंगे।

बोध प्रश्न

टिप्पणी :

क) नीचे दिए गए बोध प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

ख) इकाई के अंत में दिए गए बोध प्रश्नों के उत्तर से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1. पठन के विभिन्न प्रकारों का संक्षेप में उल्लेख करें।

....

....

2. पठन को प्रभावित करने वाले कारकों का उल्लेख कीजिए।

....

....

6.8 लेखन का अर्थ एवं महत्व

भाषा के दो रूप होते हैं– मौखिक एवं लिखित। मौखिक भाषा की अपेक्षा लिखित भाषा का विशेष महत्व है। उच्चारित ध्वनियों को प्रतीकों के रूप में लिपिबद्ध करना भाषा का लिखित रूप कहलाता है। लिखित भाषा में उपयुक्त शब्द चयन, वाक्य विन्यास और वर्तनी की शुद्धता आवश्यक है।

किसी भी भाषा पर अधिकार प्राप्त करने हेतु मौखिक भावाभिव्यक्ति के साथ लेखन कौशल में भी दक्ष होना आवश्यक है क्योंकि लेखन योग्यता के अभाव में प्रभावशाली लिखित भावाभिव्यक्ति सम्भव नहीं है। लिखित भावाभिव्यक्ति के विभिन्न रूपों जैसे– पत्र–लेखन, निबंध–लेखन, कहानी लेखन आदि के द्वारा हम अपने विचारों को दूसरों तक पहुँचाने के साथ ही उसे भावी पीढ़ी के लिए भी सुरक्षित बनाते हैं।

हमे अपने देश की सभ्यता–संस्कृति एवं साहित्य का ज्ञान लिखित भाषा के माध्यम से ही होता है। किसी भी विषय का लिखित रूप ही प्रामाणिक माना जाता है। विभिन्न देशों के बीच द्विपक्षीय संबन्धों का निवर्हन लिखित भाषा के माध्यम से होता है। विविध सांस्कृतिक, साहित्यिक एवं ज्ञान–विज्ञान संबन्धी विचार विनिमय भी लिखित भाषा के द्वारा ही होता है। विद्यालय स्तर पर भी लिखित रचना का महत्व है। लिखित अभिव्यक्ति के अनेक रूप हैं जैसे–पत्र–लेखन, निबंध–लेखन, संवाद–लेखन एवं कहानी–लेखन आदि। शिक्षार्थियों में विचारों को लिखित रूप में अभिव्यक्त करने की योग्यता के विकास के लिए लिखित रचना–शिक्षण उपयोगी होता है।

6.9 लेखन प्रक्रिया

शिक्षार्थियों को लिखित रचना की शिक्षा देने के पूर्व उनमें लेखन कुशलता का विकास करना आवश्यक है।

वास्तविक लिखना सीखने से पूर्व शिक्षार्थी से रेखाओं को खींचने का अभ्यास कराना चाहिए, जिससे उसकी माँसपेशियाँ सुदृढ़ हो सकें और वह लिखना सीखने के लिए तैयार हो जाये। टेढ़ी–मेढ़ी लकीरों के माध्यम से वह क्रमशः अक्षर बनाना सीख जाता है। उसे सही ढंग से लेखनी पकड़ने और उचित आसन में बैठने का अभ्यास भी कराना चाहिए। प्रारम्भिक स्तर पर स्लेट अथवा कापी पर वर्णों एवं शब्दों का लेखन अभ्यास कराया जाता है। सुन्दर और सुड़ौल लिखावट के अभ्यास के लिए अनुलेख और प्रतिलेख की सहायता ली जाती है अनुलेख में शिक्षार्थी अनुलेख पुस्तिका में मुद्रित अक्षरों, शब्दों अथवा वाक्यों को देखकर उसके नीचे की पंक्ति में स्वयं लिखता है। प्रतिलेख में वह स्वतंत्र रूप से पुस्तक में लिखित सामग्री का अनुकरण करके कॉपी पर लिखता है। प्रतिलेख के माध्यम से शिक्षार्थी को वर्तनी की शुद्धता का ज्ञान हो जाता है। इस प्रकार शिक्षार्थी अनुलेख और प्रतिलेख के द्वारा सुन्दर व सुड़ौल अक्षरों को लिखना एवं वाक्य रचना को सीखता है। अनेक वाक्यों को मिलाकर

अनुच्छेद बनता है। इस प्रकार अनुच्छेद लेखन की सफलता वाक्यों के ऊपर निर्भर है। अनुच्छेद लेखन के क्रम में वह पत्र–लेखन, निबंध–लेखन, कहानी–लेखन, संवाद–लेखन, सीखता है। यह सृजनात्मक रचना से सम्बन्धित है।

माध्यमिक स्तर पर छात्रों को हिन्दी वाक्य रचना की विशेषताओं को भी बताना चाहिए। लिखित अभिव्यक्ति योग्यता के विकास तथा रचना में प्रभावशीलता और मौलिकता लाने के लिए शिक्षार्थी में स्वतंत्र चिन्तन की आदत का विकास किया जाना चाहिए।

6.10 लिखित रचना– शिक्षण के उद्देश्य

लिखित रचना– शिक्षण का उद्देश्य शिक्षार्थी में भावों और विचारों को लिखित रूप में अभिव्यक्ति कर सकने की योग्यता का विकास करना है। रचना–शिक्षण के निम्नलिखित उद्देश्य हैं–

1. शिक्षार्थी में अपने भावों एवं विचारों को शुद्ध एवं उचित भाषा शैली में लिखकर अभिव्यक्ति करने की योग्यता उत्पन्न करना।
2. शिक्षार्थी की सृजनात्मक योग्यता का विकास कर उसे साहित्य सृजन के लिए अभिप्रेरित करना।
3. शिक्षार्थी की तर्क, कल्पना एवं निरीक्षण शक्ति का विकास करना।
4. शिक्षार्थी के शब्द भंडार में वृद्धि करना और शब्दों को उचित ढंग से प्रयोग कर सकने का योग्यता का विकास करना।
5. शिक्षार्थी में प्रसंगानुसार भाषा–शैली का चयन करने और प्रयोग कर सकने की योग्यता का विकास करना।

6.11 लिखित रचना के प्रकार

लिखित अभिव्यक्ति के अनेक प्रकार हैं जिनमें वर्णन, पत्र–लेखन, निबंध–लेखन, जीवनी–लेखन, कहानी–लेखन, संवाद– लेखन मुख्य है। शिक्षार्थियों को प्राथमिक स्तर पर किये गए रचना कार्य जैसे– वाक्य– रचना की शिक्षा, पत्र–लेखन, रिक्त –स्थानों की पूर्ति की पुनरावृत्ति के पश्चात माध्यमिक स्तर पर निम्नलिखित विधाओं पर रचना –शिक्षण का कार्य कराया जा सकता है।

6.11.1 पत्र लेखन

पत्र लिखना एक कला है। माध्यमिक स्तर पर भाषा की शुद्धता पर विशेष ध्यान होना चाहिए। पत्र विशेष रूप से दो प्रकार के होते है–

(क) औपचारिक पत्र

जिन लोगों के साथ व्यक्तिगत संबंध नहीं होता है, उन्हें औपचारिक पत्र लिखा जाता है। कार्यालयीय एवं व्यावसयिक पत्र औपचारिक पत्र की श्रेणी में आते है।

(ख) अनौपचारिक पत्र

जिनके साथ हमारा व्यक्तिगत संबंध होता उन्हें अनौपचारिक पत्र लिखा जाता है। पारिवारिक पत्र अनौपचारिक पत्र की श्रेणी में आते हैं।

व्यावसायिक या कार्यालयीय पत्रों को लिखते समय पत्र के विषय को बीच में लिखा जाता है किन्तु अनौपचारिक अथवा पारिवारिक पत्रों को लिखते समय पत्र के विषय को बीच में नहीं लिखा जाता है। पारिवारिक पत्रों में आत्मीयता पर विशेष बल होता है। उक्त दोनों प्रकार के पत्रों के नमूने दिए जा रहे हैं। **इन्हें पढ़े और समझें :**

1. अवकाश हेतु प्रार्थना–पत्र का नमूना

सेवा में,

प्राचार्य

के0पी0 ट्रेनिंग कालेज

प्रयागराज।

विषयः– अवकाश हेतु प्रार्थना–पत्र।

महोदय,

सविनय निवेदन है कि मेरी छोटी बहन का शुभ–विवाह 7 मई, 2025 को है। इसलिए मेरा महाविद्यालय में उपस्थित होना सम्भव नहीं है।

अतः मुझे दिनांक– 5 मई से 10 मई, 2025 तक का अवकाश प्रदान करने की कृपा करें।

दिनांक 24.07.2024

आपका आज्ञाकारी शिष्य

मुकुल रंजन

बी0एड0 (2014– 2015)

2. कक्षा में प्रथम आने पर मित्र को प्रेषित किये जाने वाले पत्र का नमूना

115, टैगोर नगर

प्रयागराज।

दिनांक 15.05.2015

प्रिय मित्र कमल,

सप्रेम नमस्कार।

तुम्हारा पत्र मिला। यह जानकर मुझे अति प्रसन्नता हुई कि तुम इस वर्ष इण्टरमीडिएट की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुए हो। इस सफलता के लिए मेरी ओर से तुम्हें हार्दिक बधाई। ईश्वर से प्रार्थना है कि भविष्य में भी तुम्हें इसी प्रकार सफलता मिले।

चाचाजी एवं चाची जी को मेरा प्रणाम तथा शुभम को प्यार।

तुम्हारा अभिन्न मित्र

आकाश

6.11.2 निबंध लेखन

निबंध लेखन में विषय– वस्तु को केन्द्रित कर विचारों को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया जता है। निबंध के तीन भाग होते है। निबंध का प्रथम भाग प्रस्तावना है। प्रस्तावना प्रभावशाली और कसाव युक्त होना चाहिए। मध्य भाग में विषय वस्तु का विवेचन किया जाता है निबंध का तीसरा भाग निष्कर्ष का होता होता जिसे उपसंहार कहते हैं। इसमें लेखक प्रभावशाली ढंग से विषय का समापन करता है।

निबंध के प्रकार

सामान्यतया निबंधों को चार भागों में विभक्त किया जाता है– वर्णनात्मक, कथात्मक, भावात्मक एवं विचारात्मक।

(क) वर्णनात्मक निबंध

इस प्रकार के निबंध में त्योहारों, ऋतुओं, खेलों आदि का वर्णन होता है।

(ख) कथात्मक निबंध

इस प्रकार के निबंध में ऐतिहासिक घटनाओं, संस्मरणों आत्मकथा आदि का विवरण रहता है।

(ग) भावात्मक निबंध

भावात्मक प्रकार के निबंधों में तर्क की अपेक्षा भाव की प्रधानता होती है। भाव व्यंग्यात्मक अथवा रागात्मक हो सकता है। इनकी भाषा काव्यात्मक व लालित्यपूर्ण होती है। इसीलिए इस प्रकार के निबंधों को ललित निबंध भी कहते हैं।

(घ) विचारात्मक निबंध

इस प्रकार के निबंधों के विषय प्रतिपादन में तर्क, चिन्तनशीलता एवं दार्शनिकता का समावेश होता है। विचार प्रधान के कारण ऐसे निबंधों को विचारात्मक निबंध कहा जाता है। सामाजिक तथा साहित्यिक विषयों पर लिखे निबंध विचारात्मक निबंध होते हैं।

6.11.3 वर्णन

वर्णन के अन्तर्गत किसी देखी हुई घटना अथवा सुने हुए विषयों पर वर्णन प्रस्तुत किया जाता हैं। वर्णन लेखन में विद्यार्थी उन सभी बातों, घटनाओं आदि का जो उसके द्वारा पूर्व में देखी गई हैं का वर्णन करता है।

6.11.4 जीवनी तथा आत्मकथा लेखन

जीवनी में किसी लेखक द्वारा किसी प्रसिद्ध एवं महत्वपूर्ण व्यक्ति के जीवन–चरित्र का अनुसंधानपरक वर्णन होता है। आत्मकथा को व्यक्ति स्वयं लिखता है जिसमें वह अपने जीवन के विविध पहलुओं को उद्घाटित करता है। अपने सम्पर्क में आए व्यक्तियों के बारे में भी अपने विचारों को व्यक्त करता है।

छात्रों को किसी महापुरूष के जीवन से सम्बन्धित महत्वपूर्ण बातों को बताकर उनकी जीवनी लिखने के लिए प्रेरित करना चाहिए।

6.11.5 कहानी लेखन

बालकों को कहानी सुनना अच्छा लगता है। विशेषकर वे पशु–पक्षियों, परियों आदि की कहानियों को सुनने में रुचि रखते हैं। उन्हें संकेतों के आधार पर कहानी लिखने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।

6.11.6 सार लेखन

किसी कहानी, लेख, गद्यांश आदि को उसमें निहित मुख्य विचारों एवं तत्वों को समाहित करते हुए संक्षेप में लिखना सार–लेखक कहलाता है। सार लेखन के द्वारा शिक्षार्थी में किसी लेख, कहानी आदि के मुख्य भाव एवं विचार को समझने की क्षमता का विकास होता है।

6.11.7 संवाद लेखन

शिक्षक को कक्षा में छात्रों को संवाद लेखन के लिए अवसर प्रदान करना चाहिए। संवाद लेखन में निम्नलिखित बातों पर विशेष ध्यान देना चाहिए।

- संवाद की भाषा सरल व बोलचाल की हो।
- पात्रों की बातचीत लम्बी न होकर संक्षेप में हो।
- वार्तालाप की समाप्ति पर निश्चित परिणाम अवश्य निकलना चाहिए।
- विचारों में धारा प्रवाहिता, स्वाभाविकता और परस्पर सम्बद्धता होनी चाहिए।
- प्रचलित मुहावरों का आवश्यकतानुसार प्रयोग हो।
- विरामादि चिह्न एवं अन्य व्याकरण सम्बन्धी अशुद्धियाँ न हों।

6.12 लिखित रचना– शिक्षण की विधियाँ

लिखित रचना–शिक्षण के लिए निम्नलिखित विधियाँ प्रयुक्त की जाती है–

(क) **चित्र वर्णन विधि–** इस विधि में शिक्षार्थियों के समक्ष विषय से संबंधित चित्र प्रस्तुत किये जाते हैं। शिक्षक चित्रों में वर्णित विषयों पर प्रश्न पूछता है। शिक्षार्थी प्रश्नों का उत्तर देते हैं अन्त में इन्हीं उत्तरों के आधार पर उन्हें कहानी लेखन के लिए कहा जाता है। प्राथमिक कक्षाओं के लिए यह विधि अधिक उपयोगी है।

(ख) **प्रश्नोत्तर विधि–** शिक्षक द्वारा प्रश्न किया जाता है तथा शिक्षार्थी उसका उत्तर देते हैं। प्रश्नोत्तर के माध्यम से निकल कर आये विचारों को शिक्षक बिंदुवार श्यामपट्ट पर लिख देता है। इन्हीं बिन्दुओं के आधार पर शिक्षार्थी वाक्य–रचना करते हैं।

(ग) **परामर्श विधि–** इस विधि के अन्तर्गत शिक्षक के परामर्श से शिक्षार्थी विविध पुस्तकों तथा पत्र–पत्रिकाओं का अध्ययन कर विषय–सामग्री एकत्रित करते हैं और उसके आधार पर रचना करते हैं। यह विधि उच्च माध्यमिक स्तर पर अधिक उपयोगी है।

(घ) **उद्बोधन विधि–** इसमें शिक्षक किसी निर्धारित विषय पर प्रश्न पूछकर तथा चित्र दिखाकर छात्रों की कल्पना शक्ति को उद्बुद्ध करता है। यह विधि वर्णनात्मक विषयों जैसे–दृश्य–वर्णन, जीवन–चरित्र, आत्मकथा एवं ऐतिहासिक वर्णन आदि के लिए अधिक उपयोगी है।

(ङ) **प्रवचन विधि–** शिक्षक विषय वस्तु पर प्रवचन देता है। छात्र उसको सुनकर रचना करते हैं। किसी विशिष्ट या जटिल विषय पर रचना के लिए ही इस विधि का प्रयोग उपयुक्त होता है। इस विधि में छात्रों को स्वतंत्र चिन्तन का अवसर प्राप्त नहीं होता है।

(च) **रूपरेखा विधि–** शिक्षक विषय से सम्बन्धित मुख्य बिन्दुओं को श्यामपट्ट पर लिखता है और छात्रों के साथ प्रत्येक बिन्दु पर मौखिक रूप से चर्चा करता है। इसके पश्चात छात्र इन्हीं बिन्दुओं के आधार पर रचना करते हैं।

(छ) **अनुकरण विधि–** इस विधि में शिक्षक छात्रों के समक्ष किसी रचना विशेष को प्रस्तुत करता है। तत्पश्चात् छात्र इस रचना शैली के आधार पर मौलिक रचना करते हैं।

(ज) **अवलोकन विधि–** छात्रों को शैक्षिक भ्रमण के माध्यम से चिड़ियाघर, संग्रहालय, ऐतिहासिक इमारतों, प्राकृतिक दृश्यों आदि का प्रत्यक्ष अवलोकन का अवसर सुलभ कराया जाता है। भ्रमण के बाद छात्र अवलोकन से प्राप्त अनुभवों के आधार पर रचना करते हैं।

(झ) **विचार–विमर्श विधि–** छात्र किसी निर्धारित विषय पर शिक्षक की उपस्थिति में पक्ष एवं विपक्ष में तर्क देकर अपने विचार प्रस्तुत करते हैं। विचार–विमर्श से प्राप्त सामग्री के आधार पर रचना करते हैं। यह विधि उच्च माध्यमिक कक्षाओं के छात्रों हेतु उपयोगी है।

(ञ) **स्वाध्याय विधि–** शिक्षक छात्रों को केवल रचना का विषय बताता है। छात्र विभिन्न पुस्तकों, पत्र–पत्रिकाओं आदि का अध्ययन कर विषय सामग्री एकत्रित करके स्वचिन्तन के आधार पर रचना करता है। उच्च माध्यमिक कक्षाओं के लिए यह विधि अधिक उपयोगी है।

उपरोक्त रचन शिक्षण विधियों में चित्र–वर्णन विधि एवं प्रश्नोत्तर विधि का प्रयोग प्राथमिक स्तर पर उपयोगी होगा जबकि परामर्श विधि, उद्बोधन विधि, अवलोकन विधि, विचार–विमर्श विधि तथा स्वाध्याय विधि माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक कक्षाओं के लिए अधिक उपयोगी है। शिक्षक को कक्षा–स्तर एवं विषय को ध्यान में रखकर रचना शिक्षण विधियों का चयन व प्रयोग करना चाहिए।

6.13 लिखित रचना–कार्य में होने वाली अशुद्धियाँ एवं उनका संशोधन

छात्रों द्वारा किए गये रचना–कार्य में अशुद्धियाँ होना स्वाभाविक है। अतः शिक्षकों द्वारा छात्रों के रचना–कार्य का निरीक्षण एवं संशोधन अवश्य होना चाहिए। छात्रों द्वारा की जाने वाली अशुद्धियों में वर्णों एवं संयुक्ताक्षरों के लेखन जैसे– 'ब' के स्थान पर 'व' लिखना और 'व' के स्थान पर 'ब' लिख देना 'क्ष' के स्थान पर 'छ' और

'छ' के स्थान पर 'क्ष' लिखना, 'ध' के स्थान पर 'घ' लिखना, श, ष तथा स की अशुद्धि जैसे– 'विषय' को 'विसय' लिखना आदि है। शिक्षक द्वारा किए गए संशोधनों को देखकर शिक्षार्थी अशुद्धियों को शुद्ध रूप में लिखने का अभ्यास करें इसके लिए उन्हें प्रेरित करना चाहिए।

बोध प्रश्न

टिप्पणी :

क) नीचे दिए गए बोध प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

ख) इकाई के अंत में दिए गए बोध प्रश्नों के उत्तर से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

3. जीवन में लिखित अभिव्यक्ति के महत्व को स्पष्ट करें।

....

....

4. लिखित रचना के विभिन्न प्रकार कौन से हैं?

....

....

5. माध्यमिक स्तर पर लिखित रचना शिक्षण की कौन सी विधि अधिक उपयोगी है।

....

....

6.14 सारांश

प्रस्तुत इकाई में हमने सीखा कि पठन योग्यता एक कला है। पठन एक मानसिक प्रक्रिया है जिसमें शब्द पहचान, व्यवस्थापन और अवबोध सम्मिलित होता है। क्रिया की दृष्टि से पठन दो प्रकार का होता है– सस्वर पठन और मौन पठन। उद्देश्य के आधार पर मौन पठन के भी रूप होते हैं– गहन पठन एवं विस्तृत पठन।

भाषा शिक्षण के कौशलों में 'पठन' एक महत्वपूर्ण कौशल है। विद्यार्थियों के अन्दर पठन योग्यता को विकसित करने के उपायों की विस्तारपूर्वक चर्चा की गयी है।

अपने भावों एवं विचारों को सुसंबद्ध रूप से मौखिक अथवा लिखित रूप में प्रकट करना ही 'रचना' है। भाषा पर अधिकार प्राप्त करने के लिए मौखिक भावाभिव्यक्ति के साथ लेखन कौशल में दक्ष होना आवश्यक है। लिखित भावाभिव्यक्ति के अनेक रूप– पत्र लेखन, निबंध–लेखन, संवाद–लेखन, कहानी–लेखन आदि हैं।

लिखित रचना शिक्षण की विधियों में चित्र–वर्णन विधि, प्रश्नोत्तर विधि, परामर्श विधि, उद्बोधन विधि, रूपरेखा विधि, प्रवचन विधि, अनुकरण विधि, अवलोकन विधि, विचार–विमर्श विधि एवं स्वाध्याय विधि प्रमुख हैं।

लिखित रचना–कार्य में होने वाली अशुद्धियों को दूर करने के लिए संशोधन कार्य महत्वपूर्ण है। शिक्षक द्वारा छात्रों के रचना कार्य का निरीक्षण एवं संशोधन आवश्यक है।

6.15 अभ्यास के प्रश्न

1. लिखित अभिव्यक्ति की उपयोगिता को संक्षेप में स्पष्ट करें।
2. कथात्मक निबंध तथा विचारात्मक निबंध में अन्तर कीजिए।
3. संवाद लेखन में विशेष ध्यान देने वाली बातों को लिखिए।

6.16 चर्चा के बिन्दु

1. लिखित रचना शिक्षण में होने वाली सामान्य अशुद्धियों के विषय में चर्चा कीजिए।
2. विद्यार्थियों में पठन योग्यता के विकास के लिए प्रमुख उपाय क्या हैं? चर्चा कीजिए।

6.17 बोध प्रश्नों के उत्तर

1. क्रिया के आधार पर पठन के दो प्रकार होते हैं (क) सस्वर पठन (ख) मौन पठन
2. पठन को प्रभावित करने वाले कारक– 1. व्यक्तिगत कारक 2. मानसिक कारक 3. शारीरिक कारक तथा वातावरण हैं।
3. लिखित अभिव्यक्ति के द्वारा हमें अपने देश की सभ्यता एवं संस्कृति का ज्ञान होता है। इसके द्वारा हम अपने विचारों को दूसरों तक पहुँचाने के साथ उसे भावी पीढ़ी के लिए सुरक्षित बनाते हैं।
4. लिखित रचना शिक्षण के अनेक रूप हैं जैसे–पत्र लेखन, निबंध लेखन, वर्णन, जीवनी लेखन, आत्म लेखन, कहानी लेखन एवं सार लेखन आदि।
5. माध्यमिक स्तर पर लिखित रचना शिक्षण की उपयोगी विधियाँ– अ). परामर्श विधि ब). विचार–विमर्श विधि स). अवलोकन विधि एवं द). स्वाध्याय विधि हैं।

6.18 कुछ उपयोगी पुस्तकें

1. पाण्डेय, रामशकल (2002) : हिन्दी शिक्षण, अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा
2. सिंह, निरंजन कुमार : माध्यमिक विद्यालयों में हिन्दी शिक्षण, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर
3. शर्मा, खेमराज व शर्मा ब्रजराज : हिन्दी शिक्षण, अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा
4. सफाया, रघुनाथ : हिन्दी शिक्षण विधि, पंजाब किताबघर, जालंधर

B.Ed.E-31
Pedagogy of Hindi
(हिन्दी का शिक्षणशास्त्र)

उ० प्र० राजर्षि टण्डन
मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज

खण्ड – 03

हिन्दी भाषा शिक्षण के लिए व्यूह रचना– द्वितीय

इकाई 7	कविता शिक्षण	95–106
इकाई 8	गद्य की अन्य विधाओं का शिक्षण	107–119
इकाई 9	व्याकरण शिक्षण	120–129

खण्ड – 03 : हिन्दी भाषा शिक्षण के लिए व्यूह रचना–द्वितीय

खण्ड परिचय

हिन्दी भाषा का साहित्य अत्यंत विशद एवं विस्तृत है यहाँ साहित्य काव्य, गद्य, व्याकरण तथा लोक एवं आंचलिक भाषाओं में भी प्राप्त होते हैं जो अपने लेखन शैली, भाव संव्यूहन और गंभीरता में एक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त करते हैं। जब भी हम हिन्दी भाषा शिक्षण की चर्चा करते हैं तो जिस प्रकार काव्य या पद्य को पढ़ाने की अनेक शैलियां होती है वैसे ही गद्य को पढ़ाने की भी अनेक विधियाँ एवं शैलियाँ हैं। क्योंकि गद्य में भी अनेक विधाएँ प्राप्त होती हैं तथा इन विधाओं का शिक्षण करने में तनिक भिन्नता प्राप्त होती है। प्रस्तुत खंड में कुल तीन इकाईयाँ हैं जो इस प्रकार हैं–

इकाई 7 : कविता शिक्षण

इकाई 8 : गद्य की अन्य विधाओं का शिक्षण

इकाई 9 : व्याकरण शिक्षण

इस खण्ड की प्रथम इकाई अर्थात इकाई 7 कविता शिक्षण से सम्बन्धित है। इस इकाई के अन्तर्गत कविता के तत्वों, कविता शिक्षण के उद्‌देश्यों, विधियों आदि के बारे में अध्ययन करेंगे।

हिन्दी भाषा शिक्षण के लिए व्यूह रचना (द्वितीय) की दूसरी इकाई 8 गद्य की विधाओं के शिक्षण से सम्बन्धित है, जिसके अंतर्गत गद्य शिक्षण, रचना शिक्षण, उपन्यास, कहानी तथा नाटक शिक्षण का परिचय तथा उसकी विभिन्न शिक्षण विधियों का अध्ययन करेंगे।

खंड की तीसरी इकाई 9 व्याकरण शिक्षण के रूप में है। इसमें व्याकरण का अर्थ, परिभाषा, व्याकरण शिक्षा का उद्देश्य एवं महत्व तथा व्याकरण शिक्षण की प्रणाली एवं विधियों का अध्ययन करेंगे। प्रस्तुत खंड भाषा की प्रांजलता को विकसित करेगा और छात्र विभिन्न विधियों का ज्ञान प्राप्त कर अपने शिक्षण को प्रभावी बना सकने में समर्थ होंगे।

इकाई – 7: कविता शिक्षण

इकाई की संरचना

7.1 प्रस्तावना

7.2 इकाई केउद्देश्य

7.3 कविता : अर्थ एवं परिभाषा

7.4 कविता शिक्षण का महत्व

7.5 कविता शिक्षण के उद्देश्य

7.5.1 प्राथमिक स्तर पर कविता शिक्षण के उद्देश्य

7.5.2 माध्यमिक स्तर पर कविता शिक्षण के उद्देश्य

7.5.3 उच्च स्तर पर कविता शिक्षण के उद्देश्य

7.6 कविता में सौन्दर्य बोध एवं रसानुभूति

7.7 कविता शिक्षण की विधियाँ

7.7.1 गीत तथा अभिनय प्रणाली

7.7.2 अर्थ बोध या परम्परागत प्रणाली

7.7.3 व्याख्या प्रणाली

7.7.4 प्रश्नोत्तर प्रणाली

7.7.5 व्यास प्रणाली

7.7.6 तुलना प्रणाली

7.7.7 समीक्षा प्रणाली

7.8 कविता शिक्षण का क्रम सोपान

7.9 कविता में अभिरूचि विकसित करने के उपाय

7.10 सारांश

7.11 अभ्यास के प्रश्न

7.12 चर्चा के बिन्दु

7.13 बोध प्रश्नों के उत्तर

7.14 कुछ उपयोगी पुस्तकें

7.1 प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई में हिन्दी साहित्य में कविता का स्थान, कविता शिक्षण का महत्व और उद्देश्य, कविता में सौन्दर्य बोध एवं रसानुभुति, कविता शिक्षण की विभिन्न विधियाँ तथा शिक्षार्थियों में हिन्दी कविता के प्रति अभिरूचि बढ़ाने के उपायों का अध्ययन किया जायेगा।

7.2 इकाई के उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन के उपरान्त आप इस योग्य हो जायेंगे कि–

1. हिन्दी कविता शिक्षण के महत्व का उल्लेख कर सकेंगे।
2. कविता के मुख्य भावों एवं विचारों को ग्रहण कर सकेंगे।
3. कविता शिक्षण की विभिन्न विधियों का आवश्यकतानुसार प्रयोग कर सकेंगे।
4. काव्यात्मक अभिरूचि विकसित करने के लिए विभिन्न साहित्यक कार्यक्रमों में प्रतिभाग कर सकेंगे।

7.3 कविता : अर्थ एवं परिभाषा

कविता साहित्य की एक प्रमुख विधा है। आदि साहित्य किसी न किसी रूप में हमें कविता में प्राप्त होता है। कविता किसी भी घटना या विचार पर मनोवेगों की अभिव्यक्ति है। कविता में रमणीयता एवं रागात्मकता दिखायी देती है। विश्वनाथ कविराज के अनुसार–''वाक्यं रसात्मकं काव्यम्'' रसात्मक वाक्य ही काव्य है। वास्तव में कवि के हृदय में उत्पन्न रस ही कविता के रूप में प्रकट होता है। आचार्य वामन के अनुसार ''रीतिरात्मा काव्यस्य'' रीति ही काव्य की आत्मा है। रीतियाँ तीन होती हैं–गौड़ी, वैदर्भी व पांचाली। तीनों रीतियाँ ध्वनि से सम्बन्धित हैं। इस प्रकार रीतियाँ कानों पर पड़ने वाले प्रभावों से सम्बन्धित हैं।

पण्डितराज जगन्नाथ – ''रमणीयार्थ प्रतिपादकः शब्दः काव्यम्'' अर्थात वह शब्द जो रमणीय अर्थ का प्रतिपादन करे काव्य है। इन्होंने शब्द की शक्ति को महत्वपूर्ण माना है। जयशंकर प्रसाद के अनुसार आत्मा की ''संकल्पनात्म्क अनुभूति काव्य है।'' कारलायल के अनुसार– ''संगीतमय विचार ही कविता हैं।'' कीट्स ने काव्य में सौन्दर्य को मुख्य माना है। इस प्रकार कविता के स्वरूप पर विभिन्न विद्वानों ने भिन्न–भिन्न मत व्यक्त किया है। इस मत भिन्नता का प्रमुख कारण जिस विद्वान को कविता का जो पक्ष अच्छा लगा उसी पक्ष को अधिक महत्व देना है। कविता के सभी पक्षों में किसी न किसी विशिष्ट सौन्दर्य का बोध होता है। कविता केवल संगीतमय विचार, जीवन की समालोचना या सर्वोत्तम शब्द योजना ही न होकर इन सभी तत्वों का समन्वित रूप है।

7.4 कविता शिक्षण का महत्व

कविता व्यक्ति के हृदय का परिष्कार करती है। व्यक्ति में मानवोचित गुणों का विकास करती है। ऐसा न होने पर व्यक्ति पशुवत आचरण कर सकता है। कविता शिक्षण के द्वारा बालक के रागात्मक भावों की तुष्टि मिलती है। कविता मानवीय भावों की सहज अभिव्यक्ति है। कविता शिक्षण के द्वारा छात्रों में दया, प्रेम, करूणा, सहयोग, परोपकार एवं सहानुभूति आदि गुणों का विकास किया जाता है। कविता आनन्द एवं सत्य की अनुभूति का सशक्त माध्यम है। आचार्य मम्मट ने कविता के महत्व को इस प्रकार व्यक्त किया है–

काव्यं यशसेऽर्थकृते व्यवहारविदे शिवेतरक्षतये

सद्यः परनिर्वृत्तये कान्तासंमितयोपदेश युजे।।

अर्थात काव्य से यश एवं अर्थ की प्राप्ति होती है, व्यवहार कुशलता आती है। अमंगल का निवारण होता है तथा सद्यः परमानन्द की अनुभूति के साथ–साथ कान्ता (पत्नी) के उपदेश के समान प्रभावकारी होता है।

7.5 कविता शिक्षण के उद्देश्य

कविता की वृत्ति रागात्मक होती है। कविता काल्पनिक एवं भावजगत में विचरण करने का साधन है। कविता भावों की अनुभूति की सहज अभिव्यक्ति है। कविता शिक्षण के द्वारा छात्रों को कवि की भावनाओं एवं अनुभूतियों से अवगत कराकर उसका रसास्वादन कराना है। कविता शिक्षण के कतिपय सामान्य उद्देश्य होते हैं जो शिक्षा के अलग–अलग स्तरों पर भिन्न–भिन्न होते हैं जो इस प्रकार हैं–

7.5.1 प्राथमिक स्तर पर कविता शिक्षण के उद्देश्य

प्राथमिक स्तर पर सरल, सुबोध एवं शिक्षाप्रद कविता का चयन होना चाहिए। बच्चों की रूचि का भी ध्यान रखना होता है। इस दृष्टि से प्राथमिक स्तर पर कविता शिक्षण के निम्नलिखित उद्देश्य आवश्यक हैं–

- छात्रों में उचित लय, गति, यति एवं भाव के अनुसार कविता पठन की योग्यता उत्पन्न करना।
- विषयगत भावों को परिष्कृत करके छात्रों में उदात्त भावों का परिष्कार करना।
- छात्रों में कविता के कंठस्थीकरण की प्रवृत्ति बढ़ाना।
- शिक्षा प्रद उपदेशात्मक कविता के माध्यम से छात्रों का चारित्रिक विकास करना।
- कविता की विषयवस्तु को अवगत कराते हुए छात्रों में सौन्दर्यानुभूति की क्षमता का विकास करना।

7.5.2 माध्यमिक स्तर पर कविता शिक्षण के उद्देश्य

इस स्तर पर छात्रों की बौद्धिक क्षमता में वृद्धि हो जाती है। इसलिए इस स्तर पर कविता शिक्षण के उद्देश्यों में वृद्धि हो जाती है। इस स्तर पर कविता शिक्षण के उद्देश्य इस प्रकार हैं–

- छात्रों में कल्पनाशक्ति का विकास करना।
- छात्रों में शब्द चित्रों के आधार पर दृश्य चित्रों की उद्भावना करना।
- कविता के मुख्य भावों एवं विचारों को समझकर इन्हें अपने शब्दों में वर्णन करने की योग्यता उत्पन्न करना।
- छात्रों को कविता में व्यंजित भावों, कल्पनाओं को समझकर उसका आनन्द लेने के योग्य बनाना।
- छात्रों में पठित कविता से मिलती जुलती अन्य सम्भाव की कविता चयन करने की योग्यता का विकास करना।

7.5.3 उच्च स्तर पर कविता शिक्षण के उद्देश्य

उच्च स्तर पर छात्रों का ज्ञान सम्पुष्ट तथा प्रौढ़ हो जाता है। इसलिए इस स्तर पर कविता शिक्षण के उद्देश्यों में भिन्नता आ जाती है। इस स्तर पर काव्य शिक्षण के उद्देश्य निम्नलिखित हैं–

- छात्रों में कविता की विषयवस्तु के प्रति समीक्षात्मक दृष्टिकोण उत्पन्न करना।
- छात्रों में कल्पनाशक्ति का विकास करना।
- छात्रों में कवि की अनुभूतियों तथा उसकी कमनीय कल्पनाओं को समझकर रसानुभूति और सौन्दर्यानुभूति करने की अर्हता का विकास करना।
- छात्रों को कविता की विभिन्न शैलियों से परिचित कराना।
- छात्रों को कविता रचना के लिए प्रेरित कर उनके सृजनात्मक शक्तियों का विकास करना।

उपरोक्त उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए कविता शिक्षण का कार्य होना चाहिए। सामान्य उद्देश्यों के अतिरिक्त कविता शिक्षण के विशिष्ट उद्देश्य भी होते हैं जो पाठ विशेष से सम्बन्धित होते हैं।

विशिष्ट उद्देश्यों का निर्धारण कविता की विषयवस्तु के आधार किया जाना चाहिए।

7.6 कविता में सौन्दर्य बोध एवं रसानुभूति

'साहित्य दर्पण' में आचार्य विश्वनाथ ने रसात्मक वाक्य को ही कविता माना है, ''वाक्यम् रसात्मकम् काव्यम्'' रसात्मक वाक्य ही काव्य है। कविता शिक्षण का लक्ष्य आनन्द की प्राप्ति है। कविता के लिए सरस होना

अनिवार्य है। काव्य में सौन्दर्यबोध निहित होता है। कविता शिक्षण का उद्देश्य शिक्षार्थियों में सौन्दर्यबोध की योग्यता का विकास करना है। कविता के प्रमुख सौन्दर्य तत्वों को हम निम्नलिखित तीन भागों में विभाजित कर सकते हैं–

(क) अभिव्यक्ति का सौन्दर्य : अभिव्यक्ति में नाद और चित्रात्मकता का सौन्दर्य होता है। अनुप्रास, यमक, श्लेश, उपमा, उत्प्रेक्षा, तुकान्त पद, लघु, गुरू, छन्द, नाद यति–गति, आदि की सहायता से विषयवस्तु का किया गया चित्रण अभिव्यक्ति सौन्दर्य के अन्तर्गत आता है।

(ख) भाव सौन्दर्य : प्रत्येक कविता में एक प्रधानभाव की अभिव्यंजना होती है। भाव सौन्दर्य में लज्जा, शोक, उत्साह, प्रेम, वात्सल्य, करूणा आदि विविध भावों के वर्णन आते हैं। भाव प्रधान कविताओं के पठन से शिक्षार्थियों में भावसौन्दर्य के रसास्वादन की योग्यता का विकास होता है।

(ग) विचार सौन्दर्य : कविता के माध्यम से कवि उच्च आदर्शों, नैतिक गुणों, सात्विक एवं उदात्त विचारों की ओर ध्यान आकृष्ट कराता है। कबीर तुलसी, रहीम आदि के नीति संबंधी साहित्य में विचार सौन्दर्य दृष्टिगत होता है। शिक्षण एवं अभ्यास के द्वारा छात्रों में विचार सौन्दर्य का रसास्वादन कर सकने की योग्यता का विकास किया जाना चाहिए।

छात्रों की रूचियों को ध्यान में रखते हुए कविताओं का चयन कर कविता वाचन करने एवं उन्हें कण्ठस्थ करने के लिए अभिप्रेरित किया जाना चाहिए ऐसा करने से छात्रों में कविता में निहित कवि के भावों, कल्पनाओं एवं अभिव्यक्तियों के सौन्दर्य की परख की योग्यता का विकास होने के साथ–साथ रसानुभूति का आनन्द प्राप्त कर सकेंगे।

बोध प्रश्न

टिप्पणी :

क) नीचे दिए गए बोध प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

ख) इकाई के अंत में दिए गए बोध प्रश्नों के उत्तर से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1. छात्रों के व्यक्तित्व विकास में कविता शिक्षण किस प्रकार सहायक है? संक्षेप में लिखिए।

....

....

2. कविता शिक्षण के सामान्य उद्देश्यों का उल्लेख कीजिए।

....

....

3. कविता के सौन्दर्य तत्व क्या हैं? संक्षेप में उल्लेख कीजिए।

....

....

7.7 कविता शिक्षण की विधियाँ

छात्रों में उचित सौन्दर्यबोध एवं भावाभिव्यक्ति की योग्यता का विकास करने एवं कविता शिक्षण के अन्य उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए शिक्षाशास्त्रियों के द्वारा कविता शिक्षण की विभिन्न प्रणालियों का उल्लेख किया गया है। कछ प्रमुख प्रचलित शिक्षण विधियाँ इस प्रकार हैं–

7.7.1 गीत तथा अभिनय प्रणाली : यह शिक्षण विधि प्रारम्भिक कक्षाओं के लिए प्रयुक्त की जाती है, इसमें ध्वनि तत्व की प्रधानता होने के कारण यह प्रणाली संगीतमय होती है। इसमें सुर, लय आदि की प्रधानता होती है। शब्दार्थ या भावार्थ पर ध्यान नहीं दिया जाता है। बालकों का प्रवृत्ति संगीत और गायन प्रधान होती है जिससे कक्षा में हर्षोल्लास का वातावरण बना रहता है।

अभिनय प्रधान पद्यों या गीतों में बालक उचित भाव भंगिमा और उचित अंग संचालन के साथ कविता पाठ करते हैं। इस प्रकार बालक खेल–खेल में सरलतापूर्वक कविताओं को कण्ठस्थ कर लेते हैं।

7.7.2 अर्थबोध या परम्परागत प्रणाली : कविता शिक्षण की इस प्रणाली में शिक्षक कक्षा के समक्ष स्वयं कविता वाचन करता है फिर कविता के कुछ कठिन शब्दों का अर्थ मौखिक रूप से या श्यामपट्ट पर स्पष्ट करता है। तत्पश्चात् शिक्षक कविता का अर्थ बताता है। यह विधि पूर्णतया अर्थ प्रधान है इसीलिए इसे अर्थबोध प्रणाली भी कहते हैं। इसमें बालक की रूचि एवं सौन्दर्य तत्वों की उपेक्षा की जाती है। यह एक अमनोवैज्ञानिक प्रणाली है क्योंकि इसमें छात्रों की सहभागिता न्यूनतम रहती है।

7.7.3 व्याख्या प्रणाली : परम्परागत प्रणाली जहाँ शब्दों के अर्थ पर केन्द्रित होती है वहाँ व्याख्या प्रणाली भाव प्रधान होती है। इसमें शिक्षक कविता के समस्त शब्दों के अर्थ को स्पष्ट करने के साथ–साथ कवि का जीवन दर्शन, रचना शैली, भाषा, अलंकार, रस आदि पर भी प्रकाश डालता है। सम्बद्ध प्रसंग, ऐतिहासिक घटना, अन्तर्निहित कथा आदि का भी ज्ञान कराता है। इस प्रणाली से शिक्षण कार्य करने पर शिक्षक एवं छात्रों के बीच सहयोग कम हो पाता है।

7.7.4 प्रश्नोत्तर प्रणाली : इसे खण्डान्वय प्रणाली के नाम से भी जाना जाता है। इसमें शिक्षक प्रश्नों के माध्यम से कविता का भावार्थ छात्रों के सहयोग से स्पष्ट करता है। यह प्रणाली गद्य शिक्षण की तरह कार्य करती है।

इसमें कविता को खण्ड–खण्ड करके तथ्य, भाव और विचार सम्बन्धी प्रश्न छात्रों से पूछा जाता है। इसीलिए इसे खण्डान्वय विधि भी कहा जाता है। कक्षा में शिक्षक और छात्र का सम्बन्ध आरम्भ से लेकर अन्त तक बना रहता है। पाठ में छात्रों की रूचि व जिज्ञासा आदि से अन्त तक बनी रहती है। इस विधि से कविता की सम्पूर्ण विषयवस्तु छात्रों के समक्ष स्पष्ट हो जाती है किन्तु रसानुभूति का अभाव होता है। यह प्रणाली वर्णनात्मक तथा इतिवृत्तात्मक कविताओं को पढ़ाने के लिए अधिक उपयुक्त है।

7.7.5 व्यास प्रणाली : इस प्रणाली में शिक्षक भाषा और भाव की दृष्टि से शब्द योजना, शैली, रस, सौन्दर्य आदि की विवेचना करता है। अनेक उदाहरणों, सूक्तियों एवं कथाओं का प्रयोग करके शिक्षक एक कथावाचक की भाँति भाव स्पष्टीकरण करने का प्रयास करता है। छात्र श्रोता की भाँति शिक्षक द्वारा प्रतिपादित विषय का श्रवण करते हैं। शिक्षक ही पूरे समय सक्रिय रहता है छात्रों की सहभागिता न्यूनतम होती है। इस विधि से शिक्षण कार्य हेतु शिक्षक को गंभीर ज्ञान की आवश्यकता होती है। यह प्रणाली उच्च कक्षाओं के शिक्षण के लिए ही उपयुक्त है।

7.7.6 तुलना प्रणाली : तुलना प्रणाली से शिक्षण करते समय शिक्षक कविता के भाव को स्पष्ट करने के लिए उस विषय से मिलती समान भाव वाली कविता का उदाहरण प्रस्तुत करता है। जिससे छात्र कविता के विषयवस्तु की परस्पर तुलना, विवेचना एवं तर्क–वितर्क करते हैं। इससे छात्रों की चिन्तन शक्ति एवं कल्पनाशक्ति का विकास होता है। विषय अधिक सरल, रोचक तथा बोधगम्य हो जाता है।

7.7.7 समीक्षा प्रणाली : समीक्षा प्रणाली में शिक्षक कविता के अर्थ व उसकी व्याख्या के साथ–साथ 'प्रश्नोत्तर विधि' की सहायता से साहित्यालोचन के सिद्धान्तों, शोध की विविध विधाओं एवं चिन्तन की प्रक्रियाओं से अवगत कराता है। वह छात्रों को सन्दर्भित पुस्तकों की भी जानकारी प्रदान करता है। छात्र स्वयं सहायक पुस्तकों के आधार पर संबन्धित विषय पर समीक्षापरक चिन्तन, मनन एवं अध्ययन करते हैं। इस शिक्षण प्रणाली का प्रयोग उच्च स्तर की कक्षाओं के लिए अधिक उपयोगी है।

7.8 कविता शिक्षण का क्रम सोपान

कविता शिक्षण के उद्देश्यों एवं शिक्षण प्रणालियों पर विचार करने के बाद कविता शिक्षण के पाठ सोपान का निर्धारण किया जाता है। पाठ सोपान के अन्तर्गत कविता शिक्षण की विभिन्न अवस्थाओं का समावेश किया जाता है। कविता को किसी विधि में बाँधकर पढ़ाना उचित नहीं रहता है, फिर भी पाठ सोपानों के आधार पर कविता पढ़ाने से पूर्व पाठ योजना अवश्य बना लेना चाहिए। कविता शिक्षण का क्रम सोपान निम्नलिखित होगा–

1. **सामान्य उद्देश्य–** शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर कविता शिक्षण के सामान्य उद्देश्यों की चर्चा पूर्व में की जा चुकी है।

2. **विशिष्ट उद्देश्य–** विशिष्ट उद्देश्य के अन्तर्गत सम्बन्धित कविता के–

   (i) भाव व विचार ग्रहण संबन्धी उद्देश्य।

   (ii) भाषा एवं कविता शैली संबन्धी उद्देश्य।

   (iii) रूच्यात्मक उद्देश्य।

   (iv) प्रोत्साहन संबन्धी उद्देश्य।

   (v) अभिवृत्यात्मक अथवा चरित्र निर्माण संबन्धी उद्देश्यों का उल्लेख किया जाता है।

3. **पूर्व ज्ञान–** इसमें संदर्भित पाठ के पूर्व छात्रों द्वारा अर्जित ज्ञान का उल्लेख किया जाता है।

4. **प्रस्तावना–** कविता शिक्षण में प्रस्तावना का विशेष महत्व होता है। प्रस्तावना में कविता के प्रसंगानुकूल छात्रों के पूर्व ज्ञान पर आधारित छोटे–छोटे निश्चित प्रश्न होते हैं। प्रस्तावना छात्रों को विषय की ओर उन्नमुख करने वाली होनी चाहिए।

5. **उद्देश्य कथन–** प्रस्तावना के प्रश्नों को कक्षा में प्रस्तुत करने के उपरान्त छात्रों द्वारा प्राप्त उत्तरों से वर्तमान पाठ को सम्बन्धित करते हुए शिक्षक कक्षा में क्या पढ़ाने जा रहा है इसकी घोषणा करता है। इसे ही उद्देश्य कथन कहते हैं।

6. **प्रस्तुतीकरण–** शिक्षक द्वारा प्रस्तावित कविता का आदर्श सस्वर वाचन करना चाहिए। आदर्श वाचन करते समय उचित लय, गति एवं भाव का ध्यान रखना आवश्यक होता है। आदर्श वाचन के पश्चात् शिक्षक को कठिन शब्दों का उच्चारण अभ्यास छात्रों से कराना चाहिए। इसके बाद कतिपय छात्रों द्वारा अनुकरण वाचन होना चाहिए।

7. **भाव बोध परीक्षा–** कक्षा मे कतिपय छात्रों द्वारा संदर्भित कविता का अनुकरण वाचन कर लेने के पश्चात यह ज्ञात करने के लिए कि छात्रों द्वारा कविता के केन्द्रीय भाव को कहाँ तक समझा गया है उनसे भाव–बोधात्मक प्रश्न आवश्यकतानुसार पूछे जा सकते हैं।

8. **काठिन्य निवारण–** कविता में कुछ ऐसे शब्द अथवा पद हो सकते हैं जिसे समझने में छात्र कठिनाई का अनुभव करते हों तो उसे अर्थकथन, पद विश्लेषण, उदाहरण, विलोमशब्द आदि के द्वारा दूर कर देना चाहिए। कविता शिक्षण का मुख्य उद्देश्य छात्रों को रसानुभूति एवं भावानुभूति कराना है।

9. **सस्वर वाचन–** काठिन्य निवारण के उपरान्त शिक्षक द्वारा छात्रों से सस्वर वाचन कराना चाहिए। कवि की अनुभूति को छात्रों के हृदय में जागृत करने के लिए सस्वर वाचन उपयोगी होता है। छात्रों को उचित हाव–भाव के साथ लय पूर्वक कविता पाठ के लिए अभिप्रेरित करना चाहिए।

10. **भाव विश्लेषण–** छात्रों को क्रियाशील बनाये रखने तथा कविता के भाव एवं विचार को स्पष्ट करने के लिए उनसे आवश्यकतानुसार प्रश्न पूछे जाने चाहिए। जिससे कविता के सौन्दर्य तत्वों का स्पष्टीकरण भली–भाँति हो जाय। प्रसंगानुसार समान भाव वाली कविता का उदाहरण प्रस्तुत करना, तुलना आदि के द्वारा छात्रों का ध्यान कविता के भावों की ओर आकृष्ट कराना चाहिए।

11. **आदर्श वाचन–** कविता के भाव भली भाँति स्पष्ट हो जाने के उपरान्त छात्रों को पुनः कविता के भावों में एकाग्र करने के लिए शिक्षक को उचित लय, गति, आरोह–अवरोह के साथ आदर्श वाचन करना चाहिए।

12. **अनुकरण वाचन–** शिक्षक द्वारा आदर्श वाचन करने के बाद कतिपय छात्रों द्वारा अनुकरण वाचन कराना उचित रहेगा।

13. **मूल्यांकन–** शिक्षण की समाप्ति पर शिक्षक यह जानने का प्रयास करता है कि छात्रों द्वारा कविता शिक्षण के उद्देश्यों की प्राप्ति किस सीमा तक हुई। इसके लिए वह वस्तुनिष्ठ प्रश्न, लघुउत्तरीय प्रश्न एवं कथन आदि के माध्यम से मूल्यांकन करता है।

14. **गृहकार्य–** कक्षा में छात्रों द्वारा अर्जित ज्ञान का गृहकार्य के द्वारा व्यावहारिक प्रयोग कराना उचित रहता है। गृहकार्य से छात्र को अपने विचारों को अभिव्यक्ति करने का पर्याप्त अवसर मिलता है।

7.9 कविता में अभिरूचि विकसित करने के उपाय

छात्रों में काव्यात्मक अभिरूचि उत्पन्न करने के लिए शिक्षक को कविता के उद्देश्यों एवं शिक्षण प्रणालियों का भलीभाँति ज्ञान होना आवश्यक है। शिक्षक को कक्षा में ऐसा वातावरण निर्मित करना चाहिए जिससे छात्रों में कविता के प्रति रूचि उत्पन्न हो सके। छात्रों में काव्यात्मक अभिरूचि विकसित करने के लिए शिक्षक द्वारा निम्नलिखित उपाय किये जा सकते हैं–

प्रभावशाली सस्वर वाचन : शिक्षक द्वारा कक्षा में कविता का शुद्ध एवं प्रभावी वाचन करने से छात्र भी उचित लय, गति और भाव के अनुसार कविता पाठ के लिए अभिप्रेरित होंगे।

कविता कंठाग्र करने को अभिप्रेरित करना : सरल, सुन्दर भावपूर्ण और शिक्षप्रद कविताओं को कंठस्थ करने के लिए छात्रों के प्रेरित किया जाना चाहिए। विद्यालय में समय–समय पर कविता पाठ संबन्धी प्रतियोगिता का आयोजन किया जाना चाहिए। इससे छात्रों में कविता के प्रति आकर्षण बढ़ेगा और वे अधिक से अधिक कविताओं को कंठस्थ कर सकेंगे और विभिन्न अवसरों के लिए कविता चयन के लिए भी प्रोत्साहित हो सकेंगे।

विविध साहित्यिक क्रिया कलापों का आयोजन : छात्रों में काव्यात्मक अभिरूचि उत्पन्न करने के लिए काव्य पाठ प्रतियोगिता के अतिरिक्त समय–समय पर अन्त्याक्षरी प्रतियोगिता का आयोजन कराना चाहिए। इससे छात्रों का

स्वस्थ मनोरंजन होने के साथ–साथ वे नयी कविताओं को कंठस्थ करने को अभिप्रेरित भी होंगे। इस अवसर पर मेधावी छात्रों को पुरस्कृत करना चाहिए जिससे अन्य छात्र भी प्रोत्साहित हो सकेंगे। विद्यालय में कवि सम्मेलनों का भी आयोजन किया जा सकता है।

कविता लेखन का अभ्यास : शिक्षक द्वारा छात्रों को छोटी–छोटी सरल कविताओं को स्वयं लिखने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। शिक्षक द्वारा लिखित कविताओं का संशोधन करने से छात्र कविता लेखन के प्रति उत्साहित हो सकेंगे।

जयन्ती का आयोजन : विद्यालय में कवियों एवं महापुरूषों के जन्मदिवसों पर समारोह का आयोजन किया जाना चाहिए। इस अवसर पर शिक्षक द्वारा कविता पाठ करना चाहिए, साथ ही छात्रों से भी कविता पाठ कराया जाना चाहिए। ऐसा करने से उनमें काव्यात्मक अभिरूचि का विकास होगा और वे कविता रचना हेतु प्रेरित होंगे।

उपरोक्त साधनो के साथ–साथ शिक्षक कक्षा में कविता शिक्षण करते समय काव्यगत तत्वों, भावों, कल्पना तथा रस आदि से छात्रों को भली–भाँति अवगत करायें, समभाव वाली कविताओं को प्रस्तुत कर उसके माध्यम से कविता शिक्षण को अधिक ग्राह्य, सरल एवं रूचिकर बना सकते हैं। इन सभी उपायों से निश्चित ही छात्रों के काव्यात्मक अभिरूचि में वृद्धि हो सकेगी।

बोध प्रश्न

टिप्पणी :

क) नीचे दिए गए बोध प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

ख) इकाई के अंत में दिए गए बोध प्रश्नों के उत्तर से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

4. कविता शिक्षण की प्रचलित प्रविधियों का संक्षेप में उल्लेख करें।

....

....

5. कविता शिक्षण में आदर्श वाचन के महत्व को रेखांकित करें।

....

....

6. कविता शिक्षण में भाव विश्लेषण से क्या अभिप्राय है?

....

....

7.10 सारांश

कविता मानवीय भावों की सहज अभिव्यक्ति है। कविता शिक्षण के द्वारा छात्रों में दया, प्रेम, करूणा, सहयोग, परोपकार आदि गुणों की अभिवृद्धि के साथ उनमें कल्पनाशक्ति का विकास होता है। कविता शिक्षण करते समय छात्रों को काव्यगत तत्वों, भावों, कल्पना तथा रस आदि से भली–भाँति परिचित करायें जिससे उनमें काव्यात्मक अभिरूचि का विकास सहजता से हो सके। शिक्षक द्वारा कविता का शुद्ध एवं प्रभावशाली वाचन, विद्यालय मे कवि सम्मेलन का आयोजन, महापुरूषों की जयन्ती मनाना, अन्त्याक्षरी, काव्य पाठ एवं कविता लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त कविता शिक्षण के समय समभाव वाली कविताओं को प्रस्तुत कर काव्य विषय को अधिक ग्राह्य, सरल व रूचिकर बनाकर छात्रों में काव्यात्मक अभिरूचि का विकास किया जा सकता है।

7.11 अभ्यास के प्रश्न

1. प्राथमिक स्तर पर कविता शिक्षण की उपयुक्त प्रणाली का उल्लेख करें।
2. शिक्षा के विभिन्न स्तरों के आधार पर कविता शिक्षण के उद्देश्यों का वर्गीकरण कीजिए।
3. कविता पढ़ाने के लिए शिक्षण का क्रम सोपान बनाइए।

7.12 चर्चा के बिन्दु

1. छात्रों में काव्यात्मक अभिरूचि उत्पन्न करने वाले साधनों की चर्चा कीजिए।
2. कविता शिक्षण की प्रमुख विधियों पर चर्चा कीजिए।

7.13 बोध प्रश्नों के उत्तर

1. कविता के द्वारा छात्रों में दया, प्रेम, करूणा, सहयोग, परोपकार एवं सहानुभूति आदि गुणों को विकसित किया जाता है।
2. कविता शिक्षण के सामान्य उद्देश्य निम्नवत् हैं–
    - छात्रों में उचित लय, गति एवं भावानुसार कविता पाठ करने की योग्यता का विकास करना।
    - छात्रों के भावों का परिष्कार करके उनमें उदात्त भावों का विकास करना।
    - छात्रों में कवि की अनुभूतियों को समझकर काव्यगत सौन्दर्यानुभूति करने की क्षमता का विकास करना।
    - कविता के मुख्य भावों एवं विचारों को समझकर इन्हें अपने शब्दों में वर्णन करने की योग्यता उत्पन्न करना।
3. कविता के प्रमुख सौन्दर्य तत्व है– अभिव्यक्ति का सौन्दर्य, भाव सौन्दर्य एवं विचार सौन्दर्य।

4. कविता शिक्षण की प्रचलित शिक्षण प्रणालियों में– गीत तथा अभिनय प्रणाली, अर्थ बोध अथवा परम्परागत प्रणाली, प्रश्नोत्तर अथवा खण्डान्वय प्रणाली, व्यास प्रणाली, तुलना प्रणाली और समीक्षा प्रणाली प्रमुख हैं।
5. आदर्श वाचन से– कविता के प्रति रूचि उत्पन्न होती है। छात्र शब्दों के शुद्ध उच्चारण से अवगत होते हैं तथा छात्रों को उचित लय, गति, यति की जानकारी होती है। शुद्धता के साथ वाचन के लिए उनमें आत्म विश्वास की वृद्धि होती है।
6. कविता शिक्षण में भाव विश्लेषण से तात्पर्य छात्रों के समक्ष कविता के भाव एवं विचार स्पष्ट करने के लिए शिक्षक द्वारा उनसे यथोचित प्रश्न पूछने से है जिससे उनके समक्ष कविता के सौन्दर्य तत्वों का स्पष्टीकरण सही ढंग से हो जाय और उन्हें काव्यगत् रसानुभूति प्राप्त हो सके।

7.14 कुछ उपयोगी पुस्तकें

1. प्रसाद, केशव : हिन्दी शिक्षण, धनपत राय एंड संज, दिल्ली
2. सिंह, निरंजन कुमार : माध्यमिक विद्यालयों में हिन्दी शिक्षण, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर
3. पाण्डेय, रामशकल (2002) : हिन्दी शिक्षण, अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा

इकाई – 8 : गद्य की अन्य विधाओं का शिक्षण

इकाई की संरचना

8.1 प्रस्ताना
8.2 इकाई के उद्देश्य
8.3 गद्य शिक्षण
8.3.1 गद्य शिक्षण का उद्देश्य
8.3.2 गद्य शिक्षण विधि
8.3.3 गद्य शिक्षण की प्रणालियां
8.4 रचना–शिक्षण
8.4.1 रचना शिक्षण के सोपान
8.4.2 रचना शिक्षण की प्रणालियां
8.5 कहानी–शिक्षण
8.5.1 कहानी के तत्व
8.5.2 कहानी शिक्षण के उद्देश्य
8.5.3 कहानी शिक्षण विधि
8.5.4 कहानी शिक्षण पद्धति
8.6 उपन्यास शिक्षण
8.6.1 हिन्दी उपन्यास के तत्व
8.6.2 हिंदी उपन्यास शिक्षण के उद्देश्य
8.6.3 उपन्यास शिक्षण की विधियां
8.7 नाटक व एकांकी शिक्षण
8.7.1 नाटक के तत्व
8.7.2 नाटक शिक्षण के उद्देश्यः
8.7.3 नाटक शिक्षण की विविध प्रणालियां
8.8 सारांश
8.9 अभ्यास के प्रश्न
8.10 चर्चा के बिन्दु
8.11 बोध प्रश्नों के उत्तर
8.12 कुछ उपयोगी पुस्तकें

8.1 प्रस्तावना

भाषा शिक्षण में साहित्य के विभिन्न रूपों की शिक्षा प्रदान की जाती है जिसके माध्यम से विद्यार्थियों में भाषा बोध की समझ, भाषा व्यवहार, ज्ञान संयोजन, अभिव्यक्ति की योग्यता, शब्दों का संव्यूहन आदि करने की योग्यता का विकास होता है साथ ही साहित्य को विभिन्न विधाओं को पढ़ने के माध्यम से विद्यार्थियों में भाव प्रवीणता, रस बोध, प्रांजलता, संप्रेषण योग्यता काफी विकास होता है। साहित्य की मुख्य विधाओं में गद्य एवं पद्य शिक्षण गुण है जब हम गद्य शिक्षण की चर्चा करते है।

गद्य की अनेक विधाएँ है जैसे कहानी, रेखाचित्र, यात्रा वृतांत साथ ही संस्मरण, आत्मकथा जीवनी आदि हैं जिनका शिक्षण करने की विधियाँ भी भिन्न–भिन्न हो। प्रस्तुत इकाई में हम गद्य शिक्षण तथा गद्य की अन्य विधाओं के शिक्ष्ज्ञण के विषय में अध्ययन करेगा। जिनको सामान्य रुप से एक ही प्रकार से शिक्षण किया जाता है परन्तु कुछ अन्य विधाएँ भी है जैसे नाटक इसको शिक्षण करते समय कतिपय शिक्षण में परिवर्तन किया जाता है क्योंकि नाटक एक ऐसी विद्या है जो अपने भाव संयोजन पर अधिक बल देती है। इस इकाई में हम गद्य शिक्षण की कहानी, रचना, नाटक, उपन्यास आदि विधाओं के शिक्षण के बारे में अध्ययन करेंगे।

8.2 इकाई के उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के उपरान्त आप इस योग्य हो जायेंगे कि–

1. गद्य शिक्षण, कहानी शिक्षण, नाटक शिक्षण के उद्देश्यों को बता सकेंगे।
2. गद्य शिक्षण के विभिन्न विधाओं के मध्य अन्तर बता सकेगा।
3. संवादों को उचित रुप से सम्प्रेरण कर सकेंगे।
4. गद्य की विभिन्न विधाओं का शिक्षण का सकेंगे।
5. कहानी, नाटक एवं उपन्यास के तत्वों में अन्तर कर सकेंगे।

8.3 गद्य शिक्षण

गद्य शिक्षण बालकों में पठन योग्यता का विकास करता है इससे बालकों में वस्तुबोध की प्रेरणा व उससे संबंधित विचारों की अभिव्यक्ति की योग्यता व क्षमता उत्पन्न होती है। अतः गद्य की पाठ्य–पुस्तकें बहुत सावधानीपूर्वक तैयार होनी चाहिए। इस आधार पर गद्य शिक्षण का उद्देश्य होता है।

8.3.1 गद्य शिक्षण का उद्देश्य

1. पठित रचना की व्याख्या करने की योग्यता विकसित करना।
2. सार, संक्षेप, भावार्थ, व्याख्या आदि के लेखन का ज्ञान करना।

3. अपठित रचना का सारांश लिखना की क्षमता का विकास करना।
4. वर्णनात्मक, भावात्मक तथा अन्य विभिन्न शैलियों को निबंधों के लेखन की कला का विकास करना।
5. संक्षिप्त जीवनी लिखने की कला को विकसित करना।
6. शब्दकोश को समझने व विभिन्न अर्थों का ज्ञान प्रदान करना।
7. विराम चिन्हो तथा अन्य सभी मात्रात्मक चिन्हों का उचित उपयोग की योग्यता का विकास करना।

8.3.2 गद्य शिक्षण की विधि

इसे लेखक के परिचय के साथ प्रारम्भ किया जा सकता है। वार्तालाप द्वारा प्रस्तावना बताई जा सकती है। साथ ही प्रश्नोत्तर, पूर्वकथा शिक्षण उपकरण समभावी कविता पंक्तियों द्वारा प्रस्तावना को प्रस्तुत किया जा सकता है। इसमें वाचन दो प्रकार से किया जा सकता है, प्रथम आदर्श वाचन अध्यापक द्वारा तथा अनुकरण वाचन छात्र द्वारा किया जाता है। इससे गद्य खण्डों को छात्रों ने कितना समझा व इससे क्या सीखा इसका स्पष्टीकरण हो जाता है।

काठिन्य निवारणः कटिन शब्दों का स्पष्टीकरण विभिन्न प्रकार से किया जाए– चित्र, द्वारा, मॉडल द्वारा, वस्तु को दिखाकर, अभिनय द्वारा अर्थ द्वारा, कथन व संधि– विच्छेद द्वारा। इससे गद्य को समझने में सरलता होती है।

प्रश्नोत्तर के माध्यम से गद्य का विश्लेषण करना व बालकों की जिज्ञासा को समझते हुए यहाँ पर प्रश्न पाठ से ही संबंधित होने चाहिए। विश्लेषण करना तथा पर्यायवाची शब्दों को बनाकर, शब्द– विग्रह द्वारा, गृहकार्य द्वारा गद्य का विश्लेषण बालकों के समक्ष किया जा सकता है।

8.3.3 गद्य शिक्षण की प्रणालियां

- **विश्लेषण प्रणाली** : इसमें छात्र व शिक्षक दोनों ही क्रियाशील होते है। छात्रो को स्वयं विचार करने की प्रेरणा व अध्यापक द्वारा गंद्य की व्याख्या की जाती है।
- **अर्थकथन प्रणाली** : विभिन्न वाक्यों को सरल शब्दों में बालकों के समक्ष प्रस्तुत करना, जिससे गद्य में बालकों की रूचि बनी रहे। साथ बालकों में भाषा का विकास सुनिश्चित हो।
- **समीक्षा प्रणाली** : यह उच्च्य कथाओं के लिए उपयुक्त है। इसमें विभिन्न तत्वों के गुण दोष देखे जाते है। इसमें बालक सक्रिय रहता है। जिससे बालाकें में स्वाध्याय की योग्यता का विकास व समझ उत्पन्न हो सके।
- **संयुक्त प्रणाली** : इस प्रणाली द्वारा गद्य शिक्षण को प्रभाव शाली बनाया जा सकता है। भाषायी कौशल के विकास के लिए व्याख्या, विश्लेषण तथा अर्थ प्रणाली को संयुक्त रूप को उपयोग किया जाता है।

8.4 रचना–शिक्षण

विचारों को क्रमबद्ध कर शब्द समूह में कलात्मक ढंग से व्यक्त करना ही रचना है। रचना शिक्षण में लेखन कला की विशेष भूमिका है। लेखन में नवीनता व मौलिकता, रचना को एक अलग स्वरूप प्रदान करती है। रचना लेखन में सामाजिक क्षेत्र, व्यावसायिक व्यवहार, राष्ट्रजीवन आदि को सम्मिलित किया जाता है।

8.4.1 रचना शिक्षण के सोपान

रचना शिक्षण की प्रक्रिया निम्नलिखित तीन सोपानों पर आधारित है–

- **प्रथम सोपान** : शब्दों की उचित दूरी व सुलेख वर्णों की बनावट पर बल।
- **द्वितीय सोपान** : वर्तनी की शुद्धता पर बल दिया जाता है तथा रचना के विभिन्न स्वरूप जैसे प्रश्नार्थक, आज्ञार्थक, आदि पर ध्यान दिया जाता है।
- **तृतीय सोपान (उत्तर सोपान)** : इसके अन्तर्गत कई उपविषय होते है। जैसे– अनुच्छेद रचना, साहित्यिक विधाएं, व्यक्तिगत जीवन आदि।

8.4.2 रचना शिक्षण की प्रणालियां

रचना शिक्षण हेतु अनेक प्रणालियों/विधियों का प्रयोग किया जाता है जिनमें से प्रमुख प्रणालियॉ निम्नवत है–

- **रूपरेखा प्रणाली** : कुछ वाक्यों से विषय विस्तार किया जाता है। मुख्य रचना से पहले उससे संबंधित कुछ तथ्य प्रस्तुत किए जाते हैं।
- **प्रवचन प्रणाली** : शिक्षक, छात्रों के समक्ष विषय के बारे में व्याख्यान करते हैं तथा छात्र अपने सामर्थ्य के अनुसार रचना कार्य करते हैं।
- **प्रश्नोत्तर प्रणाली** : अध्यापक को जिस विषय पर रचना शिक्षण कराना होता है वे उससे संबंधित प्रश्न छात्रो से पूछते हैं तथा इनमें एक क्रम निहित होता है जिनके उत्तर द्वारा छात्र रचना कहते हैं।
- **वाद–विवाद प्रणाली** : रचना रचना शिक्षण में सती प्रथा, दहेज प्रथा, सहशिक्षा जैसे विषयों में छात्रों को दो भागों में बांटकर उनसे इस विषय पर अपने विचार व तर्क प्रस्तुत करने के लिए कहा जाता है।
- **चित्र वर्णन प्रणाली** : विषय से संबंधित चित्र कथा में प्रस्तुत किया जाता है तत्पश्चात उस पर मौखिक चर्चा होती है और उसको क्रमवार प्रदर्शित किया जाता है।

8.5 कहानी–शिक्षण

हिन्दी में कहानी शब्द की उत्पत्ति किसी घटना के एक अंश को प्रस्तुत करने वाली विद्या से हुई। सामान्यतः कहानी, में एक कथा होती है, जिसमें कहानी एक दिशा में चलती है, इसमें अगल–बगल की बातों पर ध्यान नहीं दिया जाता। कहानी के संबंध में कहा जाता है कि कहानी लिखना रेल की पटरी पर चलना है।

कहानी में लेखक अपनी प्रतिभा व कल्पानाशक्ति द्वारा उद्देश्य पात्रों घटनाओं आदि का चयन करता है। प्रत्येक काहनी का उद्देश्य होता है। कहानी के प्रारंभ से लेकर अंत तक कहानीकार को उद्देश्य भटकना नही चाहिए। इससे सृघनात्मकता भी बनी रहती है। कहानी का उद्देश्य सामाजिक ऐतिहासिक, मनोरंजनकारी, उपदेशात्मक कुछ भी हो सकता है।

8.5.1 कहानी के तत्व

- **कथावस्तु** : कथानक सुसंगठित, रोचक, सुसंगठित तथा श्रृंखलाबद्ध एवं कौतूहल पूर्ण होना चाहिए। साथ ही कथ्य छोटा होना चाहिए। कथावस्तु को कई वाक्यों में बालक के समक्ष प्रस्तुत करना चाहिए।
- **पात्र व चरित्र चित्रण** : पात्र सीमित संख्या में होने चाहिए। पात्रों के चरित्र का चित्र दो प्रकार से होता है प्रथम जिसमें पात्र स्वयं वार्तालाप करते हैं एवं द्वितीय जिसमें लेखकीय विश्लेषण द्वारा पात्रो का परिचय होता है। चरित्र चित्रण का कहानी की कलात्मकता में बहुत महत्वपूर्ण स्थान होता है।
- **संवाद** : संवाद ही कहानी में जीवतंता लाता है। इनसे दो कार्य संपादित होते हैं एक तो पात्रों का परिचय सरलता से मिल जाता है, दूसरे कथा का प्रवाह भी बनता रहता है। कहानीकार कभी कहानी में प्रत्यक्ष रूप में नहीं रहता है अतः संवाद जितनी रोचकता, कलात्मकता के साथ होगा कहानी उतनी स्पष्ट व रूचिकर होगी
- **भाषा** : कहानी की भाषा देशकाल और वातावरण के अनुसार होनी चाहिए। भाषा जितनी सरल व सहज होगी कहानी की स्पष्टता उतनी अधिक होगी। इससे कहानी का सृजन करने में भी सहायता होगी।
- **शैली** : कहानीकार अपनी रूचि एवं प्रतिभा के अनुसार शैली का चुनाव करता है। कहानी लेखन में आत्मकथा शैली, विवरणात्मक शैली, डायरी शैली, कथनोपकथन शैली, संस्मरणात्मक शैली आदि का प्रयोग किया जाता है।
- **देशकाल** : कहानी में देशकाल के अनुसार भाषा, वेश–भूषा, शैली आदि के प्रयोग से समय को जीवतं किया जाता है। इससे कहानी को समय के अनुरूप संगत करने में सरलता होती है।

8.5.2 कहानी शिक्षण के उद्देश्य

कहानी, जीवन का पर्याय ही है । यदि हम ध्यान दे तो प्राचीन समय में अब तक की कहानियों में मानक जीवन में होने वाले परिवर्तन का विशेष प्रभाव दिखलाई पड़ता है। कहानी का अपना उद्देश्य भी होता है । कहानी शिक्षण में कुछ उद्देश्य निम्न प्रकार के हो सकते हैं–

1. बालको को कल्पनाशक्ति के प्रयोग का अवसर प्रदान करना।
2. कहानियों द्वारा भाषा व शैली का ज्ञान प्रदान करना।

3. मनोरंजनकारी साहित्य की शिक्षा देना।

4. कहानियों द्वारा बालकों में संवेगो का विकास करना।

5. बालकों को रचनात्मक बनाना।

8.5.3 कहानी शिक्षण विधि

1. कहानी का चयन बालक की आयु, ग्रहण शक्ति के अनुसार किया जाए।
2. कहानी को स्पष्ट रूप से भावों के साथ सुनायी जाए।
3. कहानी सुनाए जाने के समय आवश्यकतानुसार शिक्षण सामग्री का प्रयोग किया जाए।
4. कहानी को सुनाते समय बालक की भाषा स्तर व शैली पर ध्यान दिया जाए।
5. कहानी का प्रवाह मन्द हो।
6. कहानी के समापन पर बालकों से कहानी की पुनरावृत्ति करायी जाए।
7. बालकों को भी स्वयं कहानी कहने के लिए प्रेरित किया जाए, जिससे उनमें अभिव्यक्ति की क्षमता का विकास होगा।

8.5.4 कहानी शिक्षण पद्धति

कहानी का अपना एक क्रम होता है, ठीक उसी प्रकार कहानी शिक्षण का भी एक क्रम है जो निम्नवत है–

- **प्रस्तावना** : किसी चित्र, प्रश्न या कथन द्वारा शिक्षक कहानी की प्रस्तावना बालकों के सम्मुख रखेगा और यह प्रस्तावना बालकों के पूर्वज्ञान पद आधारित होता है।
- **उद्देश्य कथन** : इसमें कहानी के शीर्षक को ब्लैकबौड पर अध्यापक द्वारा लिखा जाता है। या मौखिक रूप से उद्देश्य कथन बालकों को बताया जाता है।
- **प्रस्तुतीकरण** : मौखिक रूप से, बालको की कल्पनाशक्ति जागृत करने वाले प्रश्नों के रूप में, कहानी को कई टुकड़ो में छात्रों को सुनाने के लिए कहा जाए, तथा कहानी के कथनों में भाषायी स्पष्टीकरण जैसे क्रमों के द्वारा प्रस्तुतीकरण किया जाता है।
- श्यामपट्ट संकेत : कहानी में प्रयुक्त संकेतों को अनिवार्य रूप से लिखा जाता है। इससे कहानी को कहने में सरलता व बालकों को समझने में सहजता होती है।
- मूल्यांकन : कहानी पर आधारित प्रश्न, कहानी का संदेश, कहानी के कुछ हिस्से, छात्रों द्वारा सुनने से हम मूल्यांकन कर सकते है कि क्या कहानी का कथानक उचित प्रकार से किया गया है या इसमें परिवर्तन किया जाना चाहिए।

- **गृहकार्य** : गृहकार्य के रूप में कहानी के चरित्रो, उद्देश्य व प्रभाव को लिखकर आने के लिए कहा जाता है। जिससे यह ज्ञात होता है कि कहानी, बालको को समझ में आई है तथा वे कहानी का मुख्य उद्देश्य प्राप्त करने में सक्षम है।

8.6 उपन्यास शिक्षण

उपन्यास शब्द, बंगला भाषा की देन है। हिन्दी उपन्यास के संबंध में प्रेमचन्द जी ने कहा है– मै उपन्यास को मानव चरित्र का चित्र मात्र समझता हूँ। मानव चरित्र पर प्रकाश डालना और उसके रहस्यों को खोलना ही उपन्यास का मूल तत्व है" उपन्यास में यथार्थ व काल्पनिक दोनों प्रकार की घटनाओं का चित्रण किया जा सकता है। इसका आधार इतिहास उपन्यास अपने उद्देश्य को प्राप्त करते हैं। इन्हीं के सहारे उपन्यास अपने उद्देश्य को प्राप्त करते है। स्वरूप की दृष्टि से उपन्यास को कई वर्गों में बांटा जा सकता है। जैसे कि ऐतिहासिक, धार्मिक, दार्शनिक, सामाजिक आदि।

8.6.1 हिन्दी उपन्यास के तत्व

उपन्यास के निम्न तत्व बताए गए हैं–

- **कथावस्तु** : कथापट विस्तृत होती है तथा यह किसी समस्या पर आधारित होती है। मुख्य कथा के साथ अन्य संबंधी कथाएं भी साथ–साथ चलती है। कथा धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक एवं समाज की किसी समस्या पर आधारित होनी चाहिए।
- **पात्र चरित्र चित्रण** : इन्हे बहुत कलात्मक ढंग से प्रस्तुत किया जाता है। पात्रों में जीवन व गति दिखलाई पड़ते है। उपन्यास में दो प्रकार से चरित्र चित्रण होता है– प्रथम जिसमें उपन्यासकार द्वारा स्वयं पात्रो का परिचय दिया जाता है, द्वितीय पात्र आपस में संवाद स्थापित करते हुए स्वयं अपना परिचय देते हैं और साथ ही कथा को दिशा व गति प्रदान करते है।
- **संवाद–योजना** : नाटकीयता को स्वाभाविक गति व स्वतंत्रता प्रदान करने के लिए उत्तम संवाद शैली का प्रयोग। जिसमें संवादो का छोटा व स्पष्ट होना आवश्यक हैं।
- **भाषा शैली** : उचित व स्पष्ट भाषा कथा को रोचक बनाती है तथा शैली उपन्यासकार की निजी विशेषता को प्रदर्शित करती है। यह उपन्यास को प्रतिष्टा दिलाती है। उपन्यासों की भाषा उनकी कलात्मकता की सबसे बड़ी कसौटी होती हैं।
- **देशकाल** : उपन्यास में स्वाभाविकता लाने के लिए देशकाल का चित्र अति आवश्यक है। प्रत्येक उपन्यास का अपना एक सामाजिक व भौगोलिक आधार होता है। जो उपन्यासकार के संदेशों को व्यक्त करने तथा समझने के लिए आवश्यक है।

8.6.2 हिंदी उपन्यास शिक्षण के उद्देश्य

उपन्यास की सार्थकता उसमें निहित उद्देश्यों से ही है। जो उपन्यास की खान होती है प्रत्येक कथा का अपना एक उद्देश्य होता है। जिस प्रकार शरीर की सार्थकता प्राण से है उसी प्रकार उपन्यास की सार्थकता उसमें निहित उद्देश्य से है। उपन्यास के सारे कलात्मक उपक्रम इस प्रकार हो जैसे उपन्यास शिक्षण इसके उद्देश्य के साधक हो। उपन्यास शिक्षण के निम्न उद्देशय हैं–

1. छात्रों को स्वस्थय मनोंरंजन की ओर प्रेरित करना।
2. छात्रों में स्वाध्याय के प्रति जागरूकता।
3. छात्रों में आत्मनिर्भिरता का संचार करना।
4. छात्रों के व्यावहारिक व सामाजिक ज्ञान में वृद्धि।
5. उपन्यास में व्याप्त उद्देश्यों से बालको को प्रेरणा लेने के लिए प्रोत्साहित करना।
6. छात्रों में देश की तात्कालिक परिस्थितियों के प्रति जागरूकता उत्पन्न करना।
7. उत्तम वस्त्रों द्वारा बालकों को उत्तम व्यवहार का ज्ञान प्रदान करना।

8.6.3 उपन्यास शिक्षण की विधियां

उपन्यास शिक्षण में अध्यापक निर्देश अति महत्वपूर्ण होता है। साथ ही उपन्यास शिक्षण में निम्न क्रमों के द्वारा छात्र को अधिक लाभान्ति किया जा सकता है।

- **प्रस्तावना** : छात्रों में कथावस्तु से संबंधित कुछ प्रश्न पूछे जाए जिससे कि छात्रों में रूचि जागृत हो और उपन्यास के आगे की कथा का क्रम बना रहे। प्रस्तावना से उपन्यास में रूचि की संभावना बढ़ जाती है।
- **प्रस्तुतीकरण** : अध्यापक को बालकों के समक्ष उपन्यास की सार में कथावस्तु, पात्र, भाषा–शैली, देशकाल को विधिवत व भावों के साथ क्रमवाद प्रस्तुत करना चाहिए जिससे उपन्यास में बालक की रूचि बनी रहती है।
- **स्वाध्याय** : उपन्यास के कुछ बिन्दुओं जैसे कि चरित्रों के नाम, देशकाल की विशेषता, चरित्रों के गुण आदि पर कुछ लिखने के लिए कहा जाता है।
- **निंवेदन** : सभी छात्रों की स्वाध्याय आधारित लिखित सामग्री को कथा में विचार–विमर्श कर प्रतिवेदन किया जाएगा। तत्पश्चात् इन प्रतिवेदनों पर प्रश्नोत्तरी भी हो। साथ उपन्यास की समीक्षा भी की जाती है।
- **मूल्यांकन** : उपन्यास की कथा का सारांश तथा चरित्रो की विशेषताओं व उपन्यास के उद्देश्यों को बालको से पूछा जाए, जिससे उनका मूल्यांकन किया जा सकता है।

बोध प्रश्न

टिप्पणी :

क) नीचे दिए गए बोध प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

ख) इकाई के अंत में दिए गए बोध प्रश्नों के उत्तर से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1. गद्य शिक्षण की अन्य विधाएँ कौन–कौन सी है?

....

....

2. कहानी शिक्षण का उद्देश्य क्या है?

....

....

3. उपन्यास शिक्षण की विधियाँ कौन–कौन सी है?

....

....

8.7 नाटक व एकांकी शिक्षण

नाटक अपनी रचना शिल्प में बड़ा होता है जिसके कारण यदि इसका मंचन किया जाता है तो समय अधिक लगता है जबकि एकांकी में एक अंक होने के कारण यह अत्यन्त छोटा होता है तथा इसके अभिनय में कम समय लगता है। नाटक व एकांकी यह अभिनय के माध्यम से अपने विचारों को प्रकट करने की विधा है जिसमें योग्य कथन, कथावस्तु पात्र, संवाद तथा चरित्र–चित्रण महत्वपूर्ण अंग है ओर यह भाव–संयोजन पर अधिक बल देती है नाटक अथवा एकांकी में कथोप कथन के साथ भावों को स्पष्ट एवं प्रत्यक्ष दिखाना आवश्यक माना जाता है। भारतीय साहित्य में नाटक को सर्वोपरि विधाओं के अन्तर्गत रखा गया है और काव्येयु नाटकं रम्यः कहकर नाटक को उच्च स्थान दिया गया।

गद्य की विभिन्न विधाओं में नाटक तथा एकांकी है जिनकी साहित्य सृजन तथा शिक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका है। सामान्य रूप से नाटक एवं एकांकी को लोग एक साथ लेते है परन्तु नाटक तथा एकांकी में तत्व, शिक्षण विधि में तो समानता है परन्तु दोनों में कुछ विशेष अन्तर भी है जैसे नाटक में एक मुख्य कथा तथा अनेक अन्तः कथाएँ होती है और कई अंक होते है जबकि एकांकी एक ही घटना पर आधारित होता है।

आर्चाय धनंजय ने नाटक के विषय में कहा कि किसी भी अवस्था का अनुकरण नाटक है। भरतमुनि ने नाटक के विषय में अपना विचार प्रस्तुत करते हुए कहा कि ऐसा कोई ज्ञान, भोग, विधा कला और शिल्प नहीं है जिसे नाटक के माध्यम से न प्रस्तुत किया जा सकें। इस प्रकार भाषा शिक्षण में नाटक का बहुत महत्व है। यह विद्यार्थी के भाष्य कौशल में वृद्धि करता है।

8.7.1 नाटक के तत्व

संस्कृत आचार्यो ने नाटक के पाँच तत्व स्वीकार किए हैं :–

- वस्तु, नेत, रस अभिनय और वृत्ति
- **पाश्चात्य विद्वान छः मूल तत्व स्वीकार करते हैं**– वस्तु, पात्र, देशकाल, शैली और उद्देश्य।

- नाटक शब्द, संस्कृत के नट्ट धातु से बना है, जिसका अर्थ होता है अभिनय करना। अभिनय कायिक और वाचक दोनों प्रकार का हो सकता है। अतः शारीरिक क्रियाओं और वाणी द्वारा किया गया अनुकरण नाटक कहलाता है। नाटक एक विश्वव्यापी विद्या है।

नाटक के प्रमुख तत्व

भारत में प्राचनी समय में ही नाटक को एक सम्मानीय साहित्यिक विद्या माना गया। अतः इसके तत्वों का पर्याप्त विवेचन किया गया जो निम्न प्रकार से हैं–

- कथावस्तु : इसके अन्तर्गत अर्थ, प्रकृति, सन्धियों आदि पर कार्य किया जाता है तथा विकास के आधार पर कथावस्तु के निम्न पांच भेद किए गए हैं–

1. प्रारम्भ (पात्रों के मन में किसी अभिलाषा के उत्थित करना)
2. प्रयत्न (फल प्राप्ति हेतु किए गए विभिन्न क्रियाकलाप)
3. प्रत्याषा (संघर्षों पर विजय प्राप्त करतु हुए फलप्राप्ति की आशा)
4. नियताप्ति (विहनों की समाप्ति के बाद फलप्राप्ति का निश्चित होना)
5. फलागम (फल की प्राप्ति होना)

- **पात्र व चरित चित्रण** : नाटकों के कथा के वाहक पात्र ही होते हैं, नाटकों का प्रमुख पात्र शीलगुण सम्पन्न तथा उत्तम चरित्र वाला होना चाहिए। पात्रों की आकृति और वेशभूषा उनका परिचय देते हैं लेखक स्वयं पात्र को अधिक प्रदर्शित नहीं करता। कथनोपकथनः नाटकों के प्राण संवाद ही हैं संवादों के कारण ही नाटक सार्वजन प्रिय व सर्वजन ग्राहय होते हैं। और कथाओं को गति भी संवादों के माध्यम से प्राप्त होती है। संवाद छोटे, सरल भाषा में होने चाहिए।

- **देशकाल चित्रण** : नाटक जिस काल से संबंधित हो, उसी के अनुसार पात्रों की वेशभूषा, उनका रहन–सहन, वार्तालाप आदि प्रदर्शित किया जाना चाहिए। ऐसा करने से नाटक की घटनाएं समय के अनुसार स्वाभाविक लगने लगती है।

8.7.2 नाटक शिक्षण के उद्देश्य

नाटक का एक कल्याणकारी व निश्चित उद्देश्य होना चाहिए। प्रमुख पात्रों का चरित्र उत्तम होना चाहिए जिससे कि जनमानस कुछ सीख ग्रहण करें। नाटकों द्वारा लोकमंगल की साधना की जानी चाहिए। भारतीय नाटक सदैव सुखान्त ही होते है परन्तु पाश्चात्य प्रभाव के कारण अब हिन्दी में भी दुखान्त नाटक लिखे जाने लगे है अतः सुखान्त नाटक एक प्रकार की प्रेरणा व आशा जागृत करते है। छात्रों को नाटक का ज्ञान क्यों होना चाहिए इसका उत्तर निम्न उद्देश्यों द्वारा प्राप्त किया जा सकता है–

- **विविध कलाओं एवं व्यवहारों का सहज ज्ञान** : नाटक में संगीत, नृत्य, वाद्य आदि का समायोजन होता है, अतः छात्रों को इन ललित कलाओं की शिक्षा सहजता को प्राप्त हो सकेगी।
- **विभिन्न व्यावहारिक परिस्थितियां का सहज ज्ञान कराना** : नाटक एक व्यावहारिक कला है जिसमें पात्रों परिस्थितियां का जीवन्त सृजन करते हैं, इससे आम जनमानस अपनी भावनाओं को जोड़ता है व उसी पात्र के अनुसार सोचता कार्य करने जैसे अनुभवों से कुछ ग्रहण करता है।
- **भावाभिव्यक्ति की व्यावहारिक शिक्षा** : संवाद और अभिनव के द्वारा बालकों को भावाभिव्यक्ति की समुचित शिक्षा मिलती है, जो बालकों के व्यक्तित्व विकास में महत्वपूर्ण होता है।
- **अनुकरण के अवसर की उपलब्धता** : इससे बालक अपनी सुचि के अनुसार नाटकों के ऐतिहासिक, सामाजिक, दार्शनिक प्रकारों से शिक्षा ग्रहण कर अपने मनपसन्द या मुख्य पात्र का अनुकरण कर अपना विकास कर सकेगें।
- **भाषा का सहज व शुद्ध होना** : नाटक में भाषा का प्रयोग सरल व स्पष्ट होता है, जिससे वे अपना भाव लोगों तक पहुंचा सकें। भाषा का सहज व शुद्ध होने से विद्यार्थियो भाषा संबंधित कार्यों को ग्रहण की क्षमता बढ़ती है तथा भाषा में शुद्धता का ज्ञान उन्हें होता है।

8.7.3 नाटक शिक्षण की विविध प्रणालियां

- **रंगमंच अभिनय प्रणाली** : विद्यालय में रंगमंच का आयोजन कर छात्रों को उनके आयु, व्यक्ति्तत्व व रूचि के अनुसार चरित्र प्रदान कर नाटक का कार्यक्रम किया जाना चाहिए।
- **व्याख्या प्रणाली** : इसमें अध्यापक द्वारा नाटक की कथावस्तु पात्र, संवाद, देशकाल आदि का विवेचन किया जाता है। जो नाटक को समझने मे रूचि प्रदान करता है।
- **कथाभिनय प्रणाली** : इसे पढ़ाई के दौरान ही कराया जा सकता है। नाटक के प्रत्येक पात्र के लिए अल्प–अलग छात्रों का चयन किया जाए तथा सभी छात्र अभिनय के साथ संवाद बोलकर नाटक को प्रस्तुत करें। यह छात्रों के लिए मनोरंजनकारी होगा।
- **समवेत प्रणाली** : यह मौलिक ही होता है और इसमें छात्र व अध्यापक मिलकर नाटक का वाचन व अभिनव करते है।
- **आदर्श नाट्य शिक्षण प्रणाली** : इसमें नाटक का वाचन शिक्षक द्वारा अभिनय के साथ किया जाता है। इसमें छात्र श्रोता व दर्शक होते हैं।

बोध प्रश्न

टिप्पणी :

क) नीचे दिए गए बोध प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

ख) इकाई के अंत में दिए गए बोध प्रश्नों के उत्तर से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

4. नाटक तथा एकांकी में अन्तर बताइए।

....

....

5. नाटक के तत्वों का नाम लिखिए।

....

....

6. नाटक शिक्षण के तीन उद्देश्य लिखिए।

....

....

7. नाटक शिक्षण की विभिन्न प्रणालियां कौन–कौन सी हैं?

....

....

8.8 सारांश

गद्य की विभिन्न विधाएँ है जिनके शिक्षण के माध्यम से अध्यापक विद्यार्थियों में भाव–कौशल, शब्द विन्यास तथा सम्प्रेषण एवं अभिव्यक्ति को विकसित करता है। गद्य शिक्षण की अन्य विधाओं में रचना शिक्षण, कहानी, उपन्यास, एकांकी तथा नाटक शिक्षण समाहित है। गद्य शिक्षण का उद्देश्य विद्यार्थियों में कल्पना शीलता विकसित करना, मूल्यों का विकास करना तथा शब्दों का संचय करना माना गया है। गद्य की विभिन्न विधाएँ जैसे रचना शिक्षण का उद्देश्य छात्रों में अपने भावों को कलात्मक रूप से प्रकट करना है। इसकी विभिन्न प्रजातियाँ है जिनके माध्यम से रचना शिक्षण किया जाता है। गद्य की एक विधा कहानी है जो प्रस्तुत इकाई में हमने कहानी के तत्व, कथावस्तु, पात्र, संवाद, भाषा, भाषाशैली, देशकाल, उद्देश्य के विषय में जाना जिसके माध्यम से कहानी की रचना का आधार ज्ञात होता है साथ ही कहानी शिक्षण का उद्देश्य तथा कहानी शिक्षण विधि तथा पद्धति दोनों का अध्ययन किया। गद्य की एक विधा उपन्यास भी है जिसके शिक्षण विधि को प्रस्तुत इकाई में हमने पढ़ा। उपन्यास की विशेषता होती है कि यह मानव के चरित्र के रहस्यों को खोलता है अर्थात् किसी विशेष पटकथा पर यह रचित होता है और किसी भी विषय का विस्तृत वर्णन करता है। प्रस्तुत इकाई में उपन्यास की शिक्षण विधि जैसे प्रस्तावना, प्रस्तुतिकरण, स्वाध्याय, प्रतिवेदन आदि में शिक्षण प्राप्त किया।

नाटक व एकांकी गद्य की वह विधा है जो अभिनय के माध्यम से प्रस्तुत की जाती है। यह साहित्य की सबसे महत्वपूर्ण विधा है। नाटक के विभिन्न तत्व के रूप में कथावस्तु, पात्र व चरित्र चित्रण तथा देशकाल चित्रण महत्वपूर्ण है। एकांकी अथवा नाटक का उद्देश्य जब मानव को एक अच्छी सीख देना होता है। संदेश देना होता है। इसकी शिक्षण प्रणाली में अभिनय, व्याख्या, समावेत प्रणाली आदि को सम्मिलित किया जाता है।

8.9 अभ्यास के प्रश्न

1. गद्य शिक्षण की विभिन्न विधाएँ कौन–कौन सी है।
2. उपन्यास शिक्षण की विभिन्न विधियों को बताइए तथा आपके लिए कौन सी विधि सर्वोत्तम है और क्यों? बताइए।
3. नाटक की परिभाषा बताते हुए इसके विविध तत्वों को लिखिए।

8.10 चर्चा के बिन्दु

1. रचना शिक्षण का उद्देश्य तथा विधियों पर चर्चा कीजिए।
2. नाटक शिक्षण की अनेकों प्रथाओं पर चर्चा कीजिए।

8.11 बोध प्रश्न के उत्तर

1 गद्य शिक्षण की अन्य विधाएँ है – रचना शिक्षण, कहानी शिक्षण, उपन्यास शिक्षण, नाटक व एकांकी शिक्षण।

2. कहानी शिक्षण का उद्देश्य हैं– बालकों की कल्पना शक्ति का विकास करना तथा उनकी भाषा शैली का विकास करना।

3. उपन्यास शिक्षण की विधियाँ है – प्रस्तावना, प्रस्तुतिकरण, स्वाध्याय प्रतिवेदन, मूल्यांकन।

4. नाटक एवं एकांकी में निम्न अन्तर देखे जा सकते हैं – नाटक में कई अंक होते है जबकि एकांकी में केवल एक, नाटक एक मुख्य कथा होती है। एकांकी में एक छोटी कथा/नाटक मंचन में अधिक समय लगता है एकांकी मे कम।

5. नाटक के तत्व है कथावस्तु, पात्र, चरित्र चित्रण, देशकाल चित्रण एवं उद्देश्य।

6. नाटक शिक्षण का उद्देश्य – भावाभिव्यक्ति की व्यावहारिक शिक्षा प्रदान करता है।

7. नाटक शिक्षण की विभिन्न प्रणालियाँ हैं – व्याख्या प्रणाली, कथाभिनय प्रणाली, समवेत प्रणाली और आदर्श वाह्य प्रणाली।

8.12 कुछ उपयोगी पुस्तकें

1. पांडे राम सकल, त्रुटि विश्लेषण सिद्धांत और व्यवहार, केंद्रीय हिंदी संस्थान आगरा
2. लाल रमन बिहारी, हिंदी शिक्षण, रस्तोगी पब्लिकेशन मेरठ
3. गुप्ता एस.पी., आधुनिक भाषा मूल्यांकन, शारदा पुस्तक भवन प्रयागराज

इकाई – 9 : व्याकरण शिक्षण

इकाई की संरचना

9.1 प्रस्तावना

9.2 इकाई के उद्देश्य

9.3 व्याकरण का अर्थ एवं परिभाषा

9.4 व्याकरण शिक्षण का उद्देश्य

- 9.4.1 ज्ञानात्मक उद्देश्य
- 9.4.2 कौशलात्मक उद्देश्य
- 9.4.3 भावात्मक उद्देश्य

9.5 व्याकरण शिक्षण प्रणाली

9.6 भाषा के विभिन्न अंगों में सह–सम्बन्ध

9.7 भाषा का अन्य विषयों के साथ सह–सम्बन्ध

9.8 सारांश

9.9 अभ्यास के प्रश्न

9.10 चर्चा के बिन्दु

9.11 बोध प्रश्नों के उत्तर

9.12 कुछ उपयोगी पुस्तकें

9.1 प्रस्तावना

गद्य की विविध विधाओं में व्याकरण भी सम्मिलित है। बिना भाषा के व्याकरण को बिना जाने कोई भी रचना पूर्ण और उत्कृष्ट नहीं हो सकती इसलिए विद्यार्थियों को भाषा शिक्षण के अन्तर्गत व्याकरण का भी ज्ञान कराया जाता है। व्याकरण भाषा को प्रांजलता देता है तथा भाषा को शुद्ध एवं सारगर्भित करता है।

भाषा विचारों के आदान–प्रदान का माध्यम है। यह भाषा लिखित, मौखिक या सांकेतिक हो सकती है। सांकेतिक भाषा में भावों के प्रकटन हेतु संकेतों की सहायता ली जाती है जबकि लिखित और मौखिक भाषा शब्दों के उचित प्रयोग द्वारा प्रकट होती है। भिन्न–भिन्न स्थानों पर रहने वालों की भाषा में भी भिन्नता होती है। इसी कारण भाषा के सर्वमान्य रुपों का विश्लेषण कर कतिपय नियम निर्धारित किए गए हैं जो भाषा के सर्वग्राही रुप के साथ उसके सर्वमान्य स्वरुप को भी निर्धारित करते है और यही नियम व्याकरण कहे जाते हैं। प्रस्तुत इकाई में हिन्दी भाषा के अन्तर्गत व्याकरण शिक्षण को विधियों को परिचय प्राप्त करेंगे। व्याकरण के ज्ञान से ही भाषा का सही रुप विद्यार्थी सीख पाता है और भाषा प्रांजल होती है।

प्रस्तुत इकाई में हम व्याकरण की परिभाषा, व्याकरण शिक्षण की विभिन्न विधियों, प्रणालियों का अध्ययन करेंगे। व्याकरण शिक्षण के विभिन्न उद्‌देश्यों का अध्ययन करेंगे।

9.2 इकाई के उद्‌देश्य

इस इकाई के अध्ययन के उपरान्तआप इस योग्य हो जायेंगे कि–

1. व्याकरण को परिभाषित कर सकेगें।
2. व्याकरण शिक्षण की विभिन्न विधियों को बता सकेंगे।
3. भाषा सम्बन्धी विविध ध्वनियों को पहचान एवं प्रयोग कर सकेंगे।
4. रचनात्मक एवं सृजनात्मक प्रवृत्ति का विकास कर सकेंगे।
5. गृह भाषा का प्रयोग कर सकेंगे।
6. शुद्ध बोलने, लिखने, सुनने एवं पढ़ने की योग्यता विकसित कर सकेंगे।
7. भाषा की अशुद्धता की पहचान करने की योग्यता का विकास कर सकेंगे।
8. व्याकरण में नियमों का ज्ञान कराकर छात्रों में मौखिक वाक् (बोलने) करने की योग्यता विकसित कर सकेंगे।

9.3 व्याकरण का अर्थ एवं परिभाषा

व्याकरण शब्द 'व्याक्रियन्ते' शब्द से निर्मित है जिसकी व्युत्पत्ति वि+आ+कृ धातु में प्रत्यय के संयोग से हुई है जिसका अर्थ है ''जिसके द्वारा अर्थ स्वरुप के माध्यम से शब्दों की व्याख्या होती है।

विभिन्न भाषाविद्‌ों के अनुसार व्याकरण की परिभाषा निम्नवत है–

महर्षि पाणिनी के अनुसार –''व्याकरण शब्दानुशासन है'' अर्थात्‌ यह भाषा को अनुशासित करता है। हिन्दी व्याकरण हिन्दी भाषा की वह शाखा है जो हिन्दी भाषा को शुद्ध मानक के रूप निर्धारित करती है।

पातंजलि ने महाभाष्य में व्याकरण को ''शब्दानुशासन'' कहा है।

हेमचन्द के अनुसार– ''व्याकरण का काम है भाषा पर अनुशासन रखना।''

जैमर का मत है कि ''प्रचलित भाषा सम्बन्धी नियमों की व्याख्या ही व्याकरण है।''

डॉ0 स्वीट के अनुसार– ''व्याकरण भाषा का व्यवहारिक विश्लेषण तथा उसका शरीर विशाल है।''

हैजलिट ने भाषा की विशेष प्रकार की रचना का वर्णन 'व्याकरण' माना।

9.4 व्याकरण शिक्षण का उद्‌देश्य

भाषा अनुकरण के माध्यम में सीखी जाती है और भाषा को प्रभावशाली बनाने के लिए उसके सर्वमान्य रुप को सीखना आवश्यक है। इसलिए व्याकरण शिक्षण का मुख्य उद्‌देश्य भाषा के सर्वमान्य रुप की सुरक्षा करना है जो तभी हो सकता है जब हम विद्यार्थियों, बच्चों को अक्षर, वाक्य, शब्द आदि के सर्वमान्य रुपों का ज्ञान ही न कराए वरन्‌ शब्द शक्तियों छन्द रस अलंकार, विराम चिह्नों साहित्य को विभिन्न विधाओं और उनकी विभिन्न लिखने शैलियों का भी ज्ञान कराए। जिसके भाषा के माध्यम से अभिव्यक्त विचारों को सही रुप से समझने और अपने भाव एवं विचारों को सर्वमान्य भाषा में प्रकट करने की योग्यता उत्पन्न करना ही व्याकरण शिक्षण का उद्‌देश्य है। व्याकरण शिक्षण के उद्‌देश्यों को ज्ञानात्मक, कौशलात्मक तथा भावात्मक उद्‌देश्यों के रुप में देखा जा सकता है।

9.4.1 ज्ञानात्मक उद्‌देश्य

1. व्याकरण शिक्षण के ज्ञानात्मक उद्‌देश्य के अन्तर्गत छात्रों को मूल ध्वनि, ध्वनि समूह, ध्वनियों में अन्तर करना शब्द योजना, शब्द शक्ति, रस, अलंकार, छन्द आदि का ज्ञान कराना।
2. विद्यार्थियों को शुद्ध वर्तनी, शब्दों का शुद्ध रूप, वाक्य रचना, वाक्य रचना के नियम, विराम चिन्हों का प्रयोग, साहित्य की विभिन्न विधाओं और लेखन शैलियों का ज्ञान कराना है।

9.4.2 कौशलात्मक उद्‌देश्य

1. कौशलात्मक उद्‌देश्य के अन्तर्गत विद्यार्थियों या छात्रों में भाषा कौशल सम्बन्धी योग्यता जैसे शब्द, सूक्ति, मुहावरे, लोकोक्ति उनका अर्थ, उनका प्रयोग स्वराधात, बलाधात के अनुसार अर्थ बोध की क्षमता का विकास करना।

2. छात्रों में लिखने और बोलने के सर्वमान्य नियमों का प्रयोग करके अपने मनोनुकूल भाषा एवं शैली का प्रयोग करने में निर्णय बनाना, कम से कम शब्दों में अपने विचारों को अभिव्यक्त कर सको की योग्यता का विकास करना।

3. शुद्ध भाषा को लिखने, बोलने एवं पढ़ने की योग्यता के विकास के साथ सही विराम चिन्हों का प्रयोग करने की योग्यता का विकास करना और छात्रों को भाषा के गुण–दोष परखने एवं साहित्यिक रचनाओं की भाषा का मूल्यों का करने की योग्यता बनाना।

9.4.3 भावात्मक उद्देश्य

व्याकरण शिक्षण का तीसरा उद्देश्य भावात्मकता से सम्बन्धित है जिसका उद्देश्य विद्यार्थियों में शुद्ध भाषा सीखने एवं प्रयोग करने की रुचि उत्पन्न करना, भाषा के गुण–दोष की पहचान करना तथा उसको शुद्ध करने की योग्यता विकसित करना, व्याकरण सम्मत भाषा के प्रति आदर्श एवं सम्मान का भाव जागृत करना तथा भाषा एवं साहित्य की समीक्षा करने की अभिवृत्ति का विराम करना।

9.5 व्याकरण शिक्षण की प्रणाली

व्याकरण पढ़ाने के लिए अथवा व्याकरण शिक्षण के लिए कतिपय ऐसी प्रणालियाँ है जिनके माध्यम से व्याकरण शिक्षण करना तथा व्याकरण को समझाना सरल हो जाता है।

1. **आगमन प्रणाली** : आगमन प्रणाली वह प्रणाली है जिसमें छात्र विशिष्ट उदाहरणों की सहायता से सामान्य सिद्धातों का प्रतिपादन करता है। इस प्रणाली में तीन सोपान या तीन पद सम्मिलित हैं –

उदाहरण :

↓

विश्लेषण

↓

सामान्यीकरण (सिद्धान्त प्रतिपादन)

आगमन प्रणाली में सर्वप्रथम विद्यार्थियों को समझाकर उदाहरण प्रस्तुत किया जाता है तत्पश्चात वे इन उदाहरणों को देखकर, समझ कर उसका विश्लेषण करते है और इसके पश्चात जब उदाहरणों में विश्लेषण के माध्यम से उन्हें सामानता प्राप्त होती है तो इसी सामानता के आधार पर वे सामान्य नियम की ओर उन्मुख होते है और सिद्धान्त का प्रतिपादन करते हैं।

शिक्षण की प्रणाली छात्रों में निरीक्षण विश्लेषण, चिन्तन तथा सामान्यीकरण करने की योग्यता विकसित करती है जिससे विद्यार्थियों का बौद्धिक एवं मानसिक विकास होता है और इस प्रकार विद्यार्थी सीखने के अवसर

प्राप्त कर स्थायी ज्ञान प्राप्त करता है। इस प्रणाली में शिक्षण के विभिन्न सूत्र जैसे सरल से कठिन, मूर्त से अमूर्त, विशिष्ट से सामान्य और शान्त और अशान्त का पालन होता है।

आगमन विधि के गुण तथा दोष

गुण – यह प्रणाली विद्यार्थियों के समक्ष उदाहरण प्रस्तुत कर शिक्षण प्रक्रिया को आगे बढ़ाती है इसलिए वे सरलता से समझ लेते है।

– यह तर्क पर आधारित प्रणाली है अतः रटन्त प्रणाली की उपेक्षा करती है।

– इस प्रणाली में विद्यार्थी सक्रिय रहते है।

– यह शिक्षण मूल्यों पर आधारित है।

दोष – इस विधि से व्याकरण का शिक्षण करने में अधिक समय लगता है।

– इस विधि में व्यावहारिक व्याकरण की शिक्षा नहीं दी जा सकती है।

– भाषा प्रयोग में कठिनाई होती है।

2. **निगमन प्रणाली** : आगमन प्रणाली के विपरीत निगमन प्रणाली है। निगमन प्रणाली में विद्यार्थी या बच्चों को व्याकरण का नियम पहले बताया जाता है जिसे बच्चे कण्ठस्थ कर लेते है तत्पश्चात् उन्हें उदाहरणों के माध्यम से स्पष्ट किया जाता है। इस प्रणाली के दो रुप है –

3. **सूत्र प्रणाली** : इस प्रणाली में बच्चों को सर्वप्रथम व्याकरण के नियम अथवा सिद्धान्तों को मूल रुप में प्रस्तुत किया जाता है जिसे बच्चे रट लेते है इसके बाद उनके सामने उस नियम अथवा सिद्धान्त पर आधारित भाषा अथवा रचना अथवा उदारण प्रस्तुत किए जाते हैं और छात्र उनमें से नियम अथवा सिद्धान्त को पहचानने का प्रयास करता है और इस प्रकार वह नियम अथवा सिद्धान्त का निगमन करता है।

   उदाहरण – जैसे संज्ञा की परिभाषा – किसी वस्तु, स्थान, वस्तु अथवा नाम को संज्ञा कहते है। राम विद्यालय जाता है, ताजमहल आगरा में है, दिल्ली देश की राजधानी है, पेंसिल मेज पर है।

   इसके पश्चात् बच्चों से कहा जाता है कि इसमें से संज्ञा शब्दों को छाँटो। बच्चा इन वाक्यों में संज्ञा शब्द छाँटता है। इस प्रकार वह व्याकरण सीखता है।

सूत्र प्रणाली के गुण तथा दोष

गुण – सूत्र को कण्ठस्थ करवाकर उन्हें उदाहरण द्वारा विशेष ज्ञान प्रदान किया जाता है।

– यह नियम या सिद्धान्त कण्ठस्थ करने पर बन देती है अतः यह उच्च कक्षाओं में अधिक उपयोगी है।

– यह विद्यार्थियों के बौद्धिक एवं मानसिक स्तर का विकास करता है क्योंकि विद्यार्थी तर्क द्वारा उदाहरणों द्वारा सूत्र को सिद्ध करता है।

दोष – यह विद्यार्थियों पर मानसिक दबाव डालती है।

– इसमें प्रयोग एवं अभ्यास का अभाव होने के कारण यह नीरस एवं शुद्ध है।

– यह माध्यमिक एवं निम्न कक्षाओं के लिए अनुपयुक्त है।

4. सह–सम्बन्ध प्रणाली

व्याकरण शिक्षण की वह प्रणाली भी व्यवहारिक व्याकरण की शिक्षा के लिए अधिक प्रभावी है। इसे हम दो रुपों में देख सकते हैं :–

1. भाषा के विभिन्न अंगों में सह–सम्बन्ध
2. भाषा का अन्य विषयों से सह–सम्बन्ध

5. पुस्तक प्रणाली

पुस्तक प्रणाली वह प्रणाली है जिसमें बच्चों या विद्यार्थियों को व्याकरण की पुस्तक दे दी जाती है और उन्हें व्याकरण के बाद पढ़ने को कहे जाते है। छात्र स्वयं उन्हें अथवा सिद्धान्त पढ़ते है और अध्यापक विभिन्न उदाहरणों उन सूत्रों या सिद्धान्तों से सम्बन्धित छात्रों के सामने प्रस्तुत करते है। विद्यार्थी इन उदाहरणों में नियम अथवा सिद्धान्त का ज्ञान प्राप्त करते हैं अथवा सिद्धान्तों या नियमों को जानने के लिए उदाहरण प्रस्तुत किया जाता है जिससे छात्र उन नियमों या सिद्धान्तों के विषय में भली–भाँति ज्ञान लेते हैं।

पुस्तक प्रणाली के गुण तथा दोष

गुण – विद़्यार्थी घर जाकर पुनः अध्ययन कर सकता है।

– वह अभ्यास कार्य के द्वारा नियम का अध्ययन सुचारु रुप से कर सकता है।

– कठिन शब्दों को पुस्तक में संकलित होने के कारण उसे बार–बार पढ़ एवं समझ सकता है।

– विद्यार्थी परिभाषाओं को तर्क के साथ समझ सकता है।

– पुस्तक के कारण विद्यार्थी को व्याकरण पढ़ने में सरलता रहती है।

दोष – यह उच्च कक्षा के लिए प्रणाली है प्राथमिक कक्षाओं के लिए नहीं।

– विद्यार्थियों की मानसिक शक्ति विकसित रहती है।

– बिना समझायें नियमों का प्रयोग करना कष्ट साधन है।

6. भाषा संसर्ग प्रणाली

सामान्य रूप से यह माना जाता है कि कोई भी व्यक्ति भाषा के संदर्भ में ही भाषा अथवा कोई भी नवीन ज्ञान प्राप्त करता है। भाषा संसर्ग प्रणाली वह प्रणाली है जिसमें विद्यार्थी भाषा पर अधिकार रखने वाले लेखकों की पुस्तकों को पढ़ता है अथवा अध्यापक द्वारा पढ़ाई जाती है जिसके माध्यम से वह व्याकरण तथा भाषा का सही ज्ञान प्राप्त करता है।

भाषा संसर्ग प्रणाली की कुछ कमियाँ है जैसे इसके माध्यम से शिक्षण के समय बहुत लगता है, यह एक अव्यवहारिक प्रणाली है क्योंकि इसमें मात्र व्यवहारिक जागरण की शिक्षा की शिक्षा दी जा सकती है, नियमित व्याकरण भी नहीं। इसके लिए हमें आगमन विधिक प्रयोग करना ही होगा। इस प्रणाली से भाषा को शुद्ध करना आपत्ति दुष्कर है। शुद्ध तथा अशुद्ध का विवेचन करना भी कठिन है। अपने वर्णनों में समेटे रहता है। इस प्रकार भाषा के माध्यम से अन्य विषयों के कार्य सह–सम्बन्ध स्थापित होता है। सामान्य रुप से पाठ्यचर्चा के किसी भी विषय को पढ़ाते समय छात्र के मौखिक तथा लिखित दोनों ही भाषा में सुधार किया जा सकता है वाक्य रचना शब्द व्युत्पत्ति आदि पर विचार किया जाता है तथा उन्हें नियमों में परिचित भी कराया जा सकता है।

भाषा संसर्ग प्रणाली के गुण तथा दोष

गुण – यह विधि एक मनोवैज्ञानिक विधि है जिसमें सम्पूर्ण ज्ञान एक इकाई के रुप में छात्र के जीवन से सम्बन्ध स्थापित करते हुए प्रदान किया जाता है अतः इसीविधि में यह सावधानी अवश्य रखनी चाहिए कि बलात किसी विषय का सह–सम्बन्ध अन्य विषय के साथ नहीं करना चाहिए। इस प्रणाली से शिक्षण करने पर पाठ्य पुस्तक की आवश्यकता नहीं होती। इसमें शिक्षार्थियों पर मानसिक दबाव नहीं पड़ता। यह छात्र को अध्यापक को क्रियाशील करता है।

दोष – यह व्याकरण के अनेक नियम होते हैं सभी नियमों को इस प्रणाली के माध्यम से सीखा नहीं जाता।

– यह समय साध्य है।

– नियमों का ज्ञान पूर्ण रुप से न हो सकने में भाषा अशुद्ध रह जाती है।

– अध्यापक भी पूर्ण रुप से शाश्वत नहीं हो सकता कि छात्रों ने व्याकरण को शुद्धता से सीख लिया।

इस प्रकार व्याकरण शिक्षण भाषा शिक्षण के लिए महत्वपूर्ण माना जाता है।

9.6 भाषा के विभिन्न अंगों में सह–सम्बन्ध

सह–सम्बन्ध प्रणाली के अन्तर्गत जब हम भाषा के विभिन्न अंगों से सम्बन्ध की चर्चा करते है तो सर्वप्रथम भाषा के अभिव्यक्ति की बात करते हैं। भाषा मौखिक एवं लिखित होती है और इन दोनों रुपों के शिक्षण के माध्यम से जिसमें व्याकरण निहीत होता है शिक्षा देते है उन्हें अभिव्यक्ति का अवसर प्रदान करते हैं। सह–सम्बन्ध प्रणाली में इन सभी कार्य को एक साथ करने पर बल दिया जाता है अर्थात् कुछ कार्य मौखिक होते हैं तो कुछ ऐसे जिन्हें बच्चे लिखते भी है और इस तरह से व्याकरण के सम्पर्क में आते है। साहित्य की विविध विधाएँ हैं और उन सभी के अध्ययन में लिखने पढ़ने और व्याकरण की आवश्यकता होती है। इस प्रकार इसको ही भाषा के विभिन्न अंगों में सह–सम्बन्ध कहा जाता है।

9.7 भाषा का अन्य विषयों के साथ सह–सम्बन्ध

भाषा का भाषा के साथ जो सह–सम्बन्ध होता है वह साहित्य की विभिन्न विधाओं और लेखन में प्राप्त होता है। जहाँ गद्य, पद्य, व्याकरण, नाटक आदि को पढ़ने के माध्यम से छात्र व्याकरण के नियमों को सीख पाता है। जब हम भाषा का अन्य विषयों के साथ सह–सम्बन्ध की चर्चा करते हैं तो यह भाषा का अन्य विषयों के साथ जुड़ने की प्रक्रिया से है जैसे साहित्य की विभिन्न विधाओं जैसे निबन्ध, कहानी, लेखन, नाटक और उपन्यास के शिक्षण करते समय या पढ़ते समय यदि ऐतिहासिक कथानक है तो इतिहास पर्यावरण है, जीवन शैली क्षेत्र आदि का वर्णन है जो भूगोल, राजनीतिक उपन्यास अथवा राजनीति से सम्बन्धित लेख राजनीतिशास्त्र, अर्थ व्यवस्था या अर्थनीति से सम्बन्धित विधाओं से अर्थशास्त्र वैज्ञानिक आविष्कार को जब हम भाषा में पढ़ते है तो विकास, कला और संगीत से सम्बन्धित अध्ययन सामग्री कला और संगीत विषय।

बोध प्रश्न

टिप्पणी :

क) नीचे दिए गए बोध प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

ख) इकाई के अंत में दिए गए बोध प्रश्नों के उत्तर से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1. महर्षि पाणिनी के अनुसार व्याकरण की परिभाषा लिखिए।

   ....

   ....
2. व्याकरण शिक्षण के कुछ उद्देश्य लिखिए।

   ....

   ....
3. व्याकरण शिक्षण की मुख्य विधियां क्या हैं?

   ....

   ....

9.8 सारांश

भाषा के राम के लिए व्याकरण की महत्वपूर्ण भूमिका है। व्याकरण शब्द 'व्याक्रियन्ते' शब्द से व्युत्पन्न है। महर्षि पाणिनी ने व्याकरण को शब्दानुशासन कहा है। व्याकरण भाषा को शुद्ध तथा परिष्कृत बनाता है। इसीलिए व्याकरण शिक्षण विद्यार्थियों के लिए अत्यन्त आवश्यक है। व्याकरण शिक्षण के राजात्मक, कौशलात्मक तथा भावात्मक उद्‌देश्य होते है जिनके आधार पर विद्यार्थियों को व्याकरण के प्रति रूचि जागृत कराकर उन्हें व्याकरण शिक्षण प्रदान किया जाता है। व्याकरण शिक्षण की विधियों में आगमन, निगमन, सूत्र प्रणाली, पुस्तकीय प्रणाली भाषा संसर्ग प्रणाली आदि प्रमुख हैं। यदि अध्यापक छात्रों को इन विधियों के माध्यम से शिक्षण प्रदान करता है तो निश्चय ही छात्र की भाषागत त्रुटियाँ दूर हो सकती है तथा विद्यार्थी की भाषा शुद्ध होगी।

9.9 अभ्यास के प्रश्न

1. व्याकरण को परिभाषित कीजिए।
2. भाषा के विभिन्न अंगों में सह–सम्बन्ध की विवेचना कीजिए।
3. व्याकरण शिक्षा प्रणाली क्या है? व्याख्या कीजिए।

9.10 चर्चा के बिन्दु

1. व्याकरण शिक्षा प्रणाली पर चर्चा कीजिए।
2. भाषा की अन्य विषयों के साथ सह–सम्बन्ध की चर्चा कीजिए।

9.11 बोध प्रश्नों के उत्तर

1. महर्षि पाणिनी के अनुसार व्याकरण 'शब्दानुशासन' है।
2. व्याकरण शिक्षण के कुछ उद्‌देश्य निम्न हैं–

   ज्ञानात्मक उद्‌देश्य – छात्रों को मूल ध्वनि, स्वर, ध्वनि समूहों, शब्द रचना, रस छन्द, अलंकार शब्द शक्ति का ज्ञान कराना।

   कौशलात्मक उद्‌देश्य – छात्रों में भाषा कौशल सम्बन्धी योग्यता का विकास करना जैसे शब्द, सूक्ति, मुहावरे आदि का प्रयोग।

   भावात्मक उद्‌देश्य – छात्रों में शुद्ध भाषा सीखने एवं प्रयोग करने की रूचि उत्पन्न करना।
3. व्याकरण शिक्षण की मुख्य विधियाँ है निम्न हैं–
   1. आगमन विधि
   2. निगमन विधि

      अ. सूत्र प्रणाली

      ब. सह–सम्बन्धी प्रणाली
   3. पुस्तक प्रणाली
   4. भाषा संसर्ग प्रणाली

9.12 कुछ उपयोगी पुस्तकें

1. पांडे राम सकल, त्रुटि विश्लेषण सिद्धांत और व्यवहार, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा।
2. लाल, रमन बिहारी, हिंदी शिक्षण, रस्तोगी पब्लिकेशन, मेरठ
3. गुप्ता एस.पी., आधुनिक भाषा मूल्यांकन, शारदा पुस्तक भवन, प्रयागराज

B.Ed.E-31
Pedagogy of Hindi
(हिन्दी का शिक्षणशास्त्र)

उ० प्र० राजर्षि टण्डन
मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज

खण्ड – 04

हिन्दी भाषा अधिगम का मूल्य निर्धारण

इकाई 10	भाषा सम्प्राप्ति मूल्यांकन	133–146
इकाई 11	भाषा परीक्षण एवं परीक्षण पदों की रचना	147–160
इकाई 12	निदानात्मक एवं उपचारात्मक कार्य	161–178

खण्ड – 04 : हिन्दी भाषा अधिगम का मूल्य निर्धारण

खण्ड परिचय

किसी भी भाषा का ज्ञान व्यक्ति के द्वारा उसके सही प्रयोग के माध्यम से ज्ञात होता है। हिन्दी भारत की राष्ट्र भाषा के साथ राजभाषा के रूप में भी स्वीकृत है। भाषा का मूल्यांकन उसके चारों कौशल शुद्ध पढ़ना, शुद्ध बोलना, शुद्ध सुनना तथा शुद्ध लिखना के सही प्रयोग के आधार पर किया जाता है। छात्र के व्यक्तित्व पर भाषा का अत्यन्त प्रभाव पड़ता है। भाषा में होने वाली त्रुटियाँ अथवा भाषाई ज्ञान में कमी से छात्र के अध्ययन पर भी प्रभाव देखा जा सकता है अतः इसका मूल्य निर्धारण आवश्यक है। इस खण्ड में तीन इकाईयाँ हैं जो इस प्रकार हैं–

इकाई 10 : भाषा सम्प्राप्ति मूल्यांकन

इकाई 11 : भाषा परीक्षण एवं परीक्षण पदों की रचना

इकाई 12 : निदानात्मक एवं उपचारात्मक कार्य

इस खण्ड की इकाई 10 भाषा सम्प्रति का मूल्याकन से सम्बन्धित है। भाषा अधिगम में मूल्यांकन से तात्पर्य शिक्षण सम्बन्धी क्रियाओं तथा उन क्रियाओं के परिणाम स्वरुप विद्यार्थियों की सम्प्रति के मापन करने तथा उस आधार पर उनकी भाषायी योग्यता का मापन करना ही मूल्यांकन है। किसी विद्यार्थी ने भाषा का अर्जन कितना तथा किस स्थिति तक किया है इसको जानने की यह प्रक्रिया ही मूल्यांकन है।हिन्दी भाषा की शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का लक्ष्य है विद्यार्थियों का भाषा का अर्जन। अर्थात् छात्र के द्वारा किया गया भाषा अर्जन ही किसी भी शिक्षक को शिक्षण का उद्देश्य होता है। छात्र ने भाषा अर्जन किस स्तर तक किया? क्या अध्यापक ने जिस उद्देश्यों का निर्धारण किया था व उसने प्राप्त किया है? यह जानने के लिए भाषा सम्प्राप्ति का मूल्यांकन करना अत्यन्त आवश्यक है। भाषा सम्प्राप्ति मूल्यांकन के माध्यम से मूल्यांकन किस प्रकार किया जाय, यह जाना जा सकता है। प्रस्तुत इकाई में सम्प्राप्ति परीक्षण किसे कहते है? परीक्षण, मापन, मूल्यांकन तथा आकलन में अन्तर क्या होता है? का भी अध्ययन करेंगे साथ ही मूल्यांकन की तकनीक, मानकी तथा गैर मानकीकृत परीक्षण के अन्तर को भी प्रस्तुत इकाई में अध्ययन का विषय बनाया जाएगा।

इकाई 11 भाषा परीक्षण एवं परीक्षण पदों की रचना से सम्बन्धित है। इसके अन्तर्गत परीक्षण अथवा परीक्षण के प्रकार एवं परीक्षण के पदों की रचना व पदों के चयन को सम्मिलित किया गया है। हिन्दी भाषा अधिगम के मूल्य निर्धारण के लिए प्रथम सोपान भाषा सम्प्राप्ति मूल्यांकन की समझ विकसित करना है। तदुपरान्त भाषा परीक्षण के स्वरूप का निर्धारण किया जाता है। प्रस्तुत इकाई में भाषा परीक्षण क्या है इसके अध्ययन के साथ परीक्षणों का निर्माण कैसे किया जाता है, उद्देश्यों का निर्धारण, ब्लू–प्रिंट की रचना आदि जो महत्वपूर्ण कार्य है, का अध्ययन प्रस्तुत इकाई में किया जाएगा। परीक्षण का मुख्य आधार परीक्षण पदों की रचना करना है। प्रस्तुत कार्य में पदों की रचना, प्रश्नों का चयन, प्रश्नों के प्रसार के साथ उनका पद विश्लेषण कैसे किया जाता है, प्रश्नों के चयन का आधार क्या है और उन्हें निरस्त किन आधार पर किया जाता है। इसका भी अध्ययन प्रस्तुत इकाई में हम करेंगे।

इकाई 12 में निदानात्मक तथा उपचारात्मक कार्यों के सम्बन्ध में वर्णन किया गया है। कभी–कभी हम देखते हैं कि अत्यन्त प्रयास के पश्चात् भी छात्र–छात्राएँ उतना ग्रहण नहीं करते जितना उन्हें ग्रहण करना चाहिए। सीखने की इस कठिनाई का पता लगाने तथा उसका निदान करने वाली क्रिया को निदानात्मक तथा उपचारात्मक कार्य कहते है। भाषा शिक्षण में भाषा की शुद्धता को बनाये रखना तथा उसके लिए प्रयास रहना एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है और कार्य भी। विद्यार्थी की भाषागत त्रुटियाँ अथवा अशुद्धियाँ जहाँ उसके व्यक्तित्व पर प्रभाव डालती है वहीं उसके शैक्षिक विकास को भी प्रभावित करती है। अध्यापक उपचारात्मक तथा निदानात्मक शिक्षण की सहायता से विद्यार्थी के हित में होता है तथा उसे इस समस्या का समाधान करता है। प्रस्तुत इकाई निदानात्मक तथा उपचारात्मक शिक्षण को लेकर निर्मित है जिसमें हम निदानात्मक परीक्षण, उपचारात्मक शिक्षण, निदानात्मक शिक्षण की उपयोगिता, उद्देश्यों, उपचारात्मक कार्यों, भाषा कौशलों से सम्बन्धित कार्यों आदि का अध्ययन भी करेंगे।

इकाई – 10 : भाषा सम्प्राप्ति मूल्यांकन

इकाई की संरचना

10.1 प्रस्तावना

10.2 इकाई के उद्देश्य

10.3 भाषा सम्प्राप्ति मूल्यांकन : अर्थ एवं परिभाषा

10.4 मूल्यांकन की अवधारणा

10.5 आंकलन, मापन, मूल्यांकन तथा परीक्षा (परीक्षण) में भेद

- 10.5.1 आकलन
- 10.5.2 मापन
- 10.5.3 मूल्यांकन

10.6 परीक्षा/परीक्षण

- 10.6.1 परीक्षण के प्रकार

10.7 मूल्यांकन की आवश्यकता

10.8 मूल्यांकन का महत्व

10.9 भाषा शिक्षण में मूल्यांकन प्रक्रिया के सोपान

10.10 भाषा शिक्षण की मूल्यांकन विधियाँ

10.11 सारांश

10.12 अभ्यास के प्रश्न

10.13 चर्चा के बिन्दु

10.14 बोध प्रश्नों के उत्तर

10.15 कुछ उपयोगी पुस्तकें

10.1 प्रस्तावना

शिक्षण प्रक्रिया का लक्ष्य है विद्यार्थियों का भाषा अर्जन। अर्थात् छात्र के द्वारा किया गया भाषा अर्जन ही किसी भी शिक्षक का शिक्षण उद्देश्य होता है। छात्र ने भाषा अर्जन किस स्तर तक किया? क्या अध्यापक ने जिस उद्देश्यों का निर्धारण किया था व उसने प्राप्त किया? यह जानने के लिए भाषा सम्प्राप्ति मूल्यांकन को जानना अत्यन्त आवश्यक है। भाषा सम्प्राप्ति मूल्यांकन के माध्यम से मूल्यांकन किस प्रकार किया जाय यह जाना जा सकता है। प्रस्तुत इकाई में सम्प्राप्ति परीक्षण किसे कहते है, परीक्षण, मापन, मूल्यांकन तथा आकलन में अन्तर क्या होता है यह भी अध्ययन का विषय होगा साथ ही मूल्यांकन की तकनीक, मानकी कृत तथा गैर मानकीकृत परीक्षण के अन्तर को भी प्रस्तुत इकाई में अध्ययन किया जायेगा।

शिक्षण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसकी पूर्णता तभी है जबकि मूल्यांकन उसमें निहित हो। अर्थात् शिक्षण एवं मूल्यांकन परम्पर सम्बन्धित प्रक्रियायें हैं। जब हम शिक्षण की चर्चा करते हैं तो छात्र तथा अध्यापक दोनों ही इस प्रक्रिया के पात्र बनते हैं। शिक्षण एवं अधिगम एक ऐसी प्रक्रिया है जो शिक्षण एवं छात्र दोनों को जोड़ती है। अध्यापक द्वारा किए गए शिक्षण कार्य की सफलता छात्र के सीखने से देखी जाती है। अर्थात् छात्र सीखने में कितना समर्थ हो सका तथा अध्यापक द्वारा कितना प्रभावशाली शिक्षण रहा इसको जानना ही मूल्यांकन है। अध्यापक द्वारा किए जाने वाले शिक्षण के माध्यम में प्रदान ज्ञान को छात्र द्वारा किस सीमा तक अर्जित किया गया इसको जानने का प्रयास ही मूल्यांकन है। अतः मूल्यांकन अधिगम प्रक्रिया का एक अभिन्न अंग है।

शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में मूल्यांकन की जब भी चर्चा करते हैं तो मूल्यांकन हेतु परीक्षण का निर्माण किया जाता हैं। अर्थात् परीक्षण मूल्यांकन का एक साधन है जिसकी सहायता से किसी भी छात्र की अर्जित योग्यता को जाना जा सकता है। थार्नडाइक महोदय के अनुसार ''जब हम परीक्षण का प्रयोग करते है तब हम इस बात का निश्चय करना चाहते है कि विशिष्ट प्रकार की शिक्षा प्राप्त करने के उपरान्त व्यक्ति ने क्या सीखा है?

परीक्षण का अर्थ है परीक्षा लेने की क्रिया, जाँच, परख अर्थात् किसी विशेष क्षेत्र में शिक्षण के पश्चात उस क्षेत्र में छात्र की योग्यता या शक्ति, प्रदर्शन के विकास की मात्रा आदि का मापन करने की विधि को परीक्षण कहते है। सीखे गए ज्ञान अथवा कुशलता का मापन करके उसे अर्थ या मूल्य प्रदान करना ही मूल्यांकन है अर्थात विद्यार्थी ने कितना अर्जन किया अथवा शैक्षिक उद्देश्य की पूर्ति किस सीमा तक हुई। परीक्षण के विभिन्न स्वरुप है जैसे– लिखित, मौखिक तथा प्रयोगात्मक। लिखित परीक्षण के अन्तर्गत निबन्धात्मक, वस्तुनिष्ठ, लघुउत्तरीय, अतिलघुउत्तरीय कौशल परीक्षण आदि प्रकार के उपलब्धि परीक्षण के द्वारा विद्यार्थी के समग्र शैक्षिक प्रक्रिया का मूल्यांकन किया जाता है। यह मूल्यांकन ही विद्यार्थी के ज्ञान को उपलब्धि के रूप में प्रदर्शित करता है।

10.2 इकाई के उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के उपरान्त आपइस योग्य हो जायेंगे कि—

1. मूल्यांकन का अर्थ आवश्यकता और महत्व बता सकेंगे।
2. मापन मूल्यांकन आंकलन में अन्तर समझ सकेंगे।
3. परीक्षाओं के विभिन्न प्रकार को जानकर उनमें अन्तर कर सकेंगे।
4. मानकीकृत और अमानकीकृत परीक्षण में अन्तर बता सकेंगे।
5. भाषा सम्प्राप्ति का मूल्यांकन कर सकेंगे।

10.3 भाषा सम्प्राप्ति मूल्यांकन : अर्थ एवं परिभाषा

मूल्यांकन शब्द दो शब्दों से मिलकर निर्मित हुआ है जिसका शाब्दिक अर्थ है मूल्य का अंकन। इस प्रकार यह मूल्य निर्धारण की प्रक्रिया है जो मापन से अधिक व्यापक है। यह किसी वस्तु, क्रिया या व्यक्ति की उपलब्धियों के सापेक्षिक महत्व अथवा स्थिति को प्रकट करता है। इसीलिए यह परिणामों की वांछनीयता के निर्णय से जुड़ा है। अर्थात् किसी व्यक्ति में उपस्थित गुण की अथवा उस विशिष्ट विशेषता की मात्रा को किसी उद्देश्य की दृष्टि से मूल्यांकित करना है। मूल्यांकन एक व्यापक एवं सतत् प्रक्रिया है जो वस्तु या किसी प्रक्रिया का मूल्य निर्धारित करती है अर्थात् उसकी वांछनीयता का निर्धारण ही मूल्यांकन है।

गैरेट के अनुसार – ''मूल्यांकन परीक्षा प्रश्नों का ऐसा समूह है जो किसी कौशल अथवा योग्यता की जाँच करने के लिए तैयार किया जाता है।''

क्रोनबैक के शब्दों में – ''दो या दो से अधिक व्यक्तियों के व्यवहार के तुलनात्मक अध्ययन के लिए प्रयोग में लायी जाने वाली सुव्यवस्थित पद्धति को परीक्षण कहा जाता है।''

कोठारी कमीशन के अनुसार – ''अब यह माना जाने लगा है कि मूल्यांकन एक अनवरत प्रक्रिया है जो कि सम्पूर्ण शिक्षा प्रणाली का एक अभिन्न अंग है तथा इसका शैक्षिक उद्देश्यों से घनिष्ठ सम्बन्ध रहता है। इस प्रकार यदि मूल्यांकन की चर्चा शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में करें तो इसका मुख्य कार्य शिक्षा को उद्देश्य केन्द्रित बनाना है जिसमें छात्र के समग्र व्यक्तित्व को विषय में जाना जा सके।''

10.4 मूल्यांकन की अवधारणा

किसी वस्तु घटना या व्यक्ति के मूल्य को आंकने की प्रक्रिया ही मूल्यांकन है। यह एक आत्मनिष्ठ (Subjective) शब्द है जिसमें हमारी दृष्टिकोण परिलक्षित होता है, हमारी सम्मति सम्मिलित रही है। मूल्यांकन के द्वारा मात्र छात्रों के विषय ज्ञान सम्बन्धी सूचनाओं का ही एकत्रण नहीं होता वरन् यह भी ज्ञात होता है कि ज्ञान

अथवा गुण कितना है और कितना अभी अर्जन करना है। अर्थात् जहाँ मूल्यांकन द्वारा मात्रा पता चलती है वहीं उस मात्रा में कमी या अधिकता के कारण का भी विवेचन किया जा सकता है।

मैकनील ने मूल्यांकन शब्द की अवधारणा को स्पष्ट करते हुए कहा कि 'मूल्यांकन शब्द' मैं इसे पसन्द करता हूँ इसे नापसन्द करता हूँ – इन्हीं दो अर्थों में प्रयुक्त जाने लगा है यह किसी भी व्यक्ति द्वारा किन्हीं कार्यक्रम, क्रियाओं प्रति क्रियाओं के दौरान प्राप्त अनुभवों के बारे में एक आवेशिक प्रतिक्रिया है।

क्लासमेयर और गुडविन – शिक्षा में मूल्यांकन वह प्रक्रिया है, जिसके द्वारा यह निर्णय किया जाता है कि वस्तु को अनुमोदित सीमा और परिणाम, किसी मापदण्ड के आधार पर स्वीकार्य अथवा वांछनीय है या नहीं।

इस प्रकार भाषा शिक्षण में यदि चर्चा करे तो भाषा कौशलों में भाषा की मानक मान्यताओं को निर्धारित करना ही मूल्यांकन है।

10.5 आंकलन, मापन, मूल्यांकन तथा परीक्षा (परीक्षण) में भेद

सामान्यतः बच्चे के भाषिक विकास को जानने के लिए हम मूल्यांकन की प्रक्रिया को अपनाते है जिससे हम बच्चे के भाषा विकास को उद्देश्यों के आधार पर जान सकें। आमतौर पर अज्ञानतावश कई बार हम मूल्यांकन के सापेक्ष ही अन्य मिलते हुए शब्दों का प्रयोग विद्यार्थी के भाषा विकास के लिए कर देते है परन्तु सत्यता यह है कि इनमें आपस में प्रक्रियात्मक भेद है। इनके भेद को निम्न रूप से समझ सकते हैं।

10.5.1 आकलन

आकलन को मूल्यांकन करने के लिए आवश्यक सूचनाओं को एकत्र करने तथा उसके विश्लेषण करने की प्रक्रिया के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जिसके ज्ञान, कौशल, योग्यता, क्षमता, प्रदर्शन आदि पक्षों को व्यवस्थित रूप से मापना सम्मिलित है अर्थात् आकलन का उद्देश्य मूल्यवान अन्तर्दृष्टि और प्रतिक्रिया प्रदान करना है जिसके माध्यम से निर्णय लेने की क्षमता विकसित होती है, कार्य में सुधार होता है तथा भविष्य की कार्यवाही को एक स्पष्ट निर्देश देने का है।

हुबाआर फ्रीड के अनुसार – ''आकलन सूचना संग्रहण तथा उस पर विचार–विमर्श की प्रक्रिया है जिन्हें हम विभिन्न माध्यमों से प्राप्त करके ये जान सकते हैं कि विद्यार्थी क्या जानता है समझता है, अपने शैक्षिक अनुभवों से प्राप्त ज्ञान को परिणाम के रूप में व्यक्त कर सकता है जिसके द्वारा छात्र के अधिगम में वृद्धि होती है। अर्थात् आकलन के द्वारा अध्यापक यह जानता है कि विद्यार्थियों का उचित अधिगम हो रहा है या नहीं।''

10.5.2 मापन

मापन किसी भौतिक राशि का परिमाण संख्याओं में व्यक्त करती है यह एक तुलना करने की प्रक्रिया है जिसमें किसी व्यक्ति अथवा वस्तु में निहित विशेषता को अंकों में वर्णित किया जाता है।

एस.एस. स्टीवेन्स के अनुसार– ''मापन किन्हीं स्वीकृत नियमों के अनुसार वस्तुओं को अंक प्रदान करने की प्रक्रिया है।''

इस प्रकार मापन वस्तु या व्यक्ति में उपस्थित गुण अथवा विशेषता का वर्णन है जो मात्रात्मक अथवा गुणात्मक हो सकता है।

10.5.3 मूल्यांकन

आकलन तथा मापन से अलग मूल्यांकन वह प्रक्रिया है जिसमें मापन से प्राप्त परिणामों की वांछनीयता (Desirability) का निर्णय किया जाता है अर्थात् मापित वस्तु अथवा व्यक्ति के गुण अथवा विशेषता का मूल्य निर्धारण किया जाता है। इस प्रकार मूल्यांकन एक योगात्मक प्रक्रिया है जिसके द्वारा शैक्षिक पाठ्यक्रम पूर्ण करने के पश्चात छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि प्राप्त की जाती है।

10.6 परीक्षा / परीक्षण

परीक्षा या परीक्षण एक ऐसा उपकरण है जिसकी सहायता से आकलन, मापन, मूल्यांकन का कार्य किया जाता है। यह एक पद्धति है जिसके माध्यम से पाठ्यक्रम के ज्ञानात्मक अनुभवों व कौशलों के विषय में ज्ञान प्राप्त होता है। परीक्षा अथवा परीक्षण के माध्यम से विद्यार्थी के ज्ञान, क्षमता व कौशलों की जाँच की जाती है। यह सामान्यतः स्मृति आधारित ज्ञान के विषय की परख करता है।

इस प्रकार यदि संक्षेप में और सरलतम शब्दों में कहा जाए तो मापन, मूल्यांकन, आकलन अथवा परीक्षण चारों ही विद्यार्थी के ज्ञान, क्षमता और कौशल के विषय में जानने की प्रक्रिया है जिसमें उसके विकास के लिए उचित निर्णय किया जा सके।

10.6.1 परीक्षण के प्रकार

परीक्षण को निर्माण के आधार पर परीक्षणों को दो भागों में बांटा गया है–

(क) प्रमापीकृत परीक्षण (ख) अप्रमापीकृत परीक्षण

(क) प्रमापीकृत परीक्षण : इस परीक्षण का निर्माण औपचारिक रूप से मापन व मूल्यांकन करने के लिए किया जाता है। जिसमें परीक्षण निर्माता द्वारा औपचारिक रूप से परीक्षण की योजना बनाना है, प्रश्नों को बनाना है, प्रश्नों का तार्किक आधार पर चयन करना है तथा परीक्षण की विश्वसनीयता वैधता व मानकों की गणना करना है। ये परीक्षण छात्रों की उपलब्धि का मापन विश्वसनीय व वैध तरीके से करते हैं तथा प्राप्तांकों की व्याख्या किसी बड़े समूह के सन्दर्भ में करने का आधार उपलब्ध कराते है। अर्थात ये परीक्षण दो प्राप्तांकों में तुलना का आधार प्रदान करता है।

(ख) अप्रमाणीकृत परीक्षण : इस परीक्षण को अध्यापक निर्मित परीक्षण कहते हैं क्योंकि इसका निर्माण अध्यापक द्वारा किया जाता है। शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में अध्यापक अपनी आवश्यकतानुसार शिक्षण के समय अर्थात तुरन्त कुछ प्रश्नों का निर्माण एवं चयन करके इसका निर्माण करता हैं। अध्यापक निर्मित परीक्षण तत्कालिन आवश्यकता की पूर्ति तो करते हैं परन्तु इसकी विश्वसनीयता वैधता के सम्बन्ध में कोई प्रमाण नहीं होता।

10.7 मूल्यांकन की आवश्यकता

शैक्षिक मूल्यांकन शिक्षण प्रक्रिया का एक अभिन्न अंग है जिसके माध्यम से विद्यार्थी द्वारा किये हुए अर्जित ज्ञान के विषय में पता चलता है। यह समस्त शैक्षिक प्रक्रियाओं, सीखने की परिस्थिति, छात्र, पाठ्यक्रम, शिक्षक आदि सभी का मूल्यांकन करता है। इस प्रकार मूल्यांकन की आवश्यकता को निम्न रूप में समझ सकते हैं :

(1) इसके द्वारा विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के विकास के विषय में आवश्यक सूचनाएँ प्राप्त होती है।

(2) मूल्यांकन वह प्रक्रिया है जो शिक्षण, प्रशिक्षण पाठ्यक्रम और परीक्षा आदि में सुधार करता है।

(3) मूल्यांकन की आवश्यकता माध्यम से शिक्षक को विद्यार्थियों की रूचि किस विषय में है यह ज्ञात होता है जिससे उसको आवश्यकतानुसार निर्देश दिया जा सकता है।

(4) समाज के आवश्यकता को देखते हुए पाठ्यक्रम/पाठ्यचर्या के परिवर्तन अथवा निर्माण के लिए भी मूल्यांकन की आवश्यकता है क्योंकि इसके माध्यम से यह ज्ञात होता है कि चलने वाला पाठ्यक्रम कितना समयानुकूल एवं प्रासंगिक है।

10.8 मूल्यांकन का महत्व

शिक्षा प्रक्रिया में शैक्षिक प्रगति का ज्ञान तभी हो सकता है जब हम छात्र मा मापन एवं मूल्यांकन करे। क्योंकि मूल्यांकन ही वह माध्यम है जिसके फलस्वरूप एक अध्यापक विद्यार्थी को प्रेरणा देता आगे बढ़ने की ओर विद्यार्थी मूल्यांकन के माध्यम से अपने में आत्मविश्वास उत्पन्न कर परता है। इस प्रकार मूल्यांकन द्वारा एक अध्यापक शिक्षण अधिगम प्रक्रिया, पाठ्यवस्तु शिक्षण विधि शिक्षण सामग्री आदि की प्रभावशीलता को जान पाता है

और आवश्यकतानुसार संशोधन करते है। मापन एवं मूल्यांकन शिक्षा को गुणवत्ता, सुधार एवं उन्नयन में सहायक होता है।

मापन मूल्यांकन के महत्व को निम्नवत् व्यक्त किया जा सकता है :

(1) यह चित शैक्षिक निर्णय लेने में सहायता करता है।

(2) मूल्यांकन का महत्व शिक्षक की प्रभावशीलता को जानने के लिए है। इससे शिक्षक अपने शिक्षण में सुधार लाता है।

(3) शिक्षण सामग्री, शिक्षण विधियों तथा सहायक सामग्री आदि के सुधार के लिए मूल्यांकन का महत्व है।

(4) शिक्षण उद्देश्यों को स्पष्ट करने के लिए मूल्यांकन का महत्व है।

(5) छात्रों को शैक्षिक तथा व्यवसायिक निर्देश देने के लिए मूल्यांकन महत्वपूर्ण है।

(6) मूल्यांकन का महत्व विद्यार्थियों के दृष्टिकोण योग्यता, अभिरूचियों व्यवहारों के जानने एवं उनके मापन का अर्थ निकालने के लिए है।

10.9 भाषा शिक्षण में मूल्यांकन प्रक्रिया के सोपान

मूल्यांकन कार्यक्रम का मूल उद्देश्य छात्र के व्यवहार में होने वाले परिवर्तनों का उचित मूल्यांकन करना ही विभिन्न विषयों के शिक्षण के शिक्षण उद्देश्य थी भिन्न होते है जिसके कारण शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्त के लिए अधिगम क्रियाओं में भी भिन्नता दिखाई देती है और इसीलिए इसका मापन अत्यन्त दुष्कर होता है कठिन होता है। शिक्षार्थी का मापन एवं मूल्यांकन भी एक सतत् प्रक्रिया है जिसके आधार पर किसी भी शैक्षिक कार्यक्रम का मूल्यांकन किया जा सकता है। मूल्यांकन की प्रक्रिया के तीन सोपान है :

(क) उद्देश्यों का निर्धारण :

उद्देश्य निर्धारण मूल्यांकन का प्रथम सोपान है। जब भी अध्यापक शिक्षण करता है विषय विशेष से सम्बन्धित उद्देश्यों का निर्माण उसमें सम्मिलित रहता है। ये उद्देश्य दो प्रकार के होते हैं।

सामान्य उद्देश्य :

किसी भी विषय या पाठ को पढ़ाने से पहले शिक्षक उस विषय का सामान्य उद्देश्य निर्धारित करता है। ऐसा इसलिए क्योंकि मूल्यांकन प्रक्रिया का सर्वप्रथम चरण है यह जानना कि किसका मूल्यांकन करना है अर्थात् उन शैक्षिक उद्देश्यों का निर्धारण करना जिनका मूल्यांकन करना है। शिक्षण में सामान्य उद्देश्य वास्तव में ऐसे

व्यापक लक्ष्य अथवा विषय के अन्तिम लक्ष्य होते है जिनकी प्राप्ति अध्यापक की दूरगामी लक्ष्य के रूप में निर्धारित रहती है।

इसकी प्राप्ति के लिए दीर्घकालावधि और सम्पूर्ण शिक्षा प्रक्रिया का योगदान रहता है इन शैक्षिक उद्देश्यों का निर्धारण विषय के दार्शनिक चिन्तन पर आधारित होता इसीलिए ये व्यापक परोक्ष तथा औपचारिक होते है। सामान्य उद्देश्यों के निर्धारण में शिक्षा मनोविज्ञान, शिक्षा का स्तर, समाज का राजनैतिक सांस्कृतिक, सामाजिक आर्थिक स्तर के मध्य विषय वस्तु क्या है, कैसी है उसका आधार क्या है यह भी सोचनीय रहता है साथ ही छात्र की शारीरिक मानसिक स्थिति और उसके विकास की प्रकृति पर भी ध्यान रखना चाहिए।

विशिष्ट उद्देश्य :

मूल्यांकन प्रक्रिया में उद्देश्य निर्धारण का दूसरा उप सोपान है विशिष्ट उद्देश्य का निर्धारण। किसी विषय विशेष से सम्बन्धित अध्यापक द्वारा सामान्य उद्देश्य की प्राप्ति कुछ दिन या साल में नहीं कर सकता क्योंकि यह अत्यनत दुष्कर कार्य है। यही कारण है कि शिक्षक अपने दैनिक शिक्षण कार्य करते समय कुछ ऐसे उद्देश्यों का निर्धारण करता है जो तात्कालीन होते है और उसका प्रयास यह होता है कि उद्देश्यों की प्राप्ति शिक्षण कार्य के सम्पादन के साथ ही हो जाए। जैसे विद्यार्थी शिक्षण के उपरान्त संज्ञा की परिभाषा बता सकेंगे, संज्ञा के उदाहरण दे सकेंगे, संज्ञा शब्दों को वाक्य में से छॉट सकेंग, उनकी सूची बना सकेंगे, आदि। शिक्षण कार्य के पश्चात यदि विद्यार्थी ये कार्य कर पाते है तो शिक्षक अपने शिक्षणकार्य को पूर्ण मानता है और यदि विद्यार्थी ऐसा नहीं कर पाते है तो वह पुनः शिक्षण कार्य करता है। विद्यार्थियों के अन्दर शिक्षण के उपरान्त होने वाले इन परिवर्तनों को ही विशिष्ट उद्देश्य कहते है। विशिष्ट उद्देश्यों का निर्माण सदैव सामान्य उद्देश्य के निर्धारण के पश्चात ही किया जाता है। विशिष्ट उद्देश्य संकीर्ण, प्रत्यक्ष तथा ये विशुद्ध कार्यपरक अर्थात् व्यवहार परिवर्तन से जुड़े होते हैं।

(ख) अधिगम क्रियाओं का आयोजन :

मूल्यांकन प्रक्रिया के दूसरे सोपान के रूप में अधिगम क्रियाओं का आयोजन किया जाता है जिसके अन्तर्गत उप सोपान होते है :—

(1) **शिक्षण बिन्दुओं का चयन करना :** सामान्य एवं विशिष्ट उद्देश्यों के निर्धारण के उपरान्त शिक्षण बिन्दुओं को निर्धारण किया जाता है जिसके माध्यम से विशिष्ट उद्देश्यों की प्राप्ति की जाती है। इसके अन्तर्गत समस्त पाठ्यवस्तु को छोटे—छोटे लघु खण्डों में विभाजित किया जाताहै और पाठ्यवस्तु के यही

छोटे खण्ड शिक्षण बिन्दु होते है जो अपने आप में पूर्ण इकाई होते है और अध्यापक को उनके शिक्षण लक्ष्य की प्राप्ति में सहायता करते है। इन शिक्षण बिन्दु के माध्यम से ही अध्यापक अपने शिक्षण कार्य को आगे बढ़ाता है तथा अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर होता है।

(2) **अधिगम क्रियाओं का आयोजन** : छात्रों के व्यवहार में वांछित परिवर्तन के लिए शिक्षण बिन्दुओं से सम्बन्धित अधिगम क्रियाओं का आयोजन किया जाता है जिससे उन्हें विशिष्ट अधिगम अनुभव प्राप्त हो सके। अधिगम अनुभव हेतु जिन क्रियाओं का संचालन किया जाता है उसके लिए परिस्थितियों के सृजन, के साथ अध्यापक की भूमिका तथा छात्रों के शिक्षण अनुभव के सम्प्रेषण की प्रक्रिया के लिए सम्भावनाओं का अवसर एक महत्वपूर्ण पक्ष है। अध्यापक को यह ध्यान रखना होगा कि अधिगम क्रियायें वैयक्तिक भिन्नता के सिद्धान्त के आधार पर निर्मित की जानी चाहिए।

(3) **व्यवहार परिवर्तन के आधार पर मूल्यांकन** : शिक्षण की समस्त प्रक्रिया के माध्यम से विद्यार्थी जिस अधिगम अनुभव को प्राप्त करते है वे अधिगम अनुभव ही उसके व्यवहार परिवर्तन में सहायक सिद्ध होते है। इन परिवर्तनों को ज्ञात करने हेतु ऐसे परीक्षणों का उपयोग किया जाता है जिसके द्वारा छात्र के जो अपेक्षित व्यवहार है उनके परिवर्तन की सीमा का प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष मूल्यांकन किया जा सके। मूल्यांकन के अन्तर्गत व्यवहार के परिवर्तन की तुलना अपेक्षित व्यवहार से की जाती है। मूल्यांकन के लिए कला न्यूनतम स्तर तथा छात्र न्यूनतम स्तर के आधार पर इन परिवर्तनों का मूल्यांकन होता है। तदुपरान्त पृष्ठ पोषण (Feed Back) के रूप में मूल्यांकन की प्रक्रिया समाप्त होती है।

इस प्रकार यह चक्रीय क्रियायें तब तक चलती है जब तक छात्र में अपेक्षित व्यवहार परिवर्तन नहीं हो जाता।

10.10 भाषा शिक्षण की मूल्यांकन विधियाँ

विद्यार्थी के अधिगम मूल्यांकन हेतु विभिन्न प्रकार के उपकरणों का प्रयोग किया जाता है। जिनमें मुख्य है बुद्धि परीक्षण, व्यक्तित्व परीक्षण, सम्प्राप्ति परीक्षण, संदेशात्मक परीक्षण, समाज मिति, प्रश्नावली, साक्षात्कार, अवलोकन, प्रयोगात्मक परीक्षा, विद्यालयी संचयी अभिलेख आदि। भाषा शिक्षण में विद्यार्थी के व्यवहारगत परिवर्तन तथा अधिगम मूल्यांकन के लिए हम सामान्य रूप से निम्न उपकरणों/विधियों का प्रयोग करते है।

(क) प्रश्नावली

प्रश्नावली वह विधि है जिसमें प्रश्नों की एक सूची निर्मित की जाती है जो शिक्षार्थी के समक्ष प्रस्तुत की जाती है और वह इन प्रश्नों का उत्तर देता है। प्रत्येक प्रश्न का परिणामात्मक मूल्य भी होता है। अध्यापक शिक्षण उद्देश्यों के आधार पर प्रश्नों का निर्माण करता है। ये प्रश्न सुबोध और सरल होते है। प्रश्नावली सामान्यतः चार प्रकार की होती है:

1. **मुक्त प्रश्नावली** : इन प्रश्नावली में छात्र को प्रत्येक प्रश्न का पूरा उत्तर लिखना होता है। इन प्रश्नों के उत्तर के माध्यम से छात्र के अन्दर भाषा गत, भाव गत, पक्ष को समझने में सहायता मिलती है क्योंकि इसमें छात्र को अपने मन से उत्तर लिखना होता है ये अधिकतर दीर्घ उत्तरीय प्रश्न होते हैं जैसे कबीरदास की रचनाओं की विशेषता को उदाहरण सहित विवेचित कीजिए; अथवा महादेवी को 'आधुनिक मीरा' की संज्ञा क्यों दी गयी है?

2. **बन्द प्रश्नावली** : इस प्रश्नावली में मुख्यतः वस्तुनिष्ठ प्रश्न होत है जिनका उत्तर छात्र को चिन्ह (√, X) लगाकर मिलान या एक शब्द में देने होते है। ये प्रश्न सामान्यतया छात्र के 'ज्ञानात्मक' पक्ष से सम्बन्धित होते है अर्थात् ज्ञानात्मक उद्देश्यों की पूर्ति करते है।

जैसे:	सही	गलत
1. हनुमान बाहुक तुलसीदास कृत रचना है।	☐	☐

2. छायावादी कवियों में इनमें से कौन नहीं था।

(1) निराला (2) अज्ञेय (3) प्रसाद (4) पन्त

3. **सचित्र प्रश्नावली** : इसमें छात्र को प्रश्नों का उत्तर चित्र के ऊपर चिन्ह लगाकर देने होते है। भाषा शिक्षण में प्रायः इस प्रश्नावली का प्रयोग नहीं किया जाता और यदि किया भी जाता है तो यह अत्यन्त बच्चों के लिए किया जाता है जिन्हें वर्ण, अक्षर आदि की पहचान करानी है।

4. **मिश्रित प्रश्नावली** : यह प्रश्नावली तीनों प्रश्नावली का मिश्रण होती है अध्यापक अपने शिक्षार्थियों की वैयक्तिक विभिन्नता के आधार पर इन्हें प्रयोग कर सकता है जो उसके द्वारा निर्धारित शैक्षिक उद्देश्यों की पूर्ति करे।

प्रश्नावली की विशेषताएं :

1. इसके माध्यम से अध्यापक छात्र की रूचि क्षमता तथा योग्यता को जानने में सक्षम होता है।
2. छात्र के भाषागत कौशल को जान सकता है।
3. एक साथ समूह में विद्यार्थियों का मूल्यांकन करना सम्भव होता है।
4. छात्रों का भाषा अधिगम से सम्बन्धित तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।

सीमाएँ :

1. बन्द प्रश्नावली से छात्रों की भाषा शैली को नहीं जाना जा सकता।
2. छात्रों के सम्पूर्ण ज्ञान को नहीं जाना जा सकता क्योंकि छात्र सभी प्रश्नों के उत्तर न देकर कुछ प्रश्नों के उत्तर भी दे सकता है।
3. प्रश्नावली में यह आवश्यक नहीं कि वह सही उत्तर जानकर ही चिन्ह लगा रहा हो वह अटकल भी कर सकता है।

(ख) अवलोकन

भाषा शिक्षण में अवलोकन विधि के माध्यम से भी मूल्यांकन की एक विधि है जिसके द्वारा विद्यार्थी के अनेक पक्षों को जाना जा सकता है। जब शिक्षक कक्षा में सम्वर वाचन अथवा यौन वाचन के लिए विद्यार्थी को कहता है तो विद्यार्थी द्वारा पढ़े गये पाठ का अध्यापक अवलोकन करता है देखता है कि छात्र शुद्ध वाचन कर रहा है या नहीं इस प्रकार वाचन कौशल को अवलोकन के माध्यम से सुदृढ़ किया जाता है।

अवलोकन की मान्यता यह है कि व्यक्ति जो क्रियायें कर रहा है उसका अर्थ है अथवा नहीं। यह विधि वस्तुनिष्ठ विधियों के अन्तर्गत नहीं आती फिर भी इनका प्रयोग अध्यापक अपनी शिक्षण प्रक्रिया में करता है क्योंकि यह पद्धति या विधि भाषा शिक्षण में अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होती। अवलोकन की सहायता से ज्ञानात्मक, भावात्मक तथा क्रियात्मक तीनों ही प्रकार के व्यवहार का मापन एवं मूल्यांकन किया जा सकता है।सामान्यता अवलोकन निम्न प्रकार का हो सकता है :

1. **स्व अवलोकन** : जब छात्र अध्ययन करते समय, वाचन अथवा लेखन करते समय स्वयं ही अपना अवलोकन करे तथा अपने द्वारा होने वाली अशुद्धियों को देख, सुनकर सुधारने का प्रयास करे।

2. **बाह्य अवलोकन** : छात्र द्वारा वाचन या लेखन की क्रिया में जब शिक्षक उसका मूल्यांकन करता है अथवा कोई बाह्य व्यक्ति छात्र का मूल्यांकन करता है तो वह बाह्य अवलोकन कहा जाता है जैसे अध्यापक द्वारा उच्चारण दोष को सही कराना।

3. **नियोजित अवलोकन** : यह अवलोकन नियोजित अर्थात् विशिष्ट उद्देश्य की पूर्ति के लिए किया जाता है जैसे अध्यापक द्वारा किसी छात्र को भाषण प्रतियोगिता के लिए तैयार कराना। इसमें अध्यापक छात्र के भाषण की समय सीमा, उच्चारण, कथावस्तु प्रस्तुतिकरण आदि सभी का अवलोकन कर उसका मूल्यांकन करता है।

4. **अनियोजित अवलोकन** : जब किसी सामान्य उद्देश्य के लिए अवलोकन किया जाता है तो उसे अनियोजित अवलोकन कहते है जैसे भाषा शिक्षक द्वारा सामान्य रूप से विद्यार्थियों के द्वारा पाठ विशेष में उनकी रूचि देखना तथा उनसे उत्तर की प्राप्ति करना जिससे वे कक्षा में शिक्षक के समय सतर्क रहे।

5. **प्रत्यक्ष अवलोकन** : अवलोकन के इस प्रकार में जब मूल्यांकनकर्त्ता किसी व्यवहार को उसी रूप में देखता है जैसा कि वह व्यवहार हो रहा है तो इसे प्रत्यक्ष अवलोकन कहते हैं जैसे भाषा शिक्षक के द्वारा छात्र को दिये गये भाषागत कार्य को देखना।

6. **अप्रत्यक्ष अवलोकन** : जब मूल्यांकनकर्त्ता होने वाले व्यवहार का अवलोकन स्वयं न कर अन्य व्यक्तियों से पूछकर करता है तो उसे अप्रत्यक्ष अवलोकन कहते है। उदाहरण भाषा शिक्षक द्वारा किसी विद्यार्थी द्वारा भाषागत त्रुटियों का निरन्तर करने के कारणों को जानने के लिए अन्य अध्यापकों द्वारा उसके कक्षा कार्य के विषय में पूछना कि क्या वह अशुद्धियाँ सभी विषयों में कर रहा है?

7. **सहभागिक अवलोकन एवं असहभागिक अवलोकन** : जब मूल्यांकनकर्त्ता उस समूह का अंग होता है जिसका वह अवलोकन कर रहा है तो उस विधि को सहभागिक अवलोकन कहते है तथा जब मूल्यांकनकर्त्ता उस समूह का हिस्सा नहीं होता जिसका वह अवलोकन कर रहा है तो ऐसा अवलोकन असहभागिक अवलोकन कहलाता है।

(ग) साक्षात्कार

भाषा शिक्षण में मूल्यांकन की एक विधि साक्षात्कार है जो अध्यापक द्वारा छात्र से अध्यापक के शिक्षण उद्देश्य के आधार पर की जाती है। इसमें परम्पर आमने सामने बैठकर प्रश्नों को पूछा जाता है जिससे मापनकर्त्ता को उसकी योग्यताओं का मापन कर सके। शिक्षण प्रक्रिया में इसे मौखिक परीक्षा के नाम से जानते है।

साक्षातर के मुख्यतः दो प्रकार है : प्रमापीकृत तथा अप्रमापीकृत साक्षात्कार। प्रमापीकृत साक्षात्कार को संरचित साक्षात्कार तथा अप्रमापीकृत को असंरचित साक्षात्कार कहते है।

भाषा शिक्षण में मूल्यांकन की विधि के रूप में ये दोनों ही प्रकार के साक्षात्कार का उपयोग होता है जैसे उच्च कक्षाओं में पाठ्यक्रम से सम्बन्धित मौखिकी परीक्षा तथा संरक्षित साक्षात्कार जो उक्त प्रकार का होता है, से द्वारा किसी छात्र के सामान्य ज्ञान के विषय में जानना जो वह भाषा शिक्षण के माध्यम से रास प्राप्त कर रहा है। साक्षात्कार औपचारिक तथा अनौपचारिक भी होते है। इस प्रकार भाषा शिक्षण में भाषा के मूल्यांकन करने के लिए विविध विधियाँ हैं जिनके द्वारा अध्यापक विद्यार्थी की भाषा का मूल्यांकन कर सकता है।

बोध प्रश्न

टिप्पणी :

क) नीचे दिए गए बोध प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

ख) इकाई के अंत में दिए गए बोध प्रश्नों के उत्तर से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1. मापन एवं मूल्यांकन में क्या अन्तर है?

   ....

   ....

2. मूल्यांकन की आवश्यकता क्यों है?

   ....

   ....

3. परीक्षण के प्रकार बताइए।

   ....

   ....

4. भाषा शिक्षण मूल्यांकन की प्रमुख विधियाँ कौन–कौन सी है?

   ....

   ....

10.11 सारांश

शिक्षण एवं मूल्यांकन शिक्षण प्रक्रिया में परस्पर सम्बन्धित प्रक्रियायें है। मूल्यांकन का अर्थ है बोधनीयता अर्थात् शैक्षिक प्रक्रिया के माध्यम से परिवर्तित होने वाले गुणों की वांछनीयता मूल्यांकन दो शब्दों से मिलकर बना है। मूल्य + अंकन अर्थात् किसी व्यक्ति या वस्तु के विशिष्ट गुणों का मूल्य निर्धारण/ मूल्यांकन की तरह अन्य शब्दों का प्रयोग भी शैक्षिक प्रक्रिया में किया जाता है जैसे मापन, आकलन, परीक्षा आदि। मापन किसी भौतिक राशि का परिमाण इकाई में प्रस्तुत करने को कहा जाता है। आकलन सूचना संग्रहण तथा उस पर विचार–विमर्श की प्रक्रिया है तो परीक्षा मूल्यांकन करने का एक उपकरण है जिससे हम विद्यार्थियों की योग्यता को जानने का प्रयास करते है। मूल्यांकनकी आवश्यकता छात्र के शैक्षिक गतिविधि तथा पाठ्यक्रम में सुधार करने के लिए है।

मूल्यांकन के द्वारा अध्यापक अपने शिक्षण को प्रभावशीलता को प्राप्त कर सकता है। मूल्यांकन तीन सोपान बताये गये है – (1) उद्देश्य के आधार पर (2) अधिगम क्रियाओं के आयोजन के आधार पर तथा (3) व्यवहार परिवर्तन के आधार पर मूल्यांकन/भाषा शिक्षण की मूल्यांकन विधियाँ प्रश्नावली, अवलोकन साक्षात्कार आदि ही जिनके माध्यम से अध्यापक विद्यार्थियों की भाषा उपलब्धि का मूल्यांकन कर सकता है।

10.12 अभ्यास के प्रश्न

1. मापन को परिभाषित कीजिए।
2. परीक्षण किसे कहते है। इसकी आवश्यकता बताइए।
3. भाषा शिक्षण के सोपानों का वर्णन कीजिए।

10.13 चर्चा के बिन्दु

1. भाषा शिक्षण के मूल्यांकन की प्रमुख विधियों पर चर्चा कीजिए।
2. भाषा सम्प्राप्ति में मापन एवं मूल्यांकन की क्या उपयोगिता है? चर्चा कीजिए।

10.14 बोध प्रश्नों के उत्तर

1. यह एक तुलना करने की प्रक्रिया जिसमें किसी व्यक्ति अथवा वस्तु में निहित (भौतिक) विशेषता को अंकों में वर्णित किया जाता है। इसकी इकाई होती है जैसे ग्राम, लीटर, मीटर, फॉरेनहाइट आदि। मूल्यांकन वह प्रक्रिया है जिसमें मापन से प्राप्त परिणामों की वांछनीयता का निर्णय किया जाता है अर्थात् वस्तु या व्यक्ति के गुणों या विशेषता का मूल्य निर्धारण किया जाता है।
2. **भाषा मूल्यांकन** की आवश्यकता इसलिए है क्योंकि इसके माध्यम से छात्र द्वारा अर्जित योग्यता अथवा राय का पता चलता है। इसके द्वारा शिक्षण प्रक्रिया में सुधार लाया जाता है।
3. परीक्षण दो प्रकार के होते है :
   i. प्रमापीकृत परीक्षण
   ii. अप्रमापीकृत परीक्षण
4. भाषा शिक्षण के मूल्यांकन की प्रमुख विधियाँ है :
   i. प्रश्नावली
   ii. साक्षात्कार
   iii. अवलोकन

10.15 कुछ उपयोगी पुस्तकें

1. पांडे राम सकल, त्रुटि विश्लेषण सिद्धांत और व्यवहार, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा।
2. लाल रमन बिहारी (2002), हिंदी शिक्षण, रस्तोगी पब्लिकेशन, मेरठ।
3. गुप्ता एस.पी. (2004), आधुनिक मापन मूल्यांकन, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।

इकाई 11 : भाषा परीक्षण एवं परीक्षण पदों की रचना

इकाई की संरचना

11.1 प्रस्तावना

11.2 इकाई के उद्देश्य

11.3 उपलब्धि परीक्षण का अर्थ एवं परिभाषा

11.4 उपलब्धि परीक्षण की आवश्यकता

11.5 उपलब्धि परीक्षण का महत्व

11.6 परीक्षण के प्रकार

- 11.6.1 प्रमाणीकृत परीक्षण
- 11.6.2 अप्रमाणीकृत परीक्षण

11.7 प्रमापीकृत तथा अप्रमापीकृत परीक्षण में अंतर

11.8 सम्प्राप्ति परीक्षण निर्माण के सोपान

- 11.8.1 परीक्षण की योजना बनाना
- 11.8.2 प्रश्नों/पदों की रचना करना
- 11.8.3 प्रश्नों/पदों का चयन करना
- 11.8.4 परीक्षण का मूल्यांकन

11.9 सारांश

11.10 अभ्यास के प्रश्न

10.11 चर्चा के बिन्दु

11.12 बोध प्रश्नों के उत्तर

11.13 कुछ उपयोगी पुस्तकें

11.1 प्रस्तावना

हिन्दी भाषा अधिगम के मूल्य निर्धारण के लिए प्रथम सोपान भाषा सम्प्राप्ति मूल्यांकन की समझ विकसित करना है। तदुपरान्त भाषा परीक्षण के स्वरूप का निर्धारण किया जाता है। प्रस्तुत इकाई में भाषा परीक्षण क्या है भाषा सम्प्राप्ति परीक्षणों का निर्माण कैसे किया जाता है? उद्देश्यों का निर्धारण, ब्लू प्रिंट की रचना आदि जो महत्वपूर्ण कार्य है उनका अध्ययन प्रस्तुत इकाई में किया जाएगा। परीक्षण का मुख्य आधार परीक्षण पदों की रचना करना है। प्रस्तुत कार्य में पदों की रचना, प्रश्नों का चयन, प्रश्नों के प्रसार के साथ उनका पद विश्लेषण कैसे किया जाता है, प्रश्नों के चयन का आधार क्या है और उन्हें निरस्त किन आधार पर किया जाता है, इसका भी अध्ययन प्रस्तुत इकाई में हम करेंगे।

औपचारिक शिक्षण प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण पक्ष अधिगमकर्त्ता द्वारा अध्ययन किये जाने विषयों में उसके द्वारा अर्जित किए हुए ज्ञान का अध्यापक द्वारा परीक्षण करना जिससे अध्यापक यह जानने में सक्षम हो सकेगा कि विद्यार्थी ने क्या सीखा और साथ ही अध्यापक के स्वयं की शिक्षण कला कैसी है, वह कहाँ तक अपने कार्य में सफल हो रहा है? इस प्रकार सम्प्राप्ति परीक्षण वह परीक्षण है जो शिक्षार्थी के विषय विशेष में अर्जित ज्ञान और विषय से सम्बन्धित उपलब्धि को जानने के लिए किया जाने वाला परीक्षण है। इसके माध्यम से शिक्षार्थी ने क्या सीखा यह पता चलता ही है साथ यह भी ज्ञात होता है कि विद्यार्थी को विषय से सम्बन्धित क्या–क्या पाठ्यवस्तु समझ नहीं अयी और उसे अभी क्या–क्या सीखना है। साथ ही अध्यापक को स्वयं की शिक्षण रणनीति निर्मित करने में सहायता प्राप्त होती है।

प्रस्तुत इकाई में हम यह जानने का प्रयास करेंगे कि सम्प्राप्ति परीक्षण का अर्थ, आवश्यकता एवं इसका महत्व क्या है? इसके निर्माण के सोपान क्या है और किसी परीक्षण के निर्माण की प्रक्रिया क्या है?

11.2 इकाई के उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के उपरान्त आप इस योग्य हो जायेंगे कि–

1. उपलब्धि परीक्षण के संप्रत्यय का वर्णन कर सकेंगे।
2. उपलब्धि परीक्षण की आवश्यकता एवं महत्व का वर्णन कर सकेंगे।
3. मानकीकृत तथा गैर मानकीकृत परीक्षण में अन्तर स्पष्ट कर सकेगे।
4. उपलब्धि परीक्षण के निर्माण हेतु ब्लू प्रिन्ट तैयार कर सकेंगे।
5. उपलब्धि परीक्षण का निर्माण कर सकेगें।

11.3 उपलब्धि परीक्षण का अर्थ एवं परिभाषा

सम्प्राप्ति परीक्षण अथवा उपलब्धि परीक्षण विद्यार्थी द्वारा प्राप्त किए गए कक्षा में विषय सम्बन्धी अर्जित ज्ञान का परीक्षण है। इस परीक्षण के माध्यम से शिक्षक यह ज्ञात कर सकता है कि विद्यार्थियों ने कितनी उन्नति की है तथा विद्याथियों ने अपने विषय में किस सीमा तक और कितना ज्ञान अर्जित किया है। सम्प्राप्ति परीक्षण किसी अवधि विशेष में विशेष प्रशिक्षण एवं प्रयासों के माध्यम से अर्जित की जाने वाली उपलब्धि का परीक्षण है।

फ्रीमैन के अनुसार : ''शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण वह परीक्षण है जो किसी विशेष विषय अथवा पाठ्यक्रम के विभिन्न विषयों में व्यक्ति के ज्ञान, समझ व कुशलताओं का मापन करता है।''

सुपर **(Super)** के अनुसार – ''एक उपलब्धि या क्षमता परीक्षण यह ज्ञात करने के लिए प्रयोग किया जाता है कि व्यक्ति ने क्या और कितना सीखा तथा वह कोई कार्य कितनी भली–भाँति कर लेता है।''

इबेल **(Ebel)** के अनुसार – ''उपलब्धि परीक्षण वह उपलब्धि है जो विद्यार्थी के द्वारा ग्रहण किए गए ज्ञान, कुशलता या क्षमता का मापन करता है।''

बेस्ट एवं काहन **(Best & Kahan)** के अनुसार – ''उपलब्धि परीक्षण यह मापने का प्रयास करता है कि एक व्यक्ति ने क्या अधिगम किया, उसके निष्पत्ति का वर्तमान स्तर क्या है?''

लिनक्विस्ट एवं मन **(Linqquist & Munn)** ने सम्प्राप्ति परीक्षण को परिमाणित करते हुए कहा कि – ''एक सामान्य निष्पत्ति परीक्षण वह है जो एक फलांक द्वारा निष्पत्ति के किए हुए क्षेत्र में विद्यार्थी के सापेक्षिक ज्ञान का बोध कराए।''

11.4 उपलब्धि परीक्षण की आवश्यकता

अधिगम का अर्थ है सीखना। जब शिक्षण अधिगम की चर्चा की जाती है तो यह सामान्य रुप से स्वीकार किया जाता है कि शिक्षण का उद्देश्य ही उसके व्यवहार में वांछित परिवर्तन लाना है जिसे अधिगम कहा जाता है। क्योंकि यह माना जाता है कि बच्चा जो कुछ भी सीखता है उसके व्यवहार में वह प्रदर्शित होता है और यही शिक्षण का उद्देश्य है। शिक्षण में अनेक क्रियायें सम्मिलित रहती है। जैसे शिक्षण का निर्धारित लक्ष्य, सिखाये जाने वाले ज्ञान एवं कौशल, प्रविधियाँ तथा मूल्यांकन। इन सभी में मूल्यांकन एक ऐसा क्रम है जिसमें शिक्षण के निर्धारित लक्ष्य को प्राप्त करने में छात्र किस सीमा तक समर्थ हुए या हो सकते है, जिस ज्ञान को प्रदान किया जा रहा है उसमें उन्होंने कितनी निपुणता या कुशलता प्राप्त की अथवा अर्जित की, यह जानने के लिए प्रयुक्त होती है। जब इन उद्देश्यों की पूर्ति कहाँ तक हुई यह प्रश्न उठता है अथवा इसका ज्ञान प्राप्त करना होता है तो वहाँ मूल्यांकन की आश्यकता होती है और मूल्यांकन के लिए उपलब्धि परीक्षण का निर्माण किया जाता है। मूल्यांकन एक सुधारात्मक प्रक्रिया है जिसके माध्यम से यह भी जाना जाता है कि छात्र अपने निर्दिष्ट लक्ष्य को प्राप्त करने

में क्यों अक्षम रहा अथवा क्या शिक्षण प्रक्रिया दोषपूर्ण थी? अथवा शिक्षण/अधिगम प्रक्रिया में कोई आघात उत्पन्न हुआ? अर्थात मूल्यांकन का मात्र क्या उत्तर प्राप्त करने के लिए ही उपयोग नहीं किया जाता वरन् इस 'क्या' के कारण को भी जानने का प्रयास किया जाता है और इस क्या और क्योकि कारणों को जानने के लिए उपलब्धि परीक्षण का निर्माण किया जाता है। इस प्रकार उपलब्धि परीक्षण विद्यार्थी के निश्चित ज्ञान प्राप्त करने के लक्ष्य को मूल्यांकन करने का उपकरण है साथ ही अध्यापक के शिक्षण–कौशल को भी मूल्यांकित कर उसमें सुधार करने के लिए प्रेरित करता है।

11.5 उपलब्धि परीक्षण का महत्व

1. विद्यार्थी की विशेष कार्य मे निम्नतम योग्यताओं के मापन में सहायक होता है। जब भाषा के मूल्यांकन हेतु उपलब्धि परीक्षण का निर्माण किया जाता है तो उसका एक मूल उद्‌देश्य विद्यार्थियों में होने वाले भाषागत परिवर्ती को मापना है कि उनमें भाषागत कितनी योग्यता विकसित हुई।

2. भविष्य में सीखने की प्रेरणा प्राप्त होती है क्योंकि उपलब्धि परीक्षण के माध्यम से विद्यार्थी के विषय में यह ज्ञात होता है कि उसने भाषा से सम्बन्धित कितना ज्ञान अर्जित किया।

3. उपलब्धि परीक्षण के माध्यम से अध्यापक की शिक्षण निपुणता, कौशल तथा प्रभावशीलता को भी मूल्यांकन किया जाता है।

4. उपलब्धि परीक्षण पाठ्‌यवस्तु के संशोधन में भी सहायक होता है। भाषा से सम्बन्धित आवश्यक कौशलों के विकास के लिए उपलब्धि परीक्षण पाठ्‌यवस्तु के संशोधन के लिए सुझाव देता है जिसके माध्यम से पाठ्‌यवस्तु छात्र–रूचि को देखते हुए मिर्मित की जाती है।

5. इसके निर्माण करने तथा सम्बधित साहित्यिक के अध्ययन से शिक्षकों में अपनी व्यवसायिक कुशलता विकसित होती है। विद्यार्थियों को अध्ययन एवं उसके ज्ञान के मापन के लिए जो परीक्षण निर्मित किया जाता है उसके लिए शिक्षक अपने ज्ञान एवं कौशल का प्रयोग करता है।

6. भाषा परीक्षण के माध्यम से शिक्षण सामग्री एवं शिक्षण प्रणाली की तुलना सम्भव होती है जिससे विद्यार्थियों के हित में उसमें वांछित परिवर्तन लाया जा सके।

7. उपलब्धि परीक्षण के माध्यम से विद्यार्थियों में भाषा अधिगम के लक्ष्य को निर्धारित कर विद्यार्थियों के भाषा के ज्ञान एवं उनके कौशल को जाना जा सकता है।

11.6 परीक्षण के प्रकार

परीक्षण निर्माण के आधार पर परीक्षणों को दो भागों में बांटा गया है–

(a) प्रमापीकृत परीक्षण (b) अप्रमापीकृत परीक्षण

11.6.1 प्रमापीकृत परीक्षण : इस परीक्षण का निर्माता औपचारिक रूप से करने के लिए किया जाता है। जिसमें निर्माता औपचारिक रूप से परीक्षण की योजना बनाना है, प्रश्न बनाना है, प्रश्नों का तार्किक आधार पर चयन करना है तथा परीक्षण की विश्वसनीयता वैधता व मानकों की गणना करना है। ये परीक्षण छात्रों की उपलब्धि का मापन विश्वसनीय व वैध तरीके से करते हैं तथा प्राप्तांकों की व्याख्या किसी बड़े समूह के सन्दर्भ में करने का आधार उपलब्ध कराते है अर्थात ये परीक्षण दो प्राप्तांकों में तुलना का आधार प्रदान करता है।

11.6.2 अप्रमाणीकृत परीक्षण : इस परीक्षण को अध्यापक निर्मित परीक्षण कहते हैं क्योंकि इसका निर्माण अध्यापक द्वारा किया जाता है। शिक्षण प्रक्रिया में अध्यापक अपनी आवश्यकतानुसार शिक्षण के समय अर्थात तुरन्त कुछ प्रश्नों का निर्माण एवं चयन करके इसका निर्माण करता हैं। अध्यापक निर्मित परीक्षण तत्कालिन आवश्यकता की पूर्ति तो करते हैं परन्तु इसकी विश्वसनीयता वैधता के सम्बन्ध में कोई प्रमाण नहीं होता।

11.7 प्रमापीकृत तथा अप्रमापीकृत परीक्षण में अंतर

प्रमापीकृत तथा अप्रमापीकृत परीक्षण में अंतर को हम विभिन्न आयामों के माध्यम से समझ सकते है।

आयाम	प्रमापीकृत	अप्रमापीकृत
निर्माणकर्ता	परीक्षण में सम्मिलित प्रकरणों का निर्धारण एक विशिष्ट तालिका बनाकर किया जाता है। इस निर्माण विशेषज्ञों द्वारा किया जाता है।	इस परीक्षण में सम्मिलित किए जाने वाले प्रकरणों का निर्धारण अध्यापक की इच्छानुसार होता है। इसका निर्माण अध्यापकों के द्वारा तालिका आवश्यकतानुसार तक किया जाता है।
उद्देश्य	इस परीक्षण का उपयोग अत्यन्त सीमित तथा विशिष्ट होता है।	अप्रमापीकृत परीक्षण का उद्देश्य सामान्य तथा अत्यन्त व्यापक होता है।
निर्माण	परीक्षण का निर्माण नियमबद्ध रुप से विधिवत किया जाता है जिसमें प्रश्नों का पूर्ण परीक्षण व पद विश्लेषण प्रश्नों का सुधार अथवा संशोधन सम्भव होता है।	इस परीक्षण में परीक्षण का निर्माण शीघ्रता से किया जाता है जिसके कारण प्रश्नों का पूर्ण परीक्षण नहीं किया जाता है। इस परीक्षण में प्रश्नों के संशोधन सम्भव्यता का अभाव होता है।
विश्वसनीयता	प्रमापीकृत परीक्षण में विश्वसनीयता ज्ञात तथा सुनिश्चित होता है।	अप्रमापीकृत परीक्षण में विश्वसनीयता का निर्धारण नहीं किया जाता।

वैधता	प्रमापीकृत परीक्षण क्योंकि नियम तथा विधिवत रूप से किया जाता है अतः इसकी वैधता ज्ञात और सुनिश्चित रहती है।	अप्रमापीकृत परीक्षण में प्रश्नों के निर्माण नियम बद्धता का अथवा पूर्ण परीक्षण का अभाव रहता है इसलिए इसमें वैधता का निर्धारण नहीं किया जाता।
मानक	प्रमापीकृत ऐसे परीक्षण होते हैं जिनके लिए स्थानीय, राज्य या राष्ट्रीय मानक उपलब्ध रहते हैं और उनका ही प्रयोग किया जाता है।	अप्रमापीकृत परीक्षण में मानकों का निर्धारण नहीं रहता।
प्रशासन एवं अंकन	प्रमापीकृत परीक्षण में प्रशासन तथा अंकन सभी के लिए समान तथा पूर्व निर्धारण होता है।	अप्रमापीकृत परीक्षण में प्रशासन एवं अंकन दोनों ही अनिश्चित होते हैं।
उपयोग	प्रमापीकृत परीक्षण विभिन्न विद्यालयों अथवा कलाओं अथवा राष्ट्रीय स्तर पर छात्रों की उपलब्धि को जानने और उसकी तुलना के लिए प्रयोग किया जाता है।	अप्रमापीकृत परीक्षण का उपयोग कक्षा के छात्रों या विद्यालय के छात्रों की उपलब्धि की तुलना के लिए किया जाता हैं।

आर.एच.दवे के टैक्सोनॉमी के अनुसार– विद्यार्थियों में कौशल के विकास को देखने की बात की गई जहाँ क्रिया की प्रधानता रखी गई। प्रश्नों के निर्माण में भी उनके दृष्टिकोण को उनके मॉडल में यदि सम्मिलित करते हैं तो यह माना जा सकता है कि प्रश्नों के निर्माण करने से पूर्व हमें यह ध्यान रखना होगा कि हमारा शिक्षण का उद्देश्य क्या था और किन उद्देश्यों का मूल्यांकन करना है? इन उद्देश्यों को ध्यान रखते हुए ही विषयवस्तु का निर्धारण किया जाना चाहिए। इन दोनों के लिए किस परिस्थिति की आवश्यकता है। प्रश्नों के निर्माण में यह भी ध्यान रखा जाता है तथा इन परिस्थिति को ध्यान में रखकर अर्थात आधार का निर्णय करने के पश्चात आधार के सृजनात्मक विश्लेषण का परिणाम विचार के रूप में रखा जाता है और इस आधार पर इन विचारों को प्रश्नों के रूप में परिवर्तित किया जाता है। परीक्षण निर्माणकर्ता की अपनी रूचि है कि वह किस प्रकार के प्रश्न का निर्माण करे कि उसे उपलब्धि का क्या स्वरुप देखना है? प्रश्नों के निर्माण करते समय प्रश्नों का प्रकार, उनकी भाषा, छात्र इन प्रश्नों का क्या अपेक्षित उत्तर दे सकता है? इसका ध्यान रखकर ही प्रश्नों की रचना की जाती है। साथ ही प्रश्नों को कठिनाई स्तर तथा विभेदन क्षमता को भी ध्यान रखकर प्रश्नों का चयन किया जाता है।

11.8 सम्प्राप्ति परीक्षण निर्माण के सोपान

प्रमापीकृत परीक्षण का निर्माण औपचारिक ढंग से किया जाता है जिसमें योजना बनाना, प्रश्नों का तार्किक आधार पर चयन तथा परीक्षण की विश्वसनीयता, वैधता व मानकों की गणना की जाती है। सामान्य रूप से परीक्षण के निर्माण तथा प्रमापीकरण की प्रक्रिया को चार मुख्य सोपानों में बांटा जा सकता है :—

1. परीक्षण की योजना बनाना (Planning of the test)
2. प्रश्नों की रचना करना (Preparing the items)
3. प्रश्नों की चयन करना (Selecting the items)
4. परीक्षण का मूल्यांकन करना (Evaluate the test)

11.8.1 परीक्षण की योजना बनाना :

इस सोपान के अन्तर्गत परीक्षण से सम्बन्धित अनेक निर्णय लिये जाते हैं जैसे परीक्षण के लिए विषयवस्तु का चयन, शिक्षण उद्देश्यों का निर्धारण, प्रश्नों के प्रकार अर्थात् किस प्रकार के प्रश्न परीक्षण में सीमित कियये जायेंगे, प्रश्नों की संख्या, प्रश्न, समयाविधि का निर्धारण, अंकन विधि, परीक्षण का प्रारूप आदि जैसी विभिन्न बातों पर विचार कर उनको निर्धारित किया जाता है। परीक्षण निर्माता प्रश्नों के प्रकार व संख्या निश्चित करने के उपरान्त एक विशिष्टीकरण सारणी (Blue Print) तैयार करता है। इस विशिष्टीकरण सारणी में विषयवस्तु के विभिन्न प्रकरणों तथा श़िक्षण उद्देश्यों को दिये जाने वाले भार को भी स्पष्ट किया जाता है। परीक्षण में तय किये हुए विभिन्न प्रकार के प्रश्नों को सम्मिलित किया जाता है। साथ ही निर्माता द्वारा प्रश्नों के अनुमानित कठिनाई स्तर तथा प्रश्नों की संख्या व प्रश्नों के विभिन्न प्रकारों को भी निर्धारित करता है जिससे उसे परीक्षण निर्माण में किसी भी प्रकार की असुविधा न हो। किसी भी प्रमापीकृत परीक्षण में प्रश्नों के निर्धारण का क्रम उचित प्रकार से रखने में हम विद्यार्थियों की कमियों को पहचानने में सक्षम होते हैं। इन प्रश्नों का क्रम इस प्रकार रखने पर परीक्षण अधिक उपयुक्त माना जाता है :—

1. सत्यासत्य प्रश्न
2. मिलान प्रश्न
3. प्रत्यास्मरण प्रश्न
4. पूर्ति प्रश्न
5. बहुविकल्पीय प्रश्न
6. लघु उत्तरीय प्रश्न
7. दीर्घउत्तरीय प्रश्न

परीक्षण को योजना का एक आवश्यक अंग है अंकन विधि का निर्धारण। अतः प्रश्नों के अंकों का निर्धारण भी इसी सोपान में किया जाता है। परीक्षण में वस्तुनिस्ठ प्रश्नों में सही उत्तर को एक अंक तथा गलत को शून्य दिया जाता है। अंकन किस प्रकार किया जाना है? कम्प्यूटर का प्रयोग अथवा कुंजी का प्रयोग करना है अथवा हाथ से किया जाना है। परीक्षण की अवधि क्या है इसका निर्धारण भी योजना बनाते समय ही कर लिया जाता है। परीक्षण को किस प्रकार करना है अर्थात उसके प्रशासन से सम्बन्धित विभिन्न प्रकार के निर्णय भी इसी सोपान में लिये जाते हैं। इस प्रकार यह कह सकते है कि परीक्षण निर्माण का यह सोपान परीक्षण से सम्बन्धित निर्णय लेने का सोपान है जो परीक्षण के सम्पूर्ण स्वरूप को निर्धारित करता हैं। परीक्षण निर्माण में इसी सोपान में ब्लू प्रिन्ट भी तैयार किया जाता है। ब्लू प्रिन्ट का नमूना इस प्रकार है–

		ज्ञानात्मक			बोधात्मक			भावात्मक			**50%**
विषय	भार	MC	Fill	M-F	MC	Fill	M-F	MC	Fill	M-F	
		8%	5%	6%	5%	5%	5%	5%	5%	5%	
गद्य	20	3	2	2	1	2	3	2	3	2	20
पद्य	15	2	2	2	2	2	2	2	1	-	15
व्याकरण	15	3	2	2	2	1	-	1	1	3	15
50%		8	6	6	5	5	5	5	5	5	50

MC – Multiple Choice Questions (बहुविकल्पीय प्रश्न)

Fill – Fill in the blanks (रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए)

M.F.– Match the Following (मिलन प्रश्न)

11.8.2 प्रश्न/पदों की रचना करना :

निष्पत्ति परीक्षण निर्माण के इस सोपान के अन्तर्गत परीक्षण निर्माण करते समय लिए गए निर्णयों को कार्यरूप दिया जाता है। अर्थात विशिष्टीकरण सारणी का अनुसरण करके प्रश्नों की रचना की जाती है। यह प्रयास होता है कि प्रश्नों का निर्माण समस्त पाठ्यक्रम में किया जाए अर्थात् प्रश्न समस्त पाठ्यचर्चा का प्रतिनिधित्व करे। इसमें यह भी आवश्यक है कि प्रश्नों का सन्तुलित प्रतिनिधित्व हो। प्रश्नों के लिए निर्देश तैयार कर लिये जाते हैं। इस बात का ध्यान रखा जाता है कि प्रश्नों तथा निर्देशों में प्रयुक्त भाषा व संकेत आदि छात्रों के स्तर के अनुरूप हो जिससे उन्हें उत्तर देने और प्रश्न पत्र को समझने में कठिनाई न हो। यह ध्यान देने योग्य बात है कि जितने प्रश्न अन्तिम परीक्षण में रखे जाते हैं प्रायः उसके दो गुने प्रश्नों की रचना की जाती है। क्योंकि प्रश्नों की वैधता निर्धारित करते समय प्रश्नों के छंटने की आशंका रहती है।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नों की रचना करते समय R.H. Dave के द्वारा प्रस्तुत किये गये अंग्राकित मॉडल का प्रयोग किया जा सकता है।

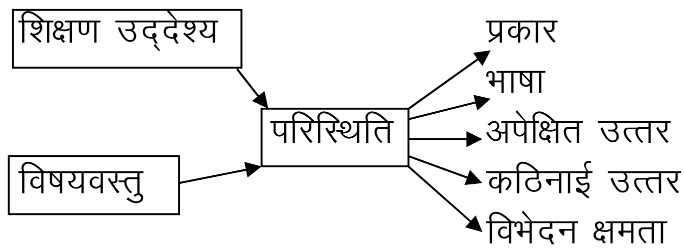

प्रश्न निर्माण करते समय रखने वाली सावधानियाँ :

1. द्विअर्थी वाक्यों वाले प्रश्न नही बनाने चाहिए।
2. अत्यधिक कठिन शब्दों या जटिल वाक्य रचना से प्रश्न का निर्माण नहीं करना चाहिए।
3. निर्देश स्पष्ट होने चाहिए।
4. सही उत्तरों के निश्चित क्रम से बचना चाहिए।
5. प्रश्नों के उत्तर देने के लिए अनावश्यक संकेत देने से बचना चाहिए।
6. प्रश्नों की रचना करते समय पाठ्य पुस्तको के वाक्य को यथावत नहीं रखना चाहिए।
7. प्रश्न विशिष्ट उद्‌देश्य की तरफ केन्द्रित होना चाहिए।
8. प्रश्न परस्पर सम्बन्धित नहीं होना चाहिए।
9. सामूहिक त्रुटियों से बचना चाहिए।

11.8.3 प्रश्नों / पदों का चयन करना :

प्रश्न की संख्या, प्रश्नों पर अंक प्रदान करने की प्रक्रिया और प्रश्नों के प्रकार का उचित उल्लेख किया जाता है। प्रश्नों की रचना, कला, छात्र की आयु, कठिनता स्तर, विभेदन क्षमता इन सभी को ध्यान में रखकर की जाती है

द्वितीय सोपान में यह देखा जाता है कि प्रश्न सही है या गलत। क्योंकि निर्माण किए गए सभी प्रश्न यह आवश्यक नहीं की सही ही बने हो अतः उन प्रश्नों का चयन किया जाता है और अच्छे प्रश्नों को परीक्षण का अंग बनाया जाता है इसलिए प्रश्नों की विस्तृत जाँच की जाती है तत्पश्चात प्रश्नों का चयन होता है। क्योंकि इस स्तर पर प्रश्नों की विस्तृत जाँच की जाती है इसलिए इस सोपान को परीक्षण का जाँच स्तर (Tryout stage) भी कहा जाता है। सामान्य रूप से परीक्षण के जाँच के दो स्तर होते हैं– प्रारम्भिक जाँच स्तर (Pretryout stage) तथा वास्तविक जाँच स्तर (Tryout stage)।

परीक्षण के प्रारम्भिक जाँच स्तर में परीक्षण की भाषा सम्बन्धी त्रुटियों व भ्रान्तियों को दूर किया जाता है इसके लिये परीक्षण की कुछ प्रतियाँ तैयार कर ली जाती है तथा उसे व्यक्तिगत रूप से छात्रों पर प्रशासित किया

जाता है। छात्रों के द्वारा इंगित की गई कठिनाइयों अथवा अस्पष्टताओं के आधार पर उन प्रश्नों को परीक्षण से निकाल दिया जाता है जो अस्पष्ट या कठिन हैं और जो संशोधित करने योग्य प्रश्न होते हैं उन्हें कुछ को संशोधित किया जाता है तथा यथावत रखा जाता है। भाषाई तथा अन्य कठिनाइयों को जानने के लिए कभी–कभी विशेषज्ञों से भी परीक्षण के ऊपर उनके विचार व सुझाव आमंत्रित किये जाते हैंः जिससे परीक्षण सुधार किया जा सके। जिससे परीक्षण पूर्ण रूप से सही बन सके।

दूसरा जाँच का स्तर है वास्तविक जाँच स्तर। वास्तविक जाँच स्तर के अन्तर्गत परीक्षण के विभिन्न पदों की तकनीकी विशेषताओं के आधार पर प्रश्नों को चयनित किया जाता है। प्रश्नों की तकनीकी विशेषता ज्ञात करने के लिये पद विश्लेषण नामक प्रक्रिया का अनुसरण किया जाता है। यह पद विश्लेषण प्रक्रिया वह जिसमें आंकिक वृद्धि में विश्लेषण करने की प्रक्रिया की जाती है।

- पद विश्लेषण (Iterm Analysis)

''प्रश्नों की मनोमितीय विशेषताओं को आंकिक दृष्टि से विश्लेषित करने की प्रक्रिया को पद विश्लेषण (Iterm Analysis) कहते है।'' पद विश्लेषण के आधार पर पद परीक्षण निर्माता के द्वारा प्रश्नों का चयन अथवा प्रश्नों को स्वीकार/अस्वीकार किया जाता है। पद विश्लेषण की प्रक्रिया में प्रश्नों के चयन हेतु कठिनाई स्तर तथा विभेदन क्षमता की दो तकनीकी विशेषताओं की जाँच की जाती है।

कठिनाई स्तर से तात्पर्य छात्रों की दृष्टि में प्रश्न की कठिनता से है अर्थात छात्र को प्रश्नों को हल करने में कितनी कठिनाई आती है अर्थात प्रश्न कितना सरल एवं कठिन है, जबकि प्रश्न विभेदन क्षमता वह है जिसके माध्यम से प्रश्न अच्छे व कमजोर छात्रों में अन्तर करने में किस सीमा तक सफल होता है यह ज्ञात होता है।

- पद विश्लेषण की प्रक्रिया :

पद विश्लेषण की प्रक्रिया में सर्वप्रयास परीक्षण को छात्रों के एक बड़े प्रतिनिधि प्रतिदर्श समूह पर प्रशासित किया जाता है। प्रशासित परीक्षण में प्रत्येक परीक्षार्थी के द्वारा अर्जित कुल प्राप्तांकों की गणना करके कुल प्राप्तांक को उस परीक्षार्थी की परीक्षा पुस्तिका के प्रपत्र पर अंकित किया जाता है इसके पश्चात परीक्षण पुस्तिकाओं को कुल प्राप्तांकों के आधार पर अधिक से कम प्राप्तांकों के क्रम (आरोही क्रम) में व्यवस्थित किया जाता है। व्यवस्थित करने के पश्चात परीक्षण पुस्तिकाओं को दो समूह, उच्च समूह (High Group) (जिसमें प्राप्तांक अधिक है) व निम्न समूह (Low Group) (जिसमें प्राप्तांक कम है) बनाये जाते हैं। तत्पश्चात ऊपर से 27% छात्रों (अधिक प्राप्तांकों) की उत्तर प्रपत्रों को उच्च समूह तथा एकदम नीचे के कम प्राप्तांक वाले छात्रों में नीचे के कम प्राप्तांक वाले छात्रों में से 27% छात्रों की उत्तर प्रपत्रों को निम्नसमूह में रखा गया। यह ध्यान देना है कि प्रत्येक समूह में छात्रों की संख्या समान रखनी चाहिए। इस संख्या को n अक्षर से व्यक्त किया जा सकता है।

प्रत्येक प्रश्न के लिए उच्च समूह के छात्रों के द्वारा दिये गये सही उत्तर की संख्या (RH) तथा निम्न समूह के छात्रों के द्वारा दिये गये सही उत्तरों की संख्या (RL) ज्ञात करते हैं। प्रत्येक प्रश्न के लिए RH व RL को जोड़कर प्राप्त मान को n से भाग कर दिया जाता है तथा इसे 100 से गुणा करके प्रतिशत मे बदल दिया जाता है तथा 100 से घटा दिया जाता है जिससे कठिनाई स्तर प्राप्त हो जाता है; इसे D.V. संकेताक्षर से व्यक्त करते है। कठिनाई स्तर D.V. ज्ञात करने को लिए सामान्यतया निम्नलिखित सूत्र का प्रयोग किया जाता है–

$$D.V. = 100 - \frac{RH + RL}{2n} \times 100$$

विभेदन क्षमता ज्ञात करने के लिए प्रत्येक प्रश्न के लिए RL को RH से घटा दिया जात है तथा प्राप्त अन्तर को n से भाग दिया जाता है, विभाजित किया जाता है और यही मान प्रश्न के लिये विभेदन क्षमता गुणांक कहा जाता है। इसे D.P. संकेताक्षर से लिखते हैं। विभेदन क्षमता सामान्यतया निम्नलिखित सूत्र का प्रयोग कर ज्ञात की जाती है।

$$D.P. = \frac{RH - RL}{n}$$

इस प्रकार यह स्पष्ट होता है कि कठिनाई स्तर का मान प्रतिशत में व्यक्त किया जाता है जबकि विभेदन क्षमता का मान दशमलव अंक के रूप में लिखा जाता है। किसी प्रश्न के लिये कठिनाई स्तर का प्रतिशत जितना अधिक होता है; प्रश्न उतना ही कठिन होता है। किसी प्रश्न के लिये विभेदन क्षमता का मान जितना अधिक होता है प्रश्न उतने ही अधिक अच्छे तरीके से श्रेष्ठ व कमजोर छात्रों में विभेद करता है।

कठिनाई स्तर व विभेदन क्षमता में सम्बन्ध :

प्रश्नों के कठिनाई स्तर तथा उनके विभेदन क्षमता के मध्य एक सीधा सम्बन्ध होता है। जिसे निम्न तरीके से देखा जा सकता है–

कठिनाई स्तर	विभेदन क्षमता
00%	0.00
10%	0.20
20%	0.40
30%	0.60
40%	0.80
50%	1.00
60%	0.80
70%	0.60

80%	0.40
90%	0.20
100%	0.00

एक अच्छे सम्प्राप्ति परीक्षण में औसत कठिनाई स्तर 50% या उससे अधिक अच्छा माना जाता है। परन्तु कभी–कभी परीक्षण निर्माता अपनी आवश्यकतानुसार 40% से 60% के बीच वाले कठिनाई स्तर को भी स्वीकार कर सकता हैं। 0.5 या उससे अधिक विभेदन क्षमता अच्छी मानी जाती है परन्तु आवश्यकतानुसार 0.3 या उससे अधिक विभेदन क्षमता वाले प्रश्नों को भी रखा जा सकता है। 0.3 से कम विभेदन क्षमता वाले प्रश्नों को या तो छोड़ दिया जाता है अथवा उसमें सुधार की आवश्यकता होती है।

भाषा सम्प्राप्ति परीक्षण में प्रश्न निर्माण से लेकर प्रश्नों की तकनीकी विशेषताओं अर्थात् कठिनाई स्तर एवं विभेदन क्षमता को ज्ञात करने के पश्चात परीक्षण के अंतिम प्रारूप में शेष बचे प्रश्नों को चयनित किया जाता है और शेष प्रश्नों को उपयुक्त आधारों पर अनुपयुक्त पाये जाने पर उन्हे यदि वे संशोधित हो सके तो उन्हे संशोधित कर दिया जाता है अर्थात् परीक्षण के अंतिम प्रारूप में सम्म्लित नही किया जाता है अधिगम के विषय में इस प्रकार सम्प्राप्ति परीक्षण द्वारा उनके भाषागत ज्ञान को जाना जा सकता है।

11.8.4 परीक्षण का मूल्यांकन :

परीक्षण निर्माण का अन्तिम सोपान मूल्यांकन है। इसके अन्तर्गत पद विश्लेषण करने के पश्चात् चयनित प्रश्नों को व्यवस्थित कर परीक्षण का अन्तिम प्रारूप निर्मित किया जाता है। परीक्षण की तकनीक विशेषताओं के साथ–साथ मानक विश्वसनीयता, वैधता, वस्तुनिष्ठता आदि को सुनिश्चित किया जाता है। परीक्षण को प्रशासित करने के पश्चात् प्राप्त अंकों की व्याख्या मानकों के आधार पर की जाती है जिसके लिए निर्देशिक परीक्षणकर्ता पूर्व में ही तैयार कर लेता है। इस प्रकार परीक्षण के माध्यम से छात्र की भाषा सम्प्राप्ति का मूल्यांकन होता है।

बोध प्रश्न

टिप्पणी :

क) नीचे दिए गए बोध प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

ख) इकाई के अंत में दिए गए बोध प्रश्नों के उत्तर से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1. भाषा सम्प्राप्ति परीक्षण के सोपान बताइए।
   ....
   ....
2. कठिनाई स्तर तथा विभेदन क्षमता ज्ञात करने का सूत्र लिखिए।
   ....
   ....
3. प्रश्न निर्माण करते समय ध्यान रखी जाने वाली चार सावधानियाँ लिखिए।
   ....
   ....

11.9 सारांश

औपचारिक शिक्षा की एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है। मूल्यांकन अर्थात् छात्र के द्वारा अर्जित ज्ञान का शिक्षक द्वारा परीक्षण करना। इसके लिए सम्प्राप्ति परीक्षण का निर्माण किया जाता है। जिसे उपलब्धि परीक्षण भी कहते है। इसके चार सोपान माने गये है : (1) योजना बनाना (2) प्रश्नों का निर्माण (3) प्रश्नों का चयन (4) मूल्यांकन। सम्प्राप्ति परीक्षण की योजना के अन्तर्गत परीक्षण के प्रश्नों का प्रकार, समय सीमा, निर्देश, उद्देश्य, भाषा आदि का निर्णय लिया जाता है जिसके लिए परीक्षणकर्ता को ब्लूप्रिंट बनानी चाहिए। इसके उपरान्त परीक्षणकर्ता प्रश्नों का निर्माण करता है जो उसने ब्लूप्रिंट में तय किये होते है तत्पश्चात वह प्रश्नों का चयन करता है इसके लिए उसे दो स्तर पर प्रयास करने होते है। प्रारम्भिक जाँच स्तर तथा वास्तविक जाँच स्तर। यह करने के पश्चात् परीक्षणकर्ता प्रत्येक प्रश्न (पद) का पद विश्लेषण करता है जिसमें प्रश्नों की विभेदन क्षमता तथा कठिनाई स्तर का निर्णय किया जाता है। जो प्रश्न इन दोनों मानकों पर सही आते हैं उन प्रश्नों को परीक्षण में स्थान दिया जाता है तथा विभेदन क्षमता व कठिनाई स्तर के दृष्टि अनुपयुक्त पदों का परीक्षण में शामिल नहीं किया जाता। कभी–कभी कुछ प्रश्न ऐसे होते हैं जो सुधार कर प्रयोग किए जा सकते हैं तो उन्हें सुधार कर परीक्षण में स्थान दिया जाता हैं। परीक्षण निर्माण का अन्तिम सोपान मूल्यांकन का है जिसके आधार पर विद्यार्थी द्वारा अर्जित किये गये ज्ञानका मूल्यांकन किया जाता है।

11.10 अभ्यास के प्रश्न

1. विभेदन क्षमता एवं कठिनाई स्तर के सम्बन्ध को प्रदर्शित कीजिए।
2. ब्लू प्रिन्ट तालिका का निर्माण कीजिए।

11.11 चर्चा के बिन्दु

1. प्रमापीकृत परीक्षण की उपयोगिता क्या है? चर्चा कीजिए।
2. प्रश्नों की रचना करते समय क्या–क्या सावधानियाँ रखनी चाहिए? चर्चा कीजिए।

11.12 बोध प्रश्नों के उत्तर

1. भाषा – सम्प्राप्ति परीक्षण के सोपान है :

   i. योजना बनाना
   ii. प्रश्नों का निर्माण
   iii. प्रश्नों का चयन
   iv. मूल्यांकन

2. कठिनाई स्तर ज्ञात करने का सूत्र $DV = 100 - \frac{RH + RL}{2n} \times 100$

विभेदन क्षमता ज्ञात करने का सूत्र . $DP = \frac{RH - RL}{n}$

3. प्रश्न निर्माण करते समय निम्न सावधानियाँ रखनी चाहिए :

   i. द्विअर्थी प्रश्नों के निर्माण से बचना चाहिए।
   ii. स्पष्ट निर्देश दिये जाने चाहिए।
   iii. प्रश्न विशिष्ट उद्देश्य की तरफ केन्द्रित होना चाहिए।
   iv. सामूहिक त्रुटियों से बचना चाहिए।

11.13 कुछ उपयोगी पुस्तकें

1. पांडे राम सकल, त्रुटि विश्लेषण सिद्धांत और व्यवहार, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा।
2. लाल रमन बिहारी, हिंदी शिक्षण, रस्तोगी पब्लिकेशन, मेरठ।
3. गुप्ता एस.पी., आधुनिक भाषा मूल्यांकन, शारदा पुस्तक भवन, प्रयागराज।

इकाई – 12 : निदानात्मक एवं उपचारात्मक कार्य

इकाई की संरचना

12.1 प्रस्तावना

12.2 इकाई के उद्देश्य

12.3 निदानात्मक परीक्षण एवं उसके चरण

12.3.1 भाषाई त्रुटियों की पहचान

12.3.2 त्रुटियों के कारणों को जानना

12.3.3 त्रुटियों का निदान

12.4 उपचारात्मक शिक्षण

12.4.1 नैदानिक / उपचारात्मक शिक्षण का उद्देश्य

12.4.2 नैदानिक / उपचारात्मक शिक्षण की विधियाँ

12.4.3 शैक्षणिक निदान एवं उपचारात्मक शिक्षण का महत्व

12.4.4 नैदानिक तथा उपचारात्मक शिक्षण के कार्य

12.5 सारांश

12.6 अभ्यास के प्रश्न

12.7 चर्चा के बिन्दु

12.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

12.9 कुछ उपयोगी पुस्तकें

12.1 प्रस्तावना

कारण को जानने से पहले त्रुटियों की पहचान आवश्यक होती है। सस्वर पाठन, इमला लेखन, श्रुति लेख आदि के माध्यम से जाना जा सकता है। उदाहरण के लिए शिक्षक द्वारा किसी गद्य खंड का सस्वर वाचन करना। इस सस्वर वाचन में विद्यार्थी द्वारा शब्दों का सही प्रयोग न कर पाना जैसे– श को ष, स, फ को घ एवं संयुक्त अक्षरों जैसे– स्थिति, प्रवेश, प्रतिनिधित्व, शमशान, विद्यालय, गृह कार्य।

सामान्य रूप से शिक्षार्थियों के अध्यापन काल में भाषाई त्रुटियां देखी जाती है। जो वाचन, पठन, लेखन इनमें से किसी से भी संबधित होती है। इन त्रुटियों के अनेक कारण होतें हैं जिन्हे जाना जा सकता है।भाषा को प्रभावी बनाने के लिए शिक्षक को चाहिए कि वह अपने विद्यार्थियों की भाषागत त्रुटियों अर्थात उनके दोषों को जाने और उन त्रुटियों को दूर करने का प्रयास एवं उपाय कर। इन दोषों को दूर करने के लिए निदानात्मक परीक्षण एक साधन के रूप में उपयोग किया जाता जिसके द्वारा विद्यार्थियों की संम्प्राति में पाए जाने वाली त्रुटियों, कमियों अथवा दोषों के विषय में सम्यक रूप से सूचनाएँ प्राप्त हो सकती है और इन दोषों अथवा कमियों को दूर करने के लिए तथा व्याकरण सम्मत शुद्ध भाषा सिखाने के लिए हम विभिन्न प्रकार के अभ्यासों अथवा उपचारात्मक कार्यों का प्रयोग शिक्षा के साथ कर सकते हैं।

12.2 इकाई के उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के उपरान्त आप इस योग्य हो जायेंगे कि–

1. विद्यार्थियों की भाषा संप्रति एवं भाषागत कमियों एवं दोषों को पहचान सकेंगे।
2. विद्यार्थियों की भाषा संबंधित त्रुटियों में सुधार कर सकेंगे।
3. भाषा में होने वाली त्रुटियों तथा अशुद्धियों के कारणों को जान सकेंगे।
4. विद्यार्थियों की भाषा संप्रति में विभिन्न उपचारात्मक कार्यों के माध्यम से सुधार कर सकेंगे।

12.3 निदानात्मक परीक्षण एवं उसके चरण

निदान शब्द एक चिकित्सा की प्रक्रिया है जिसके द्वारा चिकित्सक किसी बीमारी के संभावित कारणों की पहचान करता है। उनके लक्षणों को जानकर एक सटीक निष्कर्ष तक पहुंचता है तथा उपचार करता है। यह शब्द ग्रीक भाषा के मगेनोसिस से लिया गया है जिसका अर्थ है ज्ञान। इस प्रकार निदान का अर्थ है, किसी समस्या के कारणों को जानकार उसके उपचार तक पहुंचना। शिक्षा के क्षेत्र में भी विद्यार्थियों को उनके शैक्षिक स्वास्थ्य एवं संप्राप्ति से जुड़ी अनेक समस्याएं होती हैं। जब विभिन्न विधियों के माध्यम से उनके शैक्षिक स्वास्थ्य एवं संप्राप्ति से जुड़ी समस्याओं का निदान किया जाता है तो हमें शैक्षिक उपचार या शैक्षिक निदान कहते हैं। शिक्षा में निदानात्मक परीक्षण एक प्रकार का पूर्ण मूल्यांकन है जो शिक्षक को छात्र के विषयवस्तु को समझने तथा साथ ही

उसके ज्ञान की सीमा को जानने में सक्षम बनाता है। अर्थात किसी भी छात्र के ज्ञान को प्राप्त करने या संभावित सीखने के अंतराल को पहचान करने के लिए उसके लिए एक सुचारू प्रत्यय निर्मित करता है।

सामान्य रूप से यह माना जाता है कि किसी भी कक्षा में सभी विद्यार्थियों की शैक्षिक प्रगति एक सी नहीं होती। प्रत्येक विद्यार्थी एक दूसरे से अलग अथवा भिन्न होता है। यही कारण है कि अध्यापक को यह जानना चाहिए कि अलग–अलग विद्यार्थियों का शैक्षिक स्तर क्या है? उनको सीखने के संदर्भ में क्या–क्या समस्या आ रही हैं, जिनके कारण वह संप्राप्ति के उच्च स्तर पर नहीं पहुंच पा रहा। इन कठिनाइयों को जानने पता लगाने के लिए जिस प्रक्रिया की सहायता ली जाती है अथवा जिन परीक्षणों का प्रयोग किया जाता है, उन्हें ही शैक्षणिक निदान कहते हैं, निदानात्मक परीक्षण कहते हैं।

किसी भी भाषा की संप्राप्ति भाषा शिक्षण की विभिन्न कौशलों के समुचित प्रयोग एवं ज्ञान के माध्यम से की जाती है। शुद्ध सुनना, शुद्ध बोलना, शुद्ध लिखना और शुद्ध पढ़ना। यह चार भाषा कौशल है जिनमें होने वाली त्रुटियां भाषा संप्राप्ति को प्रभावित करती है। चारों कौशलों की त्रुटियां अलग–अलग प्रकार की होती है जिन्हें पहचाना एक महत्वपूर्ण कार्य है क्योंकि बिना इन्हें पहचाने अध्यापक विद्यार्थी में अपेक्षित सुधार नहीं कर सकता। शैक्षणिक निदान इस हेतु भी महत्वपूर्ण माना जाता है। भाषा शिक्षण के क्षेत्र में विद्यार्थियों की भाषा से संबंधित जो भी अयोग्यता या कमजोरी है, उसका ज्ञान करना, उससे संबंधित कारणों की खोज करना तथा उनके आधार पर सुधार करने हेतु उपाय करना ही निदानात्मक शिक्षण का उद्देश्य है जिसके माध्यम से विद्यार्थियों की भाषा क्षमता विकास हो और उनकी भाषा कुशलता में वृद्धि हो।

भाषा व्यक्ति के विचारों को संप्रेषित करने का माध्यम है। प्रत्येक भाषा की अपनी विशिष्ट संरचना होती है। उसका व्याकरण होता है तथा उस भाषा के अपनी व्याकरण के नियम होते हैं। इन व्याकरणिक नियमों का पालन करना ही उसका मानकीकरण कहा जाता है। अर्थात प्रत्येक भाषा के अपने मानक होते हैं जो उस भाषा से संबंधित समाज द्वारा सर्वमान्य एवं स्वीकृत होते हैं। भाषा शिक्षण में निहित निदान की सर्वाधिक संकल्पना भाषा के इसी मानक स्वरूप से जुड़ी होती है। जब हम भाषा कौशलों की चर्चा करते हैं तो वास्तव में हम भाषा के कौशलों के व्यवहार के निश्चित मानकों के विषय में चर्चा करते हैं। भाषा के नैदानिक परीक्षण एवं उपचारात्मक परीक्षण का मूल उद्देश्य विद्यार्थी में पाई जाने वाली भाषायी त्रुटि तथा उनके द्वारा की जाने वाली भाषायी गल्तियों में मानकों का उपयोग कर उनके आधार पर उनमें सुधार कर उनके भासिक व्यवहार का निदान करना है, जिससे उन्हें अपेक्षित सुधार हो सके। इस प्रकार शैक्षिक निदान की प्रक्रिया को हम विभिन्न चरणों में विभाजित कर सकते हैं।

- भाषाई त्रुटियों की पहचान
- त्रुटियों के कारणों को जानना
- त्रुटियों का निदान

12.3.1 भाषाई त्रुटियों की पहचान

नैदानिक परीक्षण एवं उपचारात्मक शिक्षण की प्रक्रिया को पहले चरण का सम्बन्ध विद्यार्थियों में होने वाली भाषायी त्रुटियों की पहचान करना से होता है। अर्थात भाषा की शुद्धता जो विभिन्न कौशलों में प्रदर्शित होती है, यह प्राथमिकता से की जा सकती है। भाषा कौशल के अंतर्गत शुद्ध सुनना आता है। इन चारों कौशलों में से किसी भी कौशल में यदि कोई त्रुटियां या कमी रहती है तो वह कौशल पूर्ण नहीं माना जाता। अतः इन त्रुटियों को जानना अत्यंत आवश्यक होता है। यह ध्यान देने योग की बात है कि प्रत्येक कौशल की त्रुटियां भी अलग–अलग होती हैं। अतः भाषा के क्षेत्र में शैक्षणिक निदान करने के लिए अलग–अलग कौशलों से संबंधित त्रुटियों की पहचान करना आवश्यक होता है। इन त्रुटियों का पता लगाने के लिए निदानात्मक परीक्षण एक प्रयोग किया जाता है।

उपरोक्त गद्यांश के सस्वर वाचन में विद्यार्थी द्वारा सामन्यतः की जाने वाले त्रुटियों के अतिरिक्त भी त्रुटियां की जाने के संभावनाएं होती है जैसे– वाचन की गति, विराम चिन्हों पर विद्यार्थियों द्वारा की जाने वाली त्रुटियां। ये त्रुटियां भी विद्यार्थियों के भाषा कौशल को प्रभावित करती हैं क्योंकि विद्यार्थियों को शुद्ध बोलना, शुद्ध सुनना, शुद्ध पढ़ना और लिखना ही उसके भाषा कौशल को सशक्त बनाता है। सामान्यतः सस्वर वाचन की त्रुटियों को जानने के लिए छात्रों के पठन के समय निरीक्षण करके पठन के सही करने के लिए परीक्षण आदि की सहायता ली जा सकती है। इस प्रकार विद्यार्थियों द्वारा होने वाली त्रुटियों की पहचान विभिन्न भाषा संबंधित प्रश्नावली जो प्रमाणीकृत तथा अध्यापक निर्मित भी हो सकती है, प्रयोग कर भी हम विद्यार्थियों की त्रुटियां को जान सकते हैं।

इन त्रुटियां की पहचान के पश्चात प्रश्न यह उठता है कि विद्यार्थियों द्वारा होने वाली त्रुटियों के कारण को जानना है जिससे निदान एवं उपचार हो सके।

12.3.2 त्रुटियों के कारण को जानना

उपचारात्मक निदानात्मक प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण चरण है त्रुटियों के कारणों को जानना। अलग–अलग भाषाएं कौशल की त्रुटियां भी अलग–अलग हो सकती हैं इसलिए उनके कारण भी अलग अलग हो सकते हैं ।

अस्वस्थता – विद्यार्थियों की शारीरिक अस्वस्थता उसके भाषाई कौशल को प्रभावित करती है।

रुचि का अभाव – कुछ विद्यार्थियों में भाषा के प्रति रुचि नहीं होती जिसमें वे पठन में गम्भीरता नहीं रखते हैं।

ज्ञानेन्द्रिय दोष – ज्ञानेंद्रियों में दोष भी भाषा कौशल को प्रभावित करता है।

बौद्धिक मंदता – भाषा कौशल पर बुद्धि के मंद होने का भी प्रभाव पड़ता है क्योंकि यह विद्यार्थियों को सीखने को प्रभावित करता है।

अभ्यास की कमी – पठन का कम अभ्यास भी भाषा कौशल की त्रुटियां का एक कारण है

मानसिक व संवेगात्मक तनाव – भाषा त्रुटियों में मानसिक एवं संवेगात्मक तनाव भी एक कारण होता है जिससे विद्यार्थी त्रुटियां करता है ।

प्रतिकूल परिवेश – किसी भी भाषा को सीखने का एक उचित परिवेश होता है यदि विद्यार्थियों को उचित परिवेश नहीं प्राप्त होता तो वह भाषाई त्रुटियां करता है।

पारिवारिक या सामाजिक पृष्ठभूमि – अलग–अलग क्षेत्र में भाषा को बोलने के और शब्दों के प्रयोग करने की पद्धति अलग–अलग होती है, यह भी कारण है जिससे विद्यार्थियों में भाषाई त्रुटियां प्राप्त होती हैं ।

दाहिने के स्थान पर बाय हाथ से लिखना – भाषाई त्रुटि में यह भी एक कारण माना जाता है जिसके कारण विद्यार्थी त्रुटियां करता है।

अन्य शरीरिक अक्षमताएं – भाषा कौशल में त्रुटियां का कारण शारिरिक अक्षमताएं जैसे दृष्टि दोष, कटे हुए ओष्ठ का होना, जिह्वा दोष या अन्य विकार होते हैं जिनके कारण विद्यार्थी में भाषाई त्रुटियां होती हैं।

उपरोक्त सभी कारण छात्र के भाषागत त्रुटियों को प्रभावित करते हैं जिससे अध्यापक उन त्रुटियों को जानकर उसका निदान करें, उपचार करें। सामन्य रूप से शारीरिक कारणों से होने वाली त्रुटियां का समाधान कक्षा में करना कठिन होता है। भाषाई त्रुटि में जो सबसे प्रमुख कारण है वह है पढ़ने के अभ्यास में कमी है। पठन में होने वाले अभ्यास की कमी के कारण उनकी रुचि का न होना, शारीरिक या संवेगात्मक कारण कुछ भी हो सकता है तथा अन्य पूर्व में बताए गए कारण ही वो भी हो सकते हैं इसलिए त्रुटिपूर्ण पाठन अथवा पठन का निदान करने हेतु सर्वप्रथम अध्यापक को जानना होगा कि छात्र को विषय पढ़ने में रुचि क्यों नहीं है। इस प्रकार अलग–अलग कौशल में होने वाले त्रुटियों के उपचार एवं निदान के लिए विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण अपनाना चाहिए ।

12.3.3 त्रुटियों का निदान

शैक्षणिक निदान का तीसरा चरण हैं त्रुटियों का निदान करना। जिसके लिए अध्यापक उपचारात्मक कार्य अथवा नैदानिक कार्य की सहायता लेता है जिसमें विद्यार्थी में होने वाली भाषाई त्रुटि को दूर कर सके तथा छात्र के भाषा कौशल को सुव्यवस्थित एवं संगत करता है।

बोध प्रश्न

टिप्पणी :

क) नीचे दिए गए बोध प्रश्नों के उत्तर दीजिए।
ख) इकाई के अंत में दिए गए बोध प्रश्नों के उत्तर से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

4. नैदानिक परीक्षण किसे कहते हैं?

....

....

5. भाषाई त्रुटि के किन्हीं पांच कारणों को लिखिए।

....

....

6. शैक्षणिक निदान के चरण कौन–कौन से हैं?

....

....

12.4 नैदानिक/उपचारात्मक शिक्षण

विद्यार्थियों की सीखने संबंधी कठनाई का पता लगाने के लिए शैक्षणिक निदान की क्रिया तथा इन कठिनाइयों को दूर करते हुए शिक्षण कार्य करने को उपचारात्मक शिक्षण कहते हैं। सत्यता यह है कि दोनों ही प्रक्रिया साथ–साथ होती रहती है और अध्यापक अपने शिक्षण के समय दोनों ही क्रियाएं साथ में करता है । अध्यापक द्वारा किया जाने वाले यह कार्य मात्र ऐसे ही छात्रों के हित के लिए नहीं होता जो अधिक अशुद्धियां करते हैं वरन यह कार्य ऐसे विद्यार्थियों की भी सहायता करता है जिनमे भाषाई दृष्टि में तो कोई दोष नहीं होता परंतु अपनी भाषा को और अधिक परिष्कृत करना चाहते हैं। यह प्रक्रिया जहां नैदानिक एवं उपचारात्मक है वही भाषा कौशल के विकास में भी सहायक है।

उपचारात्मक शिक्षण में जहां त्रुटियों का निवारण है किया जाता है वहीं उन आचार, व्यवहारों को सिखाता भी रहता है जो भाषा के दृष्टि से आवश्यक है और भाषा – कौशल के लिए जिन्हे सीखना आवश्यक होता है।

12.4.1 नैदानिक/उपचारात्मक शिक्षण के उद्देश्य

भाषाई कौशल के विकास के आधार पर उपचारात्मक शिक्षण के विभिन्न उद्देश्य स्वीकार किए जा सकते हैं–

- त्रुटियों अथवा कमियों के पहचान करना।
- त्रुटियों अथवा कमियों का निराकरण करना।
- भाषा का परिमार्जन करना।
- भाषागत अधिगम में आने वाली अक्षमताओं को दूर करना।

- विद्यार्थियों को उचित दिशा निर्देश कर उनके विकास का मार्ग प्रशस्त करना।
- विभिन्न कौशलों में सीखने के प्रक्रिया के मार्ग में आने वाली चुनौतियों को देखना, समझना और उन त्रुटियों को दूर करना ।
- भाषाई त्रुटियों को सुधारना।

इन उद्देश्यों का ध्यान से देखने पर यह ज्ञात होता है कि यह क्षेत्र निदान एवं उपचार दोनों के साथ संयुक्त रुप से है। इसलिए शैक्षणिक निदान के पश्चात उपचार और उपचार के पश्चात उस उपचार की प्रभावशीलता का आकलन कर आवश्यकतानुसार पुनः परीक्षण, निदान और उपचार की प्रक्रिया चलती रहती है। इसलिए कदाचित भाषा शिक्षण के अभ्यास को महत्वपूर्ण माना गया है।

12.4.2 नैदानिक/उपचारात्मक शिक्षण की विधियां

भाषा शिक्षण में विद्यार्थियों की भाषा संबंधी अशुद्धियों को दूर करने के लिए दो विधियों का प्रयोग किया जाता है–

(क) व्यक्तिगत विधि

(ख) सामूहिक विधि

(क) व्यक्तिगत विधि – उपचारात्मक शिक्षण के अंतर्गत प्रयोग की जाने वाली व्यक्तिगत विधि में विद्यार्थियों की व्यक्तिगत विभिन्नता को ध्यान में रखकर उसके निदान के लिए प्रयास किया जाता है। इसके लिए अध्यापक का यह विशेष कर्तव्य है कि वह जिस विद्यार्थी का उपचार करने जा रहा है उसकी कठिनाइयों तथा समस्याओं को जाने तथा उसकी विभिन्न परिस्थितियों से अवगत रहे। व्यक्तिगत उपचार का एक महत्वपूर्ण अंग है जिस छात्र का उपचार किया जा रहा है वह भयमुक्त हो जथा उसके साथ प्रेम एवं सहानुभूति का व्यवहार किया जाना चाहिए। साथ ही अध्यापक को यह भी ध्यान रखना अत्यंत आवश्यक है की छात्र की त्रुटियों के आधार पर उसका निदान करना चाहिए तथा यह ध्यान रखना चाहिए कि विद्यार्थी पर किसी भी प्रकार का कोई मनोवैज्ञानिक दबाव न पड़े।

(ख) सामूहिक विधि – जब सभी विद्यार्थीयों का एक साथ, एक स्थान पर उपचार किया जाता है तो वह सामूहिक उपचार कहलाता है। सामान्यतया कुछ ऐसी त्रुटियां अथवा अशुद्धियां होती हैं जो अधिकांश विद्यार्थी द्वारा की जाती है। यह अशुद्धियां अथवा त्रुटियां अध्यापक विद्यार्थियों की उत्तर पुस्तिकाओं का निरीक्षण करके, उनके वाचन आदि को देखकर जानता है जो छात्र द्वारा पूर्व से की जा रही है। सामूहिक उपचार तथा निदान की प्रक्रिया को अपनाए जाने का यह लाभ है कि विद्यार्थियों की समस्याओं का एक साथ ही निदान भी संभव हो जाता है। सामूहिक निदान में अध्यापक अपने विद्यार्थीयों की भी सहायता ले सकता है। विद्यार्थी परस्पर एक दूसरे की त्रुटियों को जानकर उनको समझ कर उसके निदान के प्रयास हेतु अध्यापक की सहायता करते हैं। सामूहिक विधि में यह ध्यान रखना चाहिए कि विद्यार्थियों के साथ प्रेम और सहानुभूति पूर्वक व्यवहार करें जिससे वह निःसंकोच अपनी अशुद्धियों को दूर कर सके।

इन दोनों ही विधियों के लिए विभिन्न युक्तियों का आश्रय लिया जाता है

- निरीक्षण

- साक्षात्कार
- संचित अभिलेख
- शारीरिक परीक्षण
- बुद्धि परीक्षण
- निदानात्मक परीक्षाएं

इन युक्तियों अथवा माध्यम में अध्यापक नैदानिक शिक्षण कर विद्यार्थियों की त्रुटियों तथा अशुद्धियों को दूर कर सकता है।

12.4.3 शैक्षणिक निदान एवं उपचारात्मक शिक्षण का महत्व

- विद्यार्थियों की कठिनाई का ज्ञान हो जाता है।
- कठिनाई का ज्ञान होने पर उस कठिनाई को दूर करने का प्रयास किया जा सकता है।
- कठिनाइयों को दूर करने में शिक्षण प्रक्रिया प्रभावशाली होती है।
- विद्यार्थियों में आत्मविश्वास बढ़ता है।
- विद्यार्थियों के भाषा कौशल का विकास होता है।
- विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का विकास होता है।
- विद्यार्थियों में विषय में संबंधित अरुचि समाप्त होती है।

बोध प्रश्न

टिप्पणी :

क) नीचे दिए गए बोध प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

ख) इकाई के अंत में दिए गए बोध प्रश्नों के उत्तर से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

4. उपचारात्मक शिक्षण किसे कहते हैं?

   ....

   ....

5. उपचारात्मक शिक्षण के कोई चार उद्देश्य बताइए।

   ....

   ....

6. उपचारात्मक शिक्षण की विधियों के नाम बताइए।

   ....

   ....

12.4.4 नैदानिक तथा उपचारात्मक शिक्षण के कार्य

पूर्व में यह बताया जा चुका है कि नैदानिक तथा उपचारात्मक कार्य एक साथ चलने वाली प्रक्रिया है अर्थात दोनों एक ही सिक्के के दो पहलू हैं अर्थात अध्यापक अपने शिक्षण प्रक्रिया में निदान तथा उपचार कार्य दोनों ही करता चलता है। इस कार्य के मुख्य अंग है –

अध्यापक द्वारा विद्यार्थियों की त्रुटियों को जानना

अध्यापक द्वारा विद्यार्थियों के द्वारा की जाने वाली भाषाई अशुद्धियों को जानने में सफल हो जाता है तथा किन विद्यार्थियों को किस प्रकार का नैदानिक अथवा उपचारात्मक कार्य देना है अथवा उनको कराना है यह तय करता है। अध्यापक द्वारा यह भी निर्णय लिया जाता है कि यह उपचारात्मक कार्य व्यक्तिगत विधि से किया जाना है अथवा सामूहिक विधि से।

उपचारात्मक अभ्यास

भाषाई कौशल के ज्ञान एवं त्रुटियों को, अशुद्धियों को दूर करने के लिए विद्यार्थियों से दो माध्यम से अभ्यास करवाया जाता है

- भाषिक माध्यम (भाषा तत्वों द्वारा)
- आभाषिक माध्यम (यंत्रों द्वारा)

भाषिक माध्यम– इसका अर्थ है भाषा के तत्वों द्वारा विद्यार्थियों के भाषा संबंधी अशुद्धियां को दूर करना अर्थात उनके भाषाई स्तर में सुधार लाना। जैसे अध्यापक द्वारा श्रुतलेख का प्रयोग, शुद्ध वर्तनी सिखाने के लिए उच्चारण सुधार, अध्यापक द्वारा प्रयुक्त शब्दों को सुनकर उनका अनुसरण करना, लिखावट सही करने के लिए अनुलेख तथा सुलेख आदि का प्रयोग तथा वाक्य संचयन के लिए व्याकरण के नियम एवं नियम का ज्ञान कराना, विद्यार्थियों में पहचान अंतर करने तथा तुलना करने की योग्यता विकसित करना।

अशाब्दिक माध्यम –उपचारात्मक कार्य में अभ्यास के लिए यंत्रों का भी प्रयोग किया जाता है जैसे– दृश्य श्रव्य माध्यम, श्रव्य माध्यम। दृश्य माध्यम के अंतर्गत चार्ट, श्यामपट्ट, स्लाइड प्रोजेक्टर आदि का प्रयोग किया जाता है तो श्रव्य माध्यम में टेप रिकॉर्डर, रेडियो आदि का प्रयोग वर्तनी को सुधारने में किया जाता है। दृश्य श्रव्य माध्यम के अंतर्गत टीवी, कंप्यूटर, फिल्में आदि आते हैं जिनका प्रयोग भाषा के सुधार हेतु किया जाता है।

भाषा कौशल के विकास हेतु उपचारात्मक कार्य

जीवन के दैनंदिन व्यवहार में प्रत्येक व्यक्ति भाषा कौशल का प्रयोग करता है चाहे वह अपने निज के कार्य हो या सामाजिक कार्य इसलिए भाषा कौशलों का पूर्ण ज्ञान प्रत्येक विद्यार्थी के लिए आवश्यक होता है। भाषा कौशल के अंतर्गत चार प्रकार के कौशल आते हैं –

श्रवण– सुनना

पठन– पढ़ना

कथन/वाक् – शुद्ध बोलना

लेखन – शुद्ध लिखना

भाषा कौशल का विकास साहित्य अध्ययन एवं अभ्यास पर निर्भर करता है। अपने स्वरूप, प्रकृति एवं प्रयोग में प्रत्येक कौशल अलग–अलग है परंतु सब एक दूसरे से जुड़े हैं। अलग–अलग कौशलों को सीखने की समस्याएं भी विद्यार्थियों के लिए अलग–अलग होती हैं। इसलिए कौशलों में आई अशुद्धियां अथवा त्रुटियों के उपचार की युक्तियां भी अलग–अलग होती है।

श्रवण कौशल से तात्पर्य है सुनना। शरीर का मुख्य अंग कान है जब कोई व्यक्ति कुछ भी बोलता है तो शब्द ध्वनियों के माध्यम से कर्णेद्रिय तक पहुंचते हैं और व्यक्ति उस शब्द को सुनकर उसका अर्थ ग्रहण कर लेता है। अर्थात यदि वक्ता ने शुद्ध बोला होगा तो श्रोता उस शब्द को सुनकर सही अर्थ को प्राप्त कर सकेगा। परंतु कभी–कभी श्रवण में कुछ कठिनाइयां आती हैं जिसके कारण श्रवण कौशल पर प्रभाव पड़ता है। यह श्रवण बोध निम्न दोषों के कारण प्रभावित होते हैं–

- ध्वनि का भेद करने में अक्षम होना
- कर्णेन्द्रीय में विकार होना
- स्पष्ट वाचन न होना
- बालाघात का उचित न होना
- विराम चिन्हो का प्रयोग सही रूप से ना करना
- प्रसंग से संबंधित शब्द को न समझ कर अर्थ का अनर्थ करना

उदाहरण –

शिक्षण के समय कक्षा में विद्यार्थियों द्वारा की जाने वाला कुछ त्रुटियां या अशुद्धियां प्राप्त होती हैं जो कदाचित उनके शुद्ध न सुनने के कारण होती हैं अथवा उन वर्णों की ध्वनियों में भेद न कर पाने के कारण होती है जिन्हें अध्यापक को चाहिए कि वह इन त्रुटियों का तुरंत निदान करें।

क्ष वर्ण को सुनकर छ अथवा च्छ का प्रयोग करना। छात्र की च्छ और छ में भेद करने में असफल रहना।

जैसे कक्षा को कच्छा, क्षत्रिय को छत्रिय, क्षमा को छमा या शमा कहना।

उपचार–

क्ष से बने हुए शब्दों को सुनना और क्ष वर्ण किस स्थान से कंठ से निकलता है उसको बताना साथ ही छात्रों द्वारा क्ष के स्थान पर प्रयोग किए जा रहे वर्ण से उत्पन्न उच्चारण में अंतर बताते हुए अभ्यास कराना। जब शिक्षार्थी बार–बार वह शब्द सुनेगा तो वह इस अंतर को समझने का प्रयास करेगा।

परीक्षण –

शिक्षक इन ध्वनियों को पहचानने का आदेश देगा और छात्रों के समक्ष कुछ शब्दों को रखेगा

जैसे –

कक्षा – कच्छा

क्षत्रिय	छत्रिय

निदान –

श – स ध्वनियों को सुनने में श को स सुनते है

उपचार –

श से बने कुछ शब्द सुनने का आदेश देगा।

इन शब्दों को

शाम	–	साम
शारदा	–	सारदा
शर्बत	–	सरबत
शहनाई	–	सहनाई
शूल	–	सूल

श से बने शब्दों को सुनना और श वर्ण मुख के किस स्थान से निकलता है यह बताना साथ ही छात्रों द्वारा श के स्थान पर किए प्रयोग किया जा रहे वर्ण से उसका उच्चारण अंतर बताते हुए शुद्ध सुनने का अभ्यास कराना। जब शिक्षार्थी बार–बार वह शब्द सुनेगा तो वह इस अंतर को समझने का प्रयास करेगा।

परीक्षण शिक्षक इन ध्वनियों को पहचानने का आदेश देगा और छात्रों को समक्ष कुछ शब्द रखेगा।

जैसे –

- शर्म
- शंभू
- आशीर्वाद
- आशीष
- शत्रु
- शांति

इसी प्रकार सभी श्रवण त्रुटियों को शब्द, वर्ण वाक्य सभी स्तर पर सुन कर, उन्हें पहचान कर अंतर कर करने की क्षमता को विकसित किया जा सकता है।

श्रवण कौशल हेतु यंत्रों का प्रयोग

विद्यार्थियों के श्रवण अशुद्धियों को दूर करने के लिए उन्हें शुद्ध श्रवण करना आवश्यक है। अध्यापक के साथ ही यंत्रों अर्थात टेप और हेडफोन के माध्यम से अध्यापक भाषा प्रयोगशाला में विद्यार्थियों को ध्वनि विभेद अर्थात ध्वनि में अंतर करने का अभ्यास कराया जाना चाहिए। कक्षा में सस्वर वाचन को सुनना, टीवी रेडियो आदि को सुनना श्रवण कौशल को विकसित करने में सहायता कर सकता है।

वाक् कौशल (बोलने का कौशल)– वाक् कौशल को बोलने का कौशल, कथन कौशल आम व्यक्ति कौशल, भाषण कौशल आदि भी कहते हैं। इसका स्वरूप भी ध्वनात्मक होता है। ध्वनियां हमारे कंठ, ओष्ट, जिव्हा और मुख से निकलती हैं। जिन्हें हम ज्ञानेंद्रियाँ भी कहते हैं। वाक् कौशल अर्थात शुद्ध बोलना हमारे अभिव्यक्ति की सशक्तता को दिखाता है। मौखिक अभिव्यक्ति भी हमारे विचारों के आदान–प्रदान का माध्यम है। वार्तालाप, व्याख्यान, आदेश, प्रवचन, निर्देश तथा भाषण आदि सभी इसके रूप हैं। भाषण कौशल या वाक् कौशल में त्रुटियां निम्न प्रकार की हो सकती हैं –

- शब्दों का गलत उच्चारण
- ध्वनियों का सही प्रयोग न करना
- बालाघात का प्रयोग यथास्थान न होना
- विराम चिन्हो का प्रयोग यथास्थान न करना
- व्याकरण के नियमों का उल्लंघन हो जाना
- शब्दों को अनुचित स्थान पर प्रसंग से अलग प्रयोग करना
- शब्दों के शुद्ध उच्चारण पर ध्यान न देना

शिक्षक छात्रों के साथ कक्षा में तथा कक्षा के बाहर भी उनकी मौखिक भाषा को उनके व्यवहारों का निरीक्षण कर और उनकी अशुद्धियों को संकलन कर सकते हैं। उदाहरण– छात्र फ, घ, श, स, क्ष आधा श (इ), बड़ी ' ई ' तथा छोटी इ की मात्राओं के उच्चारण में त्रुटियां करते हैं जैसे विद्यार्थी पर फ को क, घ को ध, श को स, क्ष को च्छ, आधे र को अर, ती को ति, वि को वी आदि बोलते है।

उपचार अभ्यास

शिक्षक द्वारा बोलकर अभ्यास करना होगा–

- फल – फल
- फूल – फूल
- रवी – रवि
- गती – गति
- सूल – शूल
- इस्नान – स्नान
- इश – इस

- उशका – उसका

विद्यार्थी शिक्षक के उच्चारण को सुनकर दोनों शब्दों की ध्वनि में , मात्राओं में अंतर को समझ कर सही उच्चारण करेगा।

उपचार

शिक्षक वाक्य में विभिन्न शब्दों का प्रयोग कर उनकी भाषा की समझ को विकसित करेगा। जैसे–

- बाग में फूल खिलते हैं
- आज रविवार है
- फल खाने से स्वास्थ्य अच्छा होता है
- शमशान में दाह संस्कार होता है
- कक्षा में शांत होकर बैठना चाहिए
- यह उसकी कलम है
- इस पुस्तक में गति के नियम लिखे हैं

(सभी छात्र इसको दोहराएंगे)

इस प्रकार अन्य उच्चारण संबंधी दोष का उपचार किया जाना चाहिए।

वाक् कौशल के लिए यंत्रों का प्रयोग–

भाषा शिक्षक की यह सर्वप्रथम योग्यता मानी जाती है कि उसका उच्चारण मानक उच्चारण हो, वह शुद्ध उच्चारण करें। यदि अध्यापक में यह गुण है तो शिक्षक ही उच्चारण दोष को सही कर सकता है अन्यथा विद्यार्थी को उसकी समस्त शिक्षण सामग्री टेप करके उसे बार–बार सुनने को कहा जा सकता है, जिससे वह बार–बार सुनकर अपनी त्रुटियों को दूर करते हुए अपनी मौखिक अभिव्यक्ति को सुधार सकता है। इस कार्य हेतु भाषा प्रयोगशाला भी सहायक सिद्ध होती है जिसमें छात्र के दोषों को मनोवैज्ञानिक एवं व्यवस्थित रूप से परिमार्जित किया जाता है।

पठन कौशल–

पठन का अर्थ है। पढ़ना यहां पढ़ना मात्र पढ़ना नहीं वरन लिखित सामग्री को समझना भी है। पठन दो प्रकार से किया जा सकता है –

सस्वर और मौन रहकर। पठन कौशल में नेत्र और मुख दोनों की ही क्रियाशीलता आवश्यक होती है और यही पठन कौशल को प्रभावित भी करते हैं। सामान्यत पठन कौशल में की जाने वाली त्रुटियां हैं –

- पठन को गंभीरता से न ग्रहण करना
- अशुद्ध उच्चारण के साथ पढ़ना
- पढ़ने में आरोह अवरोह और विराम चिन्हो का ध्यान न रख कर पढ़ना

- पाठ को भली भांति समझ कर न पढ़ना पढ़ना
- उचित बालाघात और भाव से न पढ़ना

यदि हम पठन कौशल की चर्चा करें तो पठन कौशल में त्रुटियां या अशुद्धियां विद्यार्थियों के द्वारा अक्सर पाठ से ज्ञात होती है। इसका निदान एवं उपचार दोनों ही सरल है परंतु मौन पाठ में क्योंकि छात्र बिना बोले पढता है इसलिए इसका निदान कठिन है। पठन में संभावित त्रुटियां या अशुद्धियां निम्नवत होगीं –

- कठिन शब्दों को सही तरीके से न पढ़ना
- पर्यायवाची अथवा विलोम शब्दों को न बताया जाना
- प्रश्नों का उत्तर न दे पाना
- मौन पाठ करते समय ध्यान का एकाग्र न हो पाना
- पाठ सामग्री को न समझ पाना

उदाहरण

- विद्यालय – विधालय
- स्थान – अस्थान
- राजेंद्र– राजिंदर
- अमरूद – अरमूद
- गृहकार्य – ग्रहकार्य

उपचार –

इन उपयुक्त उदाहरण के माध्यम से विद्यार्थियों को अभ्यास कराया जाएगा जिसमें उनके निवारण प्रयास किया जाएगा।

पठन कौशल में यंत्रों का प्रयोग –

शुद्ध पठन के लिए शब्दों और ध्वनियों का शुद्ध ज्ञान आवश्यक है जो अभ्यास द्वारा ही प्राप्त होता है। ओवरहेड प्रोजेक्टर द्वारा लिखित सामग्री को पारदर्शियों पर प्रस्तुत किया जा सकता है। पठन के लिए श्यामपट्ट पर भी लिख कर उसके शब्दों का अभ्यास कराया जा सकता है जो सरल और सस्ता उपाय है। पाठ्य पुस्तकों के भी द्वारा पठन अभ्यास अत्यंत उपयोगी सिद्ध हो सकता है।

लेखन कौशल –

लेखन कौशल ध्वन्यात्मक भाषा अर्थात मौखिक भाषा को लिपिबद्ध करने से संबंधित है। व्यक्ति जो भी शब्द अपने भावों के संप्रेषण के लिए प्रयोग करता है उन्हें सार्थक भाषा में लिखना ही लेखन कौशल है। लेखन कौशल के अंतर्गत अनेक क्रियाएं आती हैं जैसे लिपि चिन्हों को मिलकर संयुक्ताक्षर एवं शब्द लिख कर लिपि चिंतन को

मानक के अनुसार सुंदर सुडोल बनाकर लिखना। इन सब के साथ ही निबंध, कहानी लिखकर, पत्र पत्रिकाओं में लिखना ये सभी लेखन कौशल के उदाहरण है।

लेखन कौशल में संभावित त्रुटियां अथवा अशुद्धियां निम्नवत हो सकती हैं

- वर्तनी की त्रुटियां होना
- पार्टी सामग्री अथवा लेख का स्पष्ट न होना
- व्याकरण नियमों का उल्लंघन होना
- विराम चिन्हो का उचित प्रयोग न करना

उदाहरण –

निदान शिक्षार्थी अज्ञानतावश वर्तनी की अशुद्धि कर सकते हैं

शुद्ध शब्द –	अशुद्ध शब्द
गृहकार्य	ग्रहकार्य
हुए	हुये
पढ़ाए	पढ़ाये
दिए	दिये
चाँदनी	चांदनी
विद्यालय	विद्यालय

उपचार –

अध्यापक द्वारा इन त्रुटियों और अशुद्धियों को दूर करने के लिए शिक्षार्थियों को श्रुतलेख अनुलेख सुलेख आदि लिखने को प्रेरित करना चाहिए और उनसे लिखने का अभ्यास करवाया जाना चाहिए।

उदाहरण–

शिक्षार्थियों द्वारा संयुक्ताक्षरों के निर्माण में त्रुटि करना–

श्वास	शवास
विद्या	विदया
विज्ञान	विग्यान
उद्यम	उद्‌यम
त्रिसंध्या	तृसंध्या
आज्ञाकारी	आग्याकारी

इसमें प्रथम संयुक्ताक्षर मानक है जो शुद्ध शब्दों का वर्तनी का निर्माण करते हैं। छात्रों को इसके ज्ञान के लिए इसका व्याकरण एवं इन शब्दों के निर्माण की पद्धति को समझना चाहिए।

इस प्रकार से अध्यापक भाषा शिक्षण में आई हुई त्रुटियों अथवा अशुद्धियों को नैदानिक एवं उपचारात्मक कार्यों द्वारा संशोधित तथा शुद्ध किया जा सकता है।

बोध प्रश्न

टिप्पणी :

क) नीचे दिए गए बोध प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

ख) इकाई के अंत में दिए गए बोध प्रश्नों के उत्तर से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

7. श्रवण कौशल किन दोषों के कारण प्रभावित होता है?

....

....

8. लेखन में अशुद्धियों के क्या कारण है?

....

....

9. किसी एक कौशल की त्रुटि के निदान और उपचार का उदाहरण दीजिए।

....

....

12.5 सारांश

भाषा शिक्षण में शैक्षणिक निदान एवं उपचार की प्रक्रिया विद्यार्थियों में भाषाई त्रुटियों के निदान के लिए अपनाई जाती है। जिसमें अशुद्धियों की पहचान, कारण एवं निदान की प्रक्रिया सम्मिलित है। स्वस्थ्य परिवेश, मंदबुद्धि, अरुचि के कारण छात्रों के भाषा अधिगम में अनेक त्रुटियां, दोष एवं अशुद्धियां होती हैं। सामान्यतः यह त्रुटियां अन्य भाषा के प्रभाव एवं परिवेश के कारण होती हैं। इन त्रुटियों को दूर करने एवं भाषा कौशल का विकास करने के लिए, शुद्ध भाषा सीखने के लिए निदानात्मक परीक्षण एवं उपचारात्मक शिक्षण की व्यवस्था होनी चाहिए। इसी उद्देश्य से इस इकाई में उपचारात्मक शिक्षण का उद्देश्य, महत्व, त्रुटियों के कारण और प्रकार, निदानात्मक परीक्षण की प्रक्रिया, उपचारात्मक कार्य, अभ्यास हेतु उदाहरण देकर उपचार की पद्धति को स्पष्ट किया गया है जिसमें शिक्षार्थियों को भाषा को समस्त कौशलों का ज्ञान, भाषा तत्वों के शुद्ध प्रयोग, शब्दों के मानक स्वरूप एवं उनके प्रयोग को सीखा जा सके।

12.6 अभ्यास के प्रश्न

1. श्रवण दोष के कारणों को लिखिए।
2. पठन कौशल के प्रयोग किये जाने वाले यंत्रों का वर्णन कीजिए।

12.7 चर्चा के बिन्दु

1. उपचारात्मक शिक्षण की आवश्यकता पर चर्चा कीजिए।
2. लेखन में अशुद्धियों के कारणों पर चर्चा कीजिए।

12.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

1. नैदानिक परीक्षण व प्रशिक्षण है जिसके माध्यम से अध्यापक यह जानने का प्रयास करता है कि विद्यार्थी का शैक्षिक स्तर क्या है उसके सीखने में कठिनाई क्या है और वह अपने विषय के संप्रति के उच्च स्तर तक क्यों नहीं पहुंच पा रहा है
2. भाषाई त्रुटि के कारण निम्न हो सकते हैं
    - शिक्षार्थी की अस्वस्थता
    - स्वाध्याय में कमी
    - ज्ञानेंद्रिय में दोष
    - पारिवारिक सामाजिक पृष्ठभूमि
    - रुचि का अभाव
3. शैक्षणिक निदान के चरण
    - भाषाई त्रुटियों को पहचाना
    - त्रुटियों के कारण को जानना
    - त्रुटियों का निदान अथवा उपचार
4. विद्यार्थियों के सीखने संबंधी कठिनाई का पता लगाने के लिए शैक्षिक निदान को किया जाता है इन कठिनाइयों को दूर करते हुए शिक्षण कार्य करने को उपचारात्मक शिक्षण कहते हैं।
5. उपचारात्मक शिक्षण के चार उद्देश्य हैं
    - त्रुटियों अथवा कमियों की पहचान करना
    - तृतीय अथवा कर्मियों का निराकरण करना
    - भाषा का परिमार्जन करना
    - विभिन्न कौशलों के सीखने की प्रक्रिया के मार्ग में आने वाली चुनौतियों को देखना समझना और उन त्रुटियों को दूर करना
6. उपचारात्मक शिक्षण के मुख्य दो विधियां हैं–
    - व्यक्तिगत उपचारात्मक शिक्षण
    - सामूहिक उपचार आत्मक शिक्षण
7. श्रवण कौशल निम्न दोषों के कारण प्रभावित होता है
    - ध्वनियों का भेद न कर पाना

- कर्णेंद्रियों में विकार
- स्पष्ट वचन करना होना
- विराम चिन्ह का प्रयोग सही रूप से ना करना

8. लेखन कौशल में अशुद्धियां होने का कारण –

- वर्तनी की त्रुटि करना
- पाठ्य सामग्री अथवा लेखन स्पष्ट लिखा हुआ ना होना
- व्याकरण नियमों का उल्लंघन होना
- लिखने में अरुचि होना
- विराम चिन्हो का उचित प्रयोग न करना

9. **दोष का निदान**

- विद्यालय – विधालय
- स्थान – अस्थान
- राजेंद्र– राजिंदर
- अमरूद – अरमूद
- गृहकार्य – ग्रहकार्य

उपचार

- कारण बताना विभिन्न शब्दों के उदाहरण के माध्यम से उच्चारण कर दोष को ठीक करना

12.9 कुछ उपयोगी पुस्तकें

1. पांडे राम सकल, त्रुटि विश्लेषण सिद्धांत और व्यवहार, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा।
2. लाल रमन बिहारी, हिंदी शिक्षण, रस्तोगी पब्लिकेशन, मेरठ।
3. गुप्ता एस.पी., आधुनिक भाषा मूल्यांकन, शारदा पुस्तक भवन, प्रयागराज।
4. शर्मा, मार्तण्ड, हिंदी शिक्षण, शारदा पुस्तक भवन, प्रयागराज।
5. गुप्ता एस.पी.,अनुसन्धान संदर्शिका, शारदा पुस्तक भवन, प्रयागराज।

B.Ed.E-31
Pedagogy of Hindi
(हिन्दी का शिक्षणशास्त्र)

उ० प्र० राजर्षि टण्डन
मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज

खण्ड– 05

हिन्दी भाषा में अधिगम संसाधन

इकाई 13	अधिगम संसाधन : अर्थ, प्रकार, कार्य, निर्माण एवं उपयोग	181–188
इकाई 14	भाषा प्रयोगशाला और भाषा शिक्षक	189–197
इकाई 15	क्रियात्मक शोध और समुन्नयन कार्य	198–211

खण्ड – 05 : हिन्दी भाषा में अधिगम संसाधन

खण्ड परिचय

भाषा सार गर्भित शब्दों का एक समूह है जो व्यक्ति के व्यक्तित्व को संप्रेषण के माध्यम से प्रस्तुत करता है। एक शिक्षक का यह कर्तव्य है कि वह अपने छात्र के अधिगम में सहायक बने और उसे किस प्रकार ज्ञान का अर्जन कराया जाय इस पर विचार करे। जब भी हम अधिगम की बात करते हैं तो अधिगम संसाधनों की भी बात की जाती है। भाषा अधिगम के लिए अधिगम संसाधनों की एक महत्वपूर्ण भूमिका है। जिसके माध्यम से अध्यापक अपने शिक्षण कार्य को प्रभावशाली बनाता है साथ ही अधिकतम अर्जन छात्र कैसे करें इसमें भी वह सहायक होता है।

इस खण्ड में तीन इकाईयाँ हैं जो इस प्रकार हैं–

इकाई 13 : अधिगम संसाधनः अर्थ, प्रकार, कार्य, निर्माण एवं उपयोग

इकाई 14 : भाषा प्रयोगशाला और भाषा शिक्षक

इकाई 15 : क्रियात्मक शोध और समुन्नयन कार्य

इकाई 13 अधिगम के संसाधन का अर्थ, प्रकार, कार्य, निर्माण एवं उपयोग से सम्बन्धित है। जिसके अंतर्गत छात्र अधिगम के संसाधन किसे कहते हैं? वे कितने प्रकार के होते हैं? शिक्षण में उसका क्या कार्य है? उसका निर्माण कैसे किया जाए? शिक्षण प्रक्रिया में उसका उपयोग किस प्रकार हो? यह जानने का प्रयास करेंगे।

इकाई 14 भाषा प्रयोगशाला और भाषा शिक्षक से सम्बन्धित है। किसी भी भाषा को सीखने के लिए, उच्चारण सही करने के लिए आज हमें तकनीक की सहायता भी प्राप्त हो रही है। जिससे हम अपनी भाषा को अच्छा बना सकते हैं और एक भाषा शिक्षक यह कार्य भाषा प्रयोगशाला के माध्यम से कर सकता है। प्रस्तुत इकाई में छात्र भाषा प्रयोगशाला का स्वरूप क्या होता है? उसके कौन–कौन से उपकरण होते हैं तथा भाषा प्रयोगशाला की क्या उपयोगिता है? के विषय में विस्तृत अध्ययन करेंगे साथ ही हिन्दी भाषा शिक्षक के गुण, विशेषता एवं कौशलों का अध्ययन करेंगे।

इस खंड की इकाई 15 क्रियात्मक शोध एवं समुन्नयन कार्य से सम्बन्धित है। किसी भी विद्यार्थी को उसके अध्ययन के मार्ग में किसी प्रकार की रुकावट या बाधा उत्पन्न होने पर निदानात्मक कार्य के लिए क्रियात्मक शोध की सहायता अध्यापक लेता है। इस शोध के माध्यम से वह छात्र के शैक्षिक मार्ग में आने वाली विविध शैक्षिक बाधाओं को दूर करने का प्रयास करता है और इसके लिए वह समुन्नयन कार्य की सहायता लेता है। प्रस्तुत इकाई में क्रियात्मक अनुसंधान के विभिन्न चरण एवं सोपान का अध्ययन करेंगे। इस इकाई में हम क्रियात्मक अनुसंधान का अर्थ, परिभाषा, महत्व, आवश्यकता, अनुसंधान के विभिन्न सोपानों आदि का अध्ययन करेंगे साथ ही क्रियात्मक अनुसंधान की परिकल्पना समस्याओं की पहचान, उसकी योजना तथा मौखिक एवं क्रियात्मक अनुसंधान में अन्तर का अध्ययन करेंगे। क्रियात्मक अनुसंधान हेतु किस प्रकार की समस्याओं का चयन किया जाता है, उस पर भी चर्चा की गयी है।

इकाई 13 : अधिगम संसाधन : अर्थ, प्रकार, कार्य, निर्माण एवं उपयोग

इकाई संरचना

13.1 प्रस्तावना

13.2 इकाई के उद्देश्य

13.3 अधिगम संसाधन

13.4 हिन्दी भाषा शिक्षण में अधिगम संसाधन

13.5 सारांश

13.6 अभ्यास के प्रश्न

13.7 चर्चा के बिन्दु

13.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

13.9 कुछ उपयोगी पुस्तकें

13.1 प्रस्तावना

भाषा व्यक्ति के विचारों के अभिव्यक्ति का माध्यम है, जिसके द्वारा वह अपने अनुभव एवं भावनाओं को सुचारू रुप से परस्पर व्यक्त करने में समर्थ होता है। सामान्य रुप से भाषा के तीन रुप लिखित, मौखिक और सांकेतिक माने जाते हैं। इन तीनों प्रकार के रुपों में व्यक्ति अपने जीवन में बाल्यावस्था से लेकर सम्पूर्ण जीवन में कभी न कभी प्रयोग करता है। किसी भी भाषा को सीखना, भाषा अधिगम है अर्थात् भाषा का अनुशासन सीखना ही भाषा अधिगम है। व्यक्ति अपने विचारों को अभिव्यक्त करने तथा परिवार, समाज एवं परिवेश से सामंजस्य स्थापित करने के लिए जिस प्रक्रिया के द्वारा अपनी भाषाई क्षमता का विकास करता है वह प्रक्रिया भाषा–अधिगम कहलाती है। अधिगम संसाधन वे संसाधन है जिसके माध्यम से छात्र अमूर्त अवधारणाओं को मूर्त रुप देते हैं अर्थात् ऐसी सामग्रियाँ जिनका उपयोग प्रशिक्षक निर्देश को पूरा कराने और छात्रों के शैक्षिक लक्ष्यों की प्राप्ति कराने में करता है। जब इन संसाधनों का प्रयोग भाषा अधिगम के लिए किया जाता है तो वे भाषा–अधिगम संसाधन कहे जाते हैं।

हिन्दी भाषा में अधिगम संसाधन के रुप में भाषा प्रयोगशाला की महत्वपूर्ण भूमिका होती है जिसके माध्यम से शिक्षक छात्रों की भाषाई योग्यता विकसित करता है। साथ ही भाषा की उन्नति और समृद्धता के लिए भाषा की त्रुटियों को दूर करने के लिए क्रियात्मक अनुसंधान की भी सहायता अध्यापक लेता है जिसके माध्यम से सतत् मूल्यांकन द्वारा शिक्षक भाषाई कौशल को उन्नत बनाने में सफल होता है।

13.2 इकाई के उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप इस योग्य हो जायेंगे कि–

1. हिन्दी भाषा में अगिम संसाधन शब्द की व्याख्या कर सकेंगे।
2. अधिगम संसाधन के विभिन्न प्रकारों का वर्गीकरण कर सकेंगे।
3. अधिगम संसाधन का निर्माण कर सकेंगे।
4. शिक्षण अधिगम संसाधनों की पहचान कर सकेंगे।
5. उचित संसाधनों को चुनकर उनका उपयोग कर सकेंगे।

13.3 अधिगम संसाधन

सीखने की प्रक्रिया में सहयोगी सामग्री संसाधन कहलाती है। संसाधन, सामान्य रुप से हमारे पर्यावरण में उपलब्ध वह वस्तु है जिसका प्रयोग व्यक्ति अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए करता है। सांस्कृतिक रूप से इसकी मान्यता होनी चाहिए। सामान्य रुप से संसाधन दो प्रकार के होते है –

प्राकृतिक संसाधन (जैविक) और मानव निर्मित

प्राकृतिक रूप से जो संसाधन प्राप्त होते है उन्हें प्राकृतिक अथवा जैविक संसाधन कहते है तथा ऐसे संसाधन जो मानव ने निर्मित किये है उन्हें मानव निर्मित संसाधन कहते है। अधिगम संसाधन मानव निर्मित संसाधन है जिसके माध्यम से अध्यापक विद्यार्थियों को भाषा शिक्षण कराता है। जब हम अधिगम संसाधन की चर्चा करते है तो उसका अर्थ यह है कि 'ऐसे संसाधन जो बच्चों या विद्यार्थियों की अवधारणाओं के निर्माण में सहायक होते हैं एवं दक्षता को सुगम बनाते हैं। उनकी अमूर्त अवधारणाओं को मूत्तर्ता प्रदान करते हैं और उन्हें सीखने में सहायता प्रदान करते हैं। ऐसे संसाधन को हम अधिगम संसाधन कहते है। अधिगम संसाधन विभिन्न प्रकार के हो सकते है जैसे –

(क) श्रव्य संसाधन : जिन संसाधनों से सुनने की भावना विकसित होती है उन्हें श्रव्य अधिगम संसाधन कहते है। ये उन प्रतिक्रियाओं से सम्बन्धित होते है जो श्रव्य से जुड़ी होती है। जैसे रेडियो, टेपरिकार्ड्स, माइक्रोफोन आदि।

(ख) दृश्य संसाधन : ऐसे अधिगम संसाधन जिनमें दृश्य की भावना सम्मिलित होती है अर्थात् जो मात्र दृश्य हो। छात्र मात्र देखकर अधिगम सहायता प्राप्त करे। जैसे चित्र, मानचित्र, ग्लोब, मॉडल, ग्राफ, कार्टून, बुलेटिन बोर्ड आदि।

(ग) दृश्य–श्रव्य संसाधन : ऐसे अधिगम संसाधन जो दृश्य तथा श्रव्य दोनों प्रकार की भावना को सम्मिलित करते है तथा सीखने के समग्र दृष्टिकोण का विकास करते है। जैसे चलचित्र, पी.पी.टी. प्रस्तुतीकरण, स्लाइड, कम्प्यूटर, टी.वी., मोबाईल एवं भाषा प्रयोगशाला आदि।

इस प्रकार शिक्षण संसाधन सामग्री या अधिगम संसाधन सामग्री वे हैं जिनका उपयोग किसी पाठ्यक्रम को पढ़ाने या शिक्षण में गुणवत्ता को बढ़ाने के लिए किया जाता है। इनका विस्तृत विवरण निम्नवत है।

13.4 हिन्दी भाषा शिक्षण में अधिगम संसाधन

- मॉडल (प्रतिरूप) :

भाषा शिक्षण करते समय अध्यापक के लिए यह अत्यन्त दुष्कर कार्य होता है कि वह मूल वस्तु को दिखाकर छात्र को अधिगम में सहयोग दे। उसके स्थान पर उस वस्तु की प्रतिकृति अथवा मॉडल को अध्यापक कक्षा में प्रयोग करता है जिसके माध्यम से अध्यापक विषय को दृश्य बनाने में सफल होता है। सामान्यतः भाषा (हिन्दी) शिक्षण में मॉडल की संख्या कम होती है। अतः अध्यापक को विषय से सम्बन्धित प्रतिरूपों का निर्माण

स्वयं करना चाहिए तथा विद्यार्थियों से करवाना भी चाहिए। ये मॉडल सस्ते मिट्टी तथा प्लास्टिक आदि से निर्मित किए जा सकते है। इससे छात्र में सहभागिता तथा सीखने के अनुभव में वृद्धि होती है।

- चार्ट :

भाषा अधिगम संसाधन के रूप में चार्ट का अत्यधिक महत्व है। चार्ट द्वारा विषय, तथ्य, चित्र आदि को छात्रों के समक्ष प्रस्तुत कर शिक्षण को प्रभावशाली बनाया जा सकता है। चार्ट पाठ के विकास में सहायक होता है। चार्ट को लटकाने के लिए समुचित व्यवस्था होनी चाहिए और उसका प्रस्तुतिकरण अच्छा होना चाहिए।

- विज्ञप्ति पट (बुलेटिन बोर्ड) :

भाषा को सुदृढ़ करने के लिए भाषा अध्ययन अत्यन्त आवश्यक है। बुलेटिन बोर्ड पर विभिन्न समाचार पत्र, सूचनायें आदि को प्रदर्शित कर छात्रों में जिज्ञासा तथा भाषा के प्रति संवेदनशीलता को बढ़ाया जाता है। इससे विद्यार्थी में रचनात्मकता का विकास होता है। छात्रों की उपलब्धियों को भी इस पर प्रदर्शित किया जा सकता है। बुलेटिन बोर्ड पर साहित्यिक पत्र–पत्रिकाओं, समाचार पत्रों की विशेष सूचना काटकर लगायी जाती है।

- चित्र–रेखाचित्र :

चित्रों के माध्यम से भी भाषा का शिक्षण किया जाता है। यह चित्रात्मकता छोटे बच्चों में पाठ्यवस्तु के प्रति रोचकता लाते हैं। रेखाचित्रों के माध्यम से भाव प्रकाशन का कार्य शिक्षक द्वारा किया जा सकता है। महादेवी वर्मा जी ने अपनी कविताओं में रेखाचित्रों का बहुतायत से प्रयोग किया है। रेखाचित्र या चित्रों का चयन विद्यार्थियों के मानसिक स्तर को ध्यान में रखकर करना चाहिए। चित्रों का प्रयोग उपयुक्त रचना एवं समय पर होना चाहिए। शिक्षक निजी कहानी, नाटक, उपन्यास अथवा अन्य गद्य विधाओं के भाव प्रकाशन को रेखाचित्र के माध्यम से अभिव्यक्त कर सकते है।

- चाक बोर्ड :

यह कहा जाता है कि चाक बोर्ड शिक्षक का सबसे बड़ा मित्र होता है क्योंकि अध्यापक अपने विचारों को अत्यन्त सरलता से इन बोर्ड पर व्यक्त करता है। पूर्व में यह काले रंग का होता था इसीलिए इसे श्यामपट्ट कहा जाता था अब यह सफेद व हरे रंग का भी प्राप्त होने लगा है। कठिन शब्दों के अर्थ, अक्षरों के लेखन आदि को अध्यापक द्वारा सहजता से लिखकर छात्रों को शिक्षण प्रदान किया जाता है। बोर्ड पर आवश्यकतानुसार चित्र आदि के निर्माण भी किये जाते है जिससे विद्यार्थी अधिगम कर सके। बोर्ड पर सदैव बायें से दायें लिखा जाना चाहिए तथा ऐसे तथ्य जिनको शिक्षक ने अपने शिक्षण करते समय पढ़ा दिया हो उसे समय–समय पर साफ कर देना चाहिए जिससे छात्रों को दुविधा न हो। अध्यापक को पाठ का सारांश, प्रश्न उत्तर आदि श्यामपट्ट पर लिखना चाहिए जिससे छात्र उसे अपनी उत्तर पुस्तिका में लिख ले। इसका प्रयोग रचनात्मक रूप में करना चाहिए।

* **मूल वस्तुएँ :**

शिक्षण कार्य में अध्यापक अपने शिक्षण को प्रभावशाली बनाने के लिए पाठ की आवश्यकता को देखते हुए कभी–कभी मूल पदार्थों अथवा वास्तविक वस्तुओं का प्रयोग करता है। ये वस्तुएँ छात्र की इन्द्रियों को सक्रिय करती हैं। छात्र/छात्रों को रिपोर्ट लेखन, निबन्ध, संस्मरण आदि के लेखन में इस संसाधन के प्रयोग से भाषा कौशलों की वृद्धि होती है।

* **कम्प्यूटर :**

वर्तमान युग तकनीकी का युग है। अतः भाषा शिक्षण संसाधन के रूप में कम्प्यूटर भी एक महत्वपूर्ण संसाधन है। हिन्दी भाषा शिक्षण में कम्प्यूटर का प्रयोग नवाचारी प्रयोग के रूप में हो रहा है। कम्प्यूटर विद्यार्थी के भाषागत कौशल के विकास में सहायक सिद्ध हो रहा है। इसके द्वारा विद्यार्थियों को उच्चारण सिखाना, सुनने तथा लिखने की योग्यता का विकास अत्यन्त सहजता से हो जाता है। प्राथमिक कक्षा के छात्रों को इसकी सहायता से भाषा सिखाने के साथ शिक्षण में रूचि, कहानी, कविता याद कराने में अध्यापक को सहायता मिलती है। वैश्विक समाचार तथा अन्य भाषाओं से भी छात्र कम्प्यूटर के माध्यम से परिचित होते हैं।

* **रेडियो :**

यह एक श्रवण संसाधन है। आधुनिक युग हो या पहले का समय, रेडियो की भूमिका भाषा–शिक्षण में सदैव महत्वपूर्ण रही है। विद्यार्थियों को शुद्ध उच्चारण करने की योग्यता विकसित करने के साथ शुद्ध सुनने की योग्यता के विकास में भी रेडियो सहायक होता है। विभिन्न कार्यक्रमों को सुनकर छात्रों में अपने विचारों को क्रमबद्ध करना तथा अभिव्यक्ति कौशल के माध्यम से छात्रों के व्यक्तित्व विकास में रेडियो सहायक होता है।

* **टेप रिकार्डर :**

भाषा शिक्षण में टेप रिकार्डर की अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका है। इसका प्रयोग भाषा प्रयोगशाला में भी किया जाता है। इसके माध्यम से छात्र अपने बोलने के कौशल को सही कर पाता है साथ ही अन्य भाषाओं तथा विदेशी भाषाओं को भी इसके माध्यम से सीख पाता है।

* **पुस्तकालय :**

भाषा शिक्षण में पुस्तकालय को एक संसाधन के रूप में देखा जाता है। पुस्तकालय ही वह स्थान है जहाँ बैठकर छात्र अपने विचारों को गति दे सकता है। अच्छी पुस्तकें, विख्यात लेखकों के विचारों आदि को वह पढ़ता है। जिससे वह अपनी लेखन क्षमता व अपने विचारों के विस्तार के साथ अपने अभिव्यक्ति की क्षमता का भी विकास करता है। इससे छात्र में स्वाध्याय की प्रवृत्ति जागृत होती है।

- **पत्रिकाएँ तथा समाचार पत्र :**

भाषा शिक्षण में प्रभावशीलता तथा गुणवत्ता में पत्रिकायें तथा समाचार पत्र एक संसाधन के रूप में अध्यापक की सहायता करते हैं। भाव संयोजन, शब्द भण्डार, विषय का प्रस्तुतिकरण, किसी घटना का वर्णन, यह सभी छात्र पत्रिकाओं तथा समाचार पत्रों को पढ़कर सीखते है। साथ ही छात्रों में अवकाश के सदुपयोग की भी प्रवृत्ति का विकास होता है।

इस प्रकार भाषा शिक्षण संसाधन विद्यार्थियों के भाषा कौशल तथा भाषा बोध में सहायक होते हैं।

हिन्दी भाषा में जब हम अधिगम संसाधनों की चर्चा करते है तो यह देखते है कि भाषा के कौशलों को अध्यापक छात्रों में कैसे विकसित करता है क्योंकि हिन्दी भाषा एक ऐसी भाषा है जिसमें व्यक्ति वही लिखता है जो वह सुनता है अर्थात् भाषाई शुद्धता को महत्वपूर्ण माना जाता है। इसीलिए शुद्ध सुनना, शुद्ध बोलना, शुद्ध पढ़ना और शुद्ध लिखना हिन्दी भाषा के चार कौशल माने गये है। भाषा के समुचित विकास के लिए तथा उसकी शुद्धता को बढ़ाने के लिए जिसमें उच्चारण की शुद्धता महत्वपूर्ण होती है। इसके लिए भाषा प्रयोगशाला जैसे संसाधन का प्रयोग किया जाता है। अधिगम संसाधन का उपयोग हम विभिन्न प्रकार से कर सकते है। जैसे :

- सक्रिय शिक्षा का समर्थन करने में।
- सक्रिय सीखने का समर्थन करने में
- स्मृति को पुर्नजीवित करने में
- अध्ययन की प्रेरणा विकसित करने में
- अध्ययन में स्पष्टता के लिए
- शब्दावली को शुद्ध करने में
- दृश्यों को विहंगावलोकन करने में
- भाषा को पतिष्ठित करने में।
- छात्रों की शैक्षिक उपलब्धियों को बढ़ाने में।
- बच्चों की अवधारणाओं के निर्माण तथा दक्षता को सुगम बनाने के लिए।

बोध प्रश्न

टिप्पणी :

क) नीचे दिए गए बोध प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

ख) इकाई के अंत में दिए गए बोध प्रश्नों के उत्तर से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1. अधिगम संसाधन किसे कहते है?

   ....

   ....

2. अधिगम संसाधन कितने प्रकार के होते हैं?

....

....

3. अधिगम संसाधन की उपयोगिता बताइए।

....

....

13.5 सारांश

भाषा अभिव्यक्ति का माध्यम है। संसाधन सामान्य रूप से उसे कहा जाता है जिसको प्रयोग व्यक्ति अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करने के लिए करता है। भाषा अधिगम संसाधन भाषा को प्रांजल एवं शुद्ध करने के लिए भाषा कौशलों को सीखने में सहायता करता है। यह तीन प्रकार का होता है – श्रव्य, दृश्य एवं दृव्य श्रव्य। श्रव्य संसाधन जिन्हें सुना जाता है – रेडियो, लेक्चर्स आदि। दृश्य संसाधन जिन्हें देखा जाता है जैसे – ब्लैक बाड, बुलेटिन बोर्ड। दृव्य श्रव्य संसाधन वे संसाधन होते है जिनको देख और सुनकर भाषा ज्ञान किया जाता है जैसे टी. वी., कम्प्यूटर। इस प्रकार भाषा अधिगम संसाधन की अपनी उपयोगिता है जिसके माध्यम से शिक्षक, छात्रों की भाषा का विकास, भाषा ज्ञान आदि प्रदान कर सकते है।

13.6 अभ्यास के प्रश्न

1. हिंदी शिक्षण में कौन–कौन से संसाधन प्रयोग किये जा सकते हैं?
2. हिंदी शिक्षण में दृश्य श्रव्य सामग्रियों की सूची बनाइये।
3. अभिगम संसाधन के लाभ बताइए।

13.7 चर्चा के बिन्दु

1. हिंदी शिक्षण में दृश्य–श्रव्य सामग्रियों की उपयोगिता किस प्रकार है? चर्चा कीजिए।

13.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

1. भाषा अधिगम संसाधन वे संसाधन कहलाते है जिसके माध्यम से छात्र अमूर्त अवधारणाओं को मूर्त रूप देते हैं। इसका उपयोग अध्यापक छात्रों के शैक्षिक लरू को प्राप्त कराने में करता है।
2. भाषा अधिगम संसाधन तीन प्रकार के होते है :
   i. श्रव्य – रेडियो, टेप रिकार्ड्स, माइक्रोफोन, लेक्चर्स
   ii. दृश्य – कार्टून, बुलेटिन बोर्ड, चित्र, मानचित्र, ग्लोब, मॉडल, ग्राफ
   iii. दृश्य श्रव्य – चलचित्र, पी.पी.टी., स्लाइड, कम्प्यूटर, भाषा प्रयोगशाला
3. अधिगम संसाधन की उपयोगिता निम्नलिखित है–:
   (i) यह स्मृति को पुनर्जीवित करने में सहायक है।
   (ii) अध्ययन में स्पष्टता लाता है।

(iii) भाषा को सही करता है।

(iv) सक्रिय शिक्षा ग्रहण करने में सहायक होता है।

13.9 कुछ उपयोगी पुस्तकें

1. पांडे राम सकल, त्रुटि विश्लेषण सिद्धांत और व्यवहार, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा।
2. लाल रमन बिहारी, हिंदी शिक्षण, रस्तोगी पब्लिकेशन, मेरठ।
3. गुप्ता एस.पी., आधुनिक भाषा मूल्यांकन, शारदा पुस्तक भवन, प्रयागराज।
4. शर्मा , मार्तण्ड, हिंदी शिक्षण, शारदा पुस्तक भवन, प्रयागराज।
5. गुप्ता एस.पी., अनुसन्धान संदर्शिका, शारदा पुस्तक भवन, प्रयागराज।

इकाई – 14 : भाषा प्रयोगशाला और भाषा शिक्षक

इकाई की संरचना

14.1 प्रस्तावना

14.2 इकाई के उद्‌देश्य

14.3 भाषा प्रयोगशाला

14.3.1 भाषा प्रयोगशाला का स्वरूप

14.3.2 भाषा प्रयोगशाला में प्रयुक्त होने वाले उपकरण

13.4 भाषा शिक्षण में भाषा प्रयोगशाला की उपयोगिता

14.5 भाषा शिक्षक

14.5.1 भाषा शिक्षक के गुण

14.6 सारांश

14.7 अभ्यास के प्रश्न

14.8 चर्चा के बिन्दु

14.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

14.10 कुछ उपयोगी पुस्तकें

14.1 प्रस्तावना

भाषा व्यक्ति के सम्प्रेषण का माध्यम है यदि भाषा शुद्ध होती है तो व्यक्ति के अन्दर आत्मविश्वास का सृजन होता है। सामान्यतः भाषा की अशुद्धियों के निराकरण के लिए अध्यापक ही समर्थ होता है परन्तु कभी–कभी अध्यापक को भी आवश्यकता होती है कुछ यंत्रों या तकनीकी की जो उसकी सहायता कर सके। ऐसे में भाषा प्रयोगशाला एक नवीन तकनीक के रूप में भाषा शिक्षण के अन्तर्गत महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

प्रस्तुत इकाई में हम भाषा प्रयोगशाला क्या होती है? उसका स्वरूप, भाषा प्रयोगशाला का उपयोग, भाषा प्रयोगशाला में प्रयुक्त होने वाले उपकरणों आदि का अध्ययन करेगें साथ ही हिन्दी भाषा शिक्षक के गुणों, विशेषताओं एवं कौशलों का भी अध्ययन करेंगे।

भाषा व्यक्ति के सम्प्रेषण का माध्यम है। भाषा के माध्यम से व्यक्ति के व्यक्तित्व का ज्ञान होता है। शुद्ध भाषा सम्प्रेषण के साथ–साथ व्यक्तित्व के निर्माण में भी अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। भाषा की शुद्धता उसके कौशलों के निर्माण में भी सहायक होती है। शुद्ध भाषा ही लेखन और वाचन कौशल को सुदृढ़ करती है। कभी–कभी सामान्य रूप से या अन्य परिस्थितियों के कारण विद्यार्थियों की भाषा में त्रुटियाँ और अशुद्धियाँ होती है जिनका सामान्य युक्तियों से निदान नहीं किया जा सकता ऐसे में अध्यापक भाषा प्रयोगशाला की सहायता लेता है।

14.2 इकाई के उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के उपरान्त आप इस योग्य हो जायेंगे कि–

1. भाषा प्रयोगशाला के अर्थ एवं उपयोगिता को बता सकेंगे।
2. भाषा प्रयोगशाला के स्वरूप का वर्णन अपने शब्दों में कर सकेंगे।
3. भाषा प्रयोगशाला में प्रयुक्त उपकरणों का प्रयोग कर सकेंगे।
4. हिन्दी भाषा शिक्षक के गुणों का वर्णन कर सकेंगे।

14.3 भाषा प्रयोगशाला

शिक्षण में भाषा प्रयोगशाला एक नई विधा के रुप में स्वीकार की गयी है। सन् 1966 में शैक्षिक तकनीकी की राष्ट्रीय परिषद की स्थापना की गयी। जिसने सर्वप्रथम भाषा प्रयोगशाला का निर्माण किया था। भाषा प्रयोगशाला भाषा शिक्षण के क्षेत्र में इलेक्ट्रानिक उपकरणों की उपयोगिता का एक महत्वपूर्ण अंश है। भाषा प्रयोगशाला भाषा शिक्षण के अन्तर्गत एक शिक्षण साधन मात्र है जो कि सहायक का कार्य करती है न कि शिक्षण का प्रतिस्थापन।

14.3.1 भाषा प्रयोगशाला का स्वरूप

भाषा प्रयोगशाला भाषा कक्ष से अलग एक ऐसी व्यवस्था है जो इलेक्ट्रानिक तकनीक है जिसमें प्रत्येक छात्र के बैठने के लिए अलग–अलग कुर्सी मेज होती है जिसमें एक पार्टीशन होता है जो लकड़ी का

होता है तथा दोनों तरफ लगा होता है। छात्र अपने स्थान पर बैठकर दूसरे छात्र को इस पार्टीशन होने के कारण नहीं देख सकता। प्रत्येक मेज पर एक माइक्रोफोन तथा एक टेपरिकार्डर होता है और भाषण शिक्षण से सम्बन्धित कैसेट्स होते हैं और एक शीर्ष ध्वनि यंत्र भी होता है। अध्यापक के बैठने का स्थान छात्रों के बैठने के स्थान के सामने होता है जहाँ से अध्यापक सभी छात्रों को स्पष्ट रुप से देख सकता है, उन पर नियंत्रण रख सकता है। अध्यापक के मेज पर प्रयोगशाला की प्रत्येक सीट पर लगे हुए माइक्रोफोन का एक बटन होता है जिससे वह छात्रों से व्यक्तिगत रुप से बात कर सकता है तथा उन्हें निर्देश दे सकता है। साथ में उसी मेज पर एक टेपरिकार्डर होता है, भाषा शिक्षण सम्बन्धी कैसेट्स और एक हेड फोन होता है। यह सभी उपकरण उसे अपने प्रत्येक छात्र से अलग–अलग सम्बन्ध स्थापित करने में सहायता करते है। वह इनके माध्यम से छात्रों को सामूहिक तथा व्यक्तिगत दोनों रूपों, में निर्देश दे सकता है तथा कोई भी छात्र क्या बोल रहा अथवा क्या सुन रहा है, वह उसे सुन सकता है तथा उसे सुधार भी सकता है।

इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि भाषा प्रयोगशाला एक विशेष कक्ष होता है जो विविध दृश्य श्रव्य उपकरणों से युक्त होता है। भाषा प्रयोगशाला में चार से लेकर 32 तक टेपरिकार्डरों का तथा बैठने का एक व्यवस्थित एवं क्रमिक संयोजन होता है जिसके माध्यम से शिक्षार्थी भाषा के अध्ययन करने के लिए विविध प्रकार के अभ्यास करते हुए सीखते हैं। भाषा प्रयोगशाला एक तकनीक आधारित शिक्षण संसाधन है जहाँ छात्र साथ बैठकर और व्यक्तिगत निर्देशन प्राप्त करते है।

14.3.2 भाषा प्रयोगशाला में प्रयुक्त होने वाले उपकरण

भाषा प्रयोगशाला में मुख्यतः 4 उपकरण प्रयोग किये जाते है – माइक्रोफोन, टेपरिकार्डर, कैसेट्स और हेड फोन।

शीर्ष ध्वनि यंत्र (हेड फोन) :

इस यंत्र को जब छात्र पहन लेते हैं तो उन्हें कक्षा अथवा कक्ष के बाहर के शोर को या आवाजों को नहीं सुन पाता है। वह केवल अध्यापक के अभिभाषण को ही सुन पाता है। उसका सारा ध्यान अपने सामने के टेप या अध्यापक के निर्देश प्राप्त करने में केन्द्रित रहता है।

कैसेट्स :

यह एक ऐसा उपकरण है जिसमें टेपरिकार्डर की सहायता से किसी भी प्रकार की ध्वनि को रिकार्ड्स किया जा सकता है और उसे जब चाहे सुना जा सकता है।

माइक्रोफोन :

भाषा प्रयोगशाला में प्रत्येक छात्र की मेज पर एक माइक्रोफोन लगा रहता है इसके द्वारा आवाज को दूर–दूर तक पहुँचाया जा सकता है। जब छात्र को अपनी पाठ्यवस्तु में कोई कठिनाई आती है तब वह

अपनी जगह पर बैठे–बैठे ही अपने 'की' बोर्ड को दबाकर माइक्रोफोन द्वारा अपने अध्यापक से सम्पर्क साधकर निर्देश प्राप्त कर सकता है।

टेपरिकार्डर :

टेपरिकार्डर में किसी भी स्थान पर कोई भी ध्वनि यथा – वार्ताएँ, भाषण, किसी के कथन या पाठ्यवस्तु, विषय वस्तु आदि को रिकार्ड कर लिया जाता है तथा आवश्यकतानुसार टेप की हुई ध्वनि को जब चाहे तब सुना जा सकता है। अध्यापक अथवा छात्र इसमें अपनी आवाज भी रिकार्ड कर सकते हैं और उसे सुनकर अपने उच्चारण दोष, बोलने की गति, स्वर–प्रवाह आदि को शीघ्रता से दूर कर सकते हैं और खेल ही खेल में बच्चे अपनी भाषा में सुधार कर लेते हैं।

कम्प्यूटर :

आज नवीन तकनीकी युग में भाषा प्रयोगशाला में कम्प्यूटर का भी प्रयोग किया जा रहा है। कम्प्यूटर के माध्यम से विद्यार्थी अपनी भाषा में होने वाली अशुद्धियों को स्वयं देख एवं सुन पाते हैं और अपनी त्रुटियों को दूर कर सकते हैं।

14.4 भाषा शिक्षण में भाषा प्रयोगशाला की उपयोगिता

1. भाषा प्रयोगशाला विदेशी–भाषा सीखने में विशेष उपयोगी रहती है।
2. अध्यापक का सम्पर्क प्रत्येक छात्र से बना रहता है।
3. अध्यापक सभी छात्रों पर एक साथ नियंत्रण रख सकता है और सभी को एक साथ निर्देश दे सकता है।
4. प्रयोगशाला के माध्यम से प्रत्येक बालक अपनी गति के अनुकूल भाषा अधिगम अर्जित करता है।
5. अध्यापक व छात्रों को अपने स्थान पर बैठे–बैठे परस्पर सम्पर्क करने की सुविधा रहती है।
6. भाषा प्रयोगशाला की बनावट के कारण छात्र परस्पर एक दूसरे की बात नहीं सुन सकते। अतः वह निर्विघ्न होकर अपने अधिगम पर ध्यान केंन्द्रित कर सकते हैं।
7. भाषा शिक्षण में व्यक्तिगत शिक्षण तथा समूह शिक्षण दोनों ही प्रभावी होते हैं, क्योंकि प्रत्येक छात्र अध्यापक से जुड़ा रहता है और व्यक्तिगत तथा सामूहिक निर्देश प्राप्त कर सकता है।
8. यह भाषा की शुद्धता को यांत्रिक माध्यम से सरलता से बढ़ाती है।

14.5 भाषा–शिक्षक

हिन्दी भाषा शिक्षक के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण कार्य है विद्यार्थियों में भाषा के प्रति सजगता जागृत करना, भाषा के कौशलों का विकास करना तथा उसको स्वयं का भाषा में पारंगत होना। भाषा सिखाना

अत्यन्त दुरूह कार्य है। इसलिए भाषा शिक्षक के अन्दर कुछ विशेष गुणों, विशेषताओं, योग्यताओं आदि का होना आवश्यक है। ऐसा शिक्षा विदों का कहना है जैसे –

(क) शिक्षक की योग्यता :

वर्तमान समय में शिक्षा ने व्यवसाय के रूप ले लिया है और अध्यापक होने की योग्यता/अहर्ता सरकारों द्वारा निर्धारित की जाती है और नियुक्ति का नियम भी उनके द्वारा निर्मित किया जाता है। शिक्षक शिथार्थी का भविष्य निर्माता होता है। सही सूचनाएं एवं ज्ञान प्रदान करना शिक्षक का कर्तव्य एवं दायित्व होता है। इसके लिए आवश्यक होता है कि शिक्षक स्वयं में योग्य है। एक शिक्षक जिसके अन्दर निम्न प्रकार की योग्यताएं होनी चाहिए–

(i) प्रेरणा स्रोत :

एक शिक्षक सदैव, विद्यार्थियों का प्रेरणा स्रोत होता है, जो विद्यार्थियों में अधिगम को बढ़ावा देता है।

(ii) कक्षा शिक्षण की समस्याओं के समाधान की क्षमता :

शिक्षक को विद्यार्थियों के प्रति संवेदनशील होना चाहिए। जिससे कि बालक अपनी समस्याएं शिक्षक के सामने रख सके और शिक्षक वैज्ञानिक तरीके से समस्या का समाधान कर सके।

(ख) मनोविज्ञान का पारखी :

विद्यार्थियों के व्यवहार को समझने के लिए शिक्षक में मनोवैज्ञानिक योग्यता आवश्यक है। विद्यार्थियों की अवस्था व मनोभाव को समझते हुए उन्हे ज्ञान प्रदान करना, शिक्षक को शिक्षण में अधिक सफलता प्रदान करती है।

(ग) विषय का ज्ञान :

शिक्षक का ज्ञान हिन्दी विषय के प्रति अधिक गहन व विस्तृत होना चाहिए। शिक्षकों को विद्यार्थियों तक सूचनाएं पहुंचना तो सरल कार्य है, परन्तु विषय का ज्ञान देने के लिए उसका गहन अध्ययन आवश्यक है। हिन्दी शिक्षक को हिन्दी साहित्य के ज्ञान से ही समझ सकते हैं जिसको प्राप्त करने व प्रदान करने में शिक्षक की अहम भूमिका है।

(घ) सम्बन्धित अन्य विषयों का ज्ञान :

शिक्षक को मातृभाषा के अतिरिक्त अन्य विषयों की जानकारी भी आवश्यक रूप से होनी चाहिए जिससे कि पाठ्य–पुस्तक में यदि कोई तथ्य अन्य विषयों से संबंधित हो तो उसे बालकों को सरलतापूर्वक समझा सके।

(ड.) भाषा–शिक्षक के लिए आवश्यक कौशल :

कौशल का कोई निश्चित रूप नहीं होता परन्तु उसकी प्रभावशीलता की प्रतीति की जाती है। भाषायी शिक्षक मे निम्न प्रकार के कौशल अवश्य होने चाहिए–

(i) भाषायी कौशल : भाषा एक अभिव्यक्ति का साधन है और भाषा–कौशल, अभिव्यक्ति का एक व्यावहारिक पक्ष है। व्यक्ति की सम्प्रेषण क्षमता भाषा कौशलों की दक्षता पर निर्भर करती है।

(ii) श्रवण कौशल : श्रवण कौशल, सीखने का प्रारम्भिक क्रम है। बाल्यावस्था से ही बालक में श्रवण कौशल होता है। श्रवण का सीधा संबंध पठन और भाषण से है। ऐसा माना गया है कि कुशाग्र बुद्धि का बालक इस कौशल में श्रेष्ठ होता है।

(iii) वाचन कौशल : यह एक मौखिक अभिव्यक्ति है। विचारो के आदान–प्रदान का सरलतम साधन है। वाचन कौशल तभी उत्तम माना जाता है जब उसमें शब्दों का शुद्ध व स्पष्ट उच्चारण, शब्दों में आरोह–अवरोह का प्रवाह हो तथा आवश्यकतानुसार उचित भाव–भंगिमाएं हो।

(iv) लेखन कौशल : विचार तथा मनन करने के लिए लेखन का ज्ञान अति आवश्यक है। उत्तम लेखन में अक्षरों की बनावट, मात्राओं का प्रयोग, शब्दों में उचित दूरी, शुद्ध वर्तनी, स्वच्छता आदि गुण सम्मिलित है।

(v) पठन कौशल : विषयों के ज्ञान अर्जन के लिए पठन सबसे महत्वपूर्ण कौशल है। इसमें शुद्ध उच्चारण, विभिन्न अक्षरों की ध्वनियों का ज्ञान, जैसी विशेषताएं होती है।

इस प्रकार भाषा शिक्षक का दायित्व अन्य विषय के अध्यापकों से चुनौतीपूर्ण है। क्योंकि भाषा शिक्षक विद्यार्थियों के निर्माण में सर्वाधिक महत्वपूर्न भूमिका निभाता है। यही कारण है कि भाषा शिक्षक में निम्न गुणों की आवश्यकता होती है जिससे विद्यार्थी अपने शिक्षक और अपने विषय के प्रति रूचि ले।

14.5.1 भाषा शिक्षक के गुण :

शिक्षकों की सफलता उनके गुणों पर निर्भर करती है। जो शिक्षक अपने विद्यार्थियों के प्रति प्रेम, सम्मान तथा निश्छल भाव रखते हैं, प्रायः विद्यार्थी उन्हें अधिक पसन्द करते है। इसके अतिरिक्त भी एक शिक्षक के अन्दर निम्न गुण होने चाहिए–

1. प्रभावशाली व्यक्तित्व
2. उत्तम संगठनकर्ता
3. व्यवसाय में दक्षता
4. बालकों के प्रति सहानुभूति
5. अपने विषय का पूर्ण ज्ञान

6. समाज के प्रति उत्तरदायित्व
7. हिन्दी भाषा पर अधिकार

• **प्रभावशाली व्यक्तित्व**

बालक अपने शिक्षक का अनुकरण करता है। अतः शिक्षक का व्यक्तित्व प्रभावशाली होना चाहिए। शिक्षक का व्यक्तित्व इस प्रकार से होना चाहिए कि बालकों पर उसका अधिक गहरा प्रभाव पड़े और यदि शिक्षक चिरित्रवान, परिश्रमी लगनशील होता है तो बालकों पर इसका प्रभाव पड़ता ही है।

• **व्यवसाय में दक्षता**

शिक्षक को शिक्षण विधियों का ज्ञान होना चाहिए तथा शिक्षण कौशलों व पाठ निर्माण में दक्ष होना चाहिए। यदि शिक्षक अपने विषय में विद्वान है तो ही उसे व्यवसाय में दक्ष माना जाता है। शिक्षण विधि और शैली में आवश्यकतानुसार परिवर्तन, समस्या समाधान की क्षमता आदि व्यवसाय में दक्षता के गुण है।

• **विषय का पूर्ण ज्ञान**

किसी भी शिक्षक को अपने विषय का पूर्ण ज्ञान होने के साथ—साथ अपने विषय से संबंधित अन्य विषयों की जानकारी होनी चाहिए। सभी विषय कई सहविषयों से सहसंबंधित होते है। जब विषयों का पूर्ण ज्ञान शिक्षक के पास होता है तो वह बालकों को मात्र सैद्धान्तिक रूप से नहीं पढ़ाता अपितु व्यावहारिक रूप से शिक्षा प्रदान करने में सक्षम होता है।

• **हिन्दी भाषा पर अधिकार**

भाषा पर पूर्ण अधिकार भाषा में दक्ष बनाता है। इसमें स्पष्ट भाषा का प्रयोग, सही उच्चारण, आदि सम्मिलित है। सरल भाषा के प्रयोग से विषय—वस्तु की रोचकता को बढ़ाया जा सकता है।

• **उत्तम संगठनकर्ता**

अध्यापक को विद्यालय संगठन के सिद्धान्तों और विधियों का ज्ञान होना चाहिए तथा उनके प्रयोग में निपुण होना चाहिए। बालकों की योग्यताओं, रूचियों व आवश्यकताओं का पता लगाकर उनका शैक्षिक मार्गदर्शन करना चाहिए।

• **बालकों के प्रति सहानुभूति**

बालक अपनी समस्या शिक्षक के समक्ष तभी रख 'पाएगा जब शिक्षक का भय उसे नहीं होगा। अतः शिक्षक को बालकों के प्रति प्रेम, स्नेह व सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार रखना चाहिए।

• समाज के प्रति उत्तरदायित्व

एक शिक्षक समाज का ही अंग है। अतः बालकों में इस प्रकार की शिक्षा का विकास करना जो बालकों को एक सामाजिक प्राणी बनाए यह शिक्षक का उत्तरदायित्व है। शिक्षक व शिक्षा का मूल उद्देश्य ही बालक का विकास करना होता है जिससे व आत्मनिर्भर, उत्तम व्यक्तित्व तथा एक योग्य सामाजिक प्राणी बन सके।

बोध प्रश्न

टिप्पणी :

क) नीचे दिए गए बोध प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

ख) इकाई के अंत में दिए गए बोध प्रश्नों के उत्तर से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1. भाषा–शिक्षण में नई विधा के रूप में किसे स्वीकार किया गया है?

   ....

   ....
2. भाषा–प्रयोगशाला में प्रयुक्त होने वाले उपकरणों के नाम लिखिये।

   ....

   ....
3. भाषा शिक्षण में भाषा प्रयोगशाला के दो उपयोग बताइये।

   ....

   ....
4. भाषा शिक्षक के दो गुण बताइये।

   ....

   ....

14.6 सारांश

भाषा व्यक्तित्व विकास का एक महत्वपूर्ण माध्यम है यदि व्यक्ति की भाषा शुद्ध और अच्छी होगी तो वह समझ में अलग स्थान बनाने में सक्षम होता है भाषा शिक्षण कार्य में जब विद्यार्थी भाषा कौशलों को पूर्ण तैयार नहीं सीख पाता अथवा त्रुटि करता है तो शिक्षा की नवीन विद्या भाषा प्रयोगशाला उसकी सहायता करता है। इसमें भाषा शिक्षण की भी महत्वपूर्ण भूमिका होती है जो भाषा को गुणवत्ता वृद्धि करता है। इसी आशय है प्रस्तुत इकाई में भाषा प्रयोगशाला, उपयोगिता के साथ भाषा शिक्षण के गुण के लिए आवश्यक कौशलों का अध्ययन किया गया है। भाषा प्रयोगशाला के माध्यम से छात्रों के भाषा कौशल का विकास किया जा सकता है।

14.7 अभ्यास के प्रश्न

1. भाषा शिक्षक के गुणों का वर्णन कीजिए।
2. भाषा शिक्षक की भूमिका का विश्लेषण किजिए।
3. भाषा प्रयोगशाला के उपकरणों की सूची तैयार कीजिए।

14.8 चर्चा के बिन्दु

1. भाषा शिक्षण में नयी विधा क्या है? चर्चा कीजिए।
2. भाषा प्रयोगशाला की प्रमुख विशेषताएं क्या हैं? चर्चा कीजिए।

14.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

1. भाषा शिक्षण में भाषा प्रयोगशाला को नई विधा के रूप में स्वीकार किया गया है।
2. भाषा प्रयोगशाला में प्रयुक्त उपकरण हैं— माइक्रोफोन, टेपरिकार्डर, कैसेट्स और हेडफोन, कम्प्यूटर।
3. भाषा प्रयोगशाला का उपयोग – भाषा में होने वाली त्रुटियों को दूर करने में सहायक है। विदेशी भाषा को सीखने में सहायक सिद्ध होती है।
4. भाषा शिक्षक में निम्न गुण होने चाहिए – अपने विषय और भाषा पर पूर्ण अधिकार, व्यवसायिक दक्षता।

14.10 कुछ उपयोगी पुस्तकें

1. पांडेय, राम सकल, त्रुटि विश्लेषण सिद्धांत और व्यवहार, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा।
2. लाल, रमन बिहारी, हिंदी शिक्षण, रस्तोगी पब्लिकेशन, मेरठ।
3. गुप्ता, एस.पी., (2004), आधुनिक भाषा मूल्यांकन, शारदा पुस्तक भवन, प्रयागराज।
4. शर्मा, मार्तण्ड, हिंदी शिक्षण, शारदा पुस्तक भवन, प्रयागराज।
5. गुप्ता, एस.पी., अनुसन्धान संदर्शिका, शारदा पुस्तक भवन, प्रयागराज।

इकाई – 15 : क्रियात्मक शोध और समुन्नयन कार्य

इकाई की संरचना

15.1 प्रस्तावना

15.2 इकाई के उद्देश्य

15.3 अनुसंधान एवं क्रियात्मक अनुसंधान

15.3.1 अनुसंधान के अन्य प्रकार

15.3.2 क्रियात्मक अनुसंधान की परिभाषा

15.3.3 क्रियात्मक अनुसंधान के उद्देश्य

15.3.4 मौलिक तथा क्रियात्मक अनुसंधान में अन्तर

15.3.5 क्रियात्मक अनुसंधान का महत्व

15.4 शिक्षा के क्षेत्र में क्रियात्मक अनुसंधान की आवश्यकता

15.5 क्रियात्मक अनुसंधान के पद / सोपान

15.5.1 क्रियात्मक अनुसंधान की समस्या की पहचान तथा क्षेत्र

15.5.2 क्रियात्मक अनुसंधान हेतु कुछ चिन्हित समस्यायें

15.6 परिकल्पना

15.7 समस्याओं के कारणों का विश्लेषण

15.7.1 क्रियात्मक परिकल्पना का निर्माण

15.7.2 क्रियात्मक परिकल्पना के परीक्षण हेतु उपयुक्त रुपरेखा का निर्माण

15.8 सारांश

15.9 अभ्यास के प्रश्न

15.10 चर्चा के बिन्दु

15.11 बोध प्रश्नों के उत्तर

15.12 कुछ उपयोगी पुस्तकें

15.1 प्रस्तावना

औपचारिक शिक्षण प्रक्रिया में अध्यापक द्वारा शिक्षण करने के पश्चात उसका उद्देश्य छात्र द्वारा अर्जित ज्ञान का मूल्यांकन करना भी होता है। कभी–कभी विद्यार्थी किसी कारणवश कक्षा में पीछे होने लगता है। अध्यापक विद्यार्थी के शिक्षण प्रक्रिया में आने वाली बाधाओं को जानने के लिए जिस अनुसंधान की सहायता लेता है, उसे क्रियात्मक अनुसंधान कहते है। क्रियात्मक अनुसंधान शोधकर्ता को उसके लक्ष्य प्राप्ति में आने वाली समस्याओं का निराकरण करता है। प्रस्तुत इकाई में हम क्रियात्मक अनुसंधान का अर्थ, परिभाषा, महत्व, आवश्यकता तथा अनुसंधान के विभिन्न सोपानों का अध्ययन करेंगे साथ ही क्रियात्मक अनुसंधान की परिकल्पना समस्याओं की पहचान, उसकी योजना तथा मौलिक एवं क्रियात्मक अनुसंधान में अन्तर का अध्ययन करेंगे।

क्रियात्मक अनुसंधान अनुसंधान की एक नई शाखा है जिसमें शोधकर्ता ही समस्या से जुड़ा भी होता है और उसका निवारण भी करता है। यह शोध व्यवहारिक शोध के अन्तर्गत आता है। भाषा अधिगम की प्रक्रिया एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है। क्योंकि प्रत्येक विषय कहीं न कहीं भाषा से जुड़ा हुआ है। विद्यार्थी को भाषा ज्ञान का प्रभाव उसके सम्पूर्ण व्यक्तित्व पर दिखाई देता है। सामान्य रुप से एक भाषा शिक्षक अपने विद्यार्थियों को भाषायी समस्या से जुड़ी तथा अधिगम से जुड़ी समस्याओं का निदान करता है। परन्तु यदि समस्याओं का निदान तत्क्षण करना हो अथवा शीघ्रता से करना हो तो क्रियात्मक अनुसंधान इस क्षेत्र में सहायक सिद्ध होता है। देश में अनेक भाषा होने के कारण विद्यार्थियों को भाषा से सम्बन्धित अनेक समस्यायें होती है। इन समस्याओं का निदान अध्यापक क्रियात्मक अनुसंधान के द्वारा करता है जिससे शिक्षार्थी लाभान्वित होते हैं।

15.2 इकाई के उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के उपरान्त आप इस योग्य हो जायेंगे कि–

1. क्रियात्मक अनुसंधान को परिभाषित कर सकेंगे।
2. मौलिक अनुसंधान, अनुप्रयुक्त अनुसंधान तथा क्रियात्मक अनुसंधान में अन्तर कर सकेंगे।
3. क्रियात्मक अनुसंधान के उपयोगिता का वर्णन कर सकेंगे।
4. क्रियात्मक अनुसंधान के विभिन्न सोपानों की व्याख्या कर सकेंगे।
5. क्रियात्मक अनुसंधान से सम्बन्धित समस्याओं की पहचान कर सकेंगे।
6. क्रियात्मक अनुसंधान की योजना बना सकेंगे।

15.3 अनुसंधान एवं क्रियात्मक अनुसंधान

अनुसंधान एक ऐसी प्रक्रिया है जिसका उद्देश्य मौलिक समस्याओं का अध्ययन करके नवीन तथ्यों की खोज करना तथा नवीन सिद्धान्तों का प्रतिपादन करना है। यह एक सोद्देश्य प्रक्रिया है अर्थात् यह प्रक्रिया उद्देश्य पूर्ण होती है।

मुनरो के अनुसार– ''अनुसंधान समस्याओं को सुलझाने की वह विधि है जिसमें सुझावों की पुष्टि तथ्यों द्वारा की जाती है।''

15.3.1 अनुसंधान के अन्य प्रकार

सामान्य रूप से शैक्षिक अनुसंधान तीन प्रकार के माने जाते हैं :–

(क) मौलिक अनुसंधान

(ख) व्यवहृत अनुसंधान/अनुप्रयुक्त

(ग) क्रियात्मक अनुसंधान

मौलिक अनुसंधान : मौलिक अनुसंधान को शुद्ध या मूलभूत अनुसंधान भी कहा जाता है। इस प्रकार का शोध शोधकर्ता की जिज्ञासा शान्ति तथा नवीन ज्ञान, सिद्धान्त या नियम निरुपण से जुड़ा होता है। इसमें परिणामों का सामान्यीकरण किया जाता है। शिक्षा के क्षेत्र में मौलिक अनुसंधान का उद्देश्य शैक्षिक घटनाओं के वैध एवं विश्वसनीय वर्णन एवं व्याख्या करना है जिसके माध्यम से शैक्षिक अनुसिद्धान्तों, तथ्यों एवं नियमों का सामान्यीकरण किया जा सके।

व्यवहृत अनुसंधान : मौलिक अनुसंधानों द्वारा प्राप्त परिणाम, नियम या सिद्धान्तों का परिस्थिति विशेष में प्रयोग व्यवहृत या अनुप्रयुक्त शोध कहलाता है। शिक्षा के क्षेत्र में व्यवहृत अनुसंधान का अर्थ शिक्षण अधिगम परिस्थिति में मौलिक अनुसंधानों द्वारा निर्मित नियम, सिद्धान्तों आदि का शैक्षिक परिस्थिति में प्रयोग है। जीवन की विभिन्न व्यवहारिक परिस्थिति में नये सिद्धान्तों, सामान्यीकरणों या नियमों के प्रयोग की सम्भावना को ज्ञात का परिस्थितियों में गुणात्मक परिवर्तन अथवा गुणवत्ता में सुधार की परिस्थिति को खोजना है। मापन मूल्यांकन शैक्षिक तकनीकी, प्रबन्धन एवं प्रशासन आदि से सम्बन्धित अध्ययन व्यवहृत अनुसंधान के उदाहरण है।

क्रियात्मक अनुसंधान : क्रियात्मक अनुसंधान मूलरूप से करके सीखने पर बल देता है। यह एक रणनीति जो किसी संस्था या संगठन के समस्याओं का वास्तविक समाधान खोजने का प्रयास करती है। माना कि आप एक अध्यापक हैं कक्षा में पढ़ाते समय आपको अनेकों समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है तो आप क्रियात्मक अनुसंधान के माध्यम से उन समस्याओं का यथार्थ समाधान निकाल सकते हैं। यद्यपि एक सक्रिय अध्यापक प्रायः क्रियात्मक अनुसंधान करता रहता है। अपने विद्यार्थियों की समस्याओं का भी समाधान वह क्रियात्मक अनुसंधान करके प्राप्त करता रहता है। जैसे– उच्चारण की समस्या, वाक्य संरचना सम्बन्धी समस्या, पत्र लेखन सम्बन्धी समस्या एवं लेखन में बार–बार एक ही प्रकार के मात्रात्मक त्रुटि की समस्या आदि।

15.3.2 क्रियात्मक अनुसंधान की परिभाषा

मैक ग्रेथटे के अनुसार– ''क्रियात्मक अनुसंधान व्यवस्थित खोज की क्रिया है जिसका उद्देश्य व्यक्ति समूह की क्रियाओं में रचनात्मक सुधार तथा विकास लाना है।''

स्टीफेन एम. कोरे के अनुसार– ''शिक्षा में क्रियात्मक अनुसंधान कार्यकर्ताओं द्वारा किया जाने वाला अनुसंधान है ताकि वे अपने कार्य में सुधार कर सकें।''

जब हम क्रियात्मक अनुसंधान की चर्चा करते हैं तो यह अनुसंधान क्रिया आधारित अनुसंधान है जहाँ अनुसंधानकर्ता स्वयं ही समस्या से सम्बन्धित होता है या समस्याग्रस्त होता है। शैक्षिक क्षेत्र में क्रियात्मक अनुसंधान का मुख्य उद्देश्य, शैक्षिक तंत्र में किसी भी प्रकार की समस्याओं के निदान करना है जिसमें शिक्षक, प्रधानाध्यापक, प्रबन्धक, निरीक्षक तथा अन्य सभी वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाते है। इस अनुसंधान में अनुसंधानकर्ता शिक्षक, प्रधानाध्यापक या जिससे समस्या सम्बन्धित होती है, वही होता है।

मौले के अनुसार– ''शिक्षक के समक्ष उपस्थित होने वाली समस्याओं में से अनेक तत्काल ही समाधान चाहती है। मौके पर किये जाने वाले ऐसे अनुसंधान जिसका उद्देश्य तात्कालिक समस्या का समाधान होता है, शिक्षा में साधारणतः क्रियात्मक अनुसंधान के नाम सं प्रसिद्ध है।''

15.3.3 क्रियात्मक अनुसंधान के उद्देश्य

क्रियात्मक अनुसंधान के उद्देश्य निम्नवत् हैं–

1. विद्यालय की कार्य प्रणाली में सुधार करना।
2. अध्यापक तथा छात्रों में प्रजातांत्रित गुणों का विकास करना।
3. विद्यालय से सम्बन्धित कार्यों के प्रति शिक्षकों, प्रधानाचार्य, प्रबन्धक, निरीक्षकों आदि में वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास करना।
4. विद्यालय में कार्य कौशल का विकास करना।
5. विद्यालय की कार्य प्रणाली में सुधार तथा परिवर्तन हेतु सुधार प्रदान करना।
6. छात्रों की निष्पत्तिर स्तर को ऊँचा करना।
7. विद्यालय की कार्य प्रणाली को प्रभावशाली बनाना।

15.3.4 मौलिक तथा क्रियात्मक अनुसंधान में अन्तर

क्रम	अन्तर	मौलिक अनुसंधान	क्रियात्मक अनुसंधान
1.	उद्देश्य	नवीन तथ्यों एवं सत्यों की खोज तथा नवीन सिद्धान्तों का प्रतिपादन करना होता है।	विद्यालयी एवं कक्षा प्रशासन की कार्य प्रणाली में सुधार करना।
2.	समस्या	समस्या का स्वरुप	समस्या का स्वरुप

3.	क्षेत्र	व्यापक एवं मौलिक क्षेत्र व्यापक होता है।	संकुचित तथा व्यावहारिक होता है।
4.	शोधकर्ता	शोधकर्ता का सम्बन्ध समस्या से प्रत्यक्ष नहीं होता है।	समस्या का क्षेत्र संकुचित होता है। समस्या से शोधकर्ता का प्रत्यक्ष सम्बन्ध होता है।
5.	परिकल्पना	परिकल्पनाओं का निर्माण पूर्व शोध के निष्कर्षों, सिद्धान्तों एवं अनुभव पर आधारित होता है।	परिकल्पनाओंका प्रतिपादन कारणों के विश्लेषण पर आधारित होता है।
6.	शोध की रुपरेखा	शोध की डिजाइन या रुपरेखा कठोर अर्थात् अनन्य होती है।	रुपरेखा लचीली होती है।
7.	प्रशिक्षण	शोधकर्ता प्रशिक्षित होना चाहिए।	प्रशिक्षण की आवश्यकता नहीं।
8.	न्यादर्श	न्यादर्श की प्रक्रियाओं का ज्ञान होना चाहिए। जनसंख्या में से न्यादर्श का चयन किया जाता है।	न्यादर्श की समस्या नहीं होती है। शिक्षक जिस कक्षा को पढ़ाता है वह सम्पूर्ण कक्षा ही न्यादर्श होती है। वही जनसंख्या होती है।
9.	प्रदत्तों का संकलन	प्रदत्तों का संकलन, वैध विश्वसनीय तथा प्रामाणिक परीक्षणों द्वारा किया जाता है।	प्रदत्तों का संकलन निरीक्षण विधि अथवा स्वनिर्मित परीक्षणों द्वारा किया जाता है।
10.	प्रदत्तों का विश्लेषण	उच्च सांख्यकीय विधियों का प्रयोग किया जाता है।	सरल सांख्यकीय विधियों का प्रयोग किया जाता है।
11.	सामान्यीकरण एवं निष्कर्ष	सामान्यीकरण नये तथ्यों, सत्यों तथा सिद्धान्तों के रुप में होता है।	इसमें कार्य विधि की समस्या के समाधान का रुप व्यवहारिक होता है।
12.	मूल्यांकन	बाह्य मूल्यांकन किया जाता है। विशेषज्ञ नियुक्त किये जाते है तथा उपाधि प्रदान की जाती है।	आन्तरिक मूल्यांकन होता है अर्थात् शोधकर्ता स्वयं निर्णय लेता है कि समस्या का समाधान किस स्तर तक हुआ।
13.	आर्थिक सहायता	शोधकर्ता को विभिन्न सरकारी संस्थाओं जैसे यू.जी.सी.आई.सी.एस.एस.आर. आदि जैसे संस्थाओं से आर्थिक मदद	शोधकर्ता को स्वयं या विद्यालय प्रशासन से आर्थिक सहायता प्राप्त होती है।

		मिलती है।	
14.	महत्व	शिक्षण की समस्याओं का अध्ययन कर नये सिद्धान्त तथा तथ्यों का निर्माण कर व्यवहार विज्ञान का विकास किया जाता है।	शिक्षण प्रक्रिया अथवा विद्यालयकी कार्य प्रणाली में सुधार लाना ही इसका कार्य ही अपने कार्य कौशल को प्रभावशाली बनाने के लिए शोधकर्ता इसका उपयोग करता है।

15.3.5 क्रियात्मक अनुसंधान का महत्व

1. शिक्षकों में वैज्ञानिक प्रवृत्ति का विकास तथा शोध कार्य के लिए जिज्ञासा जागृत होती है।
2. क्रियात्मक अनुसंधान द्वारा शिक्षक अपनी तात्कालिक समस्याओं पर विचार करता है।
3. इसके द्वारा शिक्षक अपनी कक्षा का वातावरण, कार्य–प्रणाली में सुधार तथा प्रगति करता है।
4. शिक्षकों को पढ़ने के लिए प्रेरित करता है।
5. क्रियात्मक अनुसंधान समय को बचाता है।
6. इससे छात्रों की उपलब्धि स्तर तथा आकांक्षा स्तर में वृद्धि होती है।
7. यह विद्यालयी प्रशासन के सुधार का एक अच्छा साधन है।
8. इसके द्वारा विद्यालयी वातावरण में जनतांत्रिक मूल्यों के विकास में सहायता मिलती है।
9. इसके द्वारा शिक्षा में प्रतिदिन उत्पन्न समस्याओं को हल करने में सहायता होती है।
10. यह शिक्षकों को स्वभाव, व्यवहार तथा उनकी पाठन विधियों, शिक्षण नीतियों में सार्थक परिवर्तन लाती है।
11. यह अपेक्षाकृत कम खर्चीली होती है।

15.4 शिक्षा के क्षेत्र में क्रियात्मक अनुसंधान की आवश्यकता

आधुनिक समय में शिक्षा जगत में नित्य नवीन संशोधन होते रहते है, अतः अधिगम को और अधिक शक्तिशाली तथा विद्यालय प्रशासन के दृष्टिकोण एवं व्यवहार को प्रगतिशील बनाये रखने के लिए शोध को प्रयोग में लाना निम्न दृष्टि से आवश्यक है–

1. विद्यालय की कार्य शैली में परिवर्तन व सुधार के लिए।
2. विद्यालय के विभिन्न दैनिक क्रियाकलापों जैसे शिक्षण पद्धति, गृहकार्य, अनुशासन, उपलब्धि आदि से सम्बन्धित समस्याओं का विश्लेषण करना और उनका समाधान करना।
3. बच्चों की विभिन्न परिस्थितियों में समायोजन की समस्याओं का अध्ययन एवं समाधान करना।
4. विद्यार्थियों में बहुमुखी प्रतिभा विकसित कर विद्यालयी वातावरण में सुधार करना।

5. पाठ्य–सहभागी क्रियाकलापों के प्रति शिक्षकों और शिक्षार्थियों में रुचि उत्पन्न करना।
6. विद्यार्थियों के सार्वभौम नामांकन, ठहराव तथा उपलब्धि वृद्धि के लिए।
7. विद्यालय के विभिन्न गतिविधियों को विकसित करने हेतु।

15.5 क्रियात्मक अनुसंधान के पद/सोपान

1. समस्या का चयन (Selection of Problem)
2. परिकल्पना/उपकल्पना निर्माण (Formulation of Hypothesis)
3. तथ्य संग्रहण की विधियाँ (Methods of Data Collection)
4. तथ्य संकलन (Data Collection)
5. तथ्यों का सांख्यिकीय विश्लेषण (Statistical Analysis of Data)
6. तथ्यों पर आधारित निष्कर्ष (Conclusion on the basis of facts)
7. सत्यापन
8. परिणामों की सूचना।

एण्डरसन के अनुसार क्रियात्मक अनुसंधान केप्रस्तावित सात चरण निम्न है–

1. समस्या का ज्ञान : क्रियात्मक अनुसंधान का पहला सोपान है, विद्यालय में अनुभव होने वाली समस्याओं को समझना।
2. कार्य के लिए प्रस्तावों पर विचार : समस्याओं को भली–भाँति समझने के बाद इस बात पर विचार करना कि उसके कारण क्या है? और उसके पश्चात् उनके कारणों पर विचार करना कि इस समस्या का समाधान क्या है और कैसे किया जाए?
3. योजना का चयन व उपकल्पना का निर्माण : विचार–विमर्श के माध्यम से समस्या समाधान हेतु उचित योजना का चयन करना और तत्पश्चात् परिकल्पना का निर्माण करना जिसके अन्दर तीन मुख्य बिन्दु पर चर्चा की जाती है कि वह योजना क्या है जिसे समस्या समाधान के लिए प्रयोग किया जाता है। योजना का परीक्षण जिसमें यह देखना है कि यह परीक्षण किस प्रकार किया जाना है तथा तीसरा योजना द्वारा प्राप्त उद्‌देश्य, अर्थात् समस्या समाधा का उद्‌देश्य क्या है जिसके लिए क्रियात्मक अनुसंधान किया जा रहा है।
4. तथ्य संग्रह करने की विधि निर्माण : अनुसंधान में तथ्यों का संकलन एक महत्वपूर्ण कार्य होता है। क्रियात्मक अनुसंधान में तथ्यों का संग्रहण एक कठिन कार्य होता है। शोधाकर्ता को यह निश्चित करना होता है कि वह कौन सी विधि अपनाये जिससे तथ्यों का संग्रहण होने पर योजना के लिए प्रभावी है।

5. योजना का कार्यान्वयन व प्रमाणों का संकलन : एण्डरसन के अनुसार यह क्रियात्मक अनुसंधान का पाँचवा सोपान है जिसके अन्तर्गत निश्चित की गयी योजना को कार्यान्वित करना तथा उसके लिए तथ्यों का संकलन किया जाता है और आवश्यकता पड़ने पर योजना के स्वरुप में परिवर्तन भी करते है।

6. तथ्यों पर आधारित निष्कर्ष : योजना की समाप्ति के पश्चात् एकत्रित तथ्यों या आँकड़ों के आधार पर निष्कर्ष निकालना।

7. अन्य व्यक्तियों को परिणामों की सूचना देना : क्रियात्मक अनुसंधान की सफलता छात्रों के निष्पत्ति के परिवर्तन को देखते हुए इसके परिणामों की सूचना देना।

15.5.1 क्रियात्मक अनुसंधान की समस्या की पहचान तथा क्षेत्र

सामान्य रुप से क्रियात्मक अनुसंधान शिक्षण गतिविधि तथा कार्य क्षेत्र में छात्र के अनुकूल परिवर्तन लाने के लिए तथा अध्यापन को प्रभावशाली बनाने के लिए किया जाता है। क्रियात्मक अनुसंधान की समस्याओं की पहचान में पहले उनके क्षेत्र को जानना आवश्यक है। क्रियात्मक अनुसंधान के क्षेत्र शैक्षिक समस्याओं से सम्बन्धित होते है। समस्याओं के क्षेत्र शैक्षिक परिस्थिति के आधार पर निर्धारित किया जाता है। जैसे –

1. **शिक्षण अधिगम सम्बन्धी समस्यायें :**
   - (a) गृहकार्य से सम्बन्धित
   - (b) उच्चारण सम्बन्धी
   - (c) नवीन शिक्षण विधियाँ न अपनाने से सम्बन्धित
   - (d) कक्षा कार्य से सम्बन्धित
2. **परीक्षण तथा मूल्यांकन सम्बन्धी समस्यायें :**
   - (a) परीक्षा में विश्वसनीयता एवं वस्तुनिष्ठता सम्बन्धी
   - (b) परीक्षाओं की व्यवस्था सम्बन्धी
   - (c) सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन सम्बन्धी
   - (d) प्रश्न पत्र सम्बन्धी
3. **विद्यालय प्रबन्धन एवं प्रशासन सम्बन्धी समस्यायें :**
   - (a) शिक्षकों का विलम्ब से आना।
   - (b) शिक्षकों की कमी।
   - (c) शिक्षक–अभिभावक सहयोग की समस्या।

4. **पाठ्य सहगामी गतिविधि से सम्बन्धित समस्यायें :–**

   (a) गतिविधि के प्रति विद्यार्थी तथा अध्यापक की रुचि सम्बन्धी समस्या।

   (b) समाजोपयोगी उत्पादक कार्य के लिए उचित व्यवस्था सम्बन्धी।

   (c) खेल का मैदान तथा उपकरण सम्बन्धी।

   (d) सांस्कृतिक गतिविधि का आयोजन।

15.5.2 क्रियात्मक अनुसंधान हेतु कुछ चिन्हित समस्यायें

क्रियात्मक अनुसंधान का मुख्य कार्य विद्यालय की समस्याओं का समाधान करके उसकी गुणवत्ता को बढ़ाना है। क्रियात्मक अनुसंधान का उद्‌देश्य क्रियाओं से सम्बन्धित निर्णय लेना उनका निर्देशन करना, सुधार लाना तथा मूल्यांकन करना है। इस अनुसंधान हेतु कुछ समस्याओं के उदाहरण निम्नवत् हैं–

1. छात्रों का गृहकार्य में रुचि न लेना।
2. हिन्दी विषय में अशुद्ध वर्तनी की समस्या।
3. विद्यार्थियों की विज्ञान विषय में अरुचि के कारणों का अध्ययन एवं समाधान।
4. मध्यावकाश के पश्चात् छात्रों के विद्यालय में न रुकने की समस्या का अध्ययन एवं निवारण।
5. टी.एल.एम. के निर्माण एवं उनके अनुप्रयोग की समस्या।

15.6 परिकल्पना

किसी भी अनुसंधान में समस्या कथन के पश्चात् एक उचित परिकल्पना का निर्माण करना आवश्यक माना जाता है। शिक्षा विदों का मानना है कि बिना उचित अभाव उपयुक्त परिकल्पना के वैज्ञानिक अध्ययन कर पाया कि किसी भी शोधार्थी के लिए अत्यन्त कठिन है। क्योंकि समस्या का स्वरुप विस्तृत, व्यापक तथा अत्यन्त विषम रहता है इसलिए उसके क्षेत्र को घटाकर छोटा करना आवश्यक होताहै। इसी कारण अनुसंधान में परिकल्पना का निर्माण अत्यन्त महत्वपूर्ण होता है।

परिभाषा

टाउनसैण्ड के अनुसार – ''परिकल्पना एक समस्या का प्रस्तावित उत्तर होता है।''

(A hypothesis is defined as a suggested answer to a problem.)

करलिगर के अनुसार – ''परिकल्पना दो या दो से अधिक चरों के सम्बन्ध के विषय में एक कल्पनात्मक कथन होता है।''

(A hypothesis is a conjectural statement of the relation between two or more variables.)

इस प्रकार परिकल्पना चरों के आपसी सम्बन्ध को प्रदर्शित करती है।

अच्छी परिकल्पना की विशेषता (Characteristic of a good Hypothesis)

1. परिकल्पना परीक्षणीय होनी चाहिए।
2. परिकल्पना में सत्यापनशीलता के गुण होना चाहिए।
3. परिकल्पना स्पष्ट होनी चाहिए।
4. परिकल्पना सोदेद्श्य होनी चाहिएं
5. परिकल्पना मितव्ययी होनी चाहिए।
6. समस्या से सम्बद्ध होनी चाहिए।

15.7 समस्या के कारणों का विश्लेषण

समस्या के कारणों का वश्लेषण सारणी के अनुसार निम्नलिखित प्रकार से किया जा सकता है–

समस्या का परिभाषित एवं सीमांकित रुप	समस्या के संभावित कारण।	साक्ष्य
कक्षा 7, 8 के छात्रों की हिन्दी में वर्तनी संबंधी अशुद्धियाँ एवं उनमें सुधार लाना।	(क) लिखित कार्य में लापरवाही करना	(क) छात्रों के लिखित कार्यों की पुस्तिकाओं का निरीक्षण करके यह पता लगाया गया।
	(ख) निम्न स्तर की पहचान शक्ति (शब्दों की)	(ख) शब्दों की पहचान शक्ति संबंधी परीक्षा देकर यह निश्चित किया गया।
	(ग) मातृभाषा के लेख में भी वर्तनी संबंधी अशुद्धियों का पाया जाना।	(ग) मातृभाषा के लेखों में छात्रों वर्तनी संबंधी अशुद्धियों की आतृत्ति निकालकर तुलना की गई।
	(घ) अध्यापकों द्वारा वर्तनी की अशुद्धियों के लिए छात्रों को दण्डित न किया जाना।	(घ) अध्यापकों के मतो का संग्रह किया गया। उनसे यह पूछा गया कि क्या वे छात्रों को वर्तनी संबंधी भूलों के लिए दण्डित करते है? यदि हॉ तो किस रुप में?

15.7.1 क्रियात्मक परिकल्पना का निर्माण

निम्नलिखित समस्या के विश्लेषण के पश्चात परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया है–

1. यदि हिन्दी में दिए जाने वाले समस्त लिखित कार्यों को विधिवत कराया जाए तथा उनका निरीक्षण भी किया जाए तो विद्यार्थियों की वर्तनी संबंधी अशुद्धियॉ कम होंगी।

2. यदि अध्यापक हिन्दी में वर्तनी संबंधी अशुद्धियों के लिए कड़ाई (दण्ड) करे तो वर्तनी सम्बन्धी अशुद्धियॉ कम होंगी।

इस निर्मित दोनों परिकल्पनाओं पर यदि दृष्टि डालें तो इन परिकल्पनाओं को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है।

प्रत्येक क्रियात्मक परिकल्पना के मुख्यतः दो भाग होते है–

1. क्रिया पक्ष 2. लक्ष्य पक्ष

परिकल्पना के प्रथम भाग द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है कि किस प्रकार की क्रिया पद्धति का अनुसरण किया जाना है और द्वितीय भाग के अन्तर्गत उस क्रिया पद्धति द्वारा अभीष्ट लक्ष्य का निर्देश देना होता है।

तथा लक्ष्य पक्ष है–

''छात्रों की वर्तनी संबंधी अशुद्धियों में कभी होना।''

3. द्वितीय परिकल्पना में क्रियात्मक पक्ष है–

''अध्यापक द्वारा हिन्दी में वर्तनी संबंधी भूलों के लिए दण्डित करना।''

तथा लक्ष्य पक्ष है–

''छात्रों में वर्तनी संबंधी अशुद्धियों का कम होना।''

यदि हम उदाहरणों के माध्यम से समझे तो यह स्पष्ट होता है कि क्रियात्मक परिकल्पना में समस्या के समाधान के प्रति एक दिशा के साथ–साथ प्रस्तावित कार्य अर्थात जो करना है उस पद्धति का बोध होता है अर्थात क्या करना है एवं उस कार्य का प्रत्याशित परिणाम क्या होगा?

15.7.2 क्रियात्मक परिकल्पना के परीक्षण हेतु उपयुक्त रूपरेखा का निर्माण

प्रारंभ किए जा सकने वाले कार्यक्रम	क्रियान्वयन की विधि	अपेक्षित साधन	समय
1. हिन्दी में दिये जाने वाले लिखित कार्यों की सूची बनाना।	अध्यापक अपने अन्य सहयोगियों की सहायता से यह कार्य करेगा।	पाठ्य–पुस्तकें पाठ्यक्रम तथा अन्य संबंधित पुस्तकें।	2 सप्ताह
2. लिखित कार्यों की मात्रा निश्चित करना	समय–सारिणी को देखकर स्वयं यह निश्चित करेगा कि कितने लिखित कार्य इस सत्र में सुविधापूर्वक दिए जा सकते है।	समय–सारिणी	2 सप्ताह

3. लिखित कार्यों को स्तरित करना।	अन्य सहयोगियों एवं विषय के विशेषज्ञों की सहमति लेकर।	कोई विशेष साधन की आवश्कता नहीं है।	2 सप्ताह
4. लिखित कार्यों को प्रति सप्ताह निश्चित तिथि के भीतर देखना उन्हें छात्रों को लौटा देना।	अध्यापक अपने अन्य सहयोगियों के साथ यह कार्य करेगा। आवश्यकता पड़ने पर वह कुछ प्रबुद्ध छात्रों की सहायता भी ले सकता है।	कोई विशेष साधन की आवश्यकता नहीं है।	एक सत्र
5. लिखित कार्यों के निरीक्षण में उपयुक्त सुझावों को स्थान देना।	अध्यापक अपने अन्य सहयोगियों के साथ यह कार्य करेगा।	किसी विशेष साधनकी आवश्कता नहीं है।	एक सत्र
6. लिखित कार्यों के निरीक्षण में उपयुक्त सुझावों को स्थान देना।	अध्यापक अपने अन्य सहयोगियों के साथ यह कार्य करेगा।	कोई विशेष साधन की आवश्कता नहीं है।	एक सत्र

इस प्रकार की रुपरेखा तैयार करते समय यह विशेष ध्यान रखना होगा कि जितने साधन, समय की आवश्यकता क्रियात्मक परिकल्पना के लिए है उसका विवरण स्पष्ट एवं निश्चित रुप से देना चाहिए। इसके बिना रुपरेखा स्पष्ट रुप से प्रदर्शित नहीं हो पाती व अनुसंधान कार्य प्रारम्भ करने में अनेक कठिनाइयां आती हैं।

क्रियात्मक परिकल्पना के संबंध में अंतिम निर्णयन तथा उस निर्णयन के पक्ष में प्रस्तुतीकरण :

समस्या का परिभाषित एवं सीमांकित रुप	परिकल्पना	क्रियात्मक परिकल्पना के परीक्षण विधि	क्रियात्मक परिकल्पना के परीक्षण से संबंधित	
			साक्ष्य	अंतिम निर्णय
कक्षा 7, 8 के छात्रोंकी हिन्दी में वर्तनी संबंधी अशुद्धियाँ एवं उनमें सुधार लाना।	यदि हिन्दी में दिये जाने वाले समस्त लिखित कार्यों को विधिवत् कराया जाए तथा उनका निरीक्षण भी हो तो छात्रों की वर्तनी संबंधी	लिखित कार्यों की मात्रा निश्चित कर तथा उन्हें कठिनाई केअनुसार व्यवस्थित कर अध्यापक अपने अन्य सहयोगियों के साथ लिखित कार्यों का निरीक्षण प्रति सप्ताह निश्चित तिथि के भीतर करेगा तथा सुधार हेतु सुझाव देगा।	1. छात्रों के लिखित कार्य वर्तनी की दृष्टि से सुधार–छात्रों की अभ्यास पुस्तिकाओं द्वारा। 2. वस्तुनिष्ठ परख जिसके द्वारा वर्तनी की योग्यता का पता चलेगा, उसका प्रयोग करें।	यदि छात्र पहले की अपेक्षा कम अशुद्धियां करते है तो इस क्रियात्मक परिकल्पना को प्रामाणिक माना जाएगा।

	अशुद्धियाँ कम होगी।			

अनुसंधान के अंतिम चरण में क्रियात्मक परिकल्पना की सत्यता एवं प्रमाणिकता के सम्बन्ध में क्या परिणाम प्राप्त हुए तथा उनका मूल्यांकन किस प्रकार हो? आदि प्रश्न पूछे जाते है। जिसमें अनुसंधानकर्ता को यह स्पष्ट ज्ञान प्राप्त हो जाता है कि उसके अनुसंधान का क्या परिणाम प्राप्त हुआ है? और उसके आधार पर अनुसंधानकर्ता क्रियात्मक परिकल्पना की यथार्थता के संबंध में अंतिम निर्णय लेता है।

क्रियात्मक परिकल्पना के संबंध में अंतिम निर्णय लेने से अर्थ है यह कि अनुसंधानकर्ता यह निश्चय कर ले कि जिस लक्ष्य को दृष्टिगत रखकर परिकल्पना के अन्तर्गत क्रियाएं सम्पादित की गई हैं, वह लक्ष्य सिद्ध हुआ है अथवा नहीं। क्रियात्मक परिकल्पना में जिन प्रस्तावित क्रियाओं के प्रति संकेत होता है, उनके द्वारा यदि लक्ष्य–विशेष की प्राप्ति होती है तो क्रियात्मक परिकल्पना को वास्तविक/प्रमाणित मान लिया जाएगा। यदि लक्ष्य की प्राप्ति नहीं होती तो उसे अप्रमाणित माना जाता है।

बोध प्रश्न

टिप्पणी :

क) नीचे दिए गए बोध प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

ख) इकाई के अंत में दिए गए बोध प्रश्नों के उत्तर से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1. क्रियात्मक अनुसंधान की एक परिभाषा लिखिए।

....

....

2. परिकल्पना किसे कहते हैं?

....

....

3. मौलिक अनुसंधान एवं क्रियात्मक अनुसंधान का एक विशेष अन्तर बताइए।

....

....

15.8 सारांश

शिक्षक के समय अध्यापक कुछ ऐसी समस्याओं से प्रत्यक्ष होता है जो उसकी शिक्षण को प्रभावशीलता को प्रमाणिक करती है। यह समस्यायें छात्रोंकी उपलब्धि से जुड़ी होती है। इन समस्याओं का यदि निदान अथवा उपचार कर दिया जाए तो विद्यार्थी की भाषा की समस्या कम की जा सकती है अथवा समाप्त की जा सकती है। मौले के अनुसार शिक्षक के समक्ष व्यवस्थित होने वाली समस्याओं में से अनेक समस्यायें तत्काल समाधान चाहती है। मौके पर किए जाने वाले ऐसे अनुसंधान जिनका उदे्श्य तत्कालिक समस्या समाधान होता है शिक्षा में ऐसे अनुसंधान को क्रियात्मक अनुसंधान कहते है। क्रियात्मक अनुसंधान का मुख्य उद्‌देश्य शिक्षक प्रक्रिया में सुधार लाना है विद्यालय की कार्य प्रणाली में सुधार लाना ही अनुसंधान सामान्य रूप से तीन प्रकार के होते है – मौलिक अनुसंधान, व्यवहृत अनुसंधान तथा क्रियात्मक अनुसंधान। मौलिक तथा क्रियात्मक अनुसंधान में अनेक अन्तर होता

है उसके उद्देश्य, क्रिया विधि क्षेत्र, परिकल्पना, निष्कर्ष विश्लेषण आदि के आधार पर। अनुसंधान के 7 सोपान हैं समस्या ही पहचान/चयन, परिकल्पना निर्माण, छोटा का संग्रहण की विधि, डाटा संग्रहण, डाटा का विश्लेषण तथ्यों पर आधारित निष्कर्ष सत्यापन एवं मूल्यांकन। क्रियात्मक अनुसंधान हेतु समस्याओं के क्षेत्र है – शिक्षण अधिगम, मूल्यांकन, विद्यालय प्रबन्धन, पाठ्य सहगामी क्रियायें। इन परिस्थितियों में समस्याओं का चयन किया जाता है। तत्पश्चात परिकल्पना का निर्माण किया जाता है जो क्रिया पक्ष तथा लक्ष्य पक्ष के आधार पर निर्मित की जाती है उसके पश्चात साक्ष्यों के आधार पर कार्य विधि का निर्माण किया जाता है जिसके आधार पर समस्या का अध्ययन किया जाता है। इस प्रकार यह इकाई छात्र को शिक्षण गतिविधि में आने वाली समस्याओं का निदान करना है।

15.9 अभ्यास के प्रश्न

1. क्रियात्मक अनुसंधान हेतु पाँच क्रियात्मक परिकल्पनाएं बनाइये।
2. क्रियात्मक अनुसंधान के सोपानों का वर्णन कीजिए।

15.10 चर्चा के बिन्दु

1. हिन्दी शिक्षण में क्रियात्मक अनुसंधान की क्या उपयोगिता है? चर्चा कीजिए।

15.11 बोध प्रश्नों के उत्तर

1. क्रियात्मक अनुसंधान की परिभाषा :

   स्टीफेन एम. कोरे के अनुसार– ''शिक्षा में क्रियात्मक अनुसंधान कार्यकर्ताओं द्वारा किया जाने वाला अनुसंधान है ताकि वे अपने कार्य में सुधार कर सकें।''
2. करलिंगर के अनुसार –''परिकल्पना दो या दो से अधिक चरों के सम्बन्ध के विषय में एक कल्पनात्मक कथन होता है।''
3. मौलिक अनुसंधान तथा क्रियात्मक अनुसंधान का अन्तर–

   मौलिक अनुसंधान का उद्देश्य नवीन तथ्यों तथा सत्यों की खोज तथा नवीन सिद्धान्तों का प्रतिपादन करना होता है। जबकि क्रियात्मक अनुसंधान का उद्देश्य विद्यालयी एवं कक्षा प्रशासन की कार्य प्रणाली में सुधार करना है।

15.12 कुछ उपयोगी पुस्तकें

1. पांडे राम सकल, त्रुटि विश्लेषण सिद्धांत और व्यवहार, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा।
2. लाल रमन बिहारी, हिंदी शिक्षण, रस्तोगी पब्लिकेशन, मेरठ।
3. गुप्ता एस.पी., (2004), आधुनिक भाषा मूल्यांकन, शारदा पुस्तक भवन, प्रयागराज
4. शर्मा, मार्तण्ड, हिंदी शिक्षण, शारदा पुस्तक भवन, प्रयागराज।
5. गुप्ता एस.पी., (2011), अनुसन्धान संदर्शिका, शारदा पुस्तक भवन, प्रयागराज।
6. पाण्डेय, के. पी. एवं अमिता (2009), शिक्षा में क्रियात्मक अनुसंधान, अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा।

NOTE

NOTE

NOTE

NOTE

NOTE